गुरुदेव से पत्र-व्यवहार

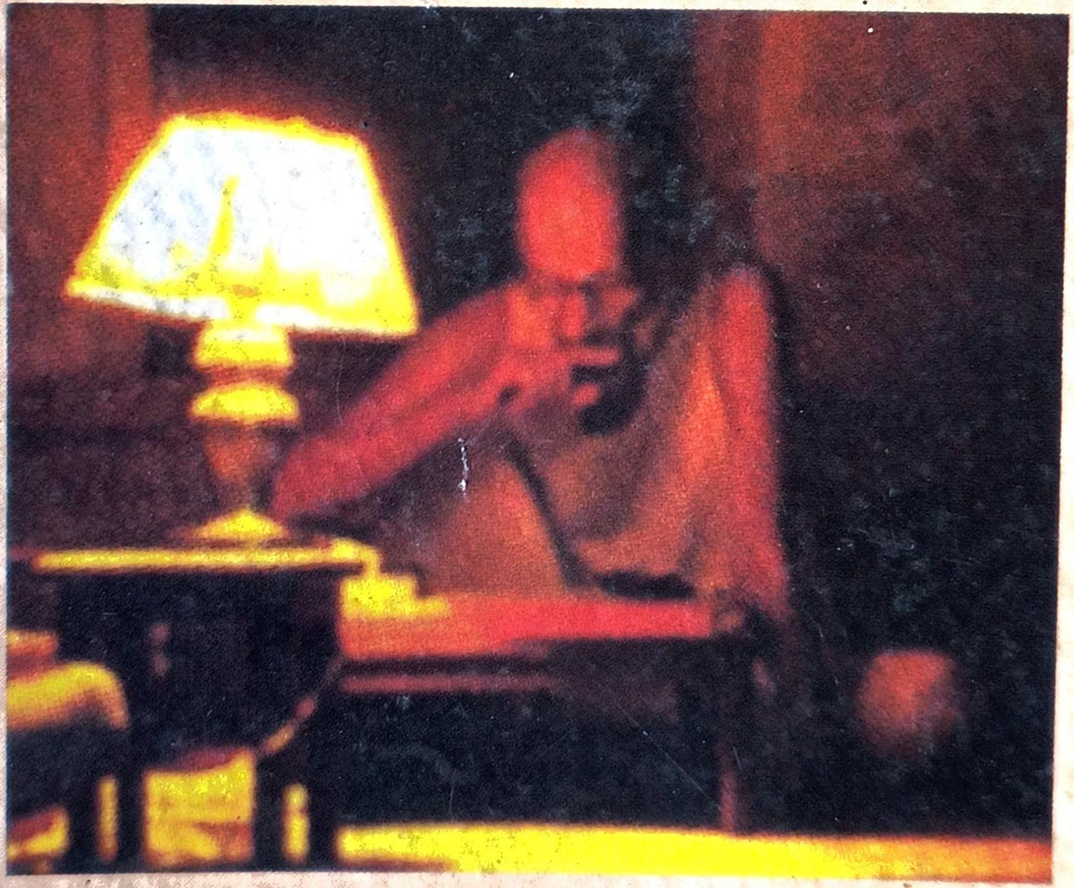

3

गुरुदेव से पत्र-व्यवहार
भाग ३

गुरुदेव से पत्र-व्यवहार

भाग 3

श्री रामचन्द्र जी, श्री पार्थसारथी जी
एवं अन्यों के बीच हुये पत्राचार
१९६६ से १९७२

श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर

Hindi Translation Of The Book
"Letters Of The Master - Vol. III"
Edited By Shri Rajendrasinh N. Rathod

प्रथम संस्करण : जनवरी १९९७ :: ३००० प्रतियाँ

© सर्वाधिकार सुरक्षित

ISBN 81 - 86553 - 14 - 2

मूल्य रु. १००/-

(इस पुस्तक का कोई भी हिस्सा किसी भी रूप में या किसी भी अन्य साधनों से श्री रामचन्द्र मिशन से लिखित अनुमति के बिना पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता।)

प्रकाशक :
प्रकाशन समिति (हिन्दी भाषा)
श्री रामचन्द्र मिशन
" आशीर्वाद "
६८/११, स्टैनली रोड,
इलाहाबाद - २११ ००२
दूरभाष - (०५३२) ६४१०५०

मुद्रक :
मुक्ता पब्लिकेशन
७३०, बाघम्बरी गद्दी,
इलाहाबाद

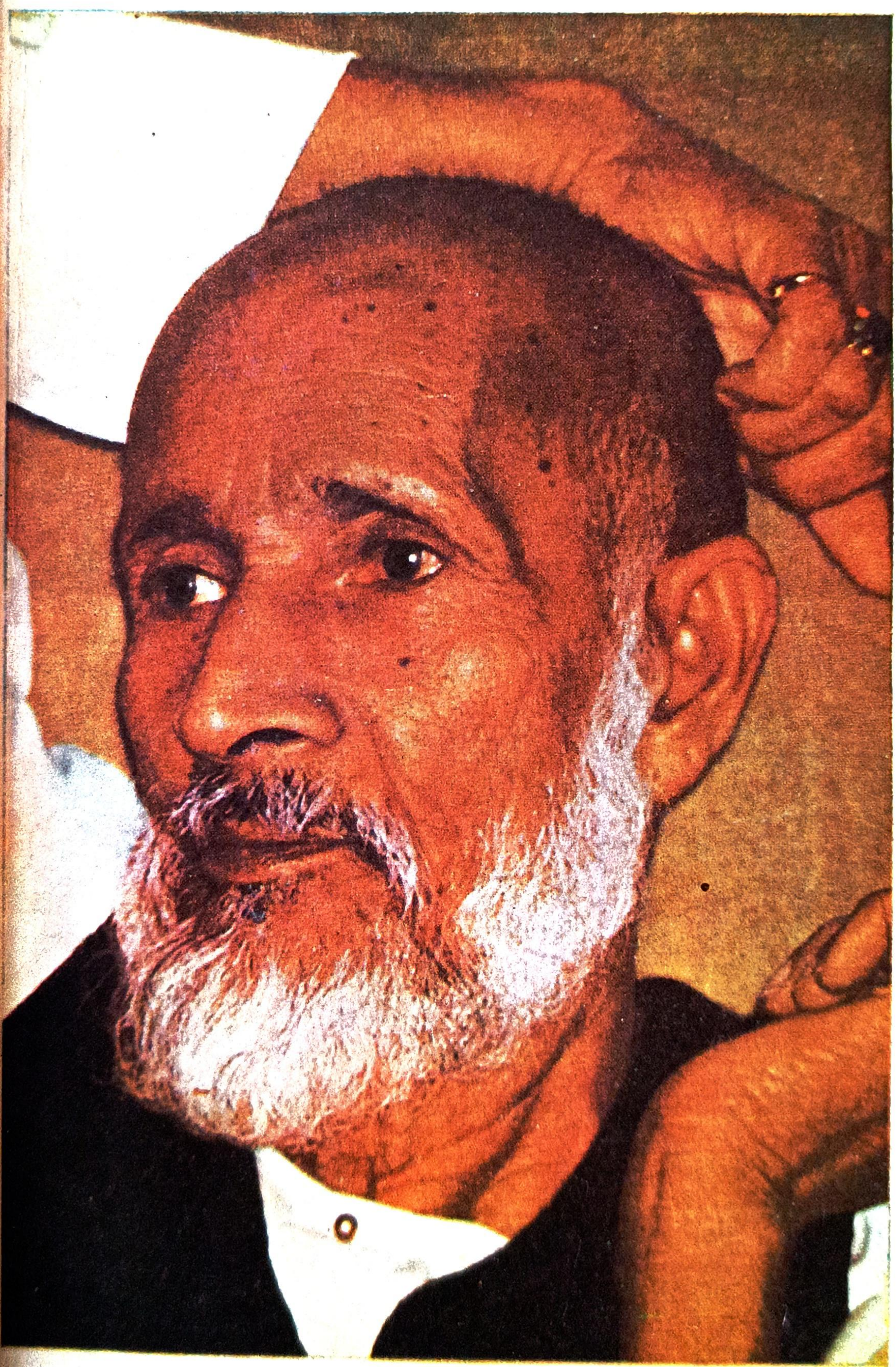

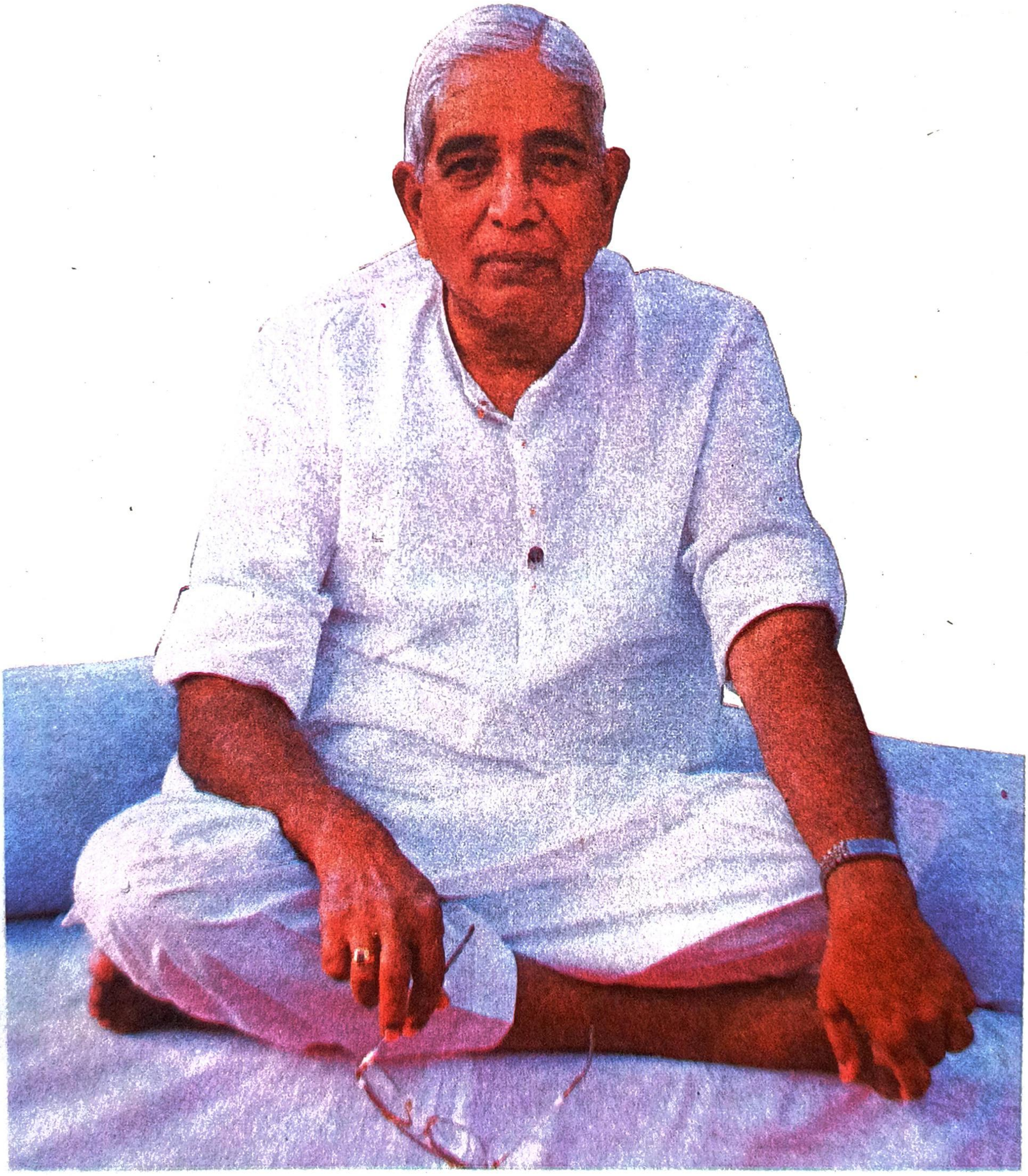

अनुक्रमणिका

१९६६	______	७
१९६७	______	११
१९६८	______	१९
१९६९	______	३५
१९७०	______	५९
१९७१	______	१०१
१९७२	______	२१५

୧୯୬୬

नं. के.५९/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२ फरवरी १९६६

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

अभी-अभी तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र प्राप्त हुआ। मैं ५ और ६ दोनों दिन उपलब्ध रहूँगा। इस संबंध में मैंने एक टेलिग्राम दिल्ली भी किया है। ११ तारीख की सुबह एक दिन के लिये मैं कानपुर जा रहा हूँ। दूसरे दिन सुबह वापस आ जाऊँगा। इसके बाद पूरे महीने मैं घर पर ही रहूँगा। तुम्हारे पिताजी का स्वागत है। मैं उन्हें भी इस आशय का पत्र भेज रहा हूँ।

सप्रेम,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

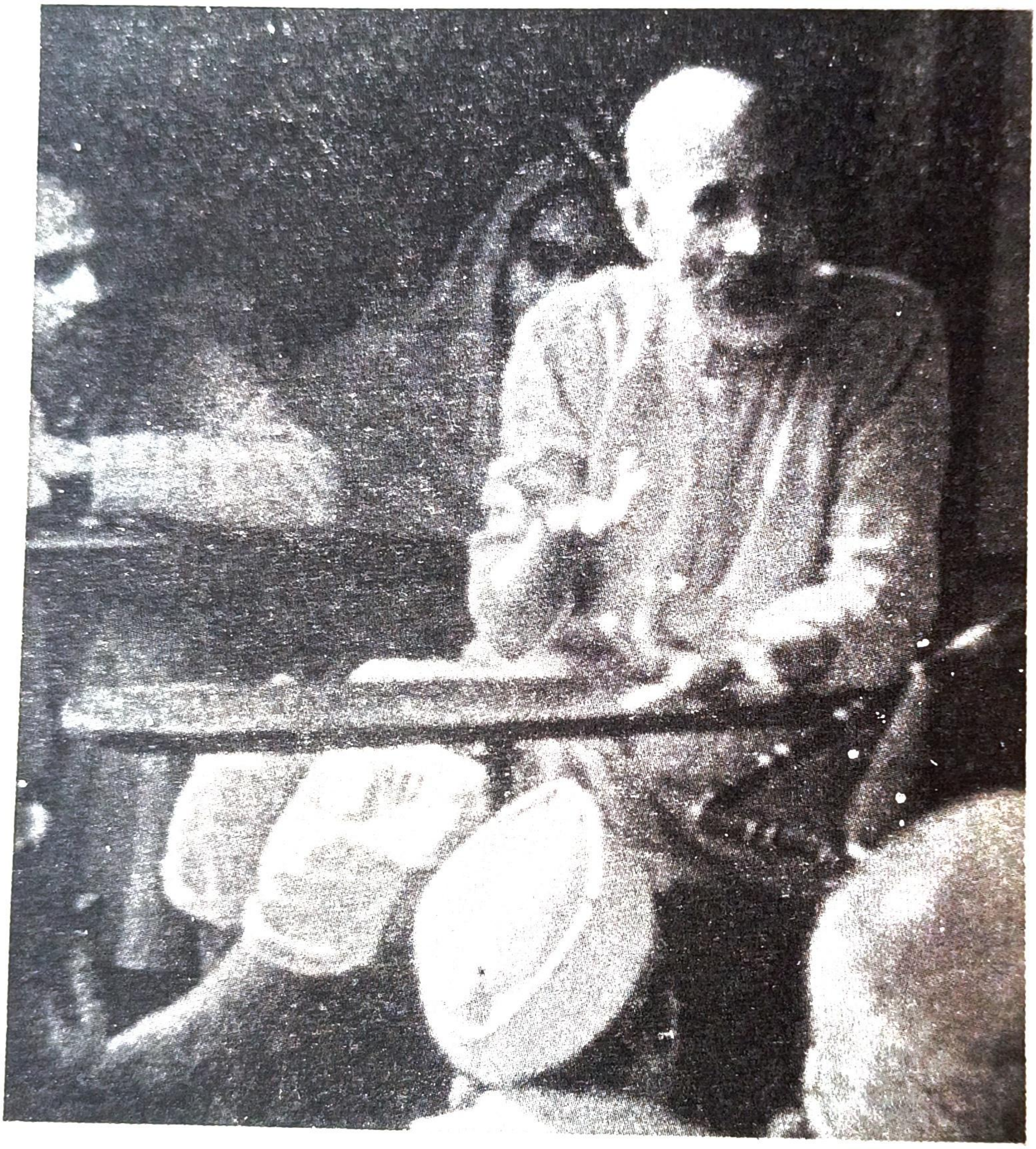

୧୯୫୬

नं. जी ४१२/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२१ जुलाई १९६७

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र प्राप्त हुआ। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि तुम विदेशी राज्यों में जा रहे हो। आशा करता हूँ कि सभी जगहों पर अच्छा काम करोगे। पश्चिम के लोग हमसे बेहतर हैं। वे हमारी तरह धर्म के मामले में रुढ़िवादी नहीं हैं। हाँ, यह सही है कि वे साक्षात्कार के लिये नहीं बल्कि शांति के लिये पीछे-पीछे दौड़ रहे हैं। मानवता की सेवा करना ही उनका प्रमुख लक्ष्य है। किसी सवाल के जबाब में स्वामी रामतीर्थ ने कहा था कि वे हमसे कहीं अधिक आध्यात्मिक हैं चूँकि जब वे किसी काम में लगते हैं तो उन्हें अपने शरीर का कोई ख्याल नहीं रहता। वे सारा काम हृदय और आत्मा से करते हैं। जर्मन लोग हमारी सोच के अधिक निकट हैं।

अंग्रेज लोगों के लिये इस उत्तम शिक्षा को ग्रहण करना बहुत कठिन है। वहाँ श्रीकृष्ण मिशन है जिसमें प्राय: किसी ने भी प्रवेश नहीं लिया है। हाँ, फ्राँस में वे एक सीमा तम उन्हें सफलता मिली है।

स्वामी रामतीर्थ के इस विचार के साथ कि शरीर तुम्हारा है और आत्मा मालिक की अगर तुम काम करो तो अच्छा काम करोगे। तुम्हारा भाषण प्रभावशाली होगा और जबतक तुम विदेश में रहोगे मालिक की शक्ति तुम्हारे पीछे रहेगी। अपनी पहुँच की सीमा तक तुम बहुत मजबूत हो और आगे मैं देखूँगा कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ। कुछ किताबें अपने साथ रखो-खासकर डा. के. सी. वरदाचारी की।

काफी समय से राबर्ट कोच के संबंध में मुझे कोई जानकारी नहीं है। मैंने उन्हें **सहजमार्ग - एक नया दर्शन** उपहार में दी थी। नीचे मैं राबर्ट कोच का पता लिख रहा हूँ और उन्हें भी एक पत्र लिख रहा हूँ। उनसे मिलने पर कृपया तुम उन्हें ट्रांसमिट करो।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

सेवा में :
मि. राबर्ट कोच
३४२८ ड्यूडरस्टैड्
इयूजेनबर्ग हास ३, जर्मनी

नं. जी ४१७/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२४ जुलाई १९६७

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

आशा करता हूँ कि तुम्हें अबतक मेरे द्वारा भेजे गये तुम्हारे पत्र का जबाब मिल गया होगा। मि. राबर्ट कोच का पता भी उसमें मैंने दिया है। मैं फिर इसे लिख रहा हूँ। राबर्ट कोंच का पत्र मैंने उन्हें एयर मेल से भेजा है, जिसकी प्रति इस पत्र के साथ संलग्न है।

बच्चों को प्यार,

सेवा में :
मि. राबर्ट कोच
३४२८ ड्यूडरस्टैड्
इयूजनबर्ग हास ३,जर्मनी
टेलिफोन : ७५४

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

नं. जी.४१६/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२४ जुलाई १९६७

मेरे प्रिय भाई,

लम्बे समय से मुझे आपका कोई पत्र नहीं मिला। आपको एक पत्र संख्या सी.३४७/एस.आर.सी.एम. दिनांक १५ मई १९६७ भेजा था, जिसमें दक्षिण भारत की मेरी यात्रा का कार्यक्रम था। मैंने पंजीकृत डाक से मिशन के योग्यतम प्रशिक्षकों में से एक डा. के. सी. वरदाचारी द्वारा लिखित पुस्तक **सहजमार्ग - रामचन्द्र का नया दर्शन** भी भेजी है। मैं समझता हूँ कि यह पुस्तक आपको मिल गयी होगी। पुस्तक के बारे में मैं आपका दृष्टिकोण जानना चाहता था। क्या आप जल्दी अपना समाचार लिखने का अनुग्रह मुझ पर करेंगे?

मेरे साथी श्री पी. राजगोपालाचारी और मद्रास के श्री स्वामीनाथन ६ अगस्त १९६७ को यहाँ से चलकर जर्मनी पहुँच रहे हैं। वे आपसे मिलने के बहुत इच्छुक हैं और वे वहाँ आपसे मिलेंगे। श्री पी. राजगोपालाचारी मिशन के प्रशिक्षक हैं। आप उनसे ट्रांसमिशन ले सकते हैं। आपको मेरे मालिक की शिक्षा बहुत पसंद आयी और आप चाहते हैं कि सभी इसे प्राप्त करें इसीलिये ये आपकी सहायता करने वहाँ पहुँच रहे हैं।

आपसे विचारों का आदान-प्रदान लम्बे समय से नहीं हुआ इससे मैं बहुत व्यग्र हूँ। आप बहुत अच्छा लिखते हैं इसलिये मैं आपको और लिखने के लिये उत्साहित करता हूँ।

आपका स्नेही
रामचन्द्र
प्रेसिडेन्ट
श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)
भारत

नं. जी ४३७/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
७ अगस्त १९६७

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैं यह चिठ्ठी विदेश में तुम्हारी सफलता और अच्छी सेहत की प्रार्थना के साथ लिख रहा हूँ। मेरा अनुमान है कि तुमने बोलने में अपनी झिझक मिटाने के लिये मद्रास में इतवार के सत्संग में बोलना शुरु कर दिया होगा। मुझे जर्मनी से राबर्ट कोच की एक चिठ्ठी मिली है जिसमें उन्होंने लिखा है कि वहाँ जाने पर तुम दोनों वहाँ उनके मेहमान होगे। वे अभ्यास से फायदा उठा रहे हैं। उनकी पहुँच ब्रह्माण्ड मंडल तक है। उन्होंने लिखा है कि अपनी व्यस्तता के कारण वे अपने बच्चों तक को पत्र नहीं लिख पाते। तुम्हारी जानकारी के लिये लिख रहा हूँ कि वे अद्वैत होने को दावा करते हैं और अमेरिकी तथा यूरोपीय सभ्यता से ऊब गये हैं। इससे लगता है कि वे हमारी सोच के बहुत नजदीक हैं। मुझे उनके फोटोग्राफ की एक प्रति मिली है, जिसे मैं तुम्होरे पास भेज रहा हूँ। इसे सम्भाल कर रखना और लौटने पर मुझे वापस कर देना। अपने पिताजी को मेरा प्रणाम कहना।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
११ अगस्त १९६७

श्रद्धेय मालिक,

प्यार से भरा ७ तारीख का आपका पत्र मिला साथ में जर्मनी के श्री कोच का फोटोग्राफ भी। मैं इसे सम्भाल कर रखूँगा और वापस आने पर इसे आपको वापस कर दूँगा।

इस यात्रा के लिये जो आशीर्वाद आपने हम पर बरसाया है, उसके लिये हम आपके कृतज्ञ हैं। हमें आशा है कि सब कुछ दैवी योजनाओं के अनुरुप ही होगा।

आज ही मुझे भी मि. कोच की एक चिठ्ठी मिली है, जिसमें उनके शहर पहुँचने पर उनका मेहमान बनने का निमंत्रण भी है। मैं आपकी सलाह के अनुसार ही काम करूँगा। हमारा कार्यक्रम तय हो गया है। हम इतवार २० को बम्बई के लिये मद्रास से रवाना होंगे। २ दिन वहाँ रुककर बुधवार २३ को सीधे लन्दन के लिये रवाना होंगे। उम्मीद है कि ८ या ९ सितम्बर को एक-दो दिन के लिये हम ड्यूडस्टैड् में मि. राबर्ट कोच से मिलेंगे, जो जर्मनी पहुँचने पर वहाँ की परिस्थिति पर निर्भर करेगा। आपकी जानकारी के लिये अगले दो या तीन दिनों में मैं अपने प्रोग्राम की एक प्रति भेजूँगा।

ईश्वरीय चरणों में हमारा प्रणाम स्वीकार करें।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
८ नवम्बर १९६७

श्रद्धेय मालिक,

पिताजी से यह जानकर खुशी हुई कि अब आपकी तबियत में सुधार है, हालाँकि अब भी आप पर थोड़ा जुकाम और ठंढक का असर है। हम सर्वशक्तिमान से आपकी अच्छी सेहत के लिये प्रार्थना करते हैं। पिताजी ने मुझे आपका संभावित कार्यक्रम भी भेजा है। उनकी इच्छा के हिसाब से कार्यक्रम की कुछ प्रतियाँ करा कर आज एक प्रति श्री वीरराघवन को और एक डा. वरदाचारी को भेज दूँगा। मुझे पूरा भरोसा है कि मदुरै और सेलम केन्द्र के अभ्यासी आपके वहाँ जाने के लिये राजी होने से बहुत कृतज्ञ होंगे। मैं आज मदुरै और सेलम खबर

करके यह सुनिश्चित करने का प्रयास करूँगा कि मदुरै से सेलम, सेलम से बंगलोर और चन्नपटना की यात्रा के लिये कार का प्रबन्ध हो सके।

मेरे पिताजी ने लिखा है कि आपने उन्हें बताया है कि मैं बहुत भाग्यशाली हूँ। हाँ, इसमें तो कोई सन्देह नहीं है। हमारा पूरा परिवार अपनी नियति को दिशा देने के लिये मालिक को पाकर बहुत भाग्यशाली रहा है। मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि हम इस संपर्क का सुख शाश्वत रूप से पाते रहें। ***मालिक देता है और फिर प्राप्त करने वाले को खुद ही बधाई भी देता है।*** जागृत रूप में मैंने मिशन और इसके काम से अपनी पहचान जोड़ी है और अवचेतन रूप में भी मुझे ऐसा ही होने का पूरा भरोसा है। मेरी एकमात्र इच्छा अपनी संपूर्ण क्षमता से मिशन की सेवा करने की है। मेरी प्रार्थना है कि ***इस ईश्वरीय कार्य में जो कुछ भी थोड़ा-बहुत मैं कर सकता हूँ, उसे करने की इजाजत मुझे दी जाय। मेरी यह भी प्रार्थना है कि आपसे मेरा संपर्क कभी न टूटे, यह निरन्तर बना रहे। मैं आपके साथ अस्तित्व के किसी भी रूप में बना रहूँ जहाँ मुझे इस अस्तित्व के बाद जाना पड़े। मेरी प्रार्थना है कि ईश्वरीय उपस्थिति का स्थायी बोध मुझे होता रहे।***

मदुरै केन्द्र के अभ्यासियों का एक अलबम मैं शीघ्र ही आपकी सेवा में भेजूँगा।

२ दिसम्बर को मैं दिल्ली आऊँगा। मेरी प्रार्थना है कि वहाँ मुझे आपका दर्शन अवश्य प्राप्त हो।

आपके दिव्य चरणों में प्रणाम के साथ,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी६१८/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२७ नवम्बर १९६७

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैं समझता हूँ कि श्री वीरराघवन को भेजे गये दौरे के कार्यक्रम को तुमने देख लिया होगा। मैंने कार्यक्रम की एक प्रति मि. पोरे और मि. राबर्ट कोच को भी भेजी है जिससे अगर उनकी मुझे लिखने की इच्छा हो तो वे मुझे लिख सकें। मुझे मि. पोरे का भी एक पत्र प्राप्त हुआ है जिससे यह मालूम होता है कि वे अभ्यास जारी रखेंगे।

जर्मनी से भी मुझे एक पत्र मिला है जिसमें लिखा है कि मि. कोच जर्मनी में मिशन का काम शुरु करने के लिये उपयुक्त व्यक्ति हैं। उसके प्रकाश में मैंने उन्हें एक पत्र लिखा है जिसकी एक प्रति तुम्हें भेज रहा हूँ। जब हम तुमसे मिलेंगे तो मि. पोरे, मि. कोच और पश्चिम में काम के संबंध मे बहुत सी बातों पर चर्चा होगी। बच्चों को प्यार।

आशीर्वाद सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

नं. सी४१६/एस.आर.सी.एम. — शाहजहाँपुर
२७ नवम्बर १९६७

मेरे प्रिय भाई,

फोटो की एक प्रति के साथ आपका पत्र मिला। श्री पी. राजगोपालाचारी आपकी बहुत तारीफ कर रहे थे और सचमुच आप उस तारीफ के काबिल हैं। आपमें विकसित आत्मा के लिय आवश्यक गुण मौजूद हैं। कृपया मानवता की सेवा अटूट शान्ति के लिये आध्यात्मिक तरीके से करने की कोशिश कीजिये। सहजमार्ग पद्धति के अनुसार काम करने के लिये आप बिल्कुल उपयुक्त व्यक्ति हैं। मैंने पिछले पत्र में ही आपकी पहुँच का उल्लेख किया है। उत्कृष्ट कार्य के लिये केवल स्नायुओं के प्रत्येक केन्द्र में आध्यात्मिक ऊर्जा भरने की जरूरत है। यह कोई कठिन काम नहीं है और दूरी इसमें कोई बाधा भी नहीं है।

मैं ४ दिसम्बर १९६७ को दक्षिण भारत का दौरा शुरु कर रहा हूँ। यात्रा का विस्तृत कार्यक्रम भेज रहा हूँ जिससे आप यदि मुझे कुछ लिखना चाहें तो लिख सकें।

आपने लिखा है कि आप अपना घर बदलने वाले हैं। यदि ऐसा है तो कृपया अपने बदले हुये पते की सूचना मुझे भेजिये।

आशीर्वाद सहित,

आपका स्नेही
रामचन्द्र

१९३८

मद्रास
१५ जनवरी १९६८

परम आदरणीय एवं परम प्रिय मालिक,

आप अब तक शाहजहाँपुर पहुँच गये होंगे और आपके वहाँ पहुँचते ही भाई-बहनों के दिल खुशी से भर गये होंगे लेकिन यहाँ से प्रस्थान के बाद आप मेरे दिल में दु:ख और अकेलापन छोड़ गये हैं।

मैं अपनी सामर्थ्य भर इससे संघर्ष कर रहा हूँ लेकिन भावनाओं का जो शक्तिशाली प्रवाह मेरे अंदर उमड़ रहा है, उसे रोक पाने में मैं अपने आपको असमर्थ पा रहा हूँ। आपके बारे में लगातार सोचते रहकर ही मैं इसे टूटने से रोक सकता हूँ। पूज्य बहन कस्तूरी के भी यहाँ से चले जाने के बाद हमारा घर बिल्कुल खाली हो गया है। यहाँ उनकी दिव्य उपस्थिति हमारे लिये खुशी का कारण थी और लक्ष्य की दिशा में हमारे प्रयास में बहुत मददगार भी। उनका आगमन बहुत से सोये हुये दिलों को जगाने तथा दिव्य महात्वाकांक्षा की आग में उनको जलाने का काम करते रहा है। मैं मालिक से प्रार्थना करता हूँ कि वे उन्हें लम्बा जीवन, स्वास्थ्य, शक्ति और प्रसन्नता दें। मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे हमारे पास बार-बार आयें और हमारे घर को ईश्वरीय प्रकाश और विवेक से बार-बार भरें।

मालिक! मैं अब आपके बिना जिन्दा नहीं रह सकता। यह तो आप जानते ही हैं। बौद्धिक रूप से मैं जानता हूँ कि आपकी उपस्थिति सदैव अपने भक्त के पास ही होती है लेकिन मेरी आपसे प्रार्थना है कि मुझे आपकी ईश्वरीय उपस्थिति का बोध भी निरन्तर होता रहे। मेरी प्रार्थना है कि आपसे मेरा संपर्क वास्तविक संपर्क बने, जो मुझे आपके साथ शाश्वत रूप से जोड़े। मैं इसके लिये पूरी प्रबलता के साथ प्रार्थना करता हूँ। मैं पूरी दृढ़ता के साथ इसके लिये प्रार्थना करता हूँ। मुझे आपके साथ अटूट संपर्क के अलावा आपसे और कुछ भी नहीं चाहिये जो मुझे आपसे शाश्वत रूप से बाँध कर रखे। मेरी बार-बार आपसे यही प्रार्थना है कि आप अपने दिव्य प्रेम से मुझे यह प्रदान करें। आप अपनी कृपा मुझे दें। मैं आपके बिना जीवित नहीं रह सकता। मैं आपसे यह प्रार्थना स्वीकार करने के लिये फिर से प्रार्थना करता हूँ। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे अपनी सेवा करने में और मजबूत बनायें जिससे मैं केवल वही कर सकूँ जो आप चाहें। मैं वही बोल सकूँ जो

आप मुझसे बुलवाना चाहें। मैं वही सोच सकूँ जो आप मुझसे सोचवाना चाहें।

मेरी प्रार्थना है कि बसंत उत्सव पर मैं आपका दिव्य दर्शन कर सकूँ। आपके दिव्य चरणों में मैं अपना जीवन समर्पित करता हूँ।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी२२/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२० जनवरी १९६८

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। प्रेम से सब कुछ पाया जा सकता है। यहाँ तक कि हिंसक पशुओं पर भी इससे विजय प्राप्त किया जा सकता है। अगर कोई आदमी थोड़ा सा भी मेरी ओर बढ़े तो वह इस उपकरण से मुझे भी वश में कर सकता है। लेकिन अपने मामले में मैं बहुत सी चीजें सोच विचार कर करता हूँ। जो काम मेरे मालिक ने मुझे सौंपा है उसे मैं उसको चाहने वालों पर ही डालना चाहता हूँ।

मुझे खुशी है कि बसंतपंचमी के उत्सव पर तुम आ रहे हो। कस्तूरी तुम्हारी बहुत तारीफ कर रही थी और तुम इस तारीफ के काबिल भी हो। मैं तुम्हारी सेवा के लिये उपलब्ध रहूँगा।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

नं. सी१३६/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१२ मार्च १९६८

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा ६ मार्च १९६८ का लिखा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मुझे खुशी है कि चि. कृष्णा का उपनयन संस्कार हो गया है। मैं उसके दीर्घायु होने और आध्यात्मिक श्रेष्ठता की प्रार्थना करता हूँ। वह अभी लड़का है और उसे अभी मानसिक रूप से विकसित होना है। उम्र के साथ उसमें होनहार लड़के के लिये वांछित तत्वों का विकास होगा। अगर सम्भव हो तो उसे महीने में एक या दो बार सामान्य निबन्ध

लिखने के लिये दो। मैं उसमें विचार करने की शक्ति पैदा करना चाहता हूँ।

जब भी सम्भव हो तुम पुस्तकों को छपने के लिये दे देना। ***सत्य का उदय*** एक पखवारे में पूरी हो जायेगी। ***मैं चाहता हूँ कि मेरे द्वारा लिखी गयी पुस्तकें एक ही ग्रन्थ में प्रस्तुत की जायें और इसकी छपाई मद्रास में ही हो।*** श्री वीरराघवन की सलाह है कि ***सत्य का उदय*** में दिया गया वृत चित्र ***अनन्त की ओर*** में दिये गये ग्रन्थियों के चित्र के साथ मेल खायं। मैंने इसके बारे में सोचा है और मैं समझता हूँ कि मैं ऐसा कर भी सकता हूँ लेकिन मैं नहीं जानता कि इस पर सोचना वाकई जरूरी है या नहीं।

मुझे लगता है कि तुमने भी यह महसूस किया है कि मदुरै के लोगों के मन की दिशा धीरे-धीरे बदलने लगी है। मैं महसूस करता हूँ कि सेलम के लोग पारम्परिक पूजा में भी बहुत पिछड़े हुये हैं और वहाँ बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जो किसी भी प्रकार की पूजा नहीं करती। हालाँकि कच्चे बाँस को तो बहुत आसानी से मोड़ा जा सकता है लेकिन इन लोगों का मामला थोड़ा अलग है। सामान्यतया लोग मुझे मंदबुद्धि लगे लेकिन आओ! हम उनके कल्याण के लिये प्रार्थना करें।

श्री एस. सेथुरत्नम् को प्रिफेक्ट बनाने में अगर तुम्हारी और डा. वरदाचांरी की रजामंदी है तो मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है। तुम उनकी सफाई करने की कोशिश करो और उन्हें प्राणाहुति दो। जब मैं वहाँ आऊँगा तो उन्हें देखूँगा। डा. वरदाचारी का मोतियाविन्द मेरे लिये परेशानी का कारण बन गया है। चीफ जस्टिस मद्रास को जो पत्र भेजा गया है उसकी एक प्रति तुम्होरे पिताजी को भी भेजा गया है। मैं नहीं जानता कि यह उपयुक्त था या नहीं लेकिन वे एक श्रेष्ठ बौद्धिक और उच्च शिक्षित व्यक्ति लगते हैं जबकि मैं एक सामान्य व्यक्ति हूँ और अपने मालिक के अलावा और किसी को नहीं चाहता। मेरी शिक्षा के बारे में तो सभी जानते हैं कि मैं अच्छी अँग्रेजी नहीं लिख सकता। जो हिस्सा तुमने फ्रेंच में अनुबाद के लिये भेजा था................ एकाग्रता प्राकृतिक है जो शक्ति पैदा करती है। तुमने 'से' उसमें जोड़ा है जो गैर जरूरी है। जब तमिल पुस्तक छपने लगे तो ध्यान करके यह वाक्य वहाँ भी जोड़ना और इसका अनुबाद तमिल में करना। मैंने तुम्हें पोरे के पत्र की एक प्रति भेजी थी इसलिये उनके जबाब की भी एक प्रति भेज रहा हूँ।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : चि. उमेश ने इस बार अपने इम्तहान का सेन्टर विजयवाड़ा दिया है। इम्तहान के बाद वह मद्रास भी आयेगा। इम्तहान १ मई से ७ मई १९६८ तक है। वह विजयवाड़ा में डा. पार्थसारथी के यहाँ रुकेगा।

रामचन्द्र

नं. सी९४/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२ मार्च १९६८

मेरे प्रिय पोरे,

आपका प्रेमपूर्ण पत्र मिला और यह जानकर मुझे हार्दिक खुशी हुई कि आप काफी मनायोग से ध्यान कर रहे हैं। मुझे आशा है कि आप एक दिन देखेंगे कि आप रूपान्तरित हो गये।

आपके आध्यात्मिक श्रेष्ठ जीवन के लिय मेरी सेवायें तहेदिल से उपलब्ध हैं। आप प्रकाश महसूस करते हैं - इसका सीधा मतलब है कि पातंजलि दर्शन के अनुसार योग की शरुआत हो गयी है। कुछ समय बाद प्रकाश का अनुभव विलीन हो जाता है और उसकी जगह उससे उच्चतर चीज ले लेती है। ऋग्वेद का नासदीय सूत्र सत्य के बारे में कहता है कि वहाँ न तो प्रकाश है न ही अँधकार। सूर्य वहाँ कभी नहीं चमकता। यह अस्तित्व की एक विशिष्ट अवस्था है जो खुद से ही आनन्दित कर देती है। अब आप शान्ति के विषय तक पहुँच गये हैं। इसकी व्याख्या मैं केवल एक शब्द से कर सकता हूँ और वह है - **अशान्त शान्ति।**

मुझे दु:ख है कि आपके पत्र का जबाब मैं समय से नहीं दे पाया। दरअसल मैं सिरदर्द से बुरी तरह पीड़ित था जो अब कम हो रहा है।

आपका स्नेही
रामचन्द्र

कैम्प बंगलोर
परम आदरणीय और परमप्रिय मालिक, ८ मई १९६८

मैं २४ अप्रिल से दौरे पर हूँ और मेरा परिवार कार द्वारा मेरे साथ यात्रा कर रहा है। आज मुझे मेरे पिताजी से पता चला कि चि. उमेश आज रात मद्रास पहुँचेंगे और कल दोपहर में बंगलोर पहुँचेंगे। मैं उनसे यहीं मिलूँगा। मैं ऊटी और मैसूर से होकर अभी-अभी यहाँ आया हूँ। मुझे बहुत अफसोस है कि मैं उनके साथ नहीं हो पाया। फिर भी मैं कल उनसे यहाँ मिलूँगा।

मेरी पत्नी सौ. सुलोचना और मैं भी रास्ते में कुछ काम करते रहे हैं जिसकी रिर्पोट मैं बाद में आपको भेजूँगा।

आज सुबह स्वप्ने के दौरान हुये एक अनुभव के बारे में मैं आपको लिख रहा हूँ। सामान्यतया मैं सुबह ५:३० तक उठ जाता हूँ लेकिन आज मेरी नींद सुबह ४:३० पर खुल गई। उठ कर मैं फिर सो गया। फिर ५:३० पर उठा और फिर सो गया। ६:१५ पर फिर उठा, उठकर बैठा, प्रार्थना को मानसिक रूप से पढ़ा, आपके दिव्य चरणों को छुआ लेकिन फिर लेटने की तीव्र इच्छा हुई और मैं सो गया। फिर ८:१५ पर मेरी पत्नी ने मुझे जगाया जिससे मेरा स्वप्न टूट गया।
स्वप्न : मैं एक ऐसी जगह पर हूँ जिसे मैं पहचानता नहीं हूँ। वहाँ डा. वरदाचारी और मेरे पिताजी के अलावा कुछ और लोग भी हैं। मालिक भी हैं और किसी चीज की तैयारी चल रही है। मुझे ऐसा लगा कि यह तैयारी ***होम*** के लिये की जा रही है। मैं मालिक के साथ हूँ। वे मुझे अपने पास बुलाकर कहते हैं "पार्थसारथी! इधर आओ। अब तक तुम एक तरीके का ध्यान करते आ रहे हो। आज मैं तुम्हें एक और तरीका बताऊँगा। कृपया बैठ जाओ।

जैसे ही मैं बैठने को होता हूँ, मेरे पिताजी आते हैं और मैं अपने को अव्यवस्थित महसूस करता हूँ और मालिक के पास नहीं बैठ पाता। मालिक डा. वरदाचारी के साथ दूर चले जाते हैं और मैं मालिक से उनकी सलाह लेने के लिये चक्कर लगाता रहता हूँ लेकिन उनके पास बैठने का अवसर मुझे नहीं मिल पाता। इसी समय अचानक कोई आता है और मालिक से कहता है कि वे स्नान करने के लिये जा सकते हैं। मालिक बाथरुम में प्रवेश करते समय कोई 'नीला' चीज लाने के लिये कहते हैं जिसे लाने के लिये मैं तेजी से बाहर जाता हूँ। मेरे

व्यवसाय से संबंधित मामलों में मुझे कुछ भ्रम है। इसी समय ८:१५ पर मेरी पत्नी मुझे जगा देती है और स्वप्न टूट जाता है।

मुझे इस बात का अफसोस है कि जो ***उपदेश*** मेरे मालिक मुझे देने जा रहे थे, उसे मैं नहीं पा सका। इस संबंध में मैं आपकी सलाह की प्रार्थना करता हूँ। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मेरे नैतिक चरित्र को मजबूती प्रदान करें और मुझे हर तरीके से उपयुक्त बनायें। मुझमें आपकी ***कृपा*** उतरे। मैं आपकी ***कृपा*** की प्रार्थना करता हूँ।

आपके दिव्य चरणों में मेरा प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

ॐ तत्सत्

११/ई, नार्थ स्ट्रीट
श्री रामनगर
मद्रास-१८
६ अगस्त १९६८

परम प्रिय ईश्वरीय मालिक,

आपके कमल चरणों में मेरा विनम्र प्रणाम!

आपकी कृपा के प्रवाह से घर पर सभी कुशल हैं। मेरे पिताजी डा. वरदाचारी के साथ अपनी आगामी शाहजहाँपुर यात्रा को लेकर बहुत उत्साहित हैं। पूज्य श्री वीरराघवन पहले से बेहतर हैं और फिर से काम पर जाने लगे हैं। सत्संग नियमित रूप से चल रहा है।

मैंने दक्षिण में मिशन के काम के बारे में आपको कुछ पत्र लिखे हैं। विरुधनगर सेन्टर आपकी कृपा से बढ़ रहा है। ऐसा लगता है कि इस साल के आपके कार्यक्रम में विरुधनगर को भी शामिल किया जा सकता है।

पूज्य मालिक! मैं अपने हृदय से प्रार्थना करते हुये एक बार फिर आपको लिख रहा हूँ-इस प्रार्थना को कुछ समय से मैं ध्यान में बराबर आपसे करता आ रहा हूँ - मेरी अपनी माँ श्रीमती जानकी की मुक्ति की प्रार्थना। मेरी माँ मई १९३३ में मेरी बहन के जन्म के समय दिवंगत हो गयी थी। बाद में १९३५ या १९३६ में मेरी बहन की भी मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय मेरी माँ की आयु केवल २२ साल की थी। मैं प्रार्थना करता हूँ कि आपकी दिव्य और उदार कृपा उसकी आत्मा

की मदद करे और उसे मुक्ति प्रदान करे। मैं इसके लिये अपने संपूर्ण हृदय से आपसे प्रार्थना करता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि आप मेरी इस प्रार्थना को अवश्य स्वीकार कर लें। मैंने सुना है कि मालिक की कृपा इस प्रार्थना को स्वीकार कर सकती है। इसलिये मैं आपसे अपनी माँ की मुक्ति के लिये प्रार्थना करता हूँ।

मुझे आशा है कि मैं दिल्ली और शाहजहाँपुर आऊँगा। अगर आपकी अनुमति हो तो मालिक के दिव्य दर्शन भी करूँगा।

आपके चरणों मं प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मदुरै
७ सितम्बर १९६८

परम प्रिय मालिक,

आपक दिव्य चरणों में मेरा प्रणाम!

मुझे आशा है कि आपका स्वास्य ठीक होगा। मैं एक हफ्ते से दौरे पर हूँ। सेलम, कोयम्बटूर और विरुधनगर में मैंने अपना काम भी किया। मुझे आपको सूचित करते हुये खुशी है कि सेलम में अच्छी प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है। आपकी कृपा से यह स्थिति और सुधरेगी। हमारे यहाँ के अभ्यासी बेचैनी से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

विरुधनगर बहुत अच्छी तरह विकसित हो रहो है। वहाँ अभ्यासियों में मालिक के प्रति उत्साह और प्रेम बहुत बड़ी मात्रा में है। मेरी राय में आपकी कृपा से विरुधनगर एक महत्वपूर्ण और बड़े सेन्टर के रूप में विकसित होगा।

मालिक! मैं बहुत बड़ी परेशानी में फँस गया हूँ, जिसमें मुझे आपके पथ-प्रदर्शन और संरक्षण की जरूरत है। मैं लोगों को मिशन में लाने में लगा रहता हूँ लेकिन कुछ लोग मुझे चेतावनी दे रहे हैं कि लोग इस मिशन में केवल अपने बारे में मेरी राय को प्रभावित करने के ख्याल से आयेंगे, जिससे वे अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये इसका प्रयोग करें। मुझे वे बहका सकते हैं।

मुझे अपने मालिक में पूरी आस्था है और मेरा हृदय और मेरी आत्मा अपने मालिक का काम करने के लिये पूरी तरह समर्पित है। मुझे पूरी तरह यकीन है कि मालिक की इस महान शक्ति और ईश्वरीय

प्रेम का कोई भी दुरुपयोग नहीं कर सकता, न ही इससे मेरे कार्यालय का दैनिक कार्य प्रभावित हो सकता है। बल्कि मेरी राय में इसमें और सुधार ही आयेगा।

मैं अपनी परेशानी का उल्लेख आपके सदैव उपलब्ध प्रेमपूर्ण पथ-प्रदर्शन और संरक्षण को पाने के लिये कर रहा हूँ।

आपके चरण कमलों में मेरा प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

पुनश्च : हमारे विरुधनगर के श्रेष्ठ अभ्यासियों में से एक श्री पी. के. वेंकटेशन दफ्तर के काम से दिल्ली जा रहे हैं। आपका दर्शन करना चाहते हैं इसलिये रविवार १५ सितम्बर १९६८ को सुबह ४:३० पर लखनऊ मेल से शाहजहाँपुर पहुँचेंगे। वे हिन्दी नहीं जानते इसलिये अगर सम्भव हो तो किसी व्यक्ति को उनसे मिलने के लिये स्टेशन भेज दीजियेगा, जो टिकट कलेक्टर गेट पर रुका रहे। वे रविवार की रात लखनऊ दिल्ली मेल से दिल्ली वापस लौटेंगे।

पार्थसारथी

नं. सी ३६७/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१५ सितम्बर १९६८

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

७ सितम्बर १९६८ का लिखा तुम्हारा प्रेमपूर्ग पत्र मिला। मुझे इस बात से खुशी है कि तुम बेहतरीन काम कर रहे हो। ईश्वर तुम्हें तुम्हारी सारी गतिविधियों में कृपा प्रदान करें। विरुधनगर के श्री वेंकटेशन एक दिन के लिये मेरे पास आये और खुश होकर चले गये।

आदमी अनुभवों की प्राप्ति के लिये जन्म लेता है और जब तक जीवित रहता है, अनुभव प्राप्त करता रहता है। उसके कुछ कर्तव्य भी हैं लेकिन वास्तविक कर्तव्य क्या है? दूसरों की सेवा इस तरह से करना कि उसका असर खुद पर न पड़े। मान लो कि किसी आदमी को पैसे की जरूरत है और आप उसे पैसा दे देते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि आपके खुद के काम में कठिनाईयाँ आ जाती हैं तो यह कर्तव्य नहीं है बल्कि यह आपका अहंकार है। मान लीजिये कोई आदमी कहीं नौकरी कर रहा है। उसका कर्तव्य क्या है? मालिक के प्रति वफादार

होना। उसे काम ऐसा करना चाहिये जिसे दूसरे लोग गड़बड़ न कर सकें। उसे ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिये जिससे उसके मालिक का नुकसान हो। एक सजग आदमी को जिस तरह दूसरे का ध्यान रखना चाहिये उतना ही ख्याल हमें दूसरों का रखना चाहिये। मालिक के स्रोतों को प्रभावित करने की सीमा तक हमें दूसरों को सलाह देने में उदार नहीं होना चाहिये। लोगों को तुम्हारी पोजीसन का फायदा नहीं उठाना चाहिये। अगर वे ऐसा करते हैं तो वे वास्तविक प्रयत्नकर्ता नहीं हैं। तुम जो मिशन के लिये कर रहे हो वह भी एक प्रकार का कर्तव्य है।

मुझे राबर्ट कोच का एक पत्र मिला है जिसकी एक प्रति संलग्न कर रहा हूँ। अपने पिछले पत्र में उन्होंने यह राय जाहिर की थी कि वे कुछ समय बाद काम शुरु करेगे।

मैंने तुम्हारे माध्यम से २७ अगस्त को इलेक्ट्रिक मोटर सेट का एक आर्डर कोयम्बटूर के किसी निर्माता को दिया है। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें वह पत्र मिल गया होगा और तुमने उसके अनुरुप काम भी कर दिया होगा। मोटरसाईकिल एक्सीडेन्ट में रायजादा की कालर बोन टूट गयी है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

२० सितम्बर १९६८

परम आदरणीय मालिक,

आपका १५ तारीख का लिखा हुआ पत्र कल मिला। इसके लिये आपको धन्यबाद! मैंने आपकी सलाह पर ध्यान दिया है। विरुधनगर के श्री पी. के. वेंकटेशन वहाँ से आने के बाद मुझसे मिले थे। आपका दर्शन पाकर और आपसे एक स्पेशल सिटिंग पाकर वे बहुत खुश हैं। आज सुबह वे वापस विरुधनगर चले गये। मैंने श्री कोच और श्री पोरे को एक पत्र लिखा है जिसकी एक प्रति आपको भेज रहा हूँ।

इलेक्ट्रिक मोटर सेट का आर्डर कोयम्बटूर के मेरे एक मित्र ने दिया है। आज ही मैंने उसे याद दिलाया है कि वह इस काम को तुरंत करे। वह दयालुतापूर्वक सहमत हो गया है। पूरा सेट हमें लागत मूल्य पर ही मिल जायेगा। मुझे उम्मीद है कि इसकी कीमत रु.७५०/-

से अधिक नहीं होगी। सेल्स टैक्स में अल्प बचत को देखते हुये मैंने उन्हें निर्देश दिया है कि वे सामान को सीधे शाहजहाँपुर भेजें।

हमें यह जानकर काफी दु:ख हुआ है कि एक्सीडेन्ट में भाई रायजादा की कालर बोन टूट गयी है। हम उनके जल्दी स्वस्थ होने की कामना करते हैं।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

ॐ तत्सत्

गायत्री
११/ई, नार्थ स्ट्रीट
श्री रामनगर
मद्रास-१८
२९ सितम्बर १९६८

परम प्रिय एवं परम आदरणीय मालिक,

कुछ दिन पहले मैंने आपको एक पत्र लिखा था। मुझे पूरा विश्वास है कि यह आपको मिल गया होगा। मैं आपके द्वारा लिखे गये पिछले पत्र पर मनन करता रहा हूँ-खासकर पत्र के उस वाक्य पर जिसमें आपने लिखा है कि ***किसी को अपनी राय इतनी आसानी से नहीं देनी चाहिये कि आपके मालिक के स्रोतों पर बहुत अधिक जोर पड़े।*** आप अगर इस वाक्य को और अधिक स्पष्ट करें तो मुझे बहुत खुशी होगी।

डा. वरदाचारी ने मुझे बताया है कि जब कोई उच्चतर कार्य करता है तो निम्नतर कार्य यानी सांसारिक कार्य स्वत: ही हो जाते हैं। मैं इस पर आपकी टिप्पणी चाहता हूँ।

मेरी कम्पनी ने विरुधनगर में एक कम्पनी खरीदी है जो मदुरै से दक्षिण में ३० मील की दूरी पर है। मुझे इसकी देखभाल के लिये मदुरै स्थानान्तरित किया जा रहा है। वहाँ मुझे एक घर लेकर कम से कम ६ महीने तक वहाँ रहना होगा। मुझे अपने सामान्य कार्य को भी साथ-साथ देखना होगा इसलिये बहुत यात्रा करनी पड़ेगी। यह मालिक की इच्छा है इसलिये मैं इसका पालन करने को प्रस्तुत हूँ। चूँकि मदुरै का मेरा रहना निश्चित अवधि के लिये नहीं है इसलिये मदुरै में मैं अकेले ही रहूँगा। सौ. सुलोचना, चि. कृष्णा और पिताजी मद्रास में ही

रहेंगे। मुझे उम्मीद है कि अक्टूबर के अंत तक एक घर की तलाश करके मैं मदुरै चला जाऊँगा। मेरी आपसे प्रार्थना है कि मैं चाहे जहाँ रहूँ, आप मुझे काम करने के लिये आवश्यक शक्ति और साहस प्रदान करें। मेरी प्रार्थना है कि आपकी इच्छा मेरी इच्छा बन जाये, मेरे सारे कार्यों को आपकी इच्छा से ही दिशा मिले और मैं केवल आपकी शक्ति से ही जीवित रहूँ। मेरा विश्वास कभी-कभी मुझे डरा देता है। इसके होते हुये भी मैं भयमुक्त नहीं हूँ। अकेले होने का भय मुझे हमेशा परेशान करता है और यह मेरी प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है। मेरी प्रार्थना है कि कृपापूर्वक मुझे सारे भयों से आप मुक्त कर दें। भय से मुक्त होने की मेरी बड़ी उत्कण्ठा है और मैं इसके लिये आपसे प्रार्थना करता हूँ।

मैं मालिक को अपनी माँ की मुक्ति के लिये की गयीअपनी प्रार्थना के बारे में याद दिलाता हूँ।

दिव्य प्रेम और आशीर्वाद के लिये,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
५ नवम्बर १९६८

परम आदरणीय मालिक,

अभी-अभी मैं दक्षिण के दौरे से लौटा हूँ और वहाँ के संबंध में अपनी रिपोर्ट आपको भेज रहा हूँ। आशा करता हूँ कि मेरा पिछला पत्र आपको मिल गया होगा जिसमें मैंने सूचना दी थी कि मैं हर महीने में १५ दिन मदुरै में रहूँगा। मुझे वहाँ एक ऐसा घर मिल गया है जिसमें दो व्यक्तियों के रहने के लिये सारी आवश्यक सुविधायें हैं। औपचारिक रूप से १५ तारीख की रेलगाड़ी द्वारा मैं वहाँ जाऊँगा और इस महीने की १७ तारीख से नये घर में रहना शुरु कर दूँगा। मुझे आशा है कि दक्षिण की आपकी यात्रा में आपकी दिव्य उपस्थिति मेरे इस घर पर कृपा करेगी। मैंने यह योजना इसी आधार पर बनायी है। मेरी राय में जब मैं यहाँ हूँ तो पिछली बार की तरह आपका किसी सार्वजनिक स्थान पर रुकना जरूरी नहीं होना चाहिये।

मिशन का काम करने के लिये तीन लोगों को अन्तरित अनुमति प्रदान करने की मैं संस्तुति कर रहा हूँ :

- मि. एस. सेथंरत्नम्, मदुरै, जिन्हें आपने पहले ही स्वीकार कर लिया है।
- मदुरै के ही श्री बी. के. राजगोपाल, जिनका चित्र शाहजहाँपुर के मदुरै अलबम में है। पिछली बार आपने इनकी बहुत तारीफ की थी। इनकी संस्तुति मैं इसलिये भी कर रहा हूँ चूँकि इनका स्थानान्तरण बंगलोर हो गया है। ये अब मैसूर प्रान्त में बहुत यात्रा करेंगे और आँध्र प्रदेश के रेशम व्यापार के लिये मशहूर जिलों में भी जायेंगे। ये रंगाई के विशेषज्ञ हैं। प्रिफेक्ट के रूप में इनकी यात्रा का लाभ मिशन को जरूर मिलेगा। आपके प्रति इनकी भक्ति पर कोई सवाल नहीं खड़ा कर सकता और जिस काम को करने के लिये मिशन की स्थापना की गयी है उस काम को करने में इनके लगन पर भी कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता। आपके बंगलोर प्रवास के दौरान ये आपसे मिलेंगे। मेरी राय में तभी आपके लिये इनको अन्तरिम अनुमति प्रदान करना सम्भव होगा।
- मि. के. नवनायन, विरुधनगर। इन्हें अगर आप स्वीकार करें तो आपकी यात्रा के दौरान इन्हें भी अनुमति दी जा सकती है। इनका चित्र भी शाहजहाँपुर के विरुधनगर अलबम में है।

अभी कुछ दिन पहले जब मैं दौरे से लौट रहा था, मैंने तिरुपति में डा. वरदाचारी से मुलाकात की थी। वैसे तो वे ठीक हैं लेकिन उनकी शारीरिक अवस्था अच्छी नहीं है। आँखों से वे बिल्कुल लाचार हैं और बिल्कुल पढ़ नहीं पा रहे हैं। वैसे वे काफी खुश और प्रसन्न हैं।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

पुनश्च : मुझे आशा है कि आपके आगमन पर मैं विजयवाड़ा में आपका दिव्य दर्शन कर पाऊँगा और फिर आपके साथ हैदराबाद भी चल पाऊँगा। इसके बाद मैं मदुरै लौट आऊँगा और आशा करता हूँ कि फिर आपसे तिरुपति में मिलूँगा और आपके साथ मद्रास चलूँगा। आशा है कि आप इसकी अनुमति मुझे प्रदान करेंगे।

मदुरै
१९ नवम्बर १९६८

परम आदरणीय मालिक,

आशा करता हूँ कि आपकी दिल्ली की यात्रा आरामदेह रही होगी। आपको आराम मिला होगा और आपकी सेहत भी अच्छी होगी। उम्मीद है कि श्री सुन्दर, श्रीमती सुन्दर और उनके बच्चे भी कुशल होंगे।

मैंने आपसे विजयवाड़ा में मिलने का वादा किया था लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में मुझे भय है कि ऐसा कर पाना मेरे लिये सम्भव नहीं होगा। इसलिये मैं आपके आगमन के दिन हैदराबाद में आपसे मिलने की योजना बना रहा हूँ। यह पत्र मैं आपको अपने कार्यक्रम में परिवर्तन की सूचना देने और विजयवाड़ा में आपका दिव्य दर्शन कर पाने में अपनी अक्षमता के लिये माफी माँगने के लिहाज से लिख रहा हूँ। अब मैं १ दिसम्बर को हैदराबाद पहुँचूँगा और ४ को मद्रास के लिये रवाना हो जाऊँगा। फिर मैं १२ को आपसे तिरुपति में मिलने की आशा करता हूँ और फिर आपके साथ त्रिचि तक चलने की आशा करता हूँ।

मैं पिछले शनिवार को यानी १६ को मदुरै आया हूँ और अपने नये घर में धीरे-धीरे व्यवस्थित होने की कोशिश कर रहा हूँ। सौ. सुलोचना और चि. कृष्णा यहाँ आये थे लेकिन वे रविवार को मद्रास लौट गये। पिताजी यहाँ हैं और वे सोमवार यानी २५ तक यहीं रहेंगे। यहाँ काम ज्यादा नहीं है इसलिये मुझे बहुत आराम मिल रहा है। जीवन काफी शान्त है। लेकिन मेरे लिये यह एक असामान्य बात है! मिशन का काम अभी मुझे शुरु करना है।

मैं आपसे हैदराबाद में मिलने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

सप्रेम प्रणाम,

सेवा में :
द्वारा श्री सुन्दर
नई दिल्ली

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

೧೯೩೯

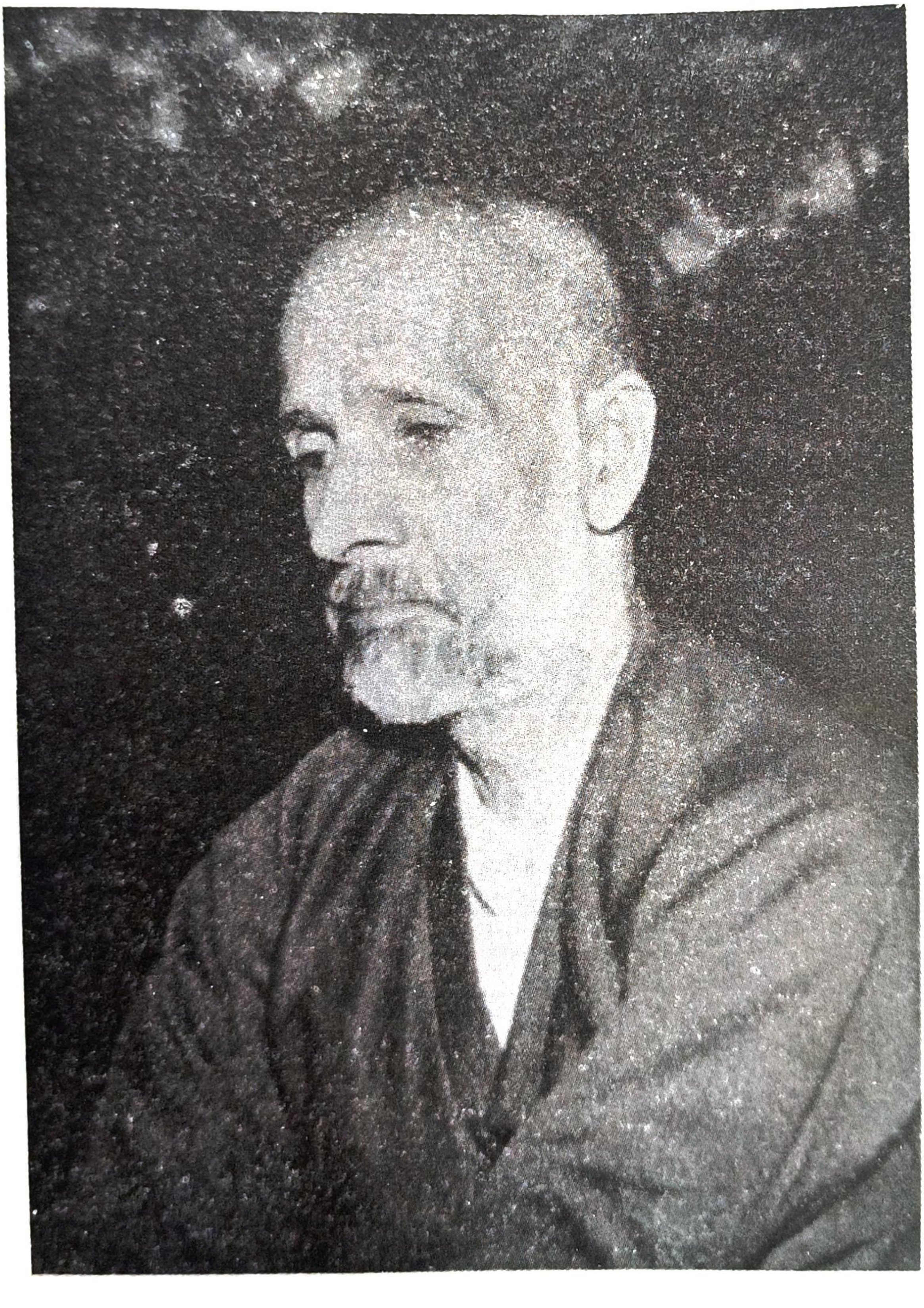

६ जनवरी १९६९

पूज्य मालिक,

मुझे आशा है कि आपकी शाहजहाँपुर तक की यात्रा आरामदेह रही होगी। मुझे इस बात का भी पूरा भरोसा है कि नागपुर का आपका प्रवास नागपुरवासियों के लिये काफी उपयोगी रहा होगा। मैं कोयम्बटूर गया था। वहाँ मैंने श्री जी. सी. गणेशन को बताया कि पम्प और मोटरसेट अभी तक शाहजहाँपुर में नहीं मिला है। श्रीकृष्ण टंडन द्वारा भेजे गये पोस्टकार्ड से मुझे यह सूचना मिली थी। मैंने मदुरै से एक टेलिग्राम भी भेजा है :

कोयम्बटूर के बिल का सामान मिलने तक भुगतान न करें।

पार्थसारथी

जब तक सामान मिल नहीं जाता बिल अदा करने की जरूरत नहीं है। श्री गणेशन दिल्ली में इसका पता लगा रहे हैं। अगर सामान नहीं मिल पाता तो डुप्लिकेट सेट बनाकर शाहजहाँपुर भेजा जायेगा। मुझे उम्मीद है कि मूल सेट जल्दी ही हमारे मिशन का रास्ता पा जायेगा।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

शाहजहाँपुर
११ जनवरी १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हें यह सूचना देते हुये मुझे हार्दिक दु:ख है कि चि. उमेश चार्टर्ड एकाउन्टेन्सी की परीक्षा में फिर अनुत्तीर्ण हो गये। यह उनका अंतिम अवसर था। वे भ्रमित हैं तथा सेन्ट्रल आर्म्ड सर्विस में डी.एस.पी. के पद पर चीन सीमा पर जाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं ऐसा नहीं होने देना चाहता। उन्हें अपने छोटे भाई सर्वेश से बहुत प्यार है। वे सर्वेश को मेडिसिन में भेजना चाहते हैं। यह तभी सम्भव है जब वे खूब पैसा अर्जित करें। इसके लिये वे किसी भी खतरे का सामना करने को तैयार हैं। वे इस नौकरी के लिये जोर दे रहे हैं। इस नौकरी में उन्हें रहने और खाने की मुफ्त व्यवस्था के साथ ६५० रुपये मिलेंगे। जहाँ तक सम्भव हो हमें उन्हें अच्छे वेतन पर नौकरी दिलाने की व्यवस्था

करनी चाहिये। वे आज होटल के कमरे और खर्चे का भुगतान करने के लिये दिल्ली जा रहे हैं। शाहजहाँपुर में आजकल ठंढक काफी है। यह अगले कुछ दिनों में कम हो जायेगी।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

१५ जनवरी १९६९

परम आदरणीय मालिक,

११ तारीख का लिखा हुआ आपका पत्र मिला। हम चि. उमेश की परीक्षा के परिणाम का इन्तजार ही कर रहे थे कि हमें आपके पत्र से यह दु:खद समाचार मिला कि इस मौके पर भी वे फेल हो गये। यह और भी दु:खद है कि यह उनका अंतिम अवसर था। जब से यह सूचना मिली है कस्तूरी बहन भी बहुत परेशान हैं।

कुछ समय तो लगेगा लेकिन मैं उन्हें कहीं काम में लगाने की पूरी कोशिश करूँगा। दिल्ली से आते ही कृपया उनके पूरे व्यक्तिगत विवरण जैसे आयु, योग्यतायें, अध्ययन के स्थान आदि लिख कर उन्हें मेरे पास भेजने के लिये कहिये। काम के लिये इन विवरणों की जरूरत होगी।

मैं शाहजहाँपुर स्टेट बैंक पर देय १०००/- का एक डी.डी., जिसका नम्बर एल.ए.०९२४४८ है, भेज रहा हूँ। मुझे इसकी रसीद चाहिये।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मदुरै
२८ जनवरी १९६९

परम आदरणीय मालिक,

आशा करता हूँ कि मेरा पिछला प्त्र आपको समय से मिल गया होगा। उम्मीद करता हूँ कि सदा की तरह इस बार भी बसंतपंचमी का उत्सव सफल रहा होगा और इस बार संख्या भी सर्वाधिक रही होगी। मुझे नहीं मालूम कि साल दर साल बढ़ रहे अभ्यासियों की व्यवस्था कैसे की जायेगी। यह महान मालिक की कृपा है कि उनकी कृपा के दिव्य

प्रवाह से मानवता का इतना बड़ा समूह आज आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर पा रहा है। इस साल उत्सव में शामिल न हो पाने का मुझे बहुत अफसोस है। बहुत सारी बाधायें थीं। श्री जी.रामकृष्णन ने, जो फैक्ट्री के प्रमुख थे, इस्तीफा दे दिया। वे लम्बे, गोरे शरीर वाले व्यक्ति हैं और हमारे विरुधनगर केन्द्र के अभ्यासी भी हैं। अपने प्रवास के दौरान आपने उनके यहाँ दोपहर का खाना खाया था। वे हमारी फैक्ट्री के मुख्य कार्यपालक थे। विविध कारणों से उन्होंने इस कम्पनी से अपना नाता तोड़ने का फेसला किया। उनके नौकरी छोड़ने से हमारी कम्पनी को काफी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। जो चीज हम बनाते हैं, उसी चीज को बनाने के लिये उन्होंने एक नयी कम्पनी खोलने का फै.सला किया है। हमारी कम्पनी को कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ेगा इसलिये हमारी कम्पनी का प्रबंधन कुछ ज्यादा व्यस्त है। उत्सव में मेरी अनुपस्थिति का यह खास कारण था। आखिरी क्षण तक मैं यह आशा लगाये रहा कि अंतिम समय में कुछ ऐसा जरूर हो जायेगा कि मैं शाहजहाँपुर जाने में सफल हो जाऊँगा लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

मोदीनगर जाते समय मैंने बहन कस्तूरी से भी वादा किया था कि मैं किसी भी तरह वहाँ जरूर आऊँगा लेकिन यह सम्भव नहीं हो पाया चूँकि प्रबंधन ने आज श्री रामकृष्णन को उनके दायित्वों से मुक्त करने का फैसला कर लिया था।

चि. कृष्णा की कुछ दिन की छुट्टियाँ थीं इसलिये मैं सौ सुलोचना और चि. कृष्णा को अपने साथ यहीं ले आया था। वे रविवार २ फरवरी तक यहाँ रुककर वापस मद्रास चले जायेंगे। मुझे अभी कुछ दिन और यहाँ रुकना पड़ेगा।

बहन कस्तूरी के मद्रास प्रवास से हमलोगों को बहुत लाभ हुआ। प्रिय मालिक! आपकी अविरल कृपा को हम कभी भी कैसे वापस कर पायेंगे? मैं जो भी प्राप्त कर रहा हूँ, वह तो अनन्त है। इसके बदले में मैं आपको क्या दे सकता हूँ? मैं अपना कमजोर स्वर जो मैं दे सकता हूँ, उसे भी मैं आपको नहीं दे पाता। दिव्य के अलावा और कौन ऐसा है जो इतनी छोटी सी चीज के लिये इतना कुछ दे सके? और इस पर भी *स्व* के द्वारा खुद ही सन्देह प्रकट होता है। इससे कैसे बचें? अपनी सीमित सीमाओं में ही हम कैसे दिव्य बनें? हम जैसे भी हैं उसमें रहते हुये उस परम सत्ता के लिये कैसे प्रयत्न करें और कैसे उस तक पहुँचें? निश्चित रूप से आप हमें इसके लिये तैयार करने का प्रयास कर

रहे हैं लेकिन हमारी चाल इतनी धीमी है और अपने बारे में हम इतने अनिश्चित हैं कि जिन चीजों को हमने अपनी गर्दन के इर्द-गिर्द लपेट रखा है, उन अत्यन्त छोटी और अर्थहीन चीजों के बारे में हमें भय और सन्देह बना रहता है। सबसे दु:खद बात तो यह है कि हम इन सारी चीजों को इच्छापूर्वक करते हैं। मानव अस्तित्व के इस दलदल से बाहर निकाल लाने वाली इस अकेली चीज का हम निषेध कर देते हैं। मालिक! आपके पास कितना असीम धैर्य और प्रेम है कि इन सब कमियों के बावजूद भी आप साधारण और तुच्छ मानवों को यह देते रहते हैं? अगर हम आपके हृदय से नि:सृत प्रवाह में से कुछ भी ग्रहण कर पाये तो हम नश्वर अस्तित्व की परेशानियों से बहुत जल्दी ही मुक्त हो जायेंगे।

मेरी प्रार्थना है कि मैं उस ईश्वरीय प्रेम और कृपा के योग्य बनूँ, जिससे मैं प्रतिदिन आपके और निकट आ सकूँ और अंतत: इसी जीवन में आपसे एकत्व स्थापित कर सकूँ। अपने संपूर्ण हृदय और आत्मा के साथ मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि मेरे दिव्य मालिक अपने अनन्त प्रेम और दया से ऐसा होने की स्वीकृति प्रदान करें।

दिव्य चरण-कमलों में मेरा नमन!

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ८३/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२१ फरवरी १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

आज मैंने मेसर्स मौली एण्ड सन्स, कोयम्बटूर को इलेक्ट्रिक मोटर का पैसा भेज दिया है। मोटर का इलेक्ट्रिक कनेक्सन तीन दिन पहले हो गया था और मोटर ठीक काम कर रही है। रियायती दर पर इतना अच्छा सेट देने के लिये मैं कम्पनी के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ। कम्पनी का बहुत-बहुत आभार और तुम्हें भी आध्यात्मिक कुशलता का आशीर्वाद! तुम्होरे पिताजी मेरे साथ रहकर बहुत खुश थे। मैंने उनकी पहुँच का रास्ता साफ कर दिया है। वैसे मैंने यह पहले भी किया था लेकिन मुझे फिर इस बार यह करना पड़ा। मेरी इच्छा है कि मैं उन्हें जल्दी से जल्दी सेन्ट्रल रीजन में खींच लूँ। कृपया मुझे यह लिखो कि तुम्हारी माँ की मृत्यु कब हुई थी। मैं मोटे तौर पर उनकी

मृत्यु का वर्ष जानना चाहता हूँ। जब मैं पूरी तरह इस बात से निश्चिन्त हो जाऊँगा कि उन्होंने कहीं जन्म नहीं लिया है तभी उनके ऊपर काम शुरु करूँगा।

तुम जिस नौकरी के लिये कोशिश कर रहे हो, उसके लिये चि. उमेश अध्ययन और प्रतीक्षा कर रहे हैं। दिल्ली में कोकाकोला कम्पनी में ५५० रुपये वेतन का प्रस्ताव था लेकिन कस्तूरी ने उन्हें वहाँ जाने से रोक दिया और दक्षिण में नौकरी का इन्तजार करने का निर्देश दिया। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि बहू के स्वास्थ्य के लिये कुछ करूँ लेकिन उससे उसकी बीमारी के संदर्भ में पूछने में झिझक होती है।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : संलग्न पत्र अपने पिताजी को दे देना। यह उनसे संबंधित है।

२८ फरवरी १९६९

परम आदरणीय एवं परमप्रिय मालिक,

२१ तारीख के आपके प्रेमपूर्ण पत्र के लिये आपका आभारी हूँ। मुझे खुशी है कि आखिरकार मौली मोटर पहुँच गयी और पूरी तरह संतोषजनक साबित हुई। वे सलाह देंगे कि उनके द्वारा भेजी गयी दूसरी मोटर का हमें क्या करना है। मैं भी उन्हें लिखूँगा कि इस संबंध में वे तत्काल निर्णय लें।

हाँ, आपके पवित्र चरण-कमलों में मेरे पिताजी का प्रवास उनके लिये बहुत ही लाभदायक और प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहा है। यह केवल आपकी उदार कृपा है। बरना कोई आदमी अपने खुद के प्रयास से ऐसी कृपा पाने के लिये क्या कर सकता है? मेरे हिसाब से तो वह कुछ नहीं कर सकता। कृपा तगड़ी चाहिये और जब यह किसी पर उतरती है तब उसी का महत्व होता है।

मेरी माँ का नाम जानकी था और उनकी मृत्यु मई या जून १९३३ में हुई थी। एक बच्ची को जन्म देने के ११ दिन बाद उनकी मृत्यु हो गयी थी। बाद में बच्ची भी ३ साल की उम्र में खत्म हो गयी। मेरी माँ की मृत्यु मदुरै से ७० मील दक्षिण टूटिकोरन नामक स्थान पर हुई थी। आप उनका मामला अपने हाथ में ले रहे हैं, इसके लिये मैं आपका आभारी हूँ।

सौ. सुलोचना को मासिक धर्म संबंधी परेशानी लम्बे समय से है। इधर उसकी गर्दन के आस-पास दाहिनी ओर की खाल पर तेज जलन महसूस होती है और उसमें से गाढ़ा रंगहीन द्रव भी रिसता है। इधर कुछ समय से यह रुका हुआ है। उमापति मुदालियर नाम के एक होम्योमैथी चिकित्सक से, जो बहन कस्तूरी का इलाज कर रहे हैं, इनका भी इलाज चल रहा है। उनकी राय में खाल संबंधी यह बीमारी भी गर्भाशय संबंधी पुरानी बीमारी से ही संबंधित है। चि. कृष्णा के जन्म के बाद उसके दो छोटे-छोटे ऑपरेशन भी हुये लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। जब भी वह बीमारी से उठती है, चिड़चिड़ी और अशान्त हो जाती है। उसके पैरों में भी उसे इधर कुछ दर्द रहने लगा है। हम प्रार्थना करते हैं कि आपकी दिव्य और दयापूर्ण कृपा से सब कुछ जल्दी ही ठीक हो जायेगा।

चि. उमेश के द्वारा भेजे गये सारे विवरण मैंने अपनी ग्रुप ऑफ कम्पनीज के मुख्य लेखाकार मि. के. कुप्पुस्वामी को दे दिये हैं। वे सहजमार्ग का अभ्यास भी कर रहे हैं। उन्होंने वादा किया है कि वे जल्दी ही चि. उमेश को किसी अच्छे पद पर लगा देंगे। वे उन्हें जल्दबाजी में कहीं नहीं लगाना चाहते चूँकि ऐसा करना उनके भविष्य के लिये अच्छा नहीं होगा। उनकी सलाह है कि किसी अच्छी फर्म में सचमुच अच्छी नौकरी पाने के लिय थोड़ा इन्तजार करना अच्छे और स्थिर भविष्य के लिये अच्छा होगा। मैं इस मामले पर निगाह रखूँगा और घटने वाली गतिविधियों से आपको अवगत कराता रहूँगा।

अपने पिताजी के माध्यम से आपके द्वारा मुझे ट्रांसमिट किये गये उत्साह के लिये मैं आपका आभारी हूँ। डा. वरदाचारी ने मुझे बताया है कि अब मैं पर-ब्रह्माण्ड मंडल में पहुँच गया हूँ। मुझे अपना मानने के लिये मेरे मालिक! मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप चाहे अस्तित्व के किसी धरातल पर कहीं भी हों, मैं आपसे कभी भी अलग न होऊँ। मैं प्रगति और अवस्थाओं के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैं आपसे कभी समाप्त न होने वाले दिव्य एकाकार के लिये प्रार्थना कर रहा हूँ।

आपके चरण-कमलों में मेरी भक्ति, प्रेम और मेरा प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

३१ मार्च १९६९

पूज्य मालिक,

आपके दौरे के समय जब मि. पोरे मद्रास में थे, उन्होंने अपने एक दोस्त से आपके व्यक्तिगत प्रयोग के लिये रोटर टैबलेट का एक डिब्बा भेजने का निवेदन किया था।

आपको यह बताते हुये खुशी हो रही है कि कल ही वह डिब्बा यहाँ मिला है, जिसे यहाँ शायद सी मेल से भेजा गया है। मैं आज इसे ठीक से पैक कराकर रजिस्टर्ड पार्सले से आपके पास भेज रहा हूँ। आशा है कि एक हफ्ते में यह आपके पास पहुँच जायेगा। मिलते ही कृपया मुझे सूचित कीजियेगा।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

सी.सी. मि. आन्द्रे पोरे

प्रिय श्री पोरे,

इसे मि. एस. निकोलस, ४ स्कवायर, डिसन्यूटिज, पेरिस-XV ने भेजा है। कृपया उन्हें सूचित कीजिये कि उनके कृपापूर्ण कार्य की आभारपूर्ण प्रशंसा की जाती है। पार्सल २३ दिसम्बर १९६८ को भेजा गया और यह २९ मार्च १९६९ को मद्रास पहुँचा।

शुभकामनाओं सहित,

आपका
पार्थसारथी

मद्रास
२१ अप्रिल १९६९

परम आदरणीय मालिक,

हमने आज श्री उमेश को टी.टी.के. एण्ड कं. के मुख्य लेखाकार श्री के. कुप्पुस्वामी के निवेदन पर एक इन्टरव्यू की कॉल भेजी है। श्री के. कुप्पुस्वामी ने मुझे बताया है कि उनके एक बहुत अच्छी पोस्ट पर लग जाने की सम्भावना है। श्री उमेश १० दिन रुकने की तैयारी के साथ जितनी जल्दी मद्रास आ सकें उतना अच्छा है। अगर वे टेलिग्राम से अपने आने की तारीख की सूचना मुझे भेज दें तो

हम उन्हें स्टेशन पर रिसीव करके घर लाने और जितना सम्भव हो सकेगा आराम देने की कोशिश करेंगे।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

१ मई १९६९

परम आदरणीय और परमप्रिय मालिक,

आपके पवित्र चरणों में मेरा प्रणाम!

आपकी कृपा से यहाँ सब कुशल है। मैंने आपको कल ही चि. उमेश के बारे में लिखा है। उन्होंने भी आपको एक पत्र लिखा है। आपकी कृपा और दया से वे टी.टी.एण्ड कं., मद्रास में नियुक्ति पा गये हैं। उन्होंने आपको पूरे विवरण भेजे ही होंगे। वे अगले तीन महीने प्रशिक्षण पर रहेंगे। उनका स्थायी होना इन तीन महीनों में उनके द्वारा किये गये काम तथा अपने से बरिष्ठ लोगों को प्रभावित करने की उनकी क्षमता पर निर्भर है। मेरी प्रार्थना है कि नयी नियुक्ति में उन्हें सफलता हासिल हो।

मालिक! मैं आपको अपने बारे में कुछ बताना चाहता हूँ। मैं इन दिनों बहुधा अनिर्णय की स्थिति में रहता हूँ-कैसे काम करूँ? इसका फैसला नहीं कर पाता। कई बार बहुत छोटी बात जैसे दौरे की तारीख निश्चित करना भी मेरे लिये मुश्किल हो जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि उपस्थित परिस्थिति में व्यक्तिगत इच्छा का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये। पहले मैं बहुत सक्रिय रहता था लेकिन इसी सोच के कारण अब मैं कई बार निष्क्रिय रह जाता हूँ। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि मैं इस विचार की वजह से निष्क्रिय हो गया हूँ या डर गया हूँ या निर्णय लेने में आलस्य करने लगा हूँ। कृपया इसे समझने में मेरी मदद कीजिये। मैं जितनी यात्रायें पहले करता था, उतनी अब नहीं कर पाता। मैं सोचने लगा हूँ कि चीजें मालिक की इच्छा के अनुरुप ही विकसित होती हैं और होंगी और मुझे जहाँ तक सम्भव हो इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। मुझे इसमें पूरा भरोसा भी है। लेकिन मेरी उलझन यह है कि मैं आलस्य या डर की वजह से कहीं निष्क्रिय न हो जाऊँ और इस विचार का बहाना बना दूँ। मैं आपसे पथ-प्रदर्शन के लिये प्रार्थना करता हूँ। मेरी दूसरी परेशानी है-मेरे मन में बराबर

काम के विचार की उपस्थिति की। लेकिन कोई भौतिक गड़बड़ी नहीं है, यह भाव केवल विचार में है। इस विषय में भी मुझे आपकी मदद की जरूरत है। अब तो मेरा पूरा जीवन ही आपके नियंत्रण और पथ-प्रदर्शन में है। मैं इन चीजों को आपको लिखने में हिचकता हूँ लेकिन जो चीज मुझे परेशान करती है, उसे आपकी जानकारी में लाना मेरा फर्ज है। इसलिये मैं इन बातों को आपको लिख रहा हूँ।

मैं आपके दर्शन के लिये आपसे प्रार्थना करता रहा हूँ लेकिन अभी तक आप तक पहुँचने की अनुमति नहीं पा सका हूँ। ऐसा लगता है कि आपके जन्मदिन पर भी मैं आपका दर्शन नहीं कर पाऊँगा। इस अवसर के लिये मेरी आपसे प्रार्थना है कि अपना सारा जीवन मुझे आपको सौंपने की अनुमति प्रदान करें। मेरे पास जो कुछ भी है, वह केवल आपकी असीम दया का परिणाम है और इसलिये वह आपका ही है। इसलिये मैं आपको क्या दे सकता हूँ। जिस तरह एक छोटा बच्चा जिद्द करता है उसी तरह मैं अपना जीवन सहित सब कुछ आपको समर्पित करने की जिद्द करता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि आप अपनी दयालुता और अपने दिव्य प्रेम से इसे स्वीकार कर लें। मेरी यह भी प्रार्थना है कि आप भौतिक जगत में मानवता के कल्याण और उत्थान के लिये सदा-सदा उपलब्ध रहें। आपके अपने स्व के भौतिक प्रकटीकरण का लाभ सबको मिले और मेरी जिन्दगी में भी ऐसा श्रेष्ठ समय आये जब मुझे यह जानने की अनुमति मिले कि आप अपनी वास्तविक प्रकृति और स्व में है। मैं आपसे इसकी कामना और प्रार्थना करता हूँ।

आपके चरण-कमलों में मेरा प्रेमपूर्ण नमन!

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ४१५/एस.आर.सी.एम./६९
शाहजहाँपुर

६ मई १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा १ मई का लिखा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मुझे उमेश द्वारा लिखा एक विस्तृत पत्र भी प्राप्त हुआ। यह तुम्हारा काम है कि मैं आज उसे इस पद पर देख रहा हूँ। अगर मैं यह लिखूँ कि इस काम के लिये

मैं तुम्हारा आभारी हूँ तो यह उचित नहीं होगा। अगर बेटा या छोटा भाई माता-पिता या बड़े भाई के लिये कोई अच्छा काम करता है तो उन्हें उसके लिये प्रार्थना करनी चाहिये। इसलिये मैं तुम्हारे दीर्घायु, समृद्धि और आध्यात्मिक सफलता की प्रार्थना करता हूँ। लेकिन अभी भी तुम्हें मेरे लिये बहुत कुछ करना है। अब मैं बहुत आलसी हो गया हूँ और जीवन के प्रति मुझमें कोई आकर्षण या रुचि नहीं रह गयी है। न केवल सांसारिक मामलों को बल्कि आत्मा से संबंधित मामलों को भी अब मैं मालिक पर छोड़ देता हूँ। इन चीजों को दूसरे लोग भी मेरे लिये कर सकते हैं। मैं यह नहीं कहता कि यह मालिक की इच्छा के अनुरुप ही हुआ है। लेकिन जिस तरह यह हुआ है उसकी पूरी जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूँ। बहुत सारे शब्द व्यर्थ में लिखने के बाद अब मैं सही निर्णय पर आता हूँ। साक्षात्कार के विन्दु पर आदमी सामान्यतया आलसी हो जाता है क्योंकि वह ऐसी जगह पर रहना चाहता है जहाँ कोई गतिविधि नहीं है। ऐसे मामले में आदमी को इस बात के लिये होशियार होना चाहिये कि कहीं यह आलस्य इतना प्रभावशाली न हो जाय कि काम का नुकसान हो जाय। ***आलस्य आत्मा का जीवन है और गतिविधि अहंकार का। दोनों में संतुलन होना चाहिये।*** अगर तुम आलसी हो रहे हो तो इससे कम कठिनाई है लेकिन अगर इससे नुकसान हो रहा है तो कठिनाई अधिक है। सामान्यतया आलस्य तब होता है जब स्वास्थ्य ठीक नहीं होता।

आलस्य और अन्य चीजों के बारे में जो तुम चाहते हो, मैं उसके लिये प्रार्थना करूँगा। किसी को उस सीमा तक आलसी नहीं होना चाहिये कि नुकसान होने लगे। अपनी इच्छा का थोड़ा सा प्रयोग करो, चीजें वैसी ही होंगी, जैसा तुम चाहोगे।

तुम्हारी आध्यात्मिक पहुँच की सारी जिम्मेदारी मेरी है। तुम जानते ही हो कि तुम्हें और चि. नारायणा को मैं पश्चिम में और यहाँ काम करने के लिये तैयार कर रहा हूँ। कई बार मैं तुम्हारी अवस्था का अध्ययन करता रहता हूँ। और अगर स्पर्श जरूरी होता है तो जरूर करता हूँ। जब तक यह पत्र तुम्हारे पास पहुँचेगा, तुम अपनी अवस्था में नयापन महसूस करोगे। मैंने तुम्हारी माँ का मामला अपने हाथ में ले लिया है लेकिन मैं नहीं जानता कि मैं इसे धीरे-धीरे क्यों कर रहा हूँ। शायद अभी भी मैं उनके बारे में बहुत सारी चीजों को जानना चाहता हूँ। उनकी आदतें बहुत सामान्य थीं और वे बहुत अच्छे स्वभाव की

महिला थीं। अगर मैं ठीक से अध्ययन कर पा रहा हूँ तो निश्चित रूप से वे मालिक की कृपा पाने के काबिल हैं। यह काम केवल कुछ मिनटों का है। तुम्हारे पिताजी ने जो भी चाहा, उन्हें वह मिला। इससे वे बहुत खुश होंगे लेकिन अभी भी पाने को बहुत कुछ बाकी है चूँकि यहाँ अन्त नहीं है।

अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो और उतने स्वस्थ तो जरूर रहो जितनी तुम्हारे उम्र की माँग है। किसी ने मुझे बताया कि तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत खराब है। इससे मैं बहुत चिन्तित हूँ। सुबह सूरज के निकलने से पहले बिना काफी या कुछ लिये हुये एक मील टहलो-कभी-कभी लम्बे अन्तराल के बाद। मैं तुम्हारा आलस्य दूर कर दूँगा और तुम्हारा स्वास्थ्य भी सुधरेगा। टहलने के बाद तुम काफी या चाय या और कुछ ले सकते हो।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : जब तुम बुरे विचारों से घिरे रहते हो तो उस समय यह सोचो कि ये विचार तुम्हारे न होकर मेरे हैं।

नं. सी ५४८/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२४ जून १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैं एक पखवारे तक आसाम में था। तिनसुकिया आसाम के समृद्धतम स्थानों में है लेकिन वहाँ के लोगों को बहुत परेशानी होगी। अगर उनमें से कोई आता है और उसके व्यापार में नुकसान होता है तो वह पद्धति को छोड़ देगा। एक रात मेरे पास कुछ लोग बैठे हुये थे तो मैंने उन्हें साफ-साफ बता दिया कि व्यापार धन का वादा करता है, मोक्ष का नहीं; जबकि योग मोक्ष का वादा करता है, धन का नहीं।

जब मैं वहाँ था, मैंने तुम्हारे *पर-ब्रह्माण्ड मंडल* को देखा और इसे लगभग निष्क्रिय पाया। मैंने वहीं से यह बात तुम्हें लिखनी चाही थी लेकिन नहीं लिखी। कारण सोचने पर पता चला कि यह किसी चिन्ता की वजह से था, जिसे हटाया जाना चाहिये। अगर तुम इस मामले में ज्यादा कुछ न कर पाओ तो मैं तुम्हारी मदद करूँगा। मैं इसे सक्रिय

करना चाहता हूँ जिसके लिये तैयारी जरूरी है। तुम अपना काम करो और दूसरी बातों को मेरे लिये छोड़ दो।

मद्रास सेन्टर के प्रशिक्षक से मेरा कुछ पत्राचार चल रहा है जिससे तुम्हें या तुम्हारे पिताजी को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिये। प्रेसिडेन्ट के रूप में मैं अपने कर्तब्यों का निर्वाह कर रहा हूँ और दूसरे मामलों में मैं मालिक का सेवक हूँ और मानवता के उत्थान के लिये कार्य कर रहा हूँ। तुम्होरे लिये मैं तुम्हारे परिवार के सदस्यों में से एक हूँ। कृपया उमेश को बता देना कि मैंने मद्रास के पते पर ५३ रुपये का ड्राफ्ट रिडाइरेक्ट कर दिया है। मुझे कुछ कागज कॉस्ट और एकाउन्टेन्सी के भी मिले थे, उन्हें भी मैंने उसी के साथ रिडाइरेक्ट कर दिया है।

सभी ठीक से काम कर रहे हैं। बच्चों को प्यार,

तुत्हारा स्नेही
रामचन्द्र

कैम्प मदुरै
४ जुलाई १९६९

परम श्रद्धेय एवं परमप्रिय मालिक,

आपके द्वारा शाहजहाँपुर से २४ तारीख को लिखे गये पत्र के लिये मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। यह ऐसे समय पर आया जब मैं बहुत दुःखी था और मुझे पथ-प्रदर्शन और सांत्वना की जरूरत थी। आपके मद्रास से जाने के बाद की कई घटनाओं से मैं बहुत परेशान और भ्रमित था। आप उन्हें जानते ही हैं इसलिये मैं उनके बारे में कुछ भी नहीं कह रहा हूँ। बहुत सी बातें हुई लेकिन इसमें किसी की गलती नहीं है। सब कुछ अनभिज्ञतावश हुआ। आपके मद्रास प्रवास के दौरान घटी घटनाओं के लिये हम सभी आपके उदार प्रेम और क्षमा की प्रार्थना करते हैं। आप तो प्रेमस्वरूप हैं इसलिये मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि अपने अनन्त और निर्बाध प्रेम से अपने बच्चों द्वारा हुई गलती को क्षमा कर दें।

मैंने आसाम के बारे में आपकी टिप्पणी पर गौर किया है। ऐसी ही कठिनाईयाँ यहाँ दक्षिण में भी हैं। पृथ्वी पर विशिष्ट व्यक्तित्व के होने का लाभ पीड़ित मानवता तभी उठा सकती है जब मालिक का

अनन्त प्रेम और उसकी कृपा इसका रास्ता खोले। मेरे मालिक! मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप यह रास्ता सबके लिये ख़ोलें।

मैंने अपनी अवस्था के बारे में भी आपके द्वारा की गयी टिप्पणी पर गौर किया है। जबसे आप मद्रास से गये तभी से मेरा दिल बहुत भारी और दुःखी हो गया था। जीवन इतना बोझिल हो गया था कि उसे सहन करना कठिन हो गया था। मुझमें बहुत सी बातों के लिये बड़ी मात्रा में चिन्ता पैदा हो गयी थी। मैं इसके कारणों के बारे में भी भ्रमित हूँ। मैं पहले जितना ध्यान का अभ्यास करता था, वह अभ्यास करना भी मुश्किल हो गया था और भी बहुत सी गड़बड़ियाँ आ गयी थीं। मेरा मन बहुत परेशान और भ्रांति में फँसा हुआ था। शुक्रवार यानी २० जून को आपका पत्र पाते ही मैं अपने को बेहतर महसूस करने लगा। लेकिन असली बदलाव रविवार यानी २९ जून को आया। पूरे दिन मैं ऐसा महसूस करता रहा जैसे मैं हवा में तैर रहा हूँ। पूरा दिन खुशी से गुनगुनाते हुये बीता। बहुत लम्बे समय से मैंने इतनी खुशी महसूस नहीं की थी। रविवार की शाम को मेरे पिताजी ने हममें से कुछ को एक सिटिंग दी और बहुत दिन बाद सिटिंग के दौरान मैंने अपने आपको शान्ति में पूरी तरह डूबा हुआ महसूस किया।

अगले दिन मेरे पिताजी ने हममें से कुछ को फिर से एक सिटिंग दी। इस बार भी मैंने काफी शान्त महसूस की लेकिन पिछले दिन जैसी नहीं। मेरे पिताजी ने बाद में मुझे बताया कि ***अगर तुम बाबूजी को कोई खत लिखो तो उसमें इस बात का जिक्र करो कि मैंने कल एक चक्कर देखा, जिसके निचले तल पर तुम विद्यमान थे और वहाँ गति थी, स्थिरता नहीं। आज मैंने देखा कि चक्कर तेजी से सर्पिल गति से घूम रहा है और तुम चक्कर के शीर्ष पर पहुँच गये हो।*** रविवार के मेरे खुद के अनुभव और मेरे पिताजी के द्वारा बतायी गयी बातों के मिश्रित भावों से मुझे पूरा विश्वास है कि अभ्यासी के प्रति आपकी ईश्वरीय और असीम कृपा तथा प्यार से गति शुरु हो चुकी है।

चि. उमेश को शाहजहाँपुर से आपके द्वारा भेजे गये रिडाइरेक्टेड मनीऑर्डर और कागज प्राप्त हो गये हैं। वे ठीक हैं। मैं समझता हूँ कि उनको काम पसन्द आ रहा है और वे इसमें अच्छा करेंगे। सम्भवतः उन्हें दक्षिण के खानपान से तालमेल बैठाने में अभी दिक्कत हो रही है। पिताजी कुछ दिनों के लिये कुडप्पा गये हैं और

सम्भवत: वे कल वापस मद्रास लौटेंगे। मुझे उम्मीद है कि मैं ९ को वापस लौटूँगा।

सौ. सुलोचना चिन्तातुर होकर अपनी अवस्था के बारे में पूछ रही है और मैंने उससे आपसे पूछकर बताने का वादा किया है। चि. कृष्णा का स्वास्थ्य भी पहले से बेहतर है। इस प्रकार पिछले महीने से हम सभी अच्छे हैं।

इस महीने के मध्य में मेरे दिल्ली जाने की सम्भावना है और मुझे उम्मीद है कि इस यात्रा में मैं शाहजहाँपुर में आपका दर्शन और आशीर्वाद ग्रहण कर पाऊँगा।

सदैव आपके चरण-कमलों में,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ५८९/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
ग्राम : सहजमार्ग
पोस्ट मार्क्ड : ७ जुलाई १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मुझे विश्वास है कि तुमने मेरा पत्र देखा होगा। मैं महसूस करता हूँ कि तुम अब स्वयं में खुश हो। पिछली बार जैसी सलाह तुमने दी थी उसके अनुसार संक्षिप्त टेलिग्राफिक पंजीकृत पता मुझे मिल गया है। यह इस प्रकार है : सहजमार्ग, शाहजहाँपुर।

आदमी जैसे-जैसे आध्यात्मिक रूप से तरक्की करता जाता है, उसकी इच्छाशक्ति भी विकसित होती जाती है। इच्छा का बल एक तलवार की तरह है जिसका उपयोग अपनी सुरक्षा के लिये किया जा सकता है। इसके विपरीत इसका उपयोग मित्रों के खिलाफ भी किया जा सकता है। जहाँ पहले प्रकार का उपयोग उचित है वहीं दूसर प्रकार का उपयोग अनुचित। अगर आदमी किसी भी प्रकार से चिन्ता में है तो आध्यात्मिक शक्ति खुद उसमें स्थूलता बनाना शुरु कर देती है। मुझे खुशी है कि तुम्हारी चिन्ता अब दूर हो गयी है। धीरे-धीरे मैं तुममें पर-ब्रह्माण्ड मंडल की स्थिति को सक्रिय कर रहा हूँ और साथ ही तुम्हारी चिन्ताओं के प्रभाव को भी दूर कर रहा हूँ।

मुझे उमेश से पता चला है कि तुम इस महीने में उत्तर भारत का भ्रमण करोगे। कृपया अपने साथ राजयोग के दिव्य दर्शन को छापने

के लिये तैयार किये गये ब्लाक को लेते आओ। मुझे हिन्दी संस्करण के लिये इसकी जरूरत है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
१४ अगस्त १९६९

मेरे परमप्रिय मालिक,

आपके दिव्य चरणों में मेरा प्रणाम!

आशा है कि आप कुशल होंगे और इस विशाल परिवार के सभी सदस्य भी आपकी कृपा से सकुशल होंगे। दौरे से लौटने के बाद मैं काफी अस्वस्थ रहा हूँ इसलिये पूरे हफ्ते ऑफिस नहीं गया हूँ। मेरी नाक के दोनों छिद्र बन्द हैं जिसकी वजह से मुझे मुँह से श्वॉस लेना पड़ रहा है। सिर के दाहिनी ओर और गर्दन के भी दाहिनी ओर तेज दर्द है। आज मैं काफी आराम महसूस कर रहा हूँ। पिछले सोमवार को मुझे मदुरै जाना था लेकिन इसी वजह से मुझे अपनी यात्रा रद्द करनी पड़ी। अब मैं अगले हफ्ते जा सकता हूँ।

पिताजी १३ तारीख को वहाँ पहुँच गये होंगे। चि. उमेश से मुझे मालूम हुआ कि आप १६ से कुछ दिनों के लिये दिल्ली जा रहे हैं। आशा करता हूँ कि आपके दिव्य चरणों में प्रवास करके पिताजी खूब लाभान्वित होंगे और अपने विदेश प्रवास के दौरान मिशन का काम करके सुरक्षित और प्रसन्नतापूर्वक वापस लौटेंगे।

इस बार मुझे बिल्कुल कोई चिन्ता नहीं है। अन्यथा अतीत में पिताजी ने जब कभी घर छोड़ा, उनके लौट आने तक मैं बहुत परेशान और उदास रहा करता था। लेकिन इस बार मैं पा रहा हूँ कि मुझे किसी प्रकार की परेशानी का अनुभव नहीं हो रहा है।यह सब मालिक की कृपा है। मुझमें इतना सुधार आया है कि मुझमें आये परिवर्तन की सीमा और उसके क्षेत्र पर ध्यान देने पर विस्मित हुये बिना नहीं रहा जा सकता। मेरे प्रिय और श्रद्धेय मालिक! आपकी कृपा के बिना यह सब अकल्पनीय है। अब मुझे वेद वाक्य *त्वमेव माता च पिता त्वमेव* का अर्थ समझ में आया है। इसका अर्थ है: *तुम्हीं मेरे सर्वस्व हो। मुझे जन्म देने वाले पिता से बढ़कर आप ही मेरे पिता हैं, आप मेरी माँ*

हैं, आप ही मेरे लिये हर चीज हैं। मैं अब इसे महसूस करने लगा हूँ और मैं जान गया हूँ कि यह सत्य है। आपके बिना मेरे पास कुछ नहीं है और आपमें मेरा वह सब कुछ है, जो किसी के पास नहीं हो सकता। मेरी निरन्तर आपसे यही प्रार्थना है कि मैं जहाँ कहीं भी होऊँ, आपके साथ ही होऊँ। मैं आपसे किसी प्रकार की दूरी को सहन नहीं कर सकता। कृपा करके मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार कर लीजिये कि आप सदा-सदा अनन्त तक अपने दिव्य चरणों का प्रेम और स्वर्ग पाने की अनुमति मुझे देंगे। मेरे मालिक! मेरी आपसे यही एकमात्र और निरन्तर प्रार्थना है।

चि. उमेश का यहाँ और कार्यालय में दोनों जगहों पर मन लगने लगा है। किसी काम की शुरुआत करने में एक आम आदमी को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, वह उसे भी करना पड़ रहा है लेकिन मेरा विश्वास है कि आपके उदार पथ-प्रदर्शन से सब ठीक हो जायेगा। कार्यालय में मेरे लिये भी बहुत सारी परेशानियाँ हैं लेकिन मेरा विश्वास है कि अंत में सब कुछ ठीक हो जायेगा। कभी-कभी मैं दूसरों के साथ अधीर और क्रोधित हो उठता हूँ लेकिन बाद में मुझे खुद पर ग्लानि होती है कि मैंने अपने अंदर उत्तेजना और क्रोध को स्थान दिया। बहुत सारे इम्तहान हैं इसलिये मेरी आपसे निरन्तर प्रार्थना है कि आप मुझे निरन्तर सही रास्ता दिखायें और भटकने से बचायें।

सौ सुलोचना आपके चरण-कमलों में अपनी प्रार्थना अर्पित करती है। चि कृष्णा स्वस्थ है। स्कूल के उसके कुछ परिणाम चिन्ता पैदा करने वाले हैं लेकिन अभी वह छोटा है और लापरवाह भी। आपकी कृपा से सब कुछ आपकी इच्छा के अनुरुप ही होगा। हम आपकी दिव्य इच्छा के अधीन हैं और मेरी सदैव आपसे यही प्रार्थना है कि हमारी छोटी इच्छायें हमारी निम्न तुच्छ मानवीय वासनाओं के साथ हस्तक्षेप न करें। जो आप चाहें वैसा ही हो।

आपके चरण-कमलों में मेरा नमन!

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ८७५/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२३ सितम्बर १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे मामा के दु:खद निधन के बारे में सुनकर बहुत दु:ख हुआ। उनकी आत्मा को शान्ति मिले। ईश्वर ने अब तुम्हें इस स्थिति तक ला दिया है कि तुम स्वयं उस आत्मा को शान्ति देने का काम कर सकते हो।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

सीतापुर
१८ अक्टूबर १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैंने १६ अक्टूबर से जो दौरा शुरु किया है उसकी समाप्ति २३ अक्टूबर को होगी। दिल्ली के एक सज्जन चि. उमेश की शादी के लिये उसका एक नवीनतम चित्र चाहते हैं। अगर तुम उसकी एक अच्छी फोटो बनवाकर शाहजहाँपुर के पते पर भेज दो तो मुझे बहुत खुशी होगी। तुम्हारे पिताजी पश्चिम से मेरे साथ पत्र-व्यवहार करते रहे हैं। वे वहाँ मिशन का भी कुछ काम कर रहे हैं जो काबिले तारीफ है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
१९ अक्टूबर १९६९

परम प्रिय मालिक,

यह सुनकर कि आपकी तबियत ठीक नहीं है और पिछले एक महीने से आप भयंकर पेट दर्द से पीड़ित हैं, हम सभी चिन्तित हैं। हम उम्मीद करते हैं कि अब आप पहले की अपेक्षा बेहतर होंगे और आपका यह दौरा आपके स्वास्थ्य पर अनुचित प्रभाव डालने वाला नहीं रहा होगा। हम सब आपकी कृपा से ठीक हैं। पिताजी अपने इस दौरे में बहुत खुश लग रहे हैं और अब वे सम्भवत: दिसम्बर के मध्य में ही वापस लौटेंगे। हमें उनके ज्यादा पत्र नहीं मिले हैं और मुझे लन्दन के

बाद के उनके कार्यक्रम के बारे में कोई सूचना नहीं है, जहाँ वे दो दिन पहले पहुँच गये होंगे।

मालिक! आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप अपनी बीमारी मुझे दे दीजिये। आप हमें इतना कुछ तो देते हैं। क्या आप मुझे यह नहीं दे सकते? मैं आपके चरण-कमलों में अपना संपूर्ण जीवन न्यौछावर करता हूँ। मेरा अस्तित्व किसी के काम का नहीं है जबकि आपकी उपस्थिति संपूर्ण ब्रह्माण्ड के लिये आवश्यक है। मेरी प्रार्थना है कि आप मेरा प्रेम स्वीकार करें और मुझे उस प्रेम का पाठ पढ़ायें जो हमें आपसे करना चाहिये। मैं बिल्डिंग फण्ड के लिये एक चेक भेज रहा हूँ और आपसे प्रार्थना है कि आप इसे स्वीकार कर लें। आपकी उदार कृपा से ही हमारा अस्तित्व है और और जो पहले से ही आपका है उसे मैं फिर से आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।

मेरा दिल आपकी कृपापूर्ण उपस्थिति के भौतिक दर्शन के लिये बेचैन है। आपसे मेरी प्रार्थना है कि आप मुझे जल्दी से जल्दी अपने पास आने की अनुमति प्रदान करें।

चि. उमेशसकुशल हैं और उनकी परीक्षा अच्छी हुई है। जनवरी १९७० में होने वाली अपनी कॉस्ट एकाउन्टेन्सी की परीक्षा की तैयारी में व्यस्त हैं। मालिक की अनन्त कृपा से ही उन्हें परीक्षा में सफलता मिलेगी और मैं इसके लिये मालिक से प्रार्थना करता हूँ।

प्रिय मालिक को हम सब का प्रेम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

संलग्नक :
डी.डी. नं. सी बी ३९३७३९ रु.२५००/- (एस.आर.सी.एम.)

नं. सी१०१७/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
३१ अक्टूबर १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

उमेश के दो चित्रों के साथ तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। बिल्डिंग के लिये २५०० रुपये का एक ड्राफ्ट भी प्राप्त हुआ। गृह मंत्रालय के एक अधिकारी ने उमेश से अपनी पुत्री के विवाह के लिये बातचीत शुरु की है। मेरा मन उमेश से पूछे बिना उसकी शादी करने का है बशर्ते उसे कोई आपत्ति न हो। मैं उसे अच्छी वधू दूँगा। मुझे आज ही कन्या

की फोटो मिली है। उसके चेहरे की बनावट अच्छी है और मेरे नजदीकी रिश्तेदारों में से एक ने बताया है कि वह गौर वर्ण की है।

दिल्ली में मेरी बेटी छाया उस अधिकारी से मिलेगी। मैं भी ९ नवम्बर १९६९ को बिल्डिंग के प्लान को अंतिम रूप देने के लिये कुछ दिनों के लिये दिल्ली जाऊँगा।

श्री राजगोपालाचारी पत्र-व्यवहार द्वारा मुझसे जुड़े हुये हैं। वे अच्छा काम कर रहे हैं और हर देश की जरूरत के अनुसार उन्हें शक्ति मिलती जाती है।

तुम्हारे पिछले पत्र ने मुझे विचलित कर दिया है। तुम्हारी ऊँची पहुँच के लिये जो कुछ भी मैं कर सकता हूँ, मुझे जरूर करना चाहिये। अगर तुम मुझसे यहाँ मिलने के लिये इतना बेचैन हो तो मैं भी तुमसे यहाँ मिलने के लिये उतना ही बेचैन हूँ। अगर तुम्हें मौका मिले तो तुम उस समय यहाँ आओ जिस समय पोरे भी यहाँ हो।

उमेश ने मुझसे बीमा के बारे में पूछा है। इन बातों को मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ। श्री पोरे के पत्र की एक प्रति मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। वे अपने अनुभवों के बारे में कुछ बोलना चाहते हैं। अगर उनकी ऐसी इच्छा हो तो दक्षिण भारत की यात्रा के समय कृपा करके इसका प्रबन्ध कर देना।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : तुम्हारे पिताजी ने डेन्मार्क से मुझे एक पत्र लिखा है कि श्री पोरे रोम से वायुयान द्वारा २२ नवम्बर १९६९ को भारत पहुँचेंगे। मैंने पोरे को लिखा है कि कार्यक्रम निश्चित हो जाने पर वे अपने आगमन के समय और तारीख की सूचना मुझे दें।

१० नवम्बर १९६९

परम आदरणीय मालिक,

आपके निर्देशानुसार श्री पोरे शाहजहाँपुर से ९ या १० दिसम्बर या कुछ पहले चल देंगे। बसंतपंचमी फरवरी के पहले हफ्ते में है इसलिये अगर १५ दिसम्बर १९६९ से १५ जनवरी १९७० तक एक महीने के लिये आप मद्रास की एक ट्रिप कर सकें तो हम बहुत खुश

होंगे। ३१ दिसम्बर १९६९ से श्री पोरे के भी एक हफ्ते के लिये मद्रास में ही होने की सम्भावना है।

मैं यह प्रस्ताव आपको उत्तर प्रदेश की कड़ाके की ठंढ से बचाने के लिये रख रहा हूँ। अगर आप इससे सहमत हों तो मैं दिल्ली से मद्रास और वापसी मद्रास से दिल्ली की हवाई यात्रा के टिकट की व्यवस्था करूँ। हम सबको यह आशा है कि मालिक इस प्रस्ताव से सहमत होंगे और हम आपके द्वारा इसकी पुष्टि की प्रतीक्षा करते हैं।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

प्रतिलिपि :
कुमारी कस्तूरी चतुर्वेदी, मोदीनगर

नं. सी ११२७/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
११ दिसम्बर १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे टेलिग्राम से पता चला कि श्री राबर्ट कोच नहीं आ रहे हैं। इटली के अभ्यासी मि. पावला सम्भवत: १० जनवरी को आना चाहते हैं। वे पायलट हैं। तुम्हारे पिताजी ने मुझे सूचित किया है कि यह इटैलियन जरूर आयेगा और मुझे उसे लिखना चाहिये। अगर वह शाहजहाँपुर आता है तो मुझे यहाँ उसकी प्रतीक्षा करनी होगी। श्री पोरे ने एक फ्रेंच महिला को मद्रास बुलाया है। मैं नहीं जानता कि अँग्रेज और उसकी पत्नी भारत आ पायेंगे या नहीं। भारत की यात्रा शुरु करने के लिये उन्हें चिकित्सक की अनुमति की जरूरत होगी।

मुझे विश्वास है कि तुम्हारे यहाँ एक हफ्ते के प्रवास से तुम्हें बहुत फायदा हुआ है। अगर तुम इतना समय हर साल मुझे दो तो मुझे बहुत खुशी होगी। मैंने तुम्हारे पिताजी को उनके पत्र का जबाब बगदाद भेज दिया है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : मैंने अभी-अभी रोम में श्री पावला को मद्रास आने के निमंत्रण के साथ एक पत्र लिखा है। अगर वे जनवरी १९७० के पहले हफ्ते में मद्रास आने के इच्छुक नहीं हैं तो वे यहाँ शाहजहाँपुर आने की

अपनी निश्चित तारीख और समय हमें लिख भेजें। अगर तुम्हारे पास कोई पत्र आता है तो मुझे टेलिग्राफिक सूचना दो।

नं. सी ११३२/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
१३ दिसम्बर १९६९

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मुझे विश्वास है कि तुम्हें मेरा पत्र मिल गया होगा। मैं इटली के मि. पावला के पत्र की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। पता नहीं कि वे मेरे निवेदन के अनुसार मद्रास आयेंगे या शाहजहाँपुर। तुम्हारे पिताजी ने लिखा है कि वे एक पायलट के रूप में १० जनवरी को भारत आयेंगे। अगर मि. पावला मेरे मद्रास प्रवास के दौरान वहाँ आने का निर्णय लेते हैं तो मेरा ३० दिसम्बर को वहाँ होना निश्चित है। अगर वे सीधे शाहजहाँपुर आते हैं तो उन दिनों मेरा यहाँ रहना आवश्यक होगा।

मुझे श्री राबर्ट कोच का एक पत्र मिला है जिसके अनुसार फरवरी १९७० तक आर्थिक परेशानियों के चलते वे यहाँ आने में असमर्थ हैं। सम्भक्त: गलती से उन्होंने अपने पत्र की प्रति मुझे भेजी है, जिसे मैं तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। श्री पोरे का भी मुझे एक पत्र प्राप्त हुआ है, जिसे मैं तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। अगर तुम विवरण जानते हो तो उन्हें भेज दो अन्यथा जब वे मद्रास आयें तो उन्हें दे देना।

मेरे पास पहले से एच.एम.टी. की कलाई घड़ी है, जिसे मैंने उमेश के लिये रखा है चूँकि उसकी घड़ी हमेशा खराब रहती है। उसे दूसरी घड़ी खरीदने की जरूरत नहीं है। यह काफी अच्छी है और नयी है। जब मैं मद्रास आऊँगा तो इसे लेता आऊँगा। मुझे बम्बई से भी एक ऑटोमेटिक कलाई घड़ी मिली है, जिसे मैं अपने लिये रखूँगा।

मैं तुम्हें बम्बई का पता भेजना भूल गया, जिसके अधीन मैंने वहाँ आध्यात्मिक प्रशिक्षण केन्द्र शुरु करने की इजाजत दी है और बम्बई केन्द्र के अभ्यासियों को वहाँ सत्संग करने के लिये लिखा है :

श्री बल्लभदास के. टंक
विन्सल केमिकल इन्डस्ट्रीज,
विन्सल हाऊस, कुर्ला, अँधेरी रोड,
कुर्ला, बम्बई-७२

मैं इटली से भारत आने की इच्छा रखने वाले मि. पावला का पता भी तुम्हें भेज रहा हूँ :

मि. पावला पासाक्विन्दसी
वाया बोनो कोम्पैगनी ९३
रोम, इटली

मैं यह पता इसलिये दे रहा हूँ कि अगर तुम उन्हें कुछ लिखना चाहो तो लिख सको। उसे मद्रास में तुम्हारे पते की जानकारी होनी चाहिये चूँकि मैं वहीं रुकना पसन्द करूँगा।

सभी अच्छा काम कर रहे हैं। बच्चों को प्यार।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : मुझे क्लार्क्स होटल, बनारस से भी पोरे का एक पत्र प्राप्त हुआ है। मुझे लगता है कि वह अब तक वहाँ से चल चुका होगा अन्यथा मैं उसे वहाँ पत्र भेज देता। वह अपनी हवा भरने वाली तकिया भी यहाँ भूल गया है, जिसे मैंने उसके जाने के दो दिन बाद यहाँ पाया। मद्रास आने पर मैं इसे लेता आऊँगा।

୧୯୬୦

शाहजहाँपुर
१९७०

- मिशन के संविधान की धारा ४ सी के अंतर्गत अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुये मैं वर्किंग कमिटी के निम्न सदस्यों और पदाधिकारियों को तत्काल प्रभाव से नामांकित करता हूँ :

१. श्री पी. राजगोपालाचारी, सेक्रेटरी
२. श्री जे. आर. के. रायजादा, ज्वाइंट सेक्रेटरी
३. श्री काशीराम अग्रवाल, ट्रेजरार
४. कु० कस्तूरी चतुर्वेदी (मोदीनगर)
५. डा. वी. पार्थसारथी (विजयवाड़ा)
६. श्री आर. रामचन्द्र रेड्डी (कुडप्पा)
७. श्री दयाभाई पटेल (तिनसुकिया)
८. श्री आर. पी. डिंगर (सीतापुर)
९. श्री बी. डी. महाजन (दिल्ली)
१०. श्री आर. महेन्द्रकर (हैदराबाद)
११. श्री श्रीकृष्ण टण्डन (शाहजहाँपुर)
१२. श्री एस. नारायणस्वामी (मद्रास)
१३. कु० केसर चतुर्वेदी (मोदीनगर)
१४. कु० शशि ठण्डन (इलाहाबाद)

कोई सदस्य पदेन नहीं होगा। सामान्यतया कमिटी में नामांकन तीन साल में एक बार होगा। अगर प्रेसीडेन्ट जरूरी न समझे।

संगठन संबंधी सामान्य बातें, तमिलनाडु, केरल, मैसूर, आन्ध्र और महाराष्ट्र के दक्षिणी राज्यों और विदेश की प्रशासकीय शिकायतों को सेक्रेटरी (मद्रास) को लिखा जायेगा और इसके अतिरिक्त राज्यों के केन्द्रों की शिकायतों को ज्वाइंट सेक्रेटरी (शाहजहाँपुर) को भेजा जायेगा। ये इसे या तो खुद निपटायेंगे या आपस में विचार-विमर्श करके निपटायेंगे।

शाहजहाँपुर
१९७०

- मिशन के संविधान की धारा ४ सी के अंतर्गत अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुये मैं वर्किंग कमिटी के निम्न सदस्यों और पदाधिकारियों को तत्काल प्रभाव से नामांकित करता हूँ :

१. श्री पी. राजगोपालाचारी, सेक्रेटरी
२. श्री जे. आर. के. रायजादा, ज्वाइंट सेक्रेटरी
३. श्री काशीराम अग्रवाल, ट्रेजरार
४. कु० कस्तूरी चतुर्वेदी (मोदीनगर)
५. डा. वी. पार्थसारथी (विजयवाड़ा)
६. श्री आर. रामचन्द्र रेड्डी (कुडप्पा)
७. श्री दयाभाई पटेल (तिनसुकिया)
८. श्री आर. पी. डिंगर (सीतापुर)
९. श्री बी. डी. महाजन (दिल्ली)
१०. श्री आर. महेन्द्रकर (हैदराबाद)
११. श्री श्रीकृष्ण टण्डन (शाहजहाँपुर)
१२. श्री एस. नारायणस्वामी (मद्रास)
१३. कु० केसर चतुर्वेदी (मोदीनगर)
१४. कु० शशि ठण्डन (इलाहाबाद)

कोई सदस्य पदेन नहीं होगा। सामान्यतया कमिटी में नामांकन तीन साल में एक बार होगा। अगर प्रेसीडेन्ट जरूरी न समझे।

संगठन संबंधी सामान्य बातें, तमिलनाडु, केरल, मैसूर, आन्ध्र और महाराष्ट्र के दक्षिणी राज्यों और विदेश की प्रशासकीय शिकायतों को सेक्रेटरी (मद्रास) को लिखा जायेगा और इसके अतिरिक्त राज्यों के केन्द्रों की शिकायतों को ज्वाइंट सेक्रेटरी (शाहजहाँपुर) को भेजा जायेगा। ये इसे या तो खुद निपटायेंगे या आपस में विचार-विमर्श करके निपटायेंगे।

- निम्नलिपित्र व्यक्तियों को तत्काल प्रभाव से सहजमार्ग पत्रिका का संपादक नामांकित किया जाता है :

१. डा. एस. पी. श्रीवास्तव (हिन्दी विभाग)
२. श्री सी. ए. राजगोपालाचारी (अँग्रेजी विभाग)

- निम्न व्यक्तियों से, पब्लिकेशन सब कमिटी का गठन होगा। ये लोग पुस्तकों और सहजमार्ग पत्रिका के संबंध में पब्लिकेशन डिपार्टमेण्ट के सुपरिटेन्डेन्ट को सलाह देने के लिये उत्तरदायी होंगे :

१. डा. के. सी. वरदाचारी
२. श्री एम. एल. चतुर्वेदी
३. श्री राघवेन्द्र राव (रायचूर)
४. श्री एस. ए. सारनाड
५. श्री राजेश्वरी प्रसाद
६. श्री काशीराम अग्रवाल
७. श्री एस. के. राजगोपालन
८. श्री प्रिन्सिपल लक्ष्मीशंकर (इलाहाबाद)
९. प्रो० सुरेश चन्द्रा (श्रीनगर-गढ़वाल)

श्री जे. आर. के. रायजादा पब्लिकेशन डिपार्टमेन्ट के सुपरिटेन्डेन्ट और सब कमिटी के संचालक होंगे।

- शाहजहाँपुर के मिशन कार्यालय में लिपिक का एक पद स्वीकृत किया जाता है, जो टाइपिंग और स्टेनाग्राफर का काम करेगा। यह सेक्रेटरी/ज्वाईट सेक्रेटरी के सीधे पर्यवेक्षण और आदेशों के अधीन होगा।

रामचन्द्र
अध्यक्ष

मद्रास
५ मार्च १९७०

परम पूज्य मालिक,

चि. उमेश ने मुझे बताया कि कल उन्हें आपका एक पत्र मिला है जिसमें आपने मेरे स्वास्थ्य के संबंध में अपनी चिन्ता जाहिर की है। मैं अपनी समस्यायें आपको लिखकर आपका बोझ बढ़ाना नहीं चाहता था लेकिन मुझे इस बात का दु:ख है कि मेरे सजग रहने पर भी मेरे ऑपरेशन जैसी छोटी सी बात की जानकारी भी आपको मिल ही गयी। पिछले महीने की २५ तारीख को ऑपरेशन द्वारा नाक के बायीं ओर से ५ गाँठें निकाली गयी थीं। इससे मुझे काफी आराम मिला है। बड़ी संख्या में गाँठें ऐसी जगह थीं जिनका ऑपरेशन सम्भव नहीं था इसलिये उन्हें नहीं हटाया जा सका। २५ तारीख को ऑपरेशन में १ घंटे से अधिक का समय लगा जबकि अनुमान केवल १५ मिनटों का था। सम्भवत: ऐसा बड़ी संख्या में गाँठों की मौजूदगी और बेहोशी की दवा के ओवरडोज से हुआ। मैं आधे ऑपरेशन के बाद बेहोश सा होने लगा था।

आज सुबह मैं फिर डा. से मिलने गया था। उसने वादा किया है कि गुरुवार १२ तारीख की दोपहर तक वह सारा काम पूरा कर देगा। आशा करता हूँ कि आपकी कृपा से सब कुछ कुशलतापूर्वक सम्पन्न हो जायेगा।

इस समय मैं अपनी कम्पनी में यू.के. से एक विजिटर की उम्मीद कर रहा हूँ। वे १८ तारीख से आगे अगले तीन हफ्तों के लिये यहाँ होंगे। मुझे मि. राबर्ट कोच के आगमन की कोई जानकारी नहीं है। अगर वे आते भी हैं तो मेरे लिये उनके आने पर शाहजहाँपुर आना सम्भव नहीं होगा।

घर पर सब कुशल हैं। चि. उमेश सी.ए. फाइनल की तैयारी में व्यस्त हैं। उनके विवाह के बारे में क्या प्रगति हुई? कस्तूरी बहन से यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आपका स्वास्थ्य बिल्कुल सामान्य हो गया है। हमारी प्रार्थना है कि सदा ऐसा ही रहे।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
६ मार्च १९७०

परमप्रिय मालिक,

मैं आपके चरणों में श्रद्धावनत हूँ। आप मेरे सब कुछ हो गये हैं - मेरे गुरु, मेरे पिता, मेरी माँ, मेरा सब कुछ और मेरे अस्तित्व की हर चीज - मेरी प्रार्थना है कि यह सदा ऐसा ही रहे। मैं आपके पवित्र चरणों से कभी अलग न होऊँ, आपके प्रति अपने कर्तव्यों से कभी च्युत नही होऊँ। हे ब्रह्माण्ड के सर्वशथ्तिमान स्वामी। आप पृथ्वी पर अनन्त काल तक गुरु के रूप में मेरे पथ-प्रदर्शक बने रहें और मैं आपकी सीधी भक्ति से कभी विलग न होऊँ। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मेरी इस प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करें।

मुझे आपकें उस आदेश की सत्य प्रतिलिपि प्राप्त हो गयी है जिसमें आपने मुझे मिशन का सेक्रेटरी नियुक्त किया है। मैं आपकी संतुष्टि की सीमा तक इस पद के दायित्वों के निर्वाह के लिये आपसे क्षमता और शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ। आपका दिया हुआ कार्य, आपके द्वारा उसे सम्पादित करने के लिये दी गयी शक्ति और आपकी संतुष्टि का प्यार - ऐसा मालिक किसी को कहाँ मिलेगा! आपकी पवित्र उदार कृपा और उपस्थिति के लिये सारे ब्रह्माण्ड को उल्लसित होकर गुनगुनाना चाहिये।

आपके चरण-कमलों में नत!

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी २१७/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
११ मार्च १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे टेलिग्राम से मालूम हुआ कि श्री राबर्ट कोच २० मार्च को लखनऊ-दिल्ली मेल से शाहजहाँपुर आ रहे हैं। मुझे आज उस पत्र की प्रति भी मिली है जो उन्होंने तुम्हें लिखी थी। अगर सम्भव हो तो उनके खान-पान के बारे में कि वे कब और क्या लेंगे - मुझे सूचित करो। चि. उमेश का विवाह अभी कहीं तय नहीं हुआ है। फोटो देखकर मैंने और तुमने दो लड़कियों को चुना था, जिसमें एक दिल्ली की है। तुम्हारे पिताजी ने मेरे निवेदन पर उसे देखा है और

पसन्द की है। उतनी ही अच्छी एक और लड़की मुरादाबाद की है। इसने एम.ए. किया है जबकि पहली वाली लड़की बी.काम. है। मैं १५ तारीख को लड़की देखने मुरादाबाद जाऊँगा। फिर होली के बाद दिल्ली जाऊँगा और दोनों लड़कियों का तुलनात्मक अध्ययन करके एक को चुनूँगा। मई में मैं उसकी शादी करना चाहता हूँ। कई और लड़कियों के प्रस्ताव भी हैं। दिल्ली वाली लड़की और उसके परिवार के बारे में सारी सूचनायें हैं ही। दोनों लड़कियों को देखने के बाद चुनने के लिये मैं अपनी सम्मति तुम्हें लिखकर भेजूँगा। मैं इस पत्र को भेजने की जल्दी में हूँ इसलिये तुम्हारे प्रेमपूर्ण पत्र का जबाब नहीं दे पा रहा हूँ। आज रात को मैं तुम्हारे पत्र को देखूँगा।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : अगर डा. वरदाचारी श्री राबर्ट कोच से मिलते हैं तो यह अच्छा होगा। उन्हें मद्रास में भी कुछ सिटिंग मिलनी चाहिये।

नं. सी २२१/एस.आर.सी.एम./७० **शाहजहाँपुर**
१२ मार्च १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। तुम्हारे पिछले पत्र के उत्तर में मुझे खुद से संबंधित कुछ करना पड़ेगा। अगर मैं खुद को ढूँढ़ता हूँ तो मैं उसे नहीं पाता लेकिन उसकी जगह पर कुछ तो है। वह क्या है? शायद, उन अभ्यासियों की प्रतिध्वनि जो मुझे याद करते हैं और मुझे अपना समझते हैं। यह कौन सी अवस्था है - इसे तो केवल मेरे मालिक ही बता सकते हैं। मैं न तो अपने बारे में और न ही ईश्वर के बारे में कुछ जानता हूँ। जब भी मैं इसके बारे में गहराई से सोचता हूँ तो केवल अपने मालिक को पाता हूँ और कुछ भी नहीं। अब जिज्ञासु की प्रतिध्वनि तो मालिक में सुनाई पड़ती है जो बदले में जरूरी चीज जिज्ञासु में स्थानान्तरित करती है लेकिन जिज्ञासु को इसका संरक्षण करना चाहिये और इससे विकसित होना चाहिये। ***दिल तभी दिल है जब यह ईश्वर की तरफ मुड़ जाय और आत्मा भी तभी आत्मा है जब यह अंतिम सत्य में कूद जाय।***

अब मैं तुम्हारी अवस्था पर आता हूँ। तुमने अपने पत्र में जो लिखा है, वह अवस्था **प्रपन्न** की है। ईश्वर की महानता स्थापित हो चुकी है और भक्त और भगवान का संबंध स्थापित हो चुका है।

अपने एक पत्र में तुमने लिखा है कि तुम मेरा अभाव बहुत अधिक महसूस कर रहे हो। सच कहें तो तुम्हें मेरा अभाव सबसे अधिक नहीं है बल्कि तुम मुझसे सबसे अधिक आलिंगनबद्ध हो। आजकल अधिकतर मैं तुम्हारे और डेन्मार्क की बिर्थे हॉगार्ड के विचार में निमग्न रहता हूँ। उन्हें मैंने अभी तक देखा नहीं है। मैंने उन्हें ८ मार्च को अन्तरिम अनुमति प्रदान कर दी है और उनका सर्टिफिकेट हवाई डाक से भेज दिया है। ईश्वर तुम्हारी बीमारी जल्दी ठीक करे।

आजकल मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ और अपने को उतना स्वस्थ महसूस कर रहा हूँ जितना ४ साल पहले करता था। इस समय रोज तेल-स्नान कर रहा हूँ और गाजर तथा चुकन्दर के रस का सेवन कर रहा हूँ। इस भोजन से मुझे शक्ति मिल रही है इसलिये तुम्हें भी ऐसा भोजन करने की संस्तुति कर रहा हूँ।

इंग्लैंड से एलिडिर डेविस का पत्र आया है। किसी ने अप्रिल १९७० में उसके दुर्घटनाग्रस्त होने की भविष्यवाणी की है, जिससे वह थोड़ा परेशान है और मेरी मदद चाहता है। उसने जनवरी १९७१ में भारत आने की सूचना भी दी है। मैंने उसे लिखा है कि ज्योतिषी सदा सही नहीं होते और उसमें एक वाक्य यह भी लिखा है कि वह दुर्घटना के बारे में बिल्कुल न सोचे। जब कहीं आग होती है तो चिन्गारी भी वहीं होती है।

मेरा विश्वास है कि श्री राबर्ट कोच वहाँ होंगे। उन्हें मेरा आशीर्वाद कहना। यहाँ मैं उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उन्होंने बहुत कम समय हमें दिया है।

बच्चों को प्यार। शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : मैंने अपना मन बना लिया है कि अप्रिल १९७१ में फिर से तुम्हारे पिताजी को पश्चिम में भेजूँगा। वे मेरे इस प्रस्ताव पर बहुत उदारतापूर्वक सहमत भी हो गये हैं। हमें पुस्तकें बेचनी चाहिये जिससे हमें पश्चिम जाने के लिये पैसे मिलें या कुछ और तरीकों के बारे में सोचना चाहिये।

मद्रास
१६ मार्च १९७०

परम पूज्य मालिक,

हरदोई के श्री आर. पी. सक्सेना, जो रिटायर्ड सेसन जज हैं और पिछले २५ साल से आपके परिवार के निकट संपर्क में हैं, की तरफ से श्री सुदर्शन सक्सेना नाम के एक सज्जन और उनकी पत्नी हमसे कल शाम को मिले। उन्होंने श्री आर.पी.सक्सेना की लड़कियों में से एक सौ. चित्रा के विवाह का प्रस्ताव चि. उमेश से किया है। उनके अनुसार लड़की एम.ए. है और उसे पेंटिंग की अच्छी जानकारी है, गृह-कार्य में दक्ष है लेकिन रंग साँवला है। मैंने श्रीमती सुदर्शन सक्सेना, जो श्री आर. पी. सक्सेना की संबंधी हैं, को कहा है कि वे श्री आर. पी. सक्सेना को लिखें कि वे इस संबंध में आपसे सीधे संमर्क करें। मेरा विश्वास है कि वे ऐसा करेंगे।

मुझे आपको यह बताते हुये बहुत खुशी हो रही है कि मुझे अपने उच्च अधिकारी से शाहजहाँपुर आने की अनुमति मिल गयी है और मैं हवाई जहाज से १९ तारीख को दिल्ली आ रहा हूँ। फिर श्री राबर्ट कोच के साथ कार द्वारा २० तारीख को सीधे शाहजहाँपुर पहुँचूँगा। मैं लगभग ३ दिन वहाँ रह सकूँगा।

मेरा ऑपरेशन बहुत सफल हुआ और हालाँकि मेरी बायीं नाक अभी पूरी तरह खुली नहीं है, मैं सिर-दर्द आदि से पूरी तरह अब मुक्त हूँ। पहले ऑपरेशन के दौरान ५ गाँठें हटायी गयी थीं जबकि दूसरे में १२ तारीख को ३ और गाँठें हटायी गयीं। साथ ही साइनस में छेद करके उसे भी धोया गया। आशा है कि भविष्य में कम से कम शरीर के इस भाग में कोई परेशानी नहीं होगी।

चि. उमेंश इम्तहान के लिये कड़ी मेहनत कर रहे हैं और सफलतापूर्वक सी.ए. पूरा करने के लिये पूरी तरह आशान्वित हैं।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी २५१/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर

२७ मार्च १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

आशा है तुम कुशलतापूर्वक मद्रास पहुँच गये होगे। शरीर से तुम जरूर मद्रास में हो लेकिन अपनी यादें यहाँ छोड़ गये हो। यही नहीं, मैं महसूस करता हूँ कि तुम ऐसे मेहमान थे जो मेजबान को भी अपने साथ ले गये।

श्रीमती बर्थे हॉगार्ड ने वहाँ बेचने के लिये सैकड़ों रुपये के पुस्तकों का ऑर्डर दिया है। जो पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं, वे तो समुद्री मार्ग से वहाँ भेज दी जायेंगी लेकिन जो पुस्तकें मद्रास में हैं, वे मद्रास केन्द्र के द्वारा भेजी जायेंगी। मैं अगले पत्र में तुम्हें उन पुस्तकों की सूची भेजूँगा जो मद्रास से भेजी जानी हैं।

श्री सी. ए. राजगोपालाचारी ने उमेश के लिये बम्बई की एक लड़की का प्रस्ताव भेजा है। लड़की का पिता लड़के को ५००० रुपये का नकद तोहफा देगा तथा ५००० रुपये का जेवर तथा अन्य चीजें उपहार में देगा। मैं तुम्हारे पिताजी की राय का आदर करता हूँ लेकिन मैंने पहले ही मुरादाबाद वालों को अपनी सहमति दे दी है। मैंने उन्हें लिखा है कि मुझे लड़की पसन्द है और जब आपलोग लड़का पसन्द कर लेंगे तब हम आगे बढ़ेंगे। लड़की मनोविज्ञान में द्वितीय श्रेणी में एम.ए. है, गौर वर्ण है, सुन्दर चेहरा और अच्छी लम्बाई है। मेरी ओर से दहेज का कोई सवाल नहीं है। लड़की के पिता का नाम श्री आर. एन. सक्सेना है और वे उत्तर रेलवे, मुरादाबाद में डिविजनल सिग्नल इंजीनियर हैं। ४ अप्रिल १९७० के बाद किसी दिन वे उमेश को देखने मद्रास जायेंगे। परिवार सुशिक्षित है।

मैंने श्री लक्ष्मी नरसिंहन को लिखा है कि वहाँ बिकने वाली पुस्तकों का ब्यौरा वे तब तक वहीं रखें जब तक तुम्हारे पिताजी यूरोप की यात्रा नहीं करते।

श्री सतपाल पठानकोट में मि. राबर्ट कोच से मिले थे और उन्होंने जरूरी काम भी किया।

बच्चों को प्यार। शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही

रामचन्द्र

नं. सी २५१/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२७ मार्च १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

आशा है तुम कुशलतापूर्वक मद्रास पहुँच गये होगे। शरीर से तुम जरूर मद्रास में हो लेकिन अपनी यादें यहाँ छोड़ गये हो। यही नहीं, मैं महसूस करता हूँ कि तुम ऐसे मेहमान थे जो मेजबान को भी अपने साथ ले गये।

श्रीमती बर्थे हॉगार्ड ने वहाँ बेचने के लिये सैकड़ों रुपये के पुस्तकों का ऑर्डर दिया है। जो पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं, वे तो समुद्री मार्ग से वहाँ भेज दी जायेंगी लेकिन जो पुस्तकें मद्रास में हैं, वे मद्रास केन्द्र के द्वारा भेजी जायेंगी। मैं अगले पत्र में तुम्हें उन पुस्तकों की सूची भेजूँगा जो मद्रास से भेजी जानी हैं।

श्री सी. ए. राजगोपालाचारी ने उमेश के लिये बम्बई की एक लड़की का प्रस्ताव भेजा है। लड़की का पिता लड़के को ५००० रुपये का नकद तोहफा देगा तथा ५००० रुपये का जेवर तथा अन्य चीजें उपहार में देगा। मैं तुम्हारे पिताजी की राय का आदर करता हूँ लेकिन मैंने पहले ही मुरादाबाद वालों को अपनी सहमति दे दी है। मैंने उन्हें लिखा है कि मुझे लड़की पसन्द है और जब आपलोग लड़का पसन्द कर लेंगे तब हम आगे बढ़ेंगे। लड़की मनोविज्ञान में द्वितीय श्रेणी में एम.ए. है, गौर वर्ण है, सुन्दर चेहरा और अच्छी लम्बाई है। मेरी ओर से दहेज का कोई सवाल नहीं है। लड़की के पिता का नाम श्री आर. एन. सक्सेना है और वे उत्तर रेलवे, मुरादाबाद में डिविजनल सिग्नल इंजीनियर हैं। ४ अप्रिल १९७० के बाद किसी दिन वे उमेश को देखने मद्रास जायेंगे। परिवार सुशिक्षित है।

मैंने श्री लक्ष्मी नरसिंहन को लिखा है कि वहाँ बिकने वाली पुस्तकों का ब्यौरा वे तब तक वहीं रखें जब तक तुम्हारे पिताजी यूरोप की यात्रा नहीं करते।

श्री सतपाल पठानकोट में मि. राबर्ट कोच से मिले थे और उन्होंने जरूरी काम भी किया।

बच्चों को प्यार। शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : प्रकाश की बेटी निन्नी को इण्टरमीडिएट परीक्षा में श्रेष्ठ द्वितीय श्रेणी हासिल करने की वजह से २०/- रुपये प्रतिमाह का वजीफा मिला है।

नं. सी२६१/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२९ मार्च १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

पिछले पत्र में मैंने लिखा था कि मि. आर. एन. सक्सेना ४ और १४ अप्रिल के बीच किसी दिन उमेश को देखने मद्रास जायेंगे। मुझे उम्मीद है कि वह उन दिनों दौरे पर नहीं होगा।

तुम्हारे पिताजी ने उमेश के लिये एक अच्छी लड़की का सुझाव दिया था लेकिन इन सज्जन से मैंने एक प्रकार से अपनी प्रतिबद्धता जाहिर कर दी है इसलिये दूसरे किसी प्रस्ताव के बारे में मेरे लिये विचार कर पाना अब सम्भव नहीं है। श्री राजगोपालाचारी मद्रास में ही होंगे। कृपया उन्हें इसकी सूचना दे देना।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
१ अप्रिल १९७०

मेरे परमप्रिय मालिक,

२७ मार्च का आपका प्रेमपूर्ण पत्र मिला। आपकी कृपा और आपके प्रेम से मैं कुशलतापूर्वक मद्रास पहुँच गया। रास्ते में श्री राबर्ट कोच के साथ बहन कस्तूरी से मुलाकात की। होली का दिन था इसलिये वहाँ केसर बहन भी थीं। हमलोग करीब २ घंटे वहाँ रहे।

पिताजी लौट आये हैं लेकिन कुछ निराश हैं और शायद नाखुश भी। कल उन्हें हल्का बुखार भी था। आज बेहतर हैं।

चि. उमेश को कल से ३ दिन तक कम्पनी सेक्रेटरी की परीक्षा देनी है। वे कड़ी मेहनत कर रहे हैं। मालिक! आप कृपा कीजिये कि सफल हों। हम सभी इसमें और उनके अगले चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट के इम्तहान में उनकी सफलता की प्रार्थना करते हैं।

जनवरी १९७० से उन्हें वेतन के रूप में ५३५ रुपये और भत्ते के रूप में १२५ रुपये यानी कुल ६६० रुपये मिलेंगे।

हम सब श्री आर. एन. सक्सेना की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

प्रिय मालिक! आप इतना अधिक मेरे साथ हैं फिर भी मैं आपका अभाव पाता हूँ। यह आश्चर्यजनक है। मैं दु:ख के लिये रोता हूँ और आपकी याद में प्रफुल्लित भी हूँ। यह मेरे लिये आपका महान और दिव्य प्रेम है कि मैं आनन्द के सागर को जानता हूँ।

मेरी पत्नी सुलोचना इसलिये नाराज है कि मालिक उसकी अवस्था के बारे में कुछ नहीं बताते। वह चाहती है कि आपकी कृपा के प्रवाह से वह तेजी से उन्नति करे। मैं आपसे पथ-प्रदर्शन की प्रार्थना करता हूँ।

घर पर सब कुशल है। पिताजी के आने से सब बहुत खुश हैं।

आपके पावन चरण-कमलों में,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

तार :

सहजमार्ग, शाहजहाँपुर

मुरादाबाद के श्री सक्सेना आज आये। उन्हें शादी मंजूर है। वे इसके लिये व्यक्तिगत रूप से आपको लिखेंगे।

राजगोपालाचारी

नं. सी ३५६/७/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

१ अप्रिल १९७० का लिखा तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। तुम्हारे पिताजी द्वारा भेजा गया तार जिसमें शादी तय होने की खुशखबरी थी, भी मुझे मिल गया। मैं इस बात से और अधिक खुश हूँ कि शादी तुम्हारे पिताजी के सामने तुम्हारे घर पर तय हुई।

मैं इस शादी को मई में करना चाहता था लेकिन मई का पूरा महीना बच्चों की परिक्षाओं और प्रतियोगिताओं से भरा हुआ है इसलिये अब मैं इसे जून के पहले हफ्ते में करूँगा। श्री सक्सेना मुरादाबाद वापस आने के बाद मेरे घर मुझसे मिलने आयेंगे। फिर हम दोनों मिलकर शादी की तारीख पक्की कर लेंगे।

तुम्हारी आध्यात्मिक अवस्था में झाँकने पर मुझे बेहद खुशी होती है। तुमने मुझे लिखा है कि तुम मेरा अभाव महसूस करते हो और वहाँ मुझे पाते हो। यह मेरे साथ तुम्हारे मजबूत लगाव को दर्शाता है और यह तुममें उच्चतर व्यक्तित्व के विकास का लक्षण है। जब लगता है कि हम मालिक को भूल रहे हैं तभी उसे सर्वाधिक याद भी करते हैं। जब हम इस विस्मृतिपूर्ण अस्तित्व को भी भूल जाते हैं तभी अस्तित्व की वास्तविक अवस्था में होते हैं।

मेरी बहू इसलिये नाखुश है कि मैं उसकी अवस्था नहीं बताता। जब वह यह चाहती है तो मैं इसे लिखने के लिये बाध्य हूँ लेकिन मुझे डर है कि यह सोचकर कि मैं अपने कर्तव्य निर्वाह में असफल हो रहा हूँ, मुझसे नाराज न हो जाय। आवाज तभी पैदा होती है जब हम दोनों हाथ से ताली बजाते हैं। जब हम हृदय की तीनों सतहों के बारे में विचार करते हैं तो पाते हैं कि सामने की सतह पर पृष्ठ तनाव है, बीच की सतह पर प्रकाश है और तीसरी तथा अंतिम सतह पर अन्धकार है। इन सबके बावजूद इनिसियेशन की वजह से कुछ आध्यात्मिक नशा है। मैं तुम्हें इसकी सफाई की जिम्मेदारी देता हूँ। न केवल इसकी बल्कि संपूर्ण पिण्ड प्रदेश की और फिर इन चीजों के बारे में लिखना।

श्री राबर्ट कोच ने मुझे भेजे गये एक पत्र में दलाई लामा की तारीफ करते हुये लिखा है वे एक उच्च विकसित, दयालु और शक्तिशाली व्यक्तित्व हैं। लेकिन पत्र के अन्त में उन्होंने लिखा है पूर्णरूपेण आपका। इससे यह लगता है कि वे मिशन का काम करेंगे।

मेरी दलाई लामा के बारे में ऐसी राय नहीं है। मैंने उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं देखा है अन्यथा तुम्हें उनकी अवस्था के बारे में बताता फिर भी दूर से जो देख रहा हूँ, वह तुम्हारी जानकारी के लिये लिख रहा हूँ। उनका आत्मिक क्षेत्र थोड़ा शक्तिशाली है और अग्नि के केन्द्र से एक फुटपाथ की तरह एक डोरे से जुड़ा हुआ है। फुटपाथ का रंग सफेद है। अन्य सभी क्षेत्र अंधकारपूर्ण हैं और उनमें कोई शक्ति नहीं है। लोग सोचेंगे कि मैं ऐसी महान हस्ती के बारे में अपनी राय दे रहा हूँ लेकिन यह महानता है कहाँ? वे महान हैं क्योंकि वे बौद्धों के प्रधान हैं। एक महान अस्तित्व से जुड़े हुये हैं। मैं इसे स्वीकार करता हूँ। लेकिन मेरी राय में यह महानतारहितता है।

श्रीमती बिर्थे हॉगार्ड ने जिन पुस्तकों को भेजने का आदेश किया है। उनमें से जो यहाँ थीं, वे उन्हें भेज दी गयी हैं। मद्रास से निम्न पुस्तकों को समुद्री मार्ग से भेजा जाना चाहिये।

१. इफिकेसी ऑफ राजयोग - २५

२. लेक्चर्स ऑन सहजमार्ग - डा. के. सी. वरदाचारी - २५

३. सहजमार्ग - श्री रामचन्द्रा'स न्यू दर्शन - डा. वरदाचारी - २५

मैं समझता हूँ कि अब तक वहाँ डीलक्स बाइंडिंग होने लगी होगी। कृपया उनमें से ही २५ भेजना।

४. वायस रीयल - ५०

मैंने श्रीमती बिर्थे को लिखा है कि वे डेन्मार्क में मिशन के नाम से एक खाता खोल लें और जब तक १९७१ में श्री सी. ए. राजगोपालाचारी वहाँ नहीं आते, पैसा भेजने की जरूरत नहीं है। विनिमय की कठिनाईयाँ हैं इसलिये कुछ पैसा पश्चिम में रहना चाहिये। रोम के मि. पावला का कोई पत्र अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है। मैंने उन्हें भी एक पत्र लिखा है। बेहतर होगा कि तुम भी एक पत्र उन्हें मित्र भाव से लिखो।

मुझे खुशी है कि उमेश को वेतन के रूप में ६६० रुपये मिल रहे हैं। यह तुम्हारे शुभेच्छु व्यवहार की वजह से ही सम्भव हुआ है।

उमेश एक इम्तहान में बैठा है और सी.ए. की परीक्षा में बैठने जा रहा है। तुम्हारी प्रार्थना उसे परीक्षा की सफलता में अधिक मदद देगी।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

नं. सी३७७/७/एस.आर.सी.एम./७० शाहजहाँपुर
१४ अप्रिल १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मुझे तुम्हारे आदरणीय पिताजी द्वारा लिखा एक पत्र मिला, जिसका जबाब मैंने इस पत्र के जाने के पहले दे दिया है। श्री आर. एन. सक्सेना कल मेरे पास आये थे। वे मई १९७० के अंतिम हफ्ते में शादी करना चाहते हैं। शादी सम्भवत: २३ या २४ मई को होगी। तय होने पर मैं तुम्हें अवश्य खबर करूँगा।

त्रिचनापल्ली के श्री मणि को अन्तरिम अनुमति देने की संस्तुति श्री थास्मास्वामी ने यह कहते हुये की है कि ये संघ शिक्षित लोगों में हैं और मिशन उनलोगों के बीच भी फैलेगा। मैंने श्री वीरराघवन के पत्र का जबाब दिया है। तुम उसे पढ़कर किसी उचित निष्कर्ष पर पहुँचो।

बहू को बताओ कि तुम्हारे द्वारा मैंने जो उसे लिखा है, उससे वह परेशान न हो। वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी। मैं एम. डी. जहाँगीरदार द्वारा भेजा गया पत्र भी तुम्हें भेज रहा हूँ।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
१८ अप्रिल १९७०

परमप्रिय मालिक,

मुझे आपके द्वारा भेजे गये १० और १४ अप्रिल के दोनों पत्र प्राप्त हुये। यह जानकर खुशी हुई कि चि. उमेश मई के अंतिम हफ्ते में विवाहित हो जायेंगे। आपसे निर्धारित तिथि सुनने की हम तीब्रता से प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिससे हम अपना कार्यक्रम उसके अनुसार बना सकें। चि. कृष्णा का इम्तहान आज खत्म हो रहा है। आपकी कृपा से उसने अच्छा किया है।

चि. उमेश सी.ए. के लिये सचमुच कड़ी मेहनत कर रहे हैं। वे ३० अप्रिल को मदुरै जायेंगे और वहीं रहकर ४ और ९ मई को अपनी परीक्षा देंगे। मैं उनकी सर्वोत्तम सफलता की प्रार्थना करता हूँ।

हम श्रीमती बर्थे को आपके आदेशानुसार पुस्तकें भेज देंगे।

कोपेनहेगेन में बैंक का खाता खोलने के लिये मैं समझता हूँ कि भारतीय रिजर्व बैंक से अनुमति लेना जरूरी होगा। मैं इसके बारे में पता लगाकर आपको लिखूँगा।

मदुरै के श्री जी. एस. मणि के बारे में श्री वीरराघवन और मैंने चर्चा की और महसूस किया कि अभी उन्हें आर्गनाइजर बनाना ही उपयुक्त होगा।

१५ तारीख को मेरी नाक का तीसरा ऑपरेशन हुआ जिसमें करीब ८ गाँठें हटायी गयीं। इसमें एक बहुत बड़ी थी - एक छोटे नींबू के आकार की या एक बड़े आँवले के आकार की। यह ध्यान देने की

बात थी कि मैंने किसी प्रकार के दर्द का अहसास नहीं किया। मुझे लगा कि ऑपरेशन मेरा न होकर किसी और का हो रहा है। मैं बिल्कुल आराम से खुली आँखों से सब कुछ होता हुआ देख रहा था और ऑपरेशन के दौरान डा. से बातें भी करता जा रहा था। ऑपरेशन के बाद मुझे सोने के लिये कहा गया लेकिन मैं इतने आराम से था कि मैं करीब ४ घंटे तक पढ़ता रहा। कोई प्रतिक्रिया नहीं हो रही थी। सिर-दर्द भी नहीं हुआ। यह सब मालिक! आपकी कृपा और आपका प्रेम है।

बहू के बारे में आपके द्वारा की गयी टिप्पणियों पर मैंने गौर किया है और उसके अनुरुप कार्य करूँगा।

मैंने जहाँगीरदार के पत्र का जबाब दे दिया है और उसकी एक प्रति श्री रायजादा को भेज दी है। मैंने आज उन्हें फिर लिखा है, जिसकी एक प्रति श्री रायजादा को भी भेजी जा रही है। मैं चाहता हूँ कि पत्र ठीक से लिखें जायें और इसमें आपकी स्वीकृति भी रहे। अपने दूसरे पत्र में श्री जहाँगीरदार को लिखते समय मैंने संगठन के सभी स्तरों पर अनुशासन की जरूरत के बारे में लिखा है ताकि एक जैसी व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके। मुझे विश्वास है कि मालिक इससे सहमत होंगे।

अपनी अवस्था के बारे में मैं बिल्कुल नहीं सोचता। मैं अपने मालिक में रहने की कोशिश करता हूँ और यही मेरे लिये सब कुछ है। मैंने वॉयस रीयल में एक चीज पढ़ी, जिसने मेरे दिल को आन्तरिक गहराई तक स्पर्श किया। वह है : ***मैंने यह कभी नहीं सोचा कि वह सब जो मेरे मालिक का है, मेरा नहीं है। कितना उदार, कितना श्रेष्ठ और महान है यह प्यार!*** इसी कारण अब मैं यह महसूस करने की कोशिश करता हूँ कि वह सब जो मेरे मालिक का है, मेरा भी है। सारी परेशानियाँ चली गयीं, सारे तनाव दूर हो गये। यह मेरे दिव्य और प्रेमपूर्ण मालिक की महिमा है।

घर पर मालिक की कृपा से सब कुशल हैं। चि. उमेश यह जानना चाहते हैं कि वे कुछ पैसा अभी भेज दें या अपने साथ लेकर आयें। ६०० से ७५० रुपये तक वे कपड़ों पर खर्च करना चाहते हैं। कृपया इसकी स्वीकृति दे दीजिये।

मेरे मालिक! आपको मेरा विनम्र प्रेम!

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

पुनश्च : मुझे जनवरी मेंबहुत बड़ी वेतनवृद्धि मिली है। इसके लिये भी मालिक! आपको धन्यबाद।

मद्रास
२२ अप्रिल १९७०

पूज्य मालिक,

हम सभी चि. उमेश की शादी की तारीख का बेसब्री से इन्तजार कर रहे हैं। हमारे घर से उत्तर करीब १ फर्लांग दूर एक फ्लैट ले लिया गया है, जिसका पता है : १२, सिनोटैफ रोड। यह प्रथम तल का फ्लैट है, जिसमें २०'x२०' का एक हॉल, १६'x१२' का एक बेडरुम, १२'x१२' का दूसरा बेडरुम, १२'x१०' की बड़ी रसोई और शौचालय तथा स्नानघर है। बालकनी को मिलाकर फ्लैट का क्षेत्रफल करीब १००० वर्गफुट है जबकि किराये के हिसाब से यह काफी सस्ता है - केवल २०० रुपये प्रतिमाह। किराया पहली मई से देना होगा। आपकी कृपा और आपके आशीर्वाद से युवा जोड़ा इस फ्लैट में समृद्ध और खुशहाल जीवन जियेगा।

३५० रुपये का एक मैरिज सूट सिलने के लिये दे दिया गया है, जो एक हफ्ते में तैयार हो जायेगा। कुछ और पैन्ट तथा सर्ट भी बनने को दे रखा है।

मैं बहू और कृष्णा के साथ २५ अप्रिल को दक्षिणी जिलों के दौरे पर मदुरै जा रहा हूँ। १० मई के आस-पास लौटूँगा। १५ या १८ मई को हम दिल्ली चलने की उम्मीद रखते हैं, जिससे हम मुरादाबाद शादी में शामिल होने के बाद आपके पास शाहजहाँपुर में एक हफ्ते रह सकें।

आपके प्रेम से हम सब ठीक हैं।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ४०६/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२४ अप्रिल १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे दोनों प्रेमपूर्ण पत्र मिले। चि. उमेश की विवाह की तारीख २३ मई तय हुई है और लगन, जिसे हम तिलक कहते हैं, की

तारीख १९ मई १९७० है। उमेश यहाँ १८ मई तक आ जायें क्योंकि लगन में उनकी जरूरत होगी। मैंने एक पत्र विवाह की तारीख की खबर के साथ तुम्हारे पिताजी को भी भेजी है। मुझे उमेश द्वारा पैसा भेजे जाने की कोई जरूरत नहीं है। वह इसे वहीं जमा करके रखे। उसे २ सूट अपने भावी श्वसुर से भी मिलेंगे। सर्वेश और दूसरों के लिये मैं यहाँ प्रबंध करूँगा।

मैंने बीमा सहित रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा पुस्तकें डेन्मार्क भेजी थीं। यह बम्बई से वापस आ गया। इस पर रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया का पी.पी. नम्बर चाहिये जिससे साबित हो सके कि कोई विदेशी विनिमय का मामला नहीं है। मैं परेशान हो गया। मैंने पोस्ट मास्टर को लिखा कि इसमें विदेशी विनिमय का कोई प्रश्न नहीं है चूँकि यह वी.पी.पी. नहीं है। विचार-विमर्श के बाद वह इस परिणाम पर पहुँचा कि मैं बीमा शब्द काट दूँ और इसे सामान्य रजिस्टर्ड पार्सल के रूप में भेजूँ। मैंने ऐसा ही किया और अब इसे दुबारा भेजा गया है। तुम्हें भी वहाँ पुस्तकें भेजनी हैं इसलिये मैं तुम्हारी जानकारी के लिये यह लिख रहा हूँ। बीमा शब्द वहाँ नहीं होना चाहिये।

श्री राबर्ट कोच से मुझे एक पत्र प्राप्त हुआ है कि वे अब मिशन का काम शुरु करने जा रहे हैं। अब वे काम के प्रति कुछ उत्साहित दिख रहे हैं। डेन्मार्क की श्रीमती बिर्थे लन्दन जा रही हैं और वहाँ अभ्यासियों से भी मिलेंगी। मैं बहुत खुश हूँ कि तुम्हें उमेश के लिये एक अच्छा घर मिल गया है। यह सचमुच बहुत सस्ता है। यह जानकर खुशी हुई कि तुमने वॉयस रीयल में लिखे हुये वाक्य को बहुत पसन्द किया। उस वाक्य में व्यक्त किया गया दृष्टिकोण अब भी मेरे मन में है इसलिये मैं किसी भी आध्यात्मिक कार्य में कभी असफल नहीं होता। उस समय मेरी अवस्था कुछ पागलों जैसी थी और इसमें डूबने के क्रम में मैंने और भी बहुत कुछ किया। मेरा स्वास्थ्य इस समय बेहतर है। मुझे इस बात से खुशी हुई कि चि. कृष्णा के पेपर अच्छे हुये हैं। मैं तुम सबों को चि. उमेश की शादी में आमंत्रित करता हूँ।

श्री जी. एस. मणि यहाँ आ गये हैं और वे यहाँ मेरे साथ ३० अप्रिल १९७० तक रहेंगे।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

तार :
राजगोपालाचारी परफ्यूमर्स, मद्रास
उमेश की शादी : २३ मई; लगन : १९ मई

रामचन्द्र

मद्रास
३० अप्रिल १९७०

परमप्रिय मालिक,

हमें कल आपका टेलिग्राम भी मिला और आपका पत्र भी। पिताजी को आपके हाथों से लिखा गया पत्र आज प्राप्त हुआ। हमने जरूरी चीजों को नोट कर लिया है।

चि. उमेश २ तारीख की सुबह मेरे साथ मदुरै जा रहे हैं और आपकी कृपा से वे अपना इम्तहान सफलतापूर्वक देकर १० तारीख तक मद्रास लौट आयेंगे। उन्होंने पहले से ही श्री कुप्पूस्वामी से १५ तारीख से २१ दिन की छुट्टी की बात कर ली है और कुप्पूस्वामी ने इसकी मौखिक स्वीकृति भी दे दी है। इसलिये छुट्टी के लिये चिन्ता करने की कोई बात नहीं है।

हम सब लोग १५ की जी. टी. एक्सप्रेस से ५:०० बजे चलकर १७ तारीख को ११:०० बजे दिन में दिल्ली पहुँचेंगे। चि. उमेश उसी रात वहाँ से शाहजहाँपुर के लिये चल देंगे और १८ की सुबह वहाँ पहुँच जायेंगे। हमारा कार्यक्रम तय नहीं है क्योंकि पिताजी मदुरै चले गये हैं। मेरी उनसे मुलाकात होने पर कार्यक्रम तय होगा। सम्भवत: हम भी १८ को वहाँ पहुँच जायेंगे।

चि. उमेश का एक सूट पहले ही बन गया है। अगर उसके भावी श्वसुर दो सूट देना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि वे पैसा भेज दें जिससे उनकी सिलाई यहाँ करायी जा सके। अगर वे कपड़े दे रहे हैं तो उसे बाद में सिलाया जायेगा। इसी तरह से फर्नीचर आदि के बारे में भी है। वे जो कुछ भी देना चाहते हों, उसे चि. उमेश की रुचि के अनुसार मद्रास में खरीदना ज्यादा आसान है। इससे मुरादाबाद से सामान की ढुलाई का खर्च भी बचेगा और इसमें टूट-फूट का खतरा भी नहीं होगा। इसलिये वे जो कुछ भी खरीदना चाहते हों - बर्तन, बिस्तर, चारपाई, फर्नीचर, सब कुछ चि. उमेश को मद्रास में खरीदने की

अनुमति दे दें। इनका भुगतान बाद में भी किया जा सकता है। यह सब आपके सोचने की बात है।

निम्न लोगों को अपनी तरफ से निमंत्रण कार्ड भेज दीजिये :

श्री टी. टी. नरसिंहन	**(मद्रास)**
श्री टी. टी. बासु	**(मद्रास)**
श्री टी. टी. रंगनाथन	**(मद्रास)**
श्री पी. वी. रमानी	**(मद्रास)**
श्री के. कुप्पूस्वामी	**(मद्रास)**
श्री एन. राधाकृष्णन	**(मद्रास)**
श्री एन. सुगावनम्	**(मद्रास)**
श्री के. तिरुवेंगड मुदालियर	**(मद्रास)**
हाजी एम. ए. साथर, इस्क	**(मद्रास)**
श्री टी. वी. पिचूमणि	**(मद्रास)**
श्री वी. एस. वेंकटरमण	**(मद्रास)**

इसके अलावा करीब २५ सादे कार्ड (कुल ५० कार्ड) चि. उमेश के लिये इस तरह भेज दीजिये कि वे हमें १० तारीख के पहले मिल जायें ताकि मदुरै से वापस आने पर वे जिन्हें भी चाहे, कार्ड बाँट सकें। अगर ऊपर की सूची में लिपित्र सारे कार्ड यहाँ भेजे जाते हैं तो चि. उमेश उन्हें व्यक्तिगत रूप से बाँट सकेंगे जो पोस्ट करने से बेहतर होगा।

मेरी राय में कुप्पूस्वामी शादी में आयेंगे। चूँकि मेरी इस संबंध में उनसे बात हुई थी और उन्होंने इसका वादा किया था। चि. उमेश के दो अन्य सूटों के बारे में कृपा करके तत्काल निर्देश भेजिये क्योंकि अगर उन्हें मद्रास में बनाया जाना है तो समय बहुत कम है। मद्रास में मेरा टेलिग्राफिक पता है :

केयर परफ्यूमर्स
मद्रास - ६

और मदुरै में :

केयर इन्टेक्सट्यूब
मदुरै

हम सभी आपकी कृपा से ठीक हैं।
प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ४३६/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
४ मई १९७०

मेरे प्रिय वीरराघवन,

मुझे मदुरै से पार्थसारथी का एक पत्र मिला है। मैंने उनसे जरूरत के हिसाब से टेलिग्राम भेज दिया है। मैंने आपको २ मई १९७० को पहले ही २०० विवाह निमन्त्रण पत्र भेज दिये थे, जो उम्मीद है अब तक मिल गये होंगे।

आपका स्नेही
रामचन्द्र

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने तुम्हें मदुरै के पते पर एक टेलिग्राम भेजा है। सामान्यतया दो सूटों का कपड़ा शादी में दिया जाता है। एक तिलक के साथ दूल्हे के घर भेजा जाता है और दूसरा उसे दुल्हन के दरवाजे पर मिलता है। इसलिये यहाँ सिलाई असम्भव लगती है। मैंने उमेश के कहने से पहले ही २ मई १९७० को श्री वीरराघवन के यहाँ विवाह के २०० निमन्त्रण कार्ड भेज दिये हैं। तुम्हारे पत्र में लिखे जिन व्यक्तियों को तुम्हें निमंत्रित करना है, वह तो है ही। तुम्हारे सहयोगियों, जिनसे मेरे निकट के संबंध हैं, जैसे वीरराघवन, आर. शेषाद्रि, एस. नारायणस्वामी, जो मद्रास के हैं, उन्हें मैं कार्ड जारी करूँगा। तुम्हारे पिताजी को तो मैंने शादी तय होने के पहले से ही निमन्त्रित कर लिया है। मैं सारे केन्द्र के उन लोगों को भी निमन्त्रित करूँगा, जो मेरे निकट सम्पर्क में हैं।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

तार : ५ मई १९७०

पार्थसारथी राजगोपालाचारी
केयर इन्टेस्ट्यूब
मदुरै

वीरराघवन मद्रास को भेजे गये २०० कार्डो का प्रयोग करो। दो सूट परम्रागत होते हैं - गैर सिले।

रामचन्द्र

मदुरै
८ मई १९७०

परम पूज्य मालिक,

आपका टेलिग्राम कुछ दिन पहले मिला और उस पर हमने गौर किया। चि. उमेश आज ५वें पेपर का इम्तहान देने गये हैं। कल उनका आखिरी पेपर होगा। आपकी कृपा से उनका कहना है कि उनके पेपर अच्छे हुये हैं। हम उनके इस आखिरी सी.ए. की परीक्षा में उनकी सफलता की आपसे प्रार्थना करते हैं। सम्भवत: हम सभी कल दोपहर में त्रिचि के लिये रवाना होंगे और वहाँ से रविवार १० तारीख को मद्रास पहुँचेंगे।

हम मद्रास से शुक्रवार १५ मई को जी. टी. एक्सप्रेस से, जिसके टिकट पहले से ही रिजर्व कराये जा चुके हैं, चलने की योजना बना रहे हैं। चि. उमेश १८ तारीख को निश्चित रूप से शाहजहाँपुर पहुँच जायेंगे। हमें पिताजी की योजनाओं के आधार पर निर्णय लेना होगा। अस्थायी कार्यक्रम के हिसाब से हम भी १८ को ही पहुँचेंगे लेकिन शाम को कार से। १९ को लगन में शामिल होंगे फिर २ दिन के लिये लखनऊ जायेंगे। २२ को वापस शाहजहाँपुर आयेंगे और बारात के साथ मुरादाबाद जायेंगे। शादी के बाद ८ या ९ जून को मद्रास लौटने के पहले थोड़े अवकाश के लिये मैं सुलोचना और कृष्णा को ले जाऊँगा। मुझे बीच में एक दिन के लिये दिल्ली से बम्बई भी जाना होगा। मेरे कार्यालय में थोड़ी भ्रमपूर्ण स्थिति है। चूँकि एक बहुत बड़ी एजेन्सी जो हमारे साथ १५ साल से काम कर रही है और जहाँ हमारी सालाना बिक्री करीब २ करोड़ की है, हमसे अलग होने की धमकी दे रही है। अगर यह अलग हो जाती है तो कम्पनी को एक कठिन समय का सामना करना पड़ेगा। कुल मिलाकर यह एजेन्सी हमारी कम्पनी के

लिये काफी महत्वपूर्ण है। यह एजेन्सी कम्पनी के मेरे डिवीजन को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है। इससे हमारे भावी योजनाओं पर प्रभाव पड़ सकता है। लेकिन मेरी आशा है कि आपकी कृपा से सब कुछ ठीक हो जायेगा।

पिछले रविवार की सुबह मैंने एक बहुत स्पष्ट स्वप्न देखा। स्वप्न : मैं एक बड़े भवन में कई लोगों के साथ हूँ। दूसरे भवन में आप भाई रायजादा के साथ पहुँचते हैं। भाई रायजादा ने मुझसे फोन पर बात की। इस समय अँधेरा था। बाद में कुछ लोग इधर-उधर आने-जाने लगे। भाई रायजादा ने मुझे फोन पर बताया कि आप मुझे ढूँढ़ रहे हैं। अचानक मैं बैठक में प्रवेश करता हूँ और वहाँ आपको एक साधारण कुर्सी पर बैठे हुये पाता हूँ। मैं आपके चरणों में बैठकर आपके पैरों को पकड़कर रोता हूँ और पूछता हूँ : मालिक! आप यहाँ हैं लेकिन आप जहाँ हैं वहाँ छोड़कर लोग आपको हर जगह ढूँढ़ रहे हैं।

यहीं स्वप्न समाप्त हो जाता है।

३ मई को मदुरै केन्द्र ने मालिक के जन्मदिन पर एक आमसभा का आयोजन किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानीय पत्र दिनमानी के संपादक श्री संथानम ने की। वे मिशन और सहजमार्ग पर अच्छा बोले। यह आयोजन बहुत सफल रहा और कई नये सदस्य इसमें सम्मिलित हुये।

मालिक! मैं २० या २५ दिन से अधिक ध्यान नहीं कर पा रहा हूँ लेकिन सारे समय अनजान मन:स्थिति में रहता हूँ। कभी-कभी ऐसा लगता है कि मैं दुनिया से अलग हूँ और इसे उसी तरह देख रहा हूँ जैसे सिनेमा आदि देखा जाता है। कार्यालय में भी लगता है कि यह सब नाटक हो रहा है। काम करने की भूमिका में कोई और है और मैं उसे देख रहा हूँ। मैं तो केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मैं आपको भक्तिपूर्वक प्रेम करता हूँ - बाकी आप जानें।

सबके प्रिय! आपके चरणों में मेरा प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ६३०/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
३/९ जुलाई १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

पिछले ४-५ दिनों से तुम्हारी बहुत याद आ रही है। मेरी इच्छा है कि तुम्हें मेरे जीवन काल में ही उच्चतम पहुँच हासिल हो, जिसके लिये मैं प्रार्थना करता हूँ और तुम्हारी सेवा भी करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि अगर जल्दी नहीं तो कम से कम हर पखवारे तुम अपनी अवस्था के बारे में मुझे अवश्य सूचित करो, चाहे यह एक सी ही क्यों न हो। इससे मुझे यह जानने में मदद मिलेगी कि ट्रांसमिशन और प्रगति के लिये और क्या करने की जरूरत है। मेरी यह भी इच्छा है कि तुम उन चीजों से अपने को मुक्त रखो जिनसे तुम्हारे आध्यात्मिक विकास में बाधा पहुँचती है। बहुत ही बेसब्री से मैं यह भी चाहता हूँ कि बहू भी तुम्हारी तरह प्रगति करे। लेकिन यह सब उसके हाथ में है। दिल जीतने की कला तुम बेहतर जानते हो।

मेरे मालिक अपने अभ्यासियों की गलती को अपनी गलती समझते थे - इतना विनय और प्रेम था उनमें। मुझे उमेश की पत्नी (बहू) का एक पत्र मिला है, जिसने वहाँ मुझे कम से कम एक महीने के लिये बुलाया है। उसका कहना है कि उमेश के जाने के बाद वह अकेलापन महसूस करती है। लेकिन मैं तुम्हें बता दूँ कि उसकी वजह से तो नहीं लेकिन तुम्हारी वजह से मैं वहाँ कुछ दिनों के लिये आना चाहता हूँ। जैसा तुमने मुझे बताया था हवाई मार्ग से मैं वहाँ एक हफ्ते के लिये आया होता लेकिन घर में जल्दी ही कुछ कमरों का निर्माण शुरु होने वाला है। इसके लिये बम्बई से श्री बल्लभदास जी ने एक अनुभवी आदमी भेजा है। मैं अभी तक काम शुरु इसलिये नहीं करवा पाया चूँकि शाहजहाँपुर या पास के जिलों में कहीं भी सीमेंट ही उपलब्ध नहीं है।

आजकल मैं बिना किसी वजह के परेशानी अनुभव कर रहा हूँ। मैं यह नहीं जानता कि यह किसी काम के दबाव से है या दिल की किसी कमजोरी की वजह से। मैं इस बात से बहुत खुश हूँ कि बहू ने घर के काम में उमेश की मदद की है। ईश्वर उसपर कृपा करें।

डा. के. सी. वरदाचारी को भेजे गये पत्रों की प्रति मुझे मिल गयी है। अगर अनन्त की ओर का कवर छप गया हो और कोई इधर

न आ रहा हो तो उसे पोस्ट से भेज देना। किताब की बाइंडिग पूरी हो गयी है।

चि. कृष्णा को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
११ जुलाई १९७०

परम प्रिय पिता एवं परम पूज्य मालिक,

कुछ दिन पहले आपके प्यार भरे पत्र ने मुझमें फिर से जीवन डाल दिया है। इधर मैं अपने कार्यालय में घटी घटनाओं से काफी परेशान रहा हूँ। एक महत्वपूर्ण एजेन्सी के हमसे नाता तोड़ लेने की वजह से हमारी कम्पनी को २.५ करोड़ के सालाना टर्न ओवर का नुकसान हुआ है। लाभ की दृष्टि से इस घटना ने हमें ५ लाख रुपये सालाना का नुकसान पहुँचाया है। यह चेतावनी पिछले कुछ समय से हमारे सिर पर थी । यह अकस्मात नहीं हुआ। इसके बाद हमारी एक अन्य प्रमुख एजेन्सी ने हमें बम्बई बुलाकर बताया कि जनवरी १९७१ से वह हमारी कम्पनी का काम नहीं करेगी। इसका मतलब है कि टर्न ओवर में सालाना और ७० लाख की कमी हो जायेगी। कुल मिलाकर हमारी कम्पनी ने इधर एक बुरे समय का सामना किया है। लेकिन आपकी कृपा से हमने पाया है कि इन सारे तथ्यों के बावजूद कम्पनी का मेरा डिवीजन हमारे द्वारा नियोजित मितव्ययिता की वजह से पहले के जैसा ही मुनाफा देता रहेगा।

इधर मिशन में भी मेरे काम की बहुत आलोचना हुई है, मुझ पर गंभीर आरोप लगाये गये हैं, जिनसे मुझे घोर कष्ट हुआ है और मुझे आत्मावलोकन के लिये विवश होना पड़ा है। मैंने स्वप्न में भी कभी नहीं सोचा था कि इस प्रकार के श्रेष्ठ और ईश्वरीय कार्य में भी अकारण बिना किसी आधार के लोग इतना कुछ कह सकते हैं। ईर्ष्या यहाँ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। यह सब आपकी इच्छा है और मैं आपके पुत्र की तरह मुझे सौंपे गये कार्य को अपनी जानकारी में सर्वोत्तम तरीके से पूरा करने की कोशिश कर रहा हूँ। मुझे पूरा भरोसा है कि भले ही मेरा काम कुछ कम अच्छा हो लेकिन मेरी नीयत पर किसी भी प्रकार की शंका नहीं की जा सकती। मैं यह बात दृढ़ता

भीड़ हमारे चारो ओर इकठ्ठी हो जाती है और मैं हमले के खतरे को भाँप कर आपको लेकर सीधे भागता हूँ। कृपा करके मुझे इसका महत्व बताइये।

. जहाँ तक मेरी अवस्था की बात है, मैं पाता हूँ कि इतनी सारी परेशानियों के बावजूद मेरी अंदरुनी हालत बहुत ही शांतिपूर्ण है। कभी-कभी मैं अपने को अपने ही अस्तित्व के दूसरे स्तरों पर खुद के द्वारा की गयी गलतियों पर हँसता हुआ पाता हूँ। हालाँकि ऊपरी तौर पर मैं चिन्तित और परेशान हो जाता हूँ लेकिन अपने स्व की गहराइयों में मैं कदापि प्रभावित नहीं होता। मैं आपके प्रति अब निरन्तर प्रेम महसूस करता हूँ और अकेले होने पर जब भी आपके बारे में सोचता हूँ तो आँखों में आँसू आ जाते हैं। मेरी प्रार्थना होती है कि आप मुझे अपने आपसे दूर रख रहे हैं, मुझे अपने पास ले लीजिये। अपनी एक परेशानी आपसे बताने में शर्म महसूस हो रही है। मुझे अक्सर काम संबंधी विचार परेशान करते हैं हालाँकि भौतिक स्तर पर मुझमें कोई गड़बड़ी नहीं है। सड़क पर चलने वाली लड़कियों को देखने की प्रवुत्ति रहती है लेकिन इसमें किसी भौतिक वासना का जुड़ाव नहीं होता। काम के विचार के कारण कभी-कभी मैं बहुत नाराज हो जाता हूँ - खासकर अपनी पत्नी से, हालाँकि यह बहुत थोड़ी देर के लिये होता है और मेरे मन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इधर मैं अपने अंदर अपने पिताजी के प्रति भी कुछ विरोध का भाव विकसित होते हुये देख रहा हूँ हालाँकि मैं उन्हें बहुत प्यार करता हूँ और मैंने सदैव उन्हें बहुत गहरायी में प्यार किया है। वास्तव में मुझे सदैव उनकी सर्वाधिक जरूरत भी रही है। मेरे भाइयों ने कभी उनकी कोई जरूरत नहीं महसूस की। अभी भी उनके कई कृत्य सहजमार्ग की विचारधारा के विपरीत दिखायी देते हैं। मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि व्यक्तित्व का यह दोहरापन आज भी उनके लिये सम्भव बना हुआ है। सही और गलत के निर्णय में मेरा शक्तिशाली विवेक, आदर्श जीवन और सत्य के लिये मेरा प्रेम हमारे बीच में कुछ विरोध की स्थितियों को ला खड़ा करता है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी कृपा से इस स्थिति को समाप्त कर दें। अन्यथा मेरे सांसारिक जीवन में अपने आप को मैं उस सीमा तक विलग कर लेने में समर्थ पाता हूँ, जिसके बाद मुझ पर निस्पृह होने का आरोप लगेगा।

एक अन्य समस्या रामास्वामी की है। मैंने व्यक्तिगत रूप से उसकी जाँच करने पर पाया कि व्यक्तिगत लाभ के लिये उसने अनुचित व्यवहार किया है। आपसे परामर्श कर आपकी राय पर मैंने उसे एक और मौका देने का निर्णय लिया। बाद में हमारे दिल्ली कार्यालय के कुछ कर्मचारियों ने उसके खिलाफ कई गंभीर आरोप लगाये और हमारे जनरल मैनेजर ने इसमें विशेष जाँच का आदेश दे दिया। मैं उनको सफलतापूर्वक यह बताने में कामयाब हो गया कि मैंने रामास्वामी की एक जाँच पहले ही कर ली है और उसकी गलतियों के लिये उसे क्षमा भी कर दिया है। उनसे मैंने प्रार्थना की कि वे अपने जाँच आदेश को निरस्त कर दें और वे इसके लिये राजी भी हो गये। अब कम्पनी में उसका जीवन सुरक्षित है लेकिन उसका तबादला हमारे सिकन्दराबाद कार्यालय में कर दिया गया है।

मेरी पत्नी अपनी प्रगति में तेजी के लिये आपकी सहायता और आपके पथ-प्रदर्शन के लिये प्रार्थना कर रही है। मैं भी आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आपका प्रेम उसकी ओर बहे और स्वयं से पार पाने में उसकी मदद करे। कुछ बातों में वह बहुत जिद्दी है और उसकी गलतियों के लिये जब भी मैं उसको समझाने का प्रयत्न करता हूँ तो वह सोचने लगती है कि मैं उसके खिलाफ हूँ। वह समझने का कोई प्रयत्न नहीं करती और रोना शुरु कर देती है। मालिक! कृपा करके उसकी मदद कीजिये क्योंकि बिना आपकी विशिष्ट मदद के वह खुद को आपके पास खींच कर लाने में कभी समर्थ नहीं होगी।

चि. कृष्णा अचानक हुये एम्बायोसिस के हमले से अब बाहर आ गया है। कुछ दिन की तकलीफ बर्दाश्त करने के बाद अब वह बिल्कुल स्वस्थ है। मेरी प्रार्थना है कि उस पर भी आपकी कृपा हो।

मेरा निवेदन है कि आप जल्दी मद्रास आइये और कम से कम एक महीना हमारे साथ यहाँ रहिये। चि. उमेश और बहू भी आपकी यात्रा की बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे अपने घर में पूरी तरह से व्यवस्थित हो गये हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि अब वे आराम से हैं। हम उनसे यहाँ या उनके घर पर हफ्ते में ४-५ बार तो मिल ही लेते हैं। पिछले हफ्ते हमलोगों ने उनके साथ डिनर किया। बहू ने बहुत ही स्वादिष्ट खाना बनाया था। पिताजी के लिये स्पेशल प्याजरहित खाना बना था। इस बहाने हमारे कुछ घंटे प्रसन्नतापूर्वक बीते।

आपकी इच्छा के अनुरुप भविष्य में मैं आपको नियमित रूप से लिखूँगा।

आपके चरण-कमलों में मेरा प्रेम और प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

गोपनीय

नं. सी ७३७/एस.आर.सी.एम. **२४ जुलाई १९७०**

प्रिय भाई पार्थसारथी,

आशीर्वाद!

कृष्णा अब ठीक है - यह जानकर अच्छा लगा। वह हमेशा ठीक रहे! मैंने तुम्हारा प्रेम से भरा पत्र पाया। इसका उत्तर मैं बाद में लिखूँगा चूँकि यह अध्यात्म से संबंधित है। मेरा, तुम्हारा और सबका कर्तव्य है कि जो काम उसे दिया जाये, वह उसे ठीक से करे। मुझे पता था कि जिस काम के लिये तुम जिम्मेदार हो, उसमें बहुत सी बाधायें आयेंगी लेकिन इसे जानकर भी मैंने तुम्हें इसी स्थिति में रखा। ये बाधायें लम्बे समय तक नहीं रहेंगी। यहाँ उत्तर भारत में मेरे द्वारा तुम्हें सेक्रेटरी बनाये जाने पर सभी खुश हैं। मैंने तुम्हें अपने पिछले पत्र में लिखा था कि मैं अपने दिल में बिना किसी कारण चिन्ता महसूस कर रहा था। अब मैं समझा कि यह चिन्ता तुम्हारी परेशानी की वजह से थी। अगर किसी एजेन्सी ने तुम्हारी कम्पनी से अपना संबंध तोड़ लिया है तो इसका मतलब यह तो नहीं है कि कोई दूसरी या तीसरी एजेन्सी तुम्हारी कम्पनी से अपना संबंध नहीं जोड़ लेगी। और तब तुम्हारी कम्पनी न केवल ठीक होगी बल्कि मुनाफे में भी होगी। उमेश और मेरी बहू आजकल इस बात से चिन्तित हैं कि कम्पनी में घाटे की वजह से उन्हें भी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। उमेश ने आजकल यह सोचना शुरु किया है कि चूँकि उसकी कुछ गलतियों की वजह से तुम उससे नाराज हो, कार्यालय में उस पर दबाव डाला जा रहा है कि वह बम्बई कार्यालय में अपने स्थानान्तरण की दरखास दे। मैं तुम्हें बहुत गोपनीय रूप से बता रहा हूँ कि उसके मुख्य लेखाकार के. कुप्पूस्वामी ने उससे कहा है कि "*तुम चारी को नहीं जानते। एक बार वह तुम्हारी गलतियाँ पा जायेगा तो वह तुम्हारे प्रति बिल्कुल*

दयाहीन होगा भले ही तुम उसके सबसे प्रिय भाई क्यों न हो। चारी ने तुम्हें बम्बई स्थानान्तरित करने की सलाह दी है।''

मुझे इस बात में बिल्कुल भी विश्वास नहीं है लेकिन अगर उमेश के खिलाफ कोई शिकायत है तो उसके बारे में तुम मुझे लिखो ताकि मैं उसे समझा सकूँ। तुमने खुद ही कहा है कि तुम उसे केवल मद्रास में ही रखोगे। इसमें भी कोई सन्देह की बात नहीं है कि उमेश को नौकरी देकर तुमने मेरी एक बहुत बड़ी परेशानी दूर कर दी है। मेरे दिल पर इसका प्रभाव भी है। मैं इसके बदले में तुम्हें वह सब कुछ दे रहा हूँ जो इस दुनिया का कोई बादशाह भी तुम्हें नहीं दे सकता। मैंने जो कुछ भी लिखा है, इसमें कोई नीति नहीं है, यह केवल सच्चाई है। मैं तुम्हें कोई लालच नहीं दे रहा हूँ। यह तो मेरा कर्तव्य है। मैं जो सोचता हूँ वही कहता हूँ। मैं तुम्हारे और अपने परिवार को एक ही मानता हूँ और मेरा व्यवहार भी इसी के अनुरुप होता है। तुमसे मुझे उम्मीद है कि तुम ऐसा ही बर्ताव बनाये रखोगे। अगर परिवार में किसी सदस्य से कोई गलती हो जाती है तो उस गलती को उसी जगह छोड़ दिया जाता है। इस चिठ्ठी का जबाब पाने के लिये मैं बेचैन हूँ। बच्चों को आशीर्वाद!

जो कवर मद्रास से छपने के लिये भेजे जाने हैं, उन्हें जल्दी भेजा जाना चाहिये। हमारी किताबें तैयार रखी हैं।

तुम्हारा शुभेच्छु
रामचन्द्र

पुनश्च : सारी किताबें तैयार रखी हैं।

गोपनीय

मद्रास
२८ जुलाई १९७०

परमप्रिय और परमपूज्य मालिक,

मैं आपके २४ जुलाई के हिन्दी के स्नेहपूर्ण पत्र में दिये गये प्रोत्साहन के लिये आपका आभारी हूँ। व्यवसाय में हानि गम्भीर है लेकिन शायद मैंने जितनी परेशानी आपको बतायी है, यह उतना बुरा प्रभाव हमारे ऊपर नहीं डालेगी। हालाँकि ऊपरी तौर पर मैं कुछ

परेशान रहा हूँ लेकिन आमतौर पर भीतर से शान्त और संगठित रहा हूँ।

चि. उमेश के बारें में आपने जो कुछ भी लिखा है, उसे देखकर मुझे गहरा आघात लगा है। न तो उसे नौकरी खोने का कोई भय है और न ही उसको कहीं ट्रांसफर किये जाने का कोई प्रश्न है। मैंने श्री कुप्पूस्वामी से आज सुबह ही इस संबंध में बात की और उन्होंने मुझे पूरा यकीन दिलाया है कि वे उमेश को एक जिम्मेदारी वाला पद दिये जाने के लिये व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षण देकर तैयार कर रहे हैं और वे उसे कम से कम अगले २ या ३ सालों तक मद्रास में अपने पास ही रखेंगे। अत: परेशान मत होइये। इस मामले से निश्चिन्त रहिये। उमेश बहुत चंचल है और जल्दबाजी में कभी-कभी चीजों से गलत नतीजा निकाल लेता है। श्री कुप्पूस्वामी एक चतुर मैनेजर हैं। वे कुछ चीजें जान-बूझकर कहते हैं और उमेश की उस पर प्रतिक्रिया देखते हैं और उसका अध्ययन करते हैं कि वह यह बात किसी को बताता है या नहीं। जो लोग उच्च पदों के लिये प्रशिक्षित किये जाते हैं, उनकी हर तरह की परीक्षा होनी ही चाहिये। मुझे भरोसा है कि श्री कुप्पूस्वामी ऐसा ही कर रहे हैं। श्री कुप्पूस्वामी और मैंने कई सालों तक एक साथ काम किया है। वे किसी का नुकसान नहीं कर सकते लेकिन उमेश को अपने व्यवहार में सावधान रहना चाहिये। कृपया उसे इस बात की सलाह दीजिये कि वह श्री पिचूमणि को टालने की कोशिश न करे। श्री पिचूमणि मैट्रिक हैं लेकिन अपने कठोर श्रम से पिछले १० सालों में उन्होंने उप मुख्य लेखाकार के पद तक की यात्रा की है। उनका वेतन इस समय करीब १५००/- रुपये प्रति माह है। दुर्भाग्य से उमेश के अंदर यह ग्रंथि बैठ गयी है कि पिचूमणि केवल मैट्रिक हैं। यह गलत है। श्री कुप्पूस्वामी ने भी चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट का कोर्स पूरा नहीं किया है लेकिन वे यहाँ शीर्ष अधिकारी हैं। उमेश अपना इम्तहान पास कर लेता है तो उसका भविष्य यहाँ बहुत ही शानदार होगा। लेकिन उसे कम शिक्षित लोगों का अनादर नहीं करना चाहिये।

उमेश मेरा छोटा भाई है और मेरे मालिक का प्रिय बेटा होने के नाते तो मेरे लिये वह और भी ज्यादा प्रिय है। मैं सपने में भी कभी उसका नुकसान करने की बात नहीं सोच सकता। मद्रास में उसकी उपस्थिति ने मुझे उसके देखभाल के दायित्व की भावना दी है लेकिन

कभी भी मैंने इसे बोझ नहीं समझा। यह तो मेरे लिये मेरे मालिक और मेरे पिता की सेवा करने जैसा है। मालिक! इस नौकरी के बदले में पुरस्कार की बात करके आपने मुझे बहुत आहत कर दिया है। पहली बात तो यह है कि मैंने उसकी नौकरी में कुछ किया ही नहीं। उमेश को नौकरी देने के लिये जो कुछ भी किया वह श्री कुप्पूस्वामी ने किया। दूसरी बात यह है कि मैं आपका बेटा हूँ और मुझे पुरस्कार देने की बात करके आप मुझे शर्मिन्दा कर रहे हैं। मेरी हालत वस्तुतः सोचनीय हो गयी है चूँकि इस मामले में आपने मुझ पर सन्देह किया। यह मेरे दुर्भाग्य की बात है कि मेरे मालिक मेरे बारे में इतना निम्न विचार रखते हैं। यह आपकी मर्जी है। अगर मैंने कभी भी उमेश और उसके परिवार के हितों के खिलाफ कुछ भी किया हो तो आप जो भी चाहें सजा मुझे दे सकते हैं, यह मुझे मंजूर होगा। मैं अपने शरीर और आत्मा के साथ केवल आपका हूँ और मेरे साथ आप जैसा चाहें वैसा बर्ताव कर सकते हैं लेकिन मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे सदैव अपने प्यार में रखिये।

कृपया उमेश को कठोरता से मत लिखियेगा। उसे परिपक्व होने के लिये अभी और अनुभवों की जरूरत है। हम देखेंगे कि वह उसे पाये और हम उसके सर्वोत्तम हितों का ध्यान रखेंगे। कृपया आप इन चीजों के लिये अधिक परेशान न हों।

आपके प्रेम में निमग्न,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

गोपनीय

मद्रास
८ सितम्बर १९७०

पूज्य और प्रिय मालिक,

मैंने आपको आपके २४ जुलाई के व्यक्तिगत पत्र के उत्तर में २८ जुलाई को एक गोपनीय पत्र लिखा था। तब से आज तक मैं आपके जबाब का इन्तजार कर रहा हूँ लेकिन यह व्यर्थ रहा है। आशा करता हूँ कि मेरी किसी बात से आपको कोई तकलीफ नहीं पहुँची है। मैंने आपको यकीन दिलाया है कि चि. उमेश को कोई खतरा नहीं है और न

ही भविष्य में कोई खतरा होने की सम्भावना है। मैं सपने में भी कभी उसे किसी प्रकार का नुकसान पहुँचाने की नहीं सोच सकता। मेरी प्रार्थना है कि आप इस पर विश्वास करें। मैं नहीं चाहता कि वह अलग रहे। मैंने महसूस किया है कि अगर वह और उसकी पत्नी हमारे साथ रहें तो उन्हें ज्यादा सहूलियत होगी और वे हर प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे। लेकिन यह आपकी भी और उसकी भी इच्छा थी कि अलग रहा जाये।

जब तक मुझे आपका पत्र नहीं मिलता, मैं पीड़ित और दुःखी रहूँगा। मेरी स्थिति बहुत दयनीय हो जाती है जब डाकिया आता है, चिठ्ठियाँ देता है और उसमें आपकी कोई चिठ्ठी नहीं होती। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मेरे इस कष्ट को दूर कर दें। ***इस पूर्ण सत्य को मैं पुनः दुहराता हूँ कि मैंने उमेश का कभी कोई नुकसान नहीं किया है और कभी भी ऐसा नहीं करूँगा क्योंकि मैं ऐसा करने की सोच भी नहीं सकता।*** कृपया मेरा यकीन कीजिये।

मैं बहुत ही दुःख और बेचैनी के साथ आपके पत्र की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

आपके दिव्य चरणों में मेरा प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ९२९/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१४ सितम्बर १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे प्रेमपूर्ण पत्र मिले। विलम्ब का कारण अपने सारे कार्यों में मेरा आलस्य है लेकिन अगर मैं इसके विपरीत यह लिखूँ कि अपने जीवन में एक भी मिनट मैं व्यर्थ नहीं करता और हमेशा समय का सर्वोत्तम उपयोग करता हूँ तो तुम्हें आश्चर्य होगा। मैं करीब तीन हफ्तों से निम्न रक्तचाप से पीड़ित हूँ, जिसके परिणामस्वरूप अगर मैं आधे घंटे भी काम करता हूँ तो घंटों के लिये सिरदर्द हो जाता है। कभी-कभी थोड़ी मितली भी हो जाती है। इसके बावजूद भी जो साथी आध्यात्मिक प्रशिक्षण के लिये मेरे पास आते हैं, उनकी सेवा करता हूँ। इस समय मेरे पास सत्संगियों की भारी भीड़ ठहरी हुई थी। परिणाम यह हुआ कि मेरा ब्लड-प्रेशर लो बना रहा। २-३ दिन कोई सत्संगी

नहीं आया तो मेरी तबियत सुधरने लगी। लेकिन फिर से काम की भीड़ बढ़ी और फिर बी. पी. नीचा हो गया। इस समय लगभग १० सत्संगी मेरे पास ठहरे हुये हैं और अन्य आ रहे हैं। इससे मैं नाराज नहीं हूँ बल्कि मैं तो इससे खुश हूँ कि लोग मेरे पास आये और मैंने उनकी आध्यात्मिक सेवा की। मैं ज्यादा से ज्यादा काम करना चाहता हूँ लेकिन मैं चाहता हूँ कि बीमारी की हालत में कुछ घंटे मेरे आराम के लिये छोड़ दिये जायें। जब वे मेरे सामने ध्यान के समय के अलावा बैठते हैं और ध्यान की मन:स्थिति में आ जाते हैं तो मैं बहुत कमजोरी में भी ट्रांसमिशन देने के लिये बाध्य हो जाता हूँ। अगर ऐसे सत्संगियों की संख्या अच्छी हो तो बल गुणित रूप में बढ़ जाता है और इसका दिमाग पर विपरीत असर पड़ता है। अगर मैं कमजोरी के कारण उन्हें ध्यान न करने की सलाह देता हूँ तो वे मेरी बात पर ध्यान नहीं देते। नि:संदेह वे इस बात से नावाकिफ हैं कि अगर मेरा दिमाग आराम में है तो मैं अधिक प्रभावशाली तरीके से काम कर सकता हूँ। एक तरीके से यह उनकी स्वार्थपरता है। अगर वे मेरे सामने स्थिर होकर बैठें तो वे सहज ही मुझसे प्राणाहुति पा लेंगे और इससे मेरे दिमाग पर कोई अतिरिक्त बोझ भी नहीं पड़ेगा।

आराम के लिये मैं १५ अक्टूबर १९७० के बाद कुछ दिनों के लिये बाहर जाना चाहता हूँ। इसमें दो हफ्ते लग सकते हैं।

अपने पिछले हिन्दी पत्र में मैंने लिखा था कि मैंने जो कुछ भी सुना मुझे उसपर विश्वास नहीं है लेकिन श्री कुप्पूस्वामी के शब्दों से मैं थोड़ा परेशान जरूर हो गया था इसलिये मैंने तुम्हें सारे विवरण लिखे। तुम जान सकते हो कि इसका आधार क्या था। तुमने उमेश के बारे में जो लिखा है, उससे मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। तुम इस विचार के साथ कार्य करो कि मैं तुम्हारा हूँ और तुम मेरे हो। *इनीसियेशन* का यही अर्थ भी है। खूब खुश रहो और इस विचार से अपने को बिल्कुल मुक्त रखो कि मैं तुमसे नाराज हूँ। तुम्हारे हित में जो कुछ भी है, मैं उसे कर रहा हूँ। इस हालत में भी जब तुम कह रहे हो कि तुम परेशान और अनमने हो - सबूत के तौर पर तुम अपनी अवस्था का अध्ययन करने का प्रयत्न करो।

इस पत्र को लिखवाने के बाद मुझे सिरदर्द हुआ इसलिये अब मुझे अगले दिन आराम करना पड़ेगा।

मैंने "*मेथड ऑफ ट्रेनिंग*" में या कहीं दूसरी जगह एक विधि बतायी है। तुम उसे पढ़कर उस पर अनुसरण करो। ***बिस्तर पर जाने के ठीक पहले दिल के प्वाईट A पर इस विचार के साथ ध्यान करो कि संसार के सारे स्त्री और पुरुष आपस में भाई-बहन की तरह हैं। ५ से १० मिनट पर्याप्त होगा।***

डा. के. सी. वरदाचारी ने मुझे "***टॉक्स ऑन फिलासफी ऑफ सहजमार्ग***" भेजी है। यह बहुत अच्छी तरह लिखी गयी है लेकिन मैं अपने सिरदर्द और कमजोरी की वजह से अभी तक इसे पूरा नहीं पढ़ पाया हूँ। जल्दी ही मैं से पूरा पढ़ लेने का प्रयत्न करूँगा। उनके भाषणों की दूसरी श्रृंखला जल्दी ही प्रेस को जानी चाहिये। वे इसे तुम्हें भेजेंगे या उन्होंने इसे तुम्हारे पिताजी को भेज दी होगी।

गेस्ट हाऊस का काम अब खत्म होने पर है। सेठ जी का इन्जीनियर इस काम को देख रहा है और उसका एक मित्र श्री बापू भाई मजदूरों का काम देख रहा है। ये सब जिम्मेदार लोग हैं और मुझे इस बारे में कुछ करना नहीं पड़ता। वे हर जरूरी चीज का प्रबन्ध खुद ही कर लेते हैं। वे खुद ही इसका हिसाब भी रख रहे हैं। इस प्रकार इस काम के बोझ से मैं पूरी तरह मुक्त हो गया हूँ।

कृपया अपनी आध्यात्मिक अवस्था के बारे में कुछ लिखो। मैं तुम्हें अगले उच्चतर क्षेत्र में भेजना चाहता हूँ।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
२६ सितम्बर १९७०

परमपूज्य और परमप्रिय मालिक,

आपके १४ तारीख के प्रेमपूर्ण पत्र के लिये आपको बहुत-बहुत धन्यबाद! इसने मुझे शान्ति दी है।

यह जानकर कि आप स्वस्थ नहीं हैं - हम सभी चिन्तित हैं। त्रिचि के श्री सुब्रह्मनियम ने बताया कि आप मई १९७१ के पहले दक्षिण भारत नहीं आ पायेंगे। मालिक! आप आराम कीजिये। मैं सोचूँगा कि भविष्य में शाहजहाँपुर जाने वाले अभ्यासियों को कैसे नियंत्रित किया जाय। शायद हम यह सुझाव दे सकते हैं कि हर महीने की २० से ३०

तारीख तक किसी अभ्यासी को वहाँ नहीं आना चाहिये। इससे आपको कम से कम १० दिन आराम के लिये खाली मिल जायेगा। अगर आप अनुमति दें तो सारे केन्द्रों पर यह सूचना सर्कुलर के माध्यम से भेजी जा सकती है। सहजमार्ग पत्रिका में भी यह सूचना के रूप में छपवायी जा सकती है। कृपया इस पर विचार करके हमें इसकी अनुमति दीजिये।

मेरी अवस्था इस प्रकार की है कि जब मैं ऊपरी तौर पर परेशान भी रहता हूँ तब भी अंदरुनी तौर पर शान्त बना रहता हूँ। कभी-कभी मैं महसूस करता हूँ कि मुझे कुछ भी प्रभावित नहीं कर सकता। ऐसे मौकों पर मुझमें असीम आत्मविश्वास प्रवाहित होता रहता है। मैं कार से सैकड़ों मील की यात्रा करता रहता हूँ लेकिन कभी शरीर में दर्द या थकान की शिकायत नहीं होती। मैं बाहरी मामलों से बहुत कम प्रभावित होता हूँ। आपकी सलाह के अनुरुप मैंने प्वाइंट A पर ध्यान करना शुरु कर दिया है।

डा. वरदाचारी जी का कहना है कि वे अस्वस्थ हैं। मैंने उनसे निवेदन किया है कि अगर वे अगले कुछ दिनों में अपने को स्वस्थ महसूस नहीं करते तो प्रशिक्षकों का सेमिनार मुल्तवी कर दें।

आपकी कृपा से घर पर सभी लोग सकुशल हैं। चि. कृष्णा की तिमाही परीक्षा समाप्त हो गयी है और आज से ४ दिनों के लिये स्काउट कैम्प में जा रहा है। मुझे कार्यपालक निदेशक के रूप में एक और कम्पनी 'कैमोल्यूम्स' का इन्चार्ज बना दिया गया है। जितनी अधिक जिम्मेदारियाँ, उतनी ही अधिक परेशानियाँ - बस! आपकी कृपा से ही काम पूरा हो जाता है।

पूज्य मालिक! कृपया पर्याप्त आराम करें और जल्दी पूरी तरह से स्वस्थ हो जायें।

आपके पवित्र चरणों में मेरा प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

विरुधनगर
१३ अक्टूबर १९७०

परम पूज्य मालिक,

मैं यह जानकर बहुत परेशान हूँ कि आपकी तबियत अभी भी लो ब्लड प्रेशर, मितली और सिरदर्द की वजह से खराब है। यह और दु:खद है कि आपको आराम करने का मौका बिल्कुल भी नहीं दिया जाता। आप महीने में कम से कम १० दिन खाली हो सकें, इसके लिये कोई न कोई योजना बनाना जरूरी है। मैं सारे भाईयों से बात करके इस बात का प्रस्ताव करता हूँ कि कोई भी अभ्यासी हर महीने की २० से ३० तारीख के बीच शाहजहाँपुर न जाये। मुलाकाती लोग केवल १ तारीख से २० तारीख के बीच में आयें जिससे कम से कम १० दिन का आराम आपको मिल सके। इसके बाद भी कुछ लोग आयेंगे जिनसे बचा नहीं जा सकता लेकिन ऐसे लोगों को तब टोकना आसान होगा। जहाँ तक सम्भव होगा, मैं सेन्टर इन्चार्जों से मिलकर इस विषय पर बात करने का प्रयास करूँगा। जिनसे मुलाकात नहीं होगी – उनसे पत्र लिखकर इस मामले में सहयोग माँगूगा।

तिरुपति के सेमिनार में भाग लेने के लिये आप दक्षिण भारत की यात्रा पर आ रहे हैं - यह जानकर हमें बहुत अधिक खुशी हो रही है। आशा करता हूँ कि सेमिनार के बाद मद्रास में आप अधिक अच्छे तरीके से आराम कर सकेंगे। मेरी प्रार्थना है कि इस बार आप लम्बी ट्रिप न बनायें और अपनी यात्रा के कार्यक्रम को तिरुपति तक ही सीमित रखें। आपको मद्रास में कुछ दिनों के लिये रुककर आराम करना ही चाहिये। आशा है कि आप कुकरा जा पाये होंगे। कृपया मुझे अपने कार्यक्रम की जानकारी दीजिये।

रविवार १८ तारीख को मैं कलकत्ता जा रहा हूँ। पिताजी भी कलकत्ता जायेंगे। हम दोनों बुधवार २१ तारीख को कम्पनी की कार से कलकत्ता से चलकर २५ या २६ तारीख तक मद्रास वापस लौटेंगे। पिताजी उड़ीसा के उन क्षेत्रों को देखने के लिये चल रहे हैं, जिन्हें उन्होंने अभी तक नहीं देखा है।

विरुधनगर और मदुरै में नियमित रूप से सत्संग चल रहा है। श्री थास्मास्वामी दोनों जगहों पर समर्पण से काम कर रहे हैं। हर रविवार को वे विरुधनगर जाते हैं। लेकिन उनकी उम्र अधिक है इसलिये मैं विरुधनगर में नियुक्त श्री बी. राजगोपाल को अन्तरिम

अनुमति देने की संस्तुति करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि मालिक इसे स्वीकार करेंगे। इस सेन्टर को एक प्रशिक्षक की जरूरत है और श्री बी. राजगोपाल निश्चित रूप से अच्छा काम करेंगे। वे हर साल विदेश भी जा सकते हैं और पहले से भी इजिप्ट के बहुत से लोगों से वे परिचित हैं, जो मिशन में अभ्यास शुरु करना चाहते हैं।

मैं आपके प्रेम और आपकी कृपा से पूरी तरह ठीक हूँ।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी १०१४/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१६ अक्टूबर १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा विरुधनगर से भेजा हुआ प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मैं यह जानकर बहुत खुश हूँ कि तुम मेरे स्वास्थ्य की इतनी चिन्ता करते हो। ईश्वर तुम पर कृपा करे! जो लोग मुझसे यहाँ या दूसरी जगहों पर मिलते हैं, वे अक्सर मेरे स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखते। ***जब वे मेरे सामने बैठते हैं तो उनका ध्यान मेरी तरफ न होने पर भी स्वाभाविक रूप से चार्ज शुरु हो जाता है। वे कभी-कभी तो इसमें डूब जाते हैं। निःसंदेह ऐसा करना मना नहीं है लेकिन बीमारी में यह प्रक्रिया मेरे दिमाग पर जोर डालती है और इससे मेरी तकलीफ बढ़ जाती है। वे मेरी बीमारी और शारीरिक कमजारी जानने के बाद भी मुझसे आध्यात्मिक ऊर्जा खींचने का प्रयास करते हैं जबकि मेरे लिये ऐसे समय में इस ऊर्जा को संरक्षित रखना आवश्यक होता है।*** ऐसा ही मेरे मालिक के साथ भी होता था। ***जब वे दर्द में डूबे हुये होते थे तब भी लोग उनसे कृपा खींचते रहते थे। एक बार उन्होंने मुझसे कहा : ये मेरा खून चूस रहे हैं।***

मैं ३ नवम्बर को प्लेन से उसके पुराने समय के अनुसार दोपहर १२:१५ पर मद्रास पहुँचूँगा। उमेश के यहाँ रहूँगा क्योंकि दिन में जब उमेश कार्यालय चला जाता है तो बहू को अकेलेपन का सामना करना पड़ता है। जब तक मैं रहूँगा कम से कम तब तक तो वह इस अकेलेपन के अहसास से बच जायेगी। ५ नवम्बर को मैं तिरुपति जाऊँगा और ९ नवम्बर को वहाँ से लौटकर ४ दिन मद्रास में रुकूँगा।

इस समय एक हफ्ते के लिये मैं कुकरा जा रहा हूँ। उम्मीद है वहाँ मुझे काफी आराम मिलेगा।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

प्रिय भाई,

इस पत्र के लिखवाने के बाद बाबूजी कुकरा चले गये इसलिये उनकी ओर से उनके निर्देशानुसार मैं दस्तखत कर रहा हूँ। २९५०/- रुपये जो आपने मद्रास से ट्रांसफर किये थे, इलाहाबाद के मिशन एकाउन्ट में प्राप्त कर लिये गये हैं। यह आपकी जानकारी के लिये है।

मालिक की सेवा में आपका
के. एम. सक्सेना

मद्रास
२६ नवम्बर १९७०

परम पूज्य मालिक,

मैंने श्रीमती वेरा डेविश से अभी-अभी एक पत्र प्राप्त किया है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि मुझसे मेरे मालिक जो भी कहेंगे, मैं वही करूँगी लेकिन श्रीमती हॉगार्ड और श्री आन्द्रे पोरे बहुत दूर हैं और बड़े अंतर पर एक क्षण भी रहना बहुत निराशाजनक है। मुझे विश्वास है कि आप उन्हें मिशन के काम के लिये तैयार करना शुरु कर देंगे।

हमें उम्मीद है कि आपकी शाहजहाँपुर तक की यात्रा आरामदेह रही होगी। हालाँकि मुझे स्वामीनाथन से यह पता चला कि आप रविवार २२ तारीख की शाम को दिल्ली से चले फिर भी मुझे आशा है कि ऐसा आपने अपनी शारीरिक बीमारी या किसी तकलीफ के कारण नहीं किया होगा।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी १२४५/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
२३ दिसम्बर १९७०

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे पिताजी का एक पत्र मुझे प्राप्त हुआ है, जिसमें लिखा है कि श्रीमती रुथ १ जनवरी १९७१ को सुबह ४:०० बजे शाहजहाँपुर पहुँच रही हैं लेकिन श्री बी. डी. महाजन, दिल्ली के पत्र से मुझे पता चला कि वे १८ दिसम्बर १९७० की सुबह ७:४५ की एयर इण्डिया फ्लाइट से दिल्ली पालम एयरपोर्ट पहुँच रही हैं। एयर इण्डिया की यह फ्लाइट कैंसिल हो गयी और वे नहीं पहुँच पायीं। अब उनका क्या कार्यक्रम है, मैं उनका कार्यक्रम नहीं जानता। अगर उनके शाहजहाँपुर आने की तारीख (१ जनवरी १९७१) बदल गयी हो तो कृपा करके मुझे टेलिग्राम से सूचना भेजो जिससे मैं उन्हें लेने के लिये किसी को स्टेशन पर भेज सकूँ।

तुम्हें सूचना होगी ही कि श्री पोरे १९ जनवरी १९७१ को श्री और श्रीमती डेविश के साथ यहाँ पहुँच रहे हैं। वे चाहते हैं कि १५ से २० फरवरी १९७१ तक मैं मद्रास में रहूँ। अगर मैं ऐसा नहीं कर सका तो वे पुनः शाहजहाँपुर आयेंगे। इसलिये यह लगभग निश्चित ही है कि मैं १५ फरवरी १९७१ को दोपहर १२:१० पर हवाई जहाज से वहाँ पहुँचूँगा। मैं कोशिश करूँगा कि कस्तूरी भी मेरे साथ आये। जब ये यूरोपियन लोग यहाँ होंगे उस समय के अपने कार्यक्रम के बारे में मुझे लिखो। मैं चाहता हूँ कि यहाँ उनके साथ तुम भी रहो। तुमने ऐसा प्रस्ताव पहले से ही रखा है।

उमेश की पत्नी १० जनवरी १९७१ को मद्रास से मुरादाबाद के लिये रवाना होगी क्योंकि परम्परा के अनुसार शादी के बाद पहली होली बहू अपने पिता के घर मनाती है। फिर मार्च के अंत में वह मद्रास पहुँचेगी। इस स्थिति में उमेश वहाँ अकेला होगा। इस बारे में पहले भी मैंने तुम्हारे पिताजी को लिखा है और तुम भी इस दौरान भाई की तरह उसकी देखभाल करना।

जब मैं तिरुपति में था तो डाक्टर वरदाचारी को फरवरी में पुनः देखना चाहता था। अब मुझे अपनी इच्छा को पूरी करने का मौका मिला है।

बसंतपंचमी उत्सव की तारीख ३०, ३१ जनवरी और १ फरवरी १९७१ है। कृपया सभी संबंधित लोगों को निमंत्रित कर लो।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : पोरे को एक पुस्तक मिली है जिसमें यूरोप के ४थी से १५वीं शदी के संतों की चर्चा है। उसमें क्राइस्ट के संदर्भ में लिखा है कि वे प्रकाश पर ध्यान करते थे। मुख्य धर्मगुरु के पास वहाँ एक मठ भी है। वे हमारे मिशन के लिये भी ऐसा ही सोचते हैं। यह तुम्हारी सूचना के लिये है।

୧୯୭୧

नं. सी १२६५/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२ जनवरी १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा टेलिग्राम मिला। श्रीमती रुथ के आगमन के टेलीग्राम का इन्तजार है। मैंने नये बने गेस्ट हाऊस में उनके लिये हर चीज की व्यवस्था कर दी है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि उमेश ने घर बदल लिया है। इससे हमारी आशंकायें दूर हो गयी हैं। उसे घर २५०/- रुपये महीने के किराये पर मिला है और कार्यालय जाने के लिये भी अब उसे किराया ज्यादा देना पड़ेगा। इससे उसे कुछ परेशानी हो सकती है। मैं तुम्हारे पास ३०००/- रुपये का ड्राफ्ट भेज रहा हूँ, जिससे तुम जैसा भी उचित समझना स्कूटर या मोटरसाईकिल खरीदने में उसकी मदद करना।

मैं बार-बार तुमसे मिलने का मौका ढूँढ़ता रहता हूँ इसीलिये मैंने श्री पोरे का यह निवेदन स्वीकार कर लिया है कि मैं १५ से २० फरवरी १९७१ के मध्य तुम्हारे खर्चे पर मद्रास में उनके साथ रहूँगा। मैं सन्त कस्तूरी को भी अपने साथ लाना चाहता हूँ क्योंकि मैंने तिरुपति में गायत्री से अगले दौरे में कस्तूरी को साथ लाने का वादा किया था। लेकिन उन्हीं दिनों कस्तूरी की बहन की लड़की की शादी होने वाली है इसलिये मैं निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता कि वह मद्रास मेरे साथ आ सकेगी या नहीं।

बच्चों को प्यार! शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

संलग्नक :
बैंक ड्राफ्ट नं. ०४४८५०/३० दिनांक ०२/०१/७१

पुनश्च : मित्रों से राय लेने पर मुझे यह मालूम हुआ है कि मोटरसाईकिल की तुलना में स्कूटर कम खतरनाक है।

मद्रास
८ जनवरी १९७१

परम प्रिय एवं परम पूज्य मालिक,

२३ दिसम्बर का आपका कृपापूर्ण पत्र मिला। उस समय हमलोग मदुरै में थे। श्रीमती कोच के संबंध में मैंने आपको एक

टेलिग्राम भेजा है। मुझे विश्वास है कि यहाँ आने के बाद पिताजी ने आपको लिखा होगा। वे ३ जनवरी को आयीं। वे यहाँ ठीक हैं और खुश हैं। पिताजी और श्रीमती कोच १५ जनवरी को यहाँ से चलेंगे। आगरा में ब्रेक जर्नी करेंगे और १७ को दिल्ली पहुँचेंगे। फिर २० की शाम को लखनऊ मेल से दिल्ली से चलकर २१ की सुबह शाहजहाँपुर पहुँचेंगे। वे ३० जनवरी तक वहाँ रुकेंगे।

मैं प्लेन से १८ या १९ को चलने की योजना बना रहा हूँ। दिल्ली से ट्रेन से आऊँगा और १९ या २० की सुबह वहाँ पहुँचूँगा। मैं बसंतपंचमी तक रुकूँगा हालाँकि बीच में २४, २५, २६ को ड्यूटी पर मुझे कानपुर, इलाहाबाद और बनारस जाना होगा। मैं आपसे शीघ्र दर्शन की प्रार्थना करता हूँ।

हम सबों को यह जानकर बहुत खुशी है कि आप फरवरी के मध्य में यहाँ आ रहे हैं। मालिक! आप हम पर बहुत कृपालु हैं।

चि. उमेश इलियट्स बीच के नजदीक वाले अपने नये मकान में चले गये हैं। यह हमारे घर से करीब ५ मील दूर है। उनका कहना है कि घर बहुत अच्छा है। यह समुद्रतट के बहुत नजदीक है और हमारे घर से बहुत दूर है लेकिन पिताजी ने भी इस घर को बहुत पसन्द किया है। बहू के जाने के बाद उसके लौटने तक उमेश हमारे साथ यहाँ रह सकते हैं। मैं उनको कह दूँगा। आपको इसके बारे में चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।

श्री पोरे की सलाह के बारे में कृपया आप अपने दृष्टिकोण की जानकारी मुझे दीजिये।

मैं आपके दर्शन के दिन की बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

आपके पवित्र चरणों में मेरा प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास

८ जनवरी १९७१

परम प्रिय मालिक,

पिछला पत्र लिखने के बाद जब मैं घर आया तो आपका २ जनवरी का लिखा पत्र ३०००/- रुपये के ड्राफ्ट के साथ मुझे मिला। मैंने इसे मिशन के खाते में जमा कर दिया है और चि. उमेश को

मिशन का एक चेक दे दिया है। अगर यह मेरे व्यक्तिगत एकाउन्ट में जाता तो इन्कम टैक्स की समस्या होती।

मैं इतना भाग्यशाली हूँ कि आपका दिव्य प्रेम मुझ पर बरस रहा है। ऐसा सदैव होता रहे! आपकी कृपा से हम सब ठीक हैं।

मैं मद्रास यात्रा के आपके खर्चों के लिये आपको १०००/- रुपये का ड्राफ्ट भेज रहा हूँ। किसी अंत:प्रेरणा से आपका पत्र मिलने के पहले ही आज सुबह मैंने ड्राफ्ट ले लिया था।

प्रिय मालिक! अपने परिपूर्ण करने वाले प्रेम के आशीर्वाद सहित आप सदैव हमारे साथ रहिये।

सुलोचना और कृष्णा मेरे साथ आपके पवित्र चरणों में प्रणाम करते हैं।

आपका प्रिय पुत्र
पार्थसारथी

संलग्नक :
ड्राफ्ट नं. ००१५७/४, इलाहाबाद बैंक, शाहजहाँपुर

ॐ तत्सत्

मद्रास
१२ जनवरी १९७१

परम प्रिय मालिक,

मुझे उम्मीद है कि आपको मेरा रजिस्टर्ड पत्र मिल गया होगा। मैं जिन दो चीजों के बारे में आपको लिखना चाह रहा था, उसे लिखना ही भूल गया। मुझे बहुत बार एक सपना आया और यह इतनी बार आया कि मैं समझता हूँ कि इसके आने का औसत प्रति सप्ताह का है।

सपना : मैं घर से कहीं दूर किसी खुली जगह पर या किसी अजनबी घर में एक या दो लोगों के साथ हूँ। अचानक मुझे पाखाना की हाजत महसूस होती है। मैं लैट्रिन ढूँढ़ नहीं पाता और खुली जगह का इस्तेमाल करने में शर्माता हूँ। अगर यह प्रकाशित है चूँकि सपने में अक्सर रात का अँधेरा होता है, कभी दिन नहीं होता, तो बन्द है और मैं इसका उपयोग नहीं कर पाता। अन्यथा लैट्रिन तो बहुत सी बनी हैं लेकिन बहुत अँधेरा है। ये या तो जंगल में बनी हैं या अन्डरग्राउन्ड बनी हैं और अँधेरे की वजह से मैं इनका उपयोग नहीं कर पाता। सामान्यतया इसी समय मैं जग जाता हूँ।

रविवार १० जनवरी की सुबह मैंने एक सपना देखा, जिसे मैं पूरी तरह समझ नहीं सका। मैं मुसलमान प्रतीत होने वाले कुछ मित्रों के घर में हूँ जहाँ और भी कई लोग हैं लेकिन मेरा कोई मित्र वहाँ नहीं है। मुझे लैट्रिन जाना है। खोजने पर मुझे वहाँ एक लैट्रिन दिखती है जिसमें कोई दरवाजा नहीं है या शायद उसमें से दरवाजे निकाल दिये गये हैं। इसलिये मैं उसका प्रयोग नहीं कर पाता। वहाँ कुछ बच्चे मुझे देखकर हँस रहे हैं। मैं बाहर जाता हूँ लेकिन देखता हूँ कि वहाँ भी खुली हवा में कुछ बच्चे बैठे हुये हैं और मैं शर्म से वहाँ नहीं बैठ पाता। अचानक मैं मालिक के पास जाने का निर्णय लेता हूँ और अगले ही क्षण एक बड़े भवन में पहुँचता हूँ जहाँ अन्दर मेरे मालिक! आप बैठे हुये हैं। आप एक कुर्सी में बैठे हुये हैं। मैं आपके चरणों में गिर जाता हूँ। फिर मैं जमीन पर बैठकर आपके दोनों दैवीय पैरों से लिपट जाता हूँ और शान्ति पाता हूँ। इसी समय मेरी नींद खुल जाती है।

पिछले दो महीने से जब भी मैं स्वयं ध्यान में बैठता हूँ या दूसरे को सिटिंग देने के लिये बैठता हूँ, मुझे साँपों का ख्याल आता है - जैसे मेरे चारो ओर साँप घूम रहे हैं और मेरी गोद में भी चढ़ रहे हैं। इधर मैंने महसूस किया है कि जब भी मैं ध्यान में बैठता हूँ, अगर मैं अपना मुँह खोलता हूँ, तो एक कोबरा खड़ा होकर मेरे मुँह के अंदर पिछले हिस्से पर चोट मारता है। हालाँकि किसी प्रकार का डर नहीं लगता फिर भी साँपों का भाव आता है।

मैं आपको ये दोनो बातें लिखना चाह रहा था।

शाहजहाँपुर की मेरी यात्रा अभी तक तय नहीं हो पायी है। मेरे बॉस ने मुझसे कहा है कि मैं जा सकता हूँ लेकिन उसने अंतिम अनुमति नहीं दी है।

पिताजी १५ तारीख को ट्रेन से दिल्ली के लिये रवाना होंगे। श्रीमती रुथ १७ को दिल्ली के लिये उड़ेंगी। फिर वहाँ से दोनो साथ-साथ लखनऊ मेल से शाहजहाँपुर पहुँचेंगे।

प्रिय मालिक! मेरी पत्नी सुलोचना की मदद कीजिये। वह कमजोर है और उसे आपके प्रेम और आपकी कृपा की जरूरत है। मैं उस पर आपके दयालु प्रेम की वर्षा की प्रार्थना करता हूँ। इसके बिना वह प्रगति नहीं कर सकती। मालिक! मेरे बेटे को भी आशीर्वाद दीजिये। उसे आपके प्रेम और आशीर्वाद की जरूरत है।

आपके पवित्र चरण-कमलों में मैं अपना लघु और महत्वहीन प्रेम अर्पित करता हूँ।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

पुनश्च : श्री टी. श्रीनिवासन (आई.ए.एस.) ने दो हफ्ते में चि. उमेश को सरकारी कोटे से एक नया स्कूटर दिलाने का वादा किया है। उमेश का नया घर बहुत अच्छा है।

नं. सी ५३/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१६ जनवरी १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मैं श्री श्रीनिवासन का बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने चि. उमेश को दो हफ्ते के अंदर एक नया स्कूटर दिलाने का वादा किया है। मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ कि चि. उमेश को इस अवसर से पूरा लाभ उठाना चाहिये। कृपया उमेश को ऐसा करने के लिये कहो।

जो कुछ भी तुमने सपनों के बारे में लिखा है, उसे मैंने पढ़ा। मैं सपने के हर चरण की व्याख्या नहीं करना चाहता। ये सपने पुराने संस्कारों के बाहर निकलने की वजह से आ रहे हैं ताकि वे साफ हो सकें। इसलिये यह बुरा नहीं है। तुम्हें लगातार सफाई की जरूरत है जो मैं करूँगा।

मैं बेसब्री से कामना करता हूँ कि तुम्हें छुट्टी मिल जाय और तुम मेरे साथ यहाँ कुछ दिन के लिये रहो। अगर तुम आओ तो मैं अपने काम का प्रभाव तुम्हारे मुँह से सुन कर जान सकूँगा। अगर तुम किसी वजह से नहीं आ पाओ तो मुझे एक हफ्ते बाद लिखना।

मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ कि मैं भी चाहता हूँ कि बहू (सुलोचना) आध्यात्मिक रूप से बहुत ऊँचा उठे। मैंने तुमसे कहा था कि उसके दिल और आत्मा चक्र की सफाई करो, जिसके चारो ओर एक काल्पनिक वृत्त है, जिसने एक तरीके से उसके दिल और आत्मा चक्र को बाँध दिया है। मैंने उसके पिछले जीवन को जानने की कोशिश की ताकि मैं आधार से आगे बढ़ सकूँ। मैंने अध्ययन करके इसका पता लगाया। पिछले जन्म में उसे खाने को कम मिला और भीख पर जिन्दा रहना पड़ा। आशा करता हूँ कि ऐसा लिखने के लिये वह मुझे क्षमा

करेगी। लेकिन उसकी कामनायें केवल अपनी भूख मिटाने तक सीमित थीं। वह एक पवित्र नारी थी और साथ ही ईश्वर से भी एक सीमा तक जुड़ी हुई थी। यह परेशानी उसे पिछले जन्म में उसके पति के मरने के बाद हुई। उसका एक बेटा भी था जो उसके साथ ही भीख माँगने जाता था। उस समय उसके बेटे की उम्र करीब ९ साल थी। कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गयी और बेटा पूरी तरह ईश्वर पर निर्भर हो गया। वह सी. पी. में थी। उसका बेटा भी उसके बाद दान और भीख पर जीता रहा। इतना विवरण काफी है और मैं आगे के विवरणों में नहीं जाना चाहता।

भीख और भूख को मिटाने की इन परेशानियों में कठिन साधनों की छाप उस पर पड़ गयी। अगर इन्हें साफ कर दिया जाय तो वह ऊँचा उठना शुरु कर देगी। मालिक इस काम में मेरी मदद करे।

मुझे १०००/- रुपये का बैंक ड्राफ्ट मिल गया है, जो सम्भवत: यात्रा के खर्चों को पूरा करने के लिये है।

अपने पत्र में मैंने तुमको स्नेहवश लिखा था कि मैं तुम्हारे खर्चे पर यात्रा करूँगा। ठीक उसी तरह जैसे कोई अच्छा काम होने पर आदमी मिठाई माँगता है। अगर मैं आऊँगा तो मिशन के खर्चे पर आऊँगा। ड्राफ्ट मैंने तुम्हारे प्रयोग के लिये रख लिया है। डा. वरदाचारी की बीमारी की वजह से मैं आजकल बहुत परेशान हूँ और उनसे टेलिग्राफिक सम्पर्क बनाये हुये हूँ। तुम सब लोग उनके स्वस्थ होने की प्रार्थना करो।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
९ फरवरी १९७१

परमप्रिय मालिक,

मेरे पिताजी ने बम्बई के एक अभ्यासी के बारे में लिखा होगा, जो ४ फरवरी १९७१ को अचानक मानसिक रूप से बीमार हो गये। ऐसा लगता है कि ३० जनवरी को कोई टैक्सी ड्राईबर उन्हें पूना की एक प्रसिद्ध मुस्लिम दरगाह पर ले गया था, जहाँ वह एक घंटे तक था। बताया जाता है कि दरगाह में दो बड़े पत्थर हैं, जिसमें एक को ७ और दूसरे को ९ आदमी मिलकर उठा सकते हैं। बासु सहित ७ आदमियों ने

छोटे पत्थर को उठाने की कोशिश की लेकिन असफल रहे। मुल्ला ने उन्हें बताया कि इसे वे स्वयं नहीं उठा पायेंगे चाहे वे जितनी मेहनत करें लेकिन अगर वे उसके द्वारा बतायी गयी सूक्ति का उच्चारण करके इसे उठायेंगे तो केवल एक अँगुली से भी इसे उठा सकते हैं। मुल्ला ने उनसे 'कब्र अली दरवेश' कहकर पत्थर उठाने के लिये कहा। ऐसा कहने पर वे पत्थर को सिर की ऊँचाई तक उठा सके।

तब बासु ने कहा कि बड़ा वाला पत्थर मैं अपने मालिक का नाम लेकर अकेले उठाऊँगा। उसने आपका नाम लेकर बड़ा पत्थर उठाने की कोशिश की और असफल हो गया। उसी समय से उसके दिमाग पर कुछ असर हुआ है। उसने लोगों को बताया है कि इस्लाम में बहुत अधिक शक्ति है और वही सच्चा धर्म है। कम से कम बाहरी तौर पर ३ तारीख की शाम तक वह सामान्य दिख रहा था। ३ तारीख की रात को वह नहीं सो सका और ४ तारीख को झगड़ालू होकर कार्यालय में गाली-गलौज करने लगा। शाम को उसकी हालत इतनी खराब हो गयी कि बम्बई के मेरे भाई को बुलाया गया। इसके बाद वह बिगड़ता गया। ६ तारीख की रात उसे स्वास्तिक नर्सिंग होम में भर्ती किया गया और उसका ईलाज रशुरु हुआ। मैं आपसे उसकी मदद की प्रार्थना करता हूँ।

वह अपने कैरियर के शानदार मुहाने पर है और अभी-अभी एक साल पहले उसकी शादी हुई है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि जल्द से जल्द उसे सामान्य बनाने में उसकी मदद करें ताकि उसका युवा जीवन सामान्य और सुखमय हो सके।

हम सभी यहाँ बेचैनी से आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस बार प्लेन से उतरने तक मैंने अपनी शाहजहाँपुर वाली अवस्था बनाये रखने में सफलता पायी लेकिन प्लेन से बाहर आते ही यह दशा विलुप्त हो गयी। पहले कभी इतने लम्बे समय तक दशा को बरकरार नहीं रख पाया था। यह आपकी कृपा और आपका प्रेम है।

मालिक! आपको प्रेम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

परम पूज्य मालिक, ९ फरवरी १९७१

संदर्भ : श्री सी. ए. राजगोपालाचारी का विदेश दौरा

मैं इस विषय पर चर्चा करने की छूट आपसे लेकर आपकी इच्छानुसार इस पत्र में चर्चा कर रहा हूँ। निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना जरूरी है :

- दौरा अगर जरूरी न हो तो लम्बे समय का नहीं होना चाहिये ताकि खर्च कम किया जा सके।
- जहाँ भी सम्भव हो यात्रा में कम खर्च की तकनीक अपनायी जाय।
- यात्रा का लक्ष्य वर्तमान केन्द्रों को शक्ति प्रदान करने का हो चूँकि रोम और कोपेनहेगेन के अलावा अन्य केन्द्रों पर अभ्यासियों की संख्या निश्चित नहीं है। वर्तमान दौरे में फ्रेंच, जर्मन और इंग्लिश केन्द्रों पर अभ्यासियों के छोटे समूह को इकठ्ठा करे, अधिक समय दिया जाना चाहिये। बाद में इन केन्द्रों में उनकी देखभाल वहाँ के प्रशिक्षक इन्चार्ज करें। यह इस दौरे का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है।
- सेनेरी, फ्रीबर्ग और लन्दन में वर्तमान प्रशिक्षक बूढ़े लोग हैं इसलिये श्री राजगोपालाचारी को इस केन्द्रों पर भविष्य की जिम्मेदारियों के निर्वाह के लिये कम से कम एक युवा प्रशिक्षक ढूँढ़ने की कोशिश भी करनी चाहिये। यह भी उनके कार्य का एक महत्वपूर्ण पहलू है।
- प्रस्तावित यात्रा विवरण के साथ खर्चों का विवरण मैं यह दिखाने के लिये प्रस्तुत कर रहा हूँ जिससे यह पता चले कि मिशन को यात्रा पर कितना पैसा खर्च करना पड़ेगा। इसमें सीनियर स्तर पर बिजनेस एक्जक्यूटिव को दिये जाने वाले बहुत संयमित खर्चों को दर्शाया गया है। लगभग तीन महीने के दौरे के लिये कुल व्यय करीब £५००/- या १०,०००/- रुपयों का होगा।

मैं महसूस करता हूँ कि यात्रा हमारे वर्तमान केन्द्रों तक ही सीमित होनी चाहिये। इसमें अपवाद केवल कैरो है, जहाँ ७ दिन का दौरा प्रस्तावित है। वहाँ कुछ अभ्यासी हैं जो नियमित अभ्यास कर रहे हैं। मेरी राय में इस यात्रा का उद्येश्य बहुत स्पष्ट कर दिया जाना चाहिये और औपचारिक रूप से खर्च का बजट भी निर्धारित कर दिया जाना चाहिये।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

एच. एच. श्री रामचन्द्र जी महाराज
C/o श्री एम. एस. सुन्दर
१४, सुन्दरनगर, नयी दिल्ली - ११

स्थान	प्रवास के दिन	व्यय	टिप्पणी
इजिप्ट/कैरो	७	£३५	
रोम	७	३५	
सेनेरी	१५	२०	श्री पोरे के साथ प्रवास, रहने खाने का कोई खर्च नहीं। केवल जेब - खर्च की अनुमति।
फ्रीबर्ग	१५	७५	
कोपेनहेगेन	१०	१५	श्रीमती हॉगार्ड के साथ प्रवास।
लन्दन	१५	२०	श्री एवं श्रीमती डेविश के साथ प्रवास।
	६९	२००	
यात्रा की अवधि	११		
	८०	२००	
मद्रास-लन्दन-मद्रास का हवाई मार्ग किराया		३००	
		£५००	

नं. सी ११४/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**

७ मार्च १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैं यहाँ ३ मार्च को सकुशल पहुँच गया। मैं श्री एवं श्रीमती डेविश के साथ रहने का आनन्द लेने के लिये दिल्ली में एक दिन और रुका। ३ मार्च को वे लन्दन के लिये रवाना हो गये। श्रीमती डेविश ने दिल्ली एयरपोर्ट से काम करने का वादा करते हुये पुनः एक पत्र लिखा। इंग्लैंड में डाक सेवा की हड़ताल चल रही है इसलिये उसने एयरपोर्ट से ही पत्र लिखा।

मैंने उन्हें अपनी मद्रास वार्ता के बारे में याद दिलाया, जिसमें मैंने बताया था कि चाँद में गैस है और अब चाँद का फोटो भी दर्शाता है कि चाँद में गैस है। श्री डेविश ने उस पेपर की कटिंग माँगी जिसमें यह समाचार छपा था। कृपया अपने पास एक प्रति रिकॉर्ड के लिये रखते हुये उसकी कटिंग उन्हें भेज दो। हैदराबाद के राघवेन्द्र राव मेरे साथ यहाँ आये हैं। उन्होंने सीतापुर के आँख के अस्पताल में अपनी आँखों की जाँच करायी हैं। डॉक्टर ने उन्हें तुरंत कैटरेक्ट के ऑपरेशन की सलाह दी है। मैंने सीतापुर में उनके ऑपरेशन के लिये सारे जरूरी प्रबंध कर दिये हैं। ऑपरेशन ८ मार्च को होगा। ईश्वर उन्हें जल्दी ठीक करे।

जबसे आया हूँ तुमसे मिलने मद्रास दौड़ कर आना चाहता हूँ। अब तक मैं तुम्हारे पास साल में एक बार आता था लेकिन अब इतना इन्तजार कठिन होता जा रहा है।

बच्चों को प्यार। शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पंजीकृत

२५ मार्च १९७१

पूज्य मालिक,

संदर्भ : ७१वें जन्मदिन की सेलिब्रेशन कमिटी का एकाउन्ट

आपको पिछली मद्रास यात्रा के दौरान आपने मुझे इस एकाउन्ट को देखकर जो पैसा बचा हो उसे आपके पास ट्रांसफर करने का निर्देश दिया था। परिणामत: संचालक श्री सी. ए. राजगोपालाचारी ने ३२००/- रुपये सौंप दिये हैं। अब इस कार्य के लिये खोले गये बैंक एकाउन्ट में करीब ५/- रुपये बचे हैं।मुझे यह पैसा शाहजहाँपुर के लिये इलाहाबाद बैंक के डिमान्ड ड्राफ्ट नं. ००१३५३/४ से भेजते हुये खुशी हो रही है। कृपया इसकी प्राप्ति की सूचना दीजिये।

मैं आपको यह भी बताना चाहता हूँ कि जो ४००/- रुपये बरामद नहीं किये जा सकते थे, उन्हें सेलिब्रेशन कमिटी के एकाउन्ट से

निरस्त कर दिया गया है। इस प्रकार यह एकाउन्ट अब अंमित रूप से बंद हो गया है, जिसमें केवल ५/- रुपये बचे हैं।

प्रणाम,

संलग्नक : आपका अनुरागी

उपरिलिखित ड्राफ्ट पार्थसारथी

नं. सी १८०/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर

६ अप्रिल १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे प्रेमपूर्ण पत्र मिले। मेरा पिछला पत्र तुम्हें मिला होगा। उसमें जो बातें मैंने तुम्हें बतायी थीं, वे आगे बढ़ रही हैं। तुम्हारा विचार मेरे अवचेतन मन में है दूसरे शब्दों में समझो कि मैं तुम्हारे ऊपर ध्यान कर रहा हूँ। इस अवस्था को देखकर मैं प्रसन्नता से भर गया हूँ और तुम्हें भी यह जानकर गर्व होगा कि तुम्हारा मुझमें लय होना शुरु हो गया है। यह केवल शुरुआत भर है। यह और आगे भी विकसित होनी चाहिये। तथास्तु।

मद्रास की इस बार की मेरी यात्रा बहुत लाभदायक रही। मैं भाग्यशाली हूँ कि तुम हमारे बीच में हो। दिल के संयुक्तिकरण या दिव्यीकरण के तुरंत बाद ही यह क्रिया शुरु हो गयी थी। लगता है कि यह संयुक्तिकरण का परिणाम है। अगर मैं जहाँगीरदार का मामला भी अपने हाथ में ले लेता हूँ तो पद्धति पर मेरा भरोसा और भी बढ़ जायेगा।

तुम्हारे पिताजी और श्रीमती बर्थे हॉगार्ड सकुशल यहाँ पहुँच गये और मेरे साथ होने का फायदा उठा रहे हैं। मेरी बायीं बगल में एक फोड़ा हो गया था जो अब करीब-करीब ठीक हो गया है और अब उसमें कोई दर्द नहीं है। मेरी दूसरी परेशानी यह है कि पूरे सिर में मुझे बहुत तेज दर्द होता है। यह सुबह ७:०० बजे शुरु होकर दोपहर २:०० बजे तक चलता है फिर धीरे-धीरे खत्म होना शुरु होता है। इस अवस्था में मैं किसी तरह काम कर पाने में कामयाब होता हूँ। तुम्हारे पिताजी द्वारा बतायी गयी दवा ले रहा हूँ और आशा करता हूँ कि यह जल्दी ही ठीक हो जायेगा। इसमें परेशान होने जैसी कोई बात नहीं है।

जून के पहले हफ्ते में मेरा इरादा आसाम जाने का है। तारीख तय हो जाने पर मैं तुम्हें इसकी सूचना दूँगा। तुम्हारे पिताजी के लिये

भी आसाम से बुलावा है लेकिन मैं उन्हें आसाम नहीं ले जा रहा हूँ चूँकि जुलाई में वे पश्चिमी देशों के लिये भारत से प्रस्थान करेंगे।

बहू के मामले में पिछले जन्म की छापें साफ हो गयी हैं। मुझे उम्मीद है कि अब उसकी तरक्की होगी।

चि. नारायणा के पत्रों से ऐसा लगता है कि उसने मेरी जरूरत महसूस करनी शुरु कर दी है। उसने जो मुझे लिखा है, उसे वह बौद्धिक ईमानदारी समझता है, जबकि मेरी समझ में यह बौद्धिक असभ्यता है। उसे केवल इस बात का दुःख है कि मैंने उसे गलत समझा।

मैं ५८४५/- रुपये ट्रांसफर कर रहा हूँ, जो तुमने किताबों आदि के एकाउन्ट के लिये अपने ३१ मार्च १९७१ के पत्र द्वारा माँगे थे और जिसकी अवधि इलाहाबाद बैंक, मद्रास में ३१ मार्च १९७१ को समाप्त हो रही है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : कृपया ध्यान दो कि ड्राफ्ट में २५०/- रुपये इजाजत नगर के डा. एस.आर.जी. मुरलीधरन के हैं, जिन्होंने यह पैसा सहजमार्ग पत्रिका की आजीवन सदस्यता के लिये दिया है।

मद्रास
१२ अप्रिल १९७१

मेरे परम प्रिय मालिक,

मैं आपका पत्र पाकर विस्मित रह गया। इसे पाकर मैं बहुत खुश हूँ और साथ ही दुःखी भी। खुश उन बातों के लिये, जो इस पत्र में आपने मेरे लिये लिखी हैं और दुःखी इसलिये कि मैं आपसे शारीरिक रूप से दूर हूँ। मेरा दिल सदैव आपके पास होने के लिये तड़पता है और यह तड़प इतनी गहरी होती है कि कई बार मैं रुँआसा हो जाता हूँ। पहले इसलिये तड़प सक्रिय थी कि कुछ करना चाहता था। शाहजहाँपुर जाने की कोशिश करनी है लेकिन अब कोई हलचल नहीं है बल्कि तड़प गहरी हो गयी है। जैसा कस्तूरी बहन मीरा के गीत गाती हुई कहती हैं : तुम मुझे जहाँ भी रखोगे, रह लूँगा। दिल की तड़प और बेचैनी रोके नहीं रुकती। कृपया अपने आप में मुझे पूर्ण लय कर

लीजिये। मुझे और कुछ भी नहीं चाहिये। मेरी आँखें केवल आपके दिव्य स्वरूप को देखें। मेरी अहसास की शक्तियाँ केवल आपकी पवित्र उपस्थिति का अहसास करें। मेरी चेतना आपकी हो, केवल आपकी। मैं आपकी ईश्वरीय इच्छा का केवल एक विनीत दास बन पाऊँ। आपकी दिव्य कृपा का एक कण बन सकूँ।

आपके दिव्य चरणों में मेरा नमन! कृपया मुझे निर्भयता प्रदान करें - मुझे इसकी बहुत जरूरत है।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

१२ अप्रिल १९७१

मेरे परम प्रिय मालिक,

इलाहाबाद बैंक ने आपके एकाउन्ट में ५८४५/- रुपये स्वीकार कर लिये हैं। मैं आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ कि हमारे ३१ मार्च १९७१ के पत्र में किताबों की बिक्री के नाम ५७९५/- रुपये हैं। इस प्रकार हमारे एकाउन्ट में हेड ऑफिस का ५०/- रुपया ज्यादा जमा हो गया है। आपके पत्र में लिखा है कि २५०/- रुपये हमें श्री एस.आर.जी. मुरलीधरन के आजीवन सदस्यता के एकाउन्ट में ट्रांसफर करना है, जो गलत है चूँकि उनके २००/- रुपये ही शेष हैं और हमारे एकाउन्ट में यह ५०/- रुपया ज्यादा क्रेडिट है। कृपया इसकी पुष्टि कीजिये।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

तार : **१६ अप्रिल १९७१**

राजगोपालाचारी
श्री रामनगर, मद्रास
राजगोपालाचारी की मितली रुक गयी है। परेशानी की कोई बात नहीं है।

रामचन्द्र

शाहजहाँपुर
१६ अप्रिल १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे पिताजी को कुछ उल्टियाँ हुई हैं लेकिन वे अब पहले से बेहतर हैं। मितली अब भी जारी है। यहाँ उनका इलाज हो रहा है और तबियत में सुधार भी है।

मैंने उन्हें यहाँ रोक लिया है और मैंने इसके बारे में आज ही टेलिग्राम भी भेजा है। इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं है। तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मुझे मिल गया है।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
१९ अप्रिल १९७१

परम प्रिय मालिक,

मेरे पिताजी के स्वास्थ्य से संबंधित आपका एक टेलिग्राम मिला, जिससे मुझे और मेरे परिवार को एक तगड़ा झटका लगा। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप उन्हें लम्बा जीवन प्रदान करें। उनके बच्चों में मनोबल के रूप में सहारे के लिये उनके ऊपर सर्वाधिक निर्भरता मेरी ही रही है। और अब भी ४४ साल की उम्र में भी जब वे अकेले दूर होते हैं, मेरे लिये काफी परेशानी की बात होती है। वे चाहे मेरे लिये कुछ भी न करें फिर भी केवल उनकी भौतिक उपस्थिति मुझे जीवन का सामना करने की शक्ति और साहस देती है। मुझे सदैव उनकी जरूरत होगी। यह शायद मेरी कमजोरी भी है। हालाँकि मैं अपने पिता को बहुत गहराई से प्रेम करता हूँ, मुझमें इसका प्रदर्शन करने की क्षमता नहीं है। वास्तव में मेरी आदत उन लोगों से अपने आपको दूर रखने की है, जिन्हें मैं बहुत अधिक प्रेम करता हूँ। इसीलिये सामान्यतया लोग समझते हैं कि मैं भावना रहित और एक बेदर्द इन्सान हूँ। मेरे पिताजी भी मेरी भावना को नहीं समझते। मेरे प्रिय मालिक, मेरे आध्यात्मिक पिता, मेरे ईश्वर, मेरे सर्वस्व, मुझे आपके अलावा पूरी जिन्दगी में और कोई नहीं समझ सका। मालिक! मैं आपसे अपनी माँगें बढ़ाता जा रहा हूँ तो इसलिये क्योंकि किसी भी चीज के लिये आपके अलावा अब मैं किसी दूसरे की तरफ नहीं देख सकता। किसी खो गये और डरे हुये बच्चे की तरह अपने डरों, दुखों या खुशी के साथ मैं केवल और केवल आपके पास आ सकता हूँ। इसलिये कृपया मेरे पिताजी

को सलाह दीजिये कि वे पागलपन और भावावेश में अपने जीवन पर किसी प्रकार की चोट न करें। वे भूल जाते हैं कि वे अब ६६ साल के हैं और शरीर अब इस असहनीय तनावों को नहीं झेल सकता, जो इस पर वे डालते हैं। पिछले ५ या ६ सालों में मेरे पिताजी का विकास मुझसे अलग तरह से हुआ है। मेरे और उनके रास्ते अलग-अलग हो गये हैं। हमारे बीच कुछ दूरी आ गयी है। वे चाहे जैसा भी हों मैं उन्हें एक सच्चे पुत्र की तरह प्यार करता हूँ और उनके जीवन और उपलब्धियों के लिये उनका सम्मान करता हूँ। मेरे पिताजी अफ्रीका, यू. एस.ए., जापान और मैं नहीं जानता कि और कहाँ-कहाँ को मिलाकर पूरी दुनिया का भ्रमण करना चाहते हैं। बगदाद से उनके भाई यानी मेरे चाचा ने लिखा है कि मेरे पिताजी को इस उम्र में इतनी लम्बी और कड़ी यात्रा करने के बारे में सोचना चाहिये। मेरे परिवार में सभी चिन्तित हैं और मैं आपसे मदद की प्रार्थना करता हूँ।

मुझमें एक बड़ा भारी परिवर्तन हुआ है। मैंने एक रास्ता खोज लिया है जिससे रात के डर से अब मुझे मुक्ति मिल गयी है और मैं आराम से सोने लगा हूँ। अपनी आँखों को बन्द करके मैं अपने सारे विचारों को अपने दिल में ले आता हूँ और ऐसा करते ही तुरंत नींद में चला जाता हूँ। फिर नींद सुबह ही खुलती है। इस विधि को मैंने बहुत प्रभावी पाया है। लेकिन इससे भी भय जाता नहीं है। यह भय आदिमकालीन भय जैसा है, जिसका कोई विशिष्ट कारण नहीं है! मन खुद ही भय का एक कारण है। मन में भय होने पर मैं बहुत चिड़चिड़ा हो जाता हूँ। कृपया इससे मुक्त होने में आप मेरी मदद करें।

प्रिय मालिक! जो कुछ भी होता है, आपकी दिव्य इच्छा से ही होता है। कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं होता। केवल वस्तुओं या घटनाओं के प्रति मानवीय सोच उसे बुरा या अच्छा बना देती है। मुझे सिखाइये कि मैं आपकी दिव्य इच्छा को पहचान सकूँ, उसे स्वीकार कर उसका पालन कर सकूँ और उसके उपकरण के अलावा और कुछ भी न बनूँ।

मेरे मालिक! आपको मेरा प्रेम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

तार : १९ अप्रिल १९७१

पी. राजगोपालाचारी
श्री रामनगर, मद्रास

पिताजी की स्थिति में सुधार। २१ तक पूरी तौर पर ठीक हो जाने की उम्मीद।

रामचन्द्र

तार : २१ अप्रिल १९७१

पार्थसारथी रातगोपालाचारी
श्री रामनगर, मद्रास

तेज सिरदर्द जारी, कमजोरी बढ़ी – चिन्तित। आओ।

रामचन्द्र

मद्रास
१५ मई १९७१

परम प्रिय मालिक,

आशा है कि आप सकुशल होंगे। मेरे पिताजी को हमारे लिये बचाकर मेरे परिवार के प्रति आपने जो कृपा और रहम दर्शायी है, मैं नहीं जानता कि मैं उसके लिये आपका आभार कैसे प्रकट करूँ। जो ध्यान आपने हम पर दिया है और जो कृपा आपने हम पर बरसायी है, उसका आभार कभी भी मैं कैसे प्रकट कर सकता हूँ। शाहजहाँपुर में पिताजी की हुई बीमारी ने कई तरह से मेरी आँखों को खोल दिया है। आपका नाम शाश्वत रूप से प्रशंसित और सम्मानित हो।

पिताजी अभी भी कमजोर हैं और ज्यादातर बिस्तर में रहते हैं। जो ताकत शाहजहाँपुर में उनके अंदर दिखती थी, अब उनमें नहीं दिखती। लेकिन कोई परेशानी नहीं है। पिछले सोमवार की रात उनके पैरों में कुछ दर्द था और उन्हें उलझन भी थी लेकिन एक घंटे में यह खत्म हो गया। मंगलवार को रेलवे अस्पताल में मेडिकल सुपरिटेंन्डेन्ट ने खुद उनकी विस्तृत जाँच की। बाद में उनकी न्यूरोलॉजिकल जाँच हुई और उनके सिर का एक्स-रे भी हुआ। उन्होंने बताया कि परेशानी की कोई बात नहीं है लेकिन उन्हें तीन महीने पूरा आराम करना चाहिये और मद्रास से कहीं बाहर नहीं जाना चाहिये। उन्होंने यह भी बताया कि केवल प्राकृतिक चिकित्सा होनी है इसलिये उन्हें किसी प्रकार

की कोई दवा नहीं देनी है। होम्योपैथिक इलाज चल रहा है और मैंने देखा है कि उनमें सुधार भी हो रहा है। कमजोरी अभी बनी हुई है। पिछली रात करीब आधे घंटे के लिये उनके सिर में कुछ भारीपन था और धीमा सिरदर्द भी लेकिन केवल आधे घंटे के लिये।

चि. उमेश और अनीता ठीक हैं। मैंने उन्हें पैसा दे दिया है और उमेश के पास की दवा भी बदल दी है। परसों सुलोचना बहू को एच.एम. हॉस्पीटल ले गयी थी जहाँ डाक्टर श्रीमती लक्ष्मी ने उसकी विस्तृत जाँच की। उसने बताया कि डिलेवरी जून के अंत में होने की सम्भावना है लेकिन उसने अनीता को रा १० दिन पर जाँच के लिये आते रहने को कहा है। उसकी डिलेवरी के लिये एक विशिष्ट कमरा रिजर्व करके उसका एडवांस पेमेन्ट कर दिया है। इस प्रकार उसके सारे प्रबंध पूरे हो गये हैं।

कुछ दिनों बाद मैं फिर लिखूँगा। सदैव आपके विचारों में,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

तार : २२ मई १९७१

श्री पी. राजगोपालाचारी
श्री रामनगर, मद्रास
उमेश के मामलों में अत्यधिक चिन्तित। जल्दी आ रहा हूँ तब तक उसको शान्त रखो और उसकी मदद करो।

रामचन्द्र

मद्रास
२४ मई १९७१

परम प्रिय मालिक,

चि. उमेश के बारे में आपका चिन्तापूर्ण तार मिला। मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि चिन्ता की कोई बात नहीं है। उमेश ने बिना कोई सूचना दिये १४ और १५ को दो दिन की छुट्टी ले ली थी। हालाँकि १३ तारीख की रात में ८:०० बजे वह हमारे घर में हमलोगों के साथ था लेकिन उसने यह बात मुझे भी नहीं बतायी। इन्हीं दिनों में कुछ बैंक पेमेन्ट किये जाने थे, जिनका दायित्व उसी पर है। उसने इसका कोई प्रबंध भी नहीं किया। एक सीनियर एकाउन्टेन्ट मि. गोपाल

ने मुझे यह बात बतायी फिर मैंने उसे जरूरी निर्देश देकर उससे काम करा लिया।

लेकिन बाद में लगता है कि मि. गोपाल ने श्री टी. टी. रंगनाथन (श्री टी. टी. नरसिंहन के पुत्र) से भीइसकी शिकायत की, जिन्होंने उमेश को एक औपचारिक पत्र जारी किया कि उसका व्यवहार गलत और गैर जिम्मेदाराना है और अगर वह इसमें कोई सुधार नहीं लाता है तो उस पर कड़ी कार्यवाही की जायेगी।मैं कलकत्ता के विजिटर के साथ व्यस्त था इसलिये इन दो दिनों में मेरी मुलाकात उमेश से नहीं हो पायी। लगता है इस पत्र ने उमेश को परेशान कर दिया है। वह मेरे पिताजी से भी मिला था और उसने मेरे पिताजी को बताया कि वह टी. टी. के. ऑर्गनाइजेशन में आत्मसम्मान के साथ काम नहीं कर सकता इसलिये त्यागपत्र देने जा रहा है। मेरे पिताजी ने उसे काफी विस्तार से समझाया। अगले दिन जब वह मुझसे मिलने आया तो मैंने उससे कहा कि जल्दबाजी में कुछ मत करो। आज का जीवन सब तरफ तनावों से भरा हुआ है और इसे इसी तरह जीना है। वह मान गया है और मैं समझता हूँ कि उसने इस्तीफा देने जैसी गम्भीर बात का विचार त्याग दिया है।

श्री कुप्पूस्वामी शहर से बाहर गये हुये थे। कल मैंने उनसे बात की। उन्होंने मुझे बताया कि उमेश में काफी सुधार हुआ है और भविष्य में वह काफी अच्छा करेगा। उन्होंने कहा कि इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं है और वे आपको इस आशय का टेलिग्राम भी भेजेंगे। जब तक उमेश कोई बहुत अपरिपक्वता का बर्ताव नहीं करते, परेशानी की कोई बात नहीं है। प्रिय मालिक! आप चिन्ता मत कीजिये। हम अपनी पूरी क्षमता से उसके विकास को सम्भव बनाने और उसके हितों की रक्षा करने का कार्य करेंगे लेकिन उसे मि. कुप्पूस्वामी और मुझसे सहयोग करना चाहिये।

पिताजी का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन सुधर रहा है। इधर उनका वजन भी कुछ बढ़ा है। यह आपकी कृपा है। उनकी ताकत में इजाफा हुआ है लेकिन अभी भी बिस्तर से उठकर वे अकेले नहीं टहल सकते।

मैं अपनी पत्नी सुलोचना के आध्यात्मिक विकास की आपसे प्रार्थना करता हूँ। मैं स्वस्थ हूँ लेकिन जब से शाहजहाँपुर से आया हूँ, सिरदर्द जल्दी-जल्दी हो रहा है। नेति करना जारी है और आपकी सलाह पर मैं दूध में बादाम भी ले रहा हूँ।

सुलोचना और कृष्णा आपको प्रणाम कर रहे हैं और अपना प्रेम भेज रहे हैं।

मेरा प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

तार : **२३ मई १९७१**

पी. राजगोपालाचारी
श्री रामनगर, मद्रास
२६ की सुबह प्लेन से पहुँचूँगा। उमेश को खबर कर दो।

रामचन्द्र

तार : **२५ मई १९७१**

पी. राजगोपालाचारी
श्री रामनगर, मद्रास
अगर पार्थसारथी को मेरी जरूरत है तो मैं तैयार हूँ। २६ को प्लेन से पहुँचूँगा।

रामचन्द्र

नं. सी ७१५/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२१ जून १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैं २० जून की सुबह सकुशल शाहजहाँपुर पहुँच गया। रायचूर में शादी में करीब ८०० लोग थे, जिसमें ६० बाराती थे। मैं स्वामीनाथन का बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने रायचूर के दौरे में मेरी बहुत मदद की।

अगर तुम अपनी अंदरुनी अवस्था के बारे में जल्दी-जल्दी या जब भी जरूरी समझो तो लिखो तो अच्छा होगा। इस समय तुम जिस प्रक्रिया से होकर गुजर रहे हो, वह जल्दी ही पूरी हो जायेगी। परिवर्तन तो हो रहे हैं लेकिन बहुत सूक्ष्म। मैं नहीं जानता कि तुम उनका अनुभव कर भी पा रहे हो या नहीं।

आशा है तुम्हारे पिताजी अब ठीक होंगे और अब उन्हें कमजोरी भी नहीं होगी।

मद्रास में तुमने मुझे बताया था कि तुमने पत्रिका के लिये ५०००/- रुपये का कागज भेज दिया है। अभी तक हमें इसकी रेलवे रसीद नहीं प्राप्त हुई है।

यहाँ पहुँचने पर मुझे मद्रास से मि. जी. रिचर्ड ग्रेविल C/o यू. एस. काउन्सलेट का २८ मई १९७१ का लिखा एक पत्र मिला। मैं उनको लिखे जबाब की एक प्रति तुम्हारे पिताजी को भेज रहा हूँ।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : फ़ोनोग्राम भेजा गया है। तुम्हारी खुशखबरी मिली। मैंने तुम्हारे पिताजी को अभी-अभी बधाई दी। तुम्हारी प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद मैं तुम्हें कुछ दैवीय कार्य सौंपना चाहता हूँ। मुझे तुम्हारी सीमा तोड़नी होगी और तुम्हारी शक्ति का विकास करना होगा। यह मेरा काम है और इसे मैं देख लूँगा। मैं पूरे मन से प्रार्थना करता हूँ कि तुम सिरदर्द से पूरी तरह से मुक्त हो जाओ ताकि आसानी से काम कर सको।

मद्रास
२३ जून १९७१

परम प्रिय मालिक,

मैंने शाहजहाँपुर से अभी-अभी आपका प्रेमपूर्ण पत्र प्राप्त किया। जानकर बहुत खुश हूँ कि आप सकुशल हैं और आपकी यात्रा हर दृष्टि से अच्दी और आरामदेह रही। यहाँ सभी सकुशल हैं। पिताजी वैसे तो सामान्य प्रतीत होते हैं लेकिन उनके होम्योपैथ डॉक्टर का कहना है कि उनका रक्त प्रवाह ठीक नहीं है। मुझे वे बिन्कुल ठीक लगते हैं। उन्होंने अपनी विदेश यात्रा की योजना बनानी शुरु कर दी है। मैं नहीं समझता कि इसमें कोई परेशानी है।

अपनी अवस्था के बारे में मैं आश्चर्यचकित हूँ। ऐसा लगता है कि मैं क्लोरोफार्म या इसी प्रकार की किसी चीज से बाहर आ रहा हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि मैं यहाँ हूँ और यह भी कि मैं यहाँ नहीं हूँ। यह स्थिति आपके जाने के बाद की है। मन बहुत शान्त है। पहले मैं जिस तरह किसी बाहरी चीज से परेशान हो जाता था, अब नहीं होता हूँ। हालाँकि मैं जीवित हूँ लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मैं किसी दूसरे

अस्तित्व में पहुँच गया हूँ और सामान्य सांसारिक कार्यों को करने के लिये भी मुझे इस अस्तित्व से बाहर आना पड़ता है। संक्षेप में मैं जहाँ हूँ वहाँ से बहुत दूर प्रतीत होता हूँ। जिस दिन आप जा रहे थे, मैंने एक और बात महसूस की। सामान्यतया जब आप जाते हैं तो मैं बहुत दु:ख महसूस करता हूँ और आँखें आँसुओं से भरी होती हैं लेकिन इस बार दु:ख बहुत ऊपरी सतह पर था जबकि निचले सतहों पर बहुत शान्ति और प्रसन्नता की अनुभूति थी।

सिरदर्द का इलाज जारी है और मेरा विश्वास है कि मैं पहले से बेहतर हूँ। आपके प्रेम और आपकी कृपा से मैं जल्दी ही पूरी तरह ठीक हो जाऊँगा।

चि. उमेश और बहू स्वस्थ हैं। बच्चा बहुत अच्छा, गोरे रंग का है और चेहरा कुछ-कुछ संजय जैसा है। बाँया हाँथ कुछ मुड़ा हुआ है लेकिन ठीक हो जायेगा। बच्चे के नाम के लिये हम आपके सलाह की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आपकी कृपा से सभी लोग ठीक हैं। कागज की रेलवे रसीद भाई रायजादा जी को भेज दी गयी है। मैं मेमोरियल लाइब्रेरी के संदर्भ में एक सर्कुलर संलग्न कर रहा हूँ।

प्रेम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
२५ जून १९७१

परम पूज्य मालिक,

मिशन के सारे प्रशिक्षकों को भेजे जाने वाले एक नोट को मैं इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ। इसे देख कर, ठीक कर, अपने प्रेस में छपवा कर लोगों को भेजा जाना है। मुझे इस बात का दु:ख है कि इस काम में देर हुई है। मुझे आपसे "डा. के. सी. वरदाचारी मेमोरियल लाइब्रेरी" के संदर्भ में छपे हुये सर्कुलर की भी स्वीकृति चाहिये, जो मैंने कल ही आपको भेजा है। छपे हुये सर्कुलर यहाँ तैयार हैं, आपकी अनुमति की प्रतीक्षा है।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

संलग्नक : उपरिलिखित

मिशन के समस्त प्रशिक्षकगण

मैंने पाया है कि जब अभ्यासी शाहजहाँपुर आते हैं, उनको अधिक सफाई की जरूरत पड़ती है। इससे मुझपर भारी बोझ और तनाव पड़ता है। क्योंकि उस आध्यात्मिक कार्य को शुरु करने के पहले, जिसके लिये वह आया है, मुझे अभ्यासी की सफाई पर अधिक समय खर्च करना पड़ता है। इसके कुछ कारण हैं, जिन्हें मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ :

- प्रशिक्षक अभ्यासी को सिटिंग देते समय जब यह सोचते हैं कि वे ट्रांसमीटर हैं तो परिणाम अच्छा नहीं होता। उनका यह विचार मालिक के ट्रांसमिशन के पूरे प्रभाव को सीमित कर देता है।
- प्रशिक्षक सामान्यतया सोचते हैं कि वे अभ्यासी की अवस्था नहीं पढ़ सकते। मैंने बार-बार कहा है कि पढ़ने की शक्ति अभ्यास द्वारा आसानी से विकसित की जा सकती है। अगर प्रशिक्षक इस विचार के साथ काम शुरु करता है कि वह अवस्था नहीं पढ़ सकता तो उसके लिये अवस्था पढ़ पाना असम्भव है। ट्रांसमिशन शुरु करने के बाद कुछ मिनट तक अभ्यासी की अवस्था पर दृढ़ इच्छा के साथ एकाग्र होने पर अवस्था को आसानी से पढ़ा जा सकता है।
- प्रशिक्षक अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग न करते हुये केवल औपचारिकतावश अभ्यासी की सफाई करता है। इससे सफाई का काम तो किया जाता है लेकिन वास्तव में इस सफाई का अभ्यासी पर कोई प्रभाव नहीं होता।
- प्रशिक्षक को अपने काम के प्रति रुचि होनी चाहिये और उसमें अपने काम के प्रति गम्भीरता भी होनी चाहिये। कुछ मामलों में मैंने पाया है कि प्रशिक्षकगण अभ्यासी की अवस्था तो पढ़ना चाहते हैं लेकिन यह भी सोचते रहते हैं कि वे ऐसा नहीं कर सकते। सही तरीका यह है कि ट्रांसमिट करते समय अभ्यासी में क्या महसूस होता है -इस पर आप एकाग्र हों। स्थूलता अधिकतर पिण्ड प्रदेश में

- प्रशिक्षक अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग न करते हुये केवल औपचारिकतावश अभ्यासी की सफाई करता है। इससे सफाई का काम तो किया जाता है लेकिन वास्तव में इस सफाई का अभ्यासी पर कोई प्रभाव नहीं होता।
- प्रशिक्षक को अपने काम के प्रति रुचि होनी चाहिये और उसमें अपने काम के प्रति गम्भीरता भी होनी चाहिये। कुछ मामलों में मैंने पाया है कि प्रशिक्षकगण अभ्यासी की अवस्था तो पढ़ना चाहते हैं लेकिन यह भी सोचते रहते हैं कि वे ऐसा नहीं कर सकते। सही तरीका यह है कि ट्रांसमिट करते समय अभ्यासी में क्या महसूस होता है इस पर आप एकाग्र हों। स्थूलता अधिकतर पिण्ड प्रदेश में पायी जाती है और कभी-कभी इसकी प्रकृति बहुत कठोर होती है। तरीका यह है कि पहले दो-तीन मिनट तक अभ्यासी को ट्रांसमिट करें फिर उस पर एकाग्र हों। हृदय स्थूलता की प्रकृति का संदेश देगा। आपके हृदय में भी इस बात का संतोष होगा कि आप उचित परिणाम पर पहुँच गये। जैसे ही आप किसी व्यक्ति की अवस्था का पता करने के लिये अपनी आँखें बन्द करते हैं, उसकी अवस्था के पता चलने की प्रक्रिया की स्वाभाविक शुरुआत हो जाती है, जो आपकी एकाग्रता पर निर्भर करती है। एकाग्रता किसी चीज को जानने का एक उपकरण है। इसका ईश्वर से कोई संबंध नहीं है।
- प्रशिक्षक के अंदर त्याग की भावना का होना आवश्यक है और अभ्यासी के लिये भी उसे स्वीकार करना जरूरी है। प्रशिक्षकों को मिशन का काम अपने काम की तरह समझना चाहिये और मिशन के काम को उन्हें प्राथमिकता देना चाहिये। अगर समर्पण की भावना का जन्म हो जाये तो काम बहुत आसान हो जायेगा।
- प्रशिक्षकों को अपने व्यक्तिगत व्यवहार से अभ्यासियों के समक्ष एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिये। उन्हें चंचल और अनावश्यक गतिविधियों से दूर रहने की सलाह दी जाती है। लेकिन साथ ही साथ उन्हें यह भी सलाह दी जाती है कि अपने जगने के सारे घंटों में उन्हें व्यस्त रहने की कोशिश करनी चाहिये। पूज्य लालाजी साहब का कहना है कि एक भी क्षण व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिये। उन्होंने अपने सारे जीवन में कड़ाई के साथ इसका पालन किया।

- मैंने काम करने के लिये बहुत सारे प्रशिक्षकों को केवल अपना काम आसान करने के लिये नहीं तैयार किया है बल्कि दूसरों को उनसे लाभ पहुँचे - यह भी इच्छा इसमें शामिल है। सच्चाई तो यह है कि प्रशिक्षकों को अपने उन्नयन के साथ अपना काम करना चाहिये। अगर रूपान्तरण और ईश्वर के क्षेत्र में पहुँचाने के उच्चतर काम के लिये मुझे छोड़ दिया जाये तो इसे काम का सही बँटवारा कहा जायेगा। इसका मतलब यह नहीं है कि प्रशिक्षक इस काम से मुक्त हैं। वास्तव में तो प्रशिक्षक वह सब कुछ कर सकते हैं, जो मालिक कर सकता है।

मैं आप सबों से इन बातों पर गौर करने और अपने तथा मानवता के लाभ के लिये इन सिद्धान्तों को अमल में लाने के लिये तहे दिल से निवेदन करता हूँ।

रामचन्द्र

मद्रास
२८ जून १९७१

परम प्रिय मालिक,

आशा है कि आप कुशल होंगे और मेरा पत्र आपको मिल गया होगा। आपकी कृपा से हम सब यहाँ कुशल हैं। बहू सौ. अनीता कल अस्पताल से घर आ गयी। सुबह ११:०० बजे श्री वीरराघवन, श्री नारायणस्वामी, बहू सुलोचना और मैं चि. उमेश के घर गये थे। श्री वीरराघवन ने वहाँ ध्यान कराया और प्रसाद भी चढ़ाया गया। औपचारिक नाम अभी नहीं दिया जा सका क्योंकि आपकी इच्छा का इन्तजार है। उम्मीद है कि आपने इसके बारे में लिखा होगा।

मेरे बॉस ने मुझसे कहा है कि मैं उससे १९ जुलाई को लन्दन में मिलूँ। लेकिन किसी अज्ञात कारण से विदेश जाने के बारे में मेरी अनिच्छा है। लौटती डाक से मैं आपके पथ-प्रदर्शन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। अगर मैं जाता हूँ तो मैं ६ हफ्तों के लिये बाहर रहूँगा क्योंकि एक्सपोर्ट के लिये मुझे अफ्रीका के पूर्वी तटों और इजिप्ट की यात्रा करनी होगी। कृपया इस मामले में मेरा पथ-प्रदर्शन कीजिये।

मेरी अवस्था मुझे सूक्ष्मतर होती हुई प्रतीत हो रही है। अगर एक मिनट के लिये भी आँख बन्द करता हूँ तो गहरे ध्यान में चला जाता हूँ - खुली आँखों में भी। जैसे इस समय पत्र लिख रहा हूँ, एक

भी क्षण के लिये रुकने पर अपने आपको ध्यान में जाता हुआ महसूस करता हूँ। इस समय मैं अपनी अवस्था के बारे में केवल इतना ही कह सकता हूँ।

श्री स्वामीनाथन को आपकी निकटता का अवसर मिलने से मुझे बहुत खुशी है। मुझे उम्मीद है कि उनमें अब अपेक्षित सुधार होगा।

जब हम शाहजहाँपुर से लौटे थे, डॉक्टरों का कहना था कि मुझे अपने पिता को ३ या ४ महीने तक अकेले नहीं छोड़ना चाहिये। इस वजह से भी विदेश जाने में मेरी अनिच्छा बनी हुई है।

फिर से मैं आपके दर्शन के लिये तड़प रहा हूँ।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ३४७/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
३० जून १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे दोनो प्रेमपूर्ण पत्र मिले। खुश हूँ कि तुमने खुद में इतनी अच्छी अवस्था का अनुभव किया है। मैं बारीकी से इसे देख रहा हूँ जिससे यह स्वाभाविक रूप से चले। यह अवस्था तुम्हारी आंतरिक गहराइयों तक उतर चुकी है और इसने इससे भी आगे काम करना शुरु कर दिया है। अगर तुम ऐसे अनुभवों को अपनी डायरी में लिखो तो ये तुम्हारे प्रशिक्षण देने के उद्येश्यों में तुम्हें सहायता देंगी।

मेरे मत में तुम्हारे पिताजी पूरी तरह से ठीक हैं। स्पाइनल कॉर्ड के किनारे के तंतु ठीक से काम कर रहे हैं लेकिन मस्तिष्क को थोड़ा आराम चाहिये। उन्हें मस्तिष्क के कठिन परिश्रम वाली गतिविधियों से बचना चाहिये। वे सामान्य काम कर सकते हैं। कृपया अपने पिताजी को वह बात बताओ जो मैंने उनके बारे में लिखा है। अगर वे एक महीने के लगभग मानसिक आराम कर लेते हैं तो उनका मस्तिष्क पहले से बेहतर हो जायेगा। बिजली के झटकों की जरूरत नहीं रह गयी है। केवल इसकी शक्ति को ठीक से काम करना चाहिये। स्पाइनल कॉर्ड के तंतुओं के कम्पनों से इसका नियमन होता है। उन्हें अपने मस्तिष्क का ध्यान रखना चाहिये।

मुझे खुशी है कि बड़ी बहू (सुलोचना) ने दूसरी बहू की बहुत अधिक सेवा की है। वह पुरस्कार से वंचित नहीं रहेगी।

मैं चाहता हूँ कि बच्चे का नाम उसी तरीके से रखा जाय जैसे चि. प्रकाश ने अपने पुत्रों का रखा है। उसके बड़े पुत्र का नाम शरद कुमार है और छोटे का संजय कुमार। इसी तरह बच्चे को जो भी नाम दिया जाय इसमें पूरक कुमार जरूर होना चाहिये। उदाहरण के तौर पर विनय कुमार, अभय कुमार आदि। उमेश की सास ने अपने बेटों के नाम ठीक रखे हैं। इस क्षेत्र में वे विशेषज्ञ प्रतीत होती हैं। इसलिये उनकी राय लो।

अब तुम्हारे पश्चिम जाने के बारे में। मेरी राय में तुम्हारे बॉस को इन्कार अच्छा नहीं लगेगा। उसकी समझ में यह बात आनी मुश्किल है कि तुम्हारे पिताजी को डॉक्टरों ने तीन महीने आराम करने की सलाह दी है इसलिये उनको तुम्हारे देखभाल की जरूरत है। निस्संदेह कारण गंभीर है। लेकिन मुझे तुम्हारे बॉस की मानसिकता का कोई अनुभव नहीं है इसलिये ऊपर लिखी गयी बातों के आधार पर खुद फैसला करो।

कागज की रेलवे रसीद मुझे प्राप्त हो गयी है और तुम्हारे पत्र में उल्लिखित प्रति भी। प्रशिक्षकों के लिये बने निर्देशों को थोड़े सुधार के बाद यहाँ छापा जायेगा।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : तुम्हारा पत्र मिलने के एक दिन पहले मुझे तुम्हारे पास पहुँचने की गहरी इच्छा हुई थी लेकिन यह अभी बहुत जल्दी है।

विरुधनगर कैम्प
७ जुलाई १९७१

परम प्रिय मालिक,

आशा है आप कुशल होंगे। विदेश जाने की तैयारी के सिलसिले में मैं यहाँ कुछ दिनों के लिये आया हूँ और सोमवार १२ तारीख को मद्रास वापस चला जाऊँगा।

कल श्रीमती डेविश का पत्र मिला। वे बहुत परेशान हैं। ऐसा लगता है कि पुरानी फाइलों, कागजों आदि को साफ करने में साफ

करने वाले की गलती से नयी फाइल भी हटा दी गयी है, जिसमें भारत यात्रा पर उनके नोट्स थे। उन्हें इस बात का अत्यधिक दु:ख है कि फाइल के साथ ही आपके द्वारा उनको दिया गया उनका अन्तरिम अनुमति का प्रमाणपत्र भी कहीं गुम हो गया है। वे बहुत परेशान और चिन्तित हैं और इस घटना से वे इतनी लज्जित हैं कि आपको सीधे नहीं लिख पा रही हैं।

अगर सम्भव हो तो डुप्लिकेट प्रमाणपत्र सीधे मुझे मद्रास भेज दीजिये, जिससे मैं लन्दन जाते समय उसे लें जा सकूँ। मैं १९ को जाने की योजना बना रहा हूँ।

अपनी अवस्था को अब मैं स्थिर पाता हूँ। उत्तेजना कम हो गयी है। मेरा आपको प्रणाम!

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ३९२/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
९ जुलाई १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मुझे यह जानकर दु:ख हुआ कि श्रीमती डेविश की महत्वपूर्ण नोट्स वाली फाइल कहीं खो गयी। मैं पुन: प्रार्थनाओं के साथ तुम्हें सर्टिफिकेट की डुप्लिकेट कॉपी भेज रहा हूँ।

मैंने तुम्हारे पिताजी को श्री डेविश को उपहार में देने के लिये चन्दन की ऐश-ट्रे और श्रीमती डेविश के लिये हाथीदाँत की बनी हुई एक चीज दी है। जब तुम जा रहे हो तो बेहतर होगा कि तुम्हीं इन चीजों को लेते जाओ।

पूरी यात्रा में जिन जगहों पर तुम जाओगे, जरूरी होने पर मैं वहाँ तुम्हारे साथ रहने की कोशिश करूँगा। तुम्हारी दशा वास्तव में स्थिर हो गयी है लेकिन प्रक्रिया पूरी होने में थोड़ा वक्त और लगेगा। उन बिन्दुओं के बारे में तुम्हें बता दूँ जिन्हें तुम पार कर रहे हो। पश्चिम की यात्रा शुरु करने से पहले मैं तुम्हें तीसरे बिन्दु पर पहुँचा दूँगा। क्या तुम्हें इस बात की जानकारी है कि तुम कब तक दौरे पर रहोगे और यात्रा में किन-किन देशों में जाओगे।

तुम्हारे पिताजी के पत्र का जबाब मैं जल्दी ही दूँगा। विलम्ब किसी उद्येश्य से हुआ है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
२२ जुलाई १९७१

परम आदरणीय मालिक,

आपका ९ का लिखा पत्र १० तारीख को ही मिल गया। जबाब देने में देर इसलिये हुई कि अभी मेरा कार्यक्रम तय नहीं हो पाया है। रिजर्व बैंक से फॉरेन एक्सचेंज की अनुमति नहीं मिल पाने से कार्यक्रम अभी भी तय नहीं हो पाया है। कार्यक्रम तय होते ही मैं आपको लिखूँगा।

मैंने श्री वीरराघवन को आज ही ***न्यू दर्शन*** की १० प्रतियाँ दी हैं। यू.एस.ए. में इनका वितरण श्री के. सी. नारायणा करेंगे। पिताजी, बहू और कृष्णा सभी ठीक हैं। चि. उमेश १७ दिन की छुट्टी ले रहा है और ३१ को शाहजहाँपुर पहुँचेगा।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

तार : **२ अगस्त १९७१**
पी. राजगोपालाचारी
श्री रामनगर, मद्रास
सभी ओर से सफलता की प्रार्थना। तथास्तु!

रामचन्द्र

मद्रास
बुधवार, ४ अगस्त १९७१

परम प्रिय मालिक,

अभी-अभी मैं कलकत्ता से लौटा हूँ जहाँ मुझे पिछले रविवार १ अगस्त को अपने भाई और उसके परिवार के साथ जाना पड़ा क्योंकि

वहाँ मेरे आंटी के बेटे ए. पार्थसारथी की अचानक मृत्यु हो गयी। वे मेरे भाई के श्वसुर भी थे। मेरी आंटी के सबसे बड़े बेटे की मृत्यु मेरे पिताज़ी के ६१वें जन्मदिन पर १९६५ में हुई थी। इन्हें ३१ जुलाई को श्वॉस की कुछ तकलीफ हुई और कार में अस्पताल ले जाते समय रात ८:५५ पर इनकी मृत्यु हो गयी। उनके साथ उस समय केवल उनकी पत्नी ही थीं क्योंकि उनकी केवल एक ही बेटी थी जिसका विवाह मेरे भाई से हुआ है। हमलोग प्लेन से चलकर रविवार की दोपहर बँसबेरिया (हुगली नदी के तट पर कलकत्ता से ६० मील दूर) रात ८:०० बजे पहुँच गये। सुबह २:०० बजे अंतिम संस्कार किया और सोमवार की शाम ६:३५ पर मद्रास मेल से चलकर आज सुबह ५:३० पर यहाँ आ गये। मुझे पता नहीं था कि हम कब तक लौट पायेंगे इसलिये आज का कार्यक्रम मैंने स्थगित कर दिया था। अब मुझे अपना कार्यक्रम फिर से तय करना है। सम्भवत: अब मैं ११ तारीख को चलूँगा। कार्यक्रम निश्चित होते ही मैं आपको लिखूँगा। सभी जगहों पर और घटित होने वाली सभी घटनाओं में काम करते हुये मुझे आपकी कृपा मिलती रहती है। मृत्यु को देखकर भी मैं प्रसन्नचित्त ही बना रहा। मेरा यह भाई भी अभ्यासी था। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप उसकी आत्मा का उसके अंतिम लक्ष्य तक पथ-प्रदर्शन करें।

आपके टेलिग्राम के लिये आपको धन्यबाद! कार्यक्रम निश्चित होते ही मैं आपको लिखूँगा।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ४५१/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१६ अगस्त १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा पत्र मिला। उमेश अपनी पत्नी और बेटे सहित सकुशल यहाँ पहुँच गया। उसका बच्चा पेट-दर्द की वजह से बहुत रोता है। तिरुपति के डा. जी. कुप्पूस्वामी मेरे साथ रुके हुये हैं। उनका कहना है कि ऐसा आँतों में दर्द की वजह से है। उन्होंने बच्चे को एक दवा दी है, जिससे उसको आराम है। मैं उमेश को ४-५ दिन के लिये रोक रहा हूँ, जिसमें उसकी जरूरत है। उत्तर प्रदेश के विधानमंडल में

एक विधेयक लाया जा रहा है, जिसके अनुसार एक आदमी केवल १२.५ एकड़ का ही स्वामी हो सकता है जबकि मेरे पास ३४ एकड़ जमीन है। मैं १२.५ एकड़ जमीन अपने पास रखकर बाकी जमीन अपने बच्चों में बाँट देना चाहता हूँ। इसके लिये उमेश की उपस्थिति आवश्यक है। इसलिये वह अपनी छुट्टी ४-५ दिन और बढ़ायेगा तथा इसकी एप्लिकेशन सीधे अपने बॉस को भेजेगा।

अपने विदेश दौरे के संबंध में अपने बॉस से निर्देश लेकर अच्छा किया।

तुमने लिखा है कि दक्षिण में ऐसा विश्वास है कि अगर किसी की मृत्यु शनिवार को होती है तो वह एक और मृत्यु अपने घर में लाता है। यह अन्धविश्वास है और इसका कोई अर्थ नहीं है। अगर यह प्रकृति की तरफ से होता तो यह नियम सबको समान रूप से प्रभावित करता। उत्तर भारत में मेरी जानकारी में ऐसा कोई विश्वास नहीं है। यह आधारविहीन विश्वास इस पर विश्वास करने वालों पर ही अपना असर डालता है। मैं तुम्हें अपने बचपन की एक शरारत भरी घटना के बारे में बताता हूँ। यहाँ एक परम्परा है कि बारात के चलने के पहले लड़का कुयें के पास जाता है। महिलाओं का कहना है कि वहाँ छींकना अपशगुन होता है। मैंने कृत्रिम रूप से वहाँ छींक दिया और संयोग से एक महीने में दूल्हे की माँ मर गयी। मेरी माँ ने जब मेरी शरारत के बारे में सुना तो वह मुझ पर बहुत बिगड़ी। क्या तुम विश्वास कर सकते हो कि मेरी नकली छींक से उसकी मौत हो गयी। वास्तव में महिलाओं के विश्वास से ऐसा हुआ। वास्तव में तो उसे मरना ही था लेकिन अपनी कमजोरी और अन्धविश्वास की वजह से उन्होंने इस घटना को मेरी छींक से जोड़ दिया, जो उचित नहीं था। ऐसे विश्वास केवल भारत में और वह भी हिन्दुओं के बीच प्रभावी हैं और यही उनके पतन का एक कारण है। जो होने वाला है वह तो होगा ही बिल्ली उसका रास्ता काटे या न काटे।

लोगों को उचित समझदारी देते हुये उनके दिमाग से इस विचार को हटा दो।

पहली बार मैंने परीवा को दक्षिण भारत की यात्रा शुरु की, जो कि वर्जित है। लेकिन न केवल मैं सकुशल वापस आया बल्कि मैं बहुत सफल भी रहा। अन्धविश्वासों के बारे में प्रायः ऐसा ही होता है।

बच्चों को प्यार,

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र,

तार :

१८ अगस्त १९७१

पी. राजगोपालाचारी
श्री रामनगर, मद्रास

यहाँ किसी प्रकार की कोई बाढ़ नहीं है।

रामचन्द्र

मद्रास
२६ अगस्त १९७१

परम प्रिय मालिक,

अंधविश्वासों के बारे में आपका मार्गदर्शन पाकर आपका आभारी हूँ। मुझे ऐसा महसूस होता है कि वास्तविकता में इसका कोई कारण और प्रभाव नहीं होता। पहचान के संस्कार ही इस घटना के मुख्य कारण हैं। मैं नहीं जानता कि यह सही है या नहीं। आजकल मैं अकारण निराश रहता हूँ। हालाँकि लोग मुझे हर समय घेरे रहते हैं लेकिन ज्यादातर समय मैं अपने आपको अकेला और अपने आप में ही खोया अनुभव करता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि मृत्यु हर चीज का समाधान कर देगी और यह सांसारिक जीवन् से मुक्ति पाने का सरलतम तरीका है। जिन्दगी के प्रति मैंने सारे आकर्षणों को खोना शुरु कर दिया है। मालिक! आप मुझे वे गुण या स्तर क्यों नहीं प्रदान कर देते जो मुझे मृत्यु के बाद प्राप्त हो सकते हैं - जैसे निर्भयता, धैर्य आदि। मुक्ति के लिये भौतिक मृत्यु की प्रतीक्षा करना क्यों जरूरी है? अगर वहाँ लिबरेशन है तो मैं यहाँ उसका प्रभाव क्यों नहीं महसूस कर सकता? ऐसा बताया जाता है कि बुद्ध ने जीवन में ही निर्वाण प्राप्त कर लिया था। हम इसे आपकी सर्वशक्तिमान कृपा और आपकी असीम कृपा द्वारा आपसे क्यों नहीं पा सकते?

बाहरी दुनिया के लिये मैं शान्त, खुश, तृप्त - सब कुछ हूँ लेकिन मेरे अंदर तड़प और बेचैनी इस कदर बढ़ती जा रही है कि एक दिन मेरा दिल दबाव से फट जायेगा। इसके लिये मेरा दिल बहुत रोता है। मेरे दिव्य मालिक! मेरे परम प्रिय मालिक! मेरे पिता! केवल आप ही

इसे जान सकते हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे इस दबाव से मुक्त करें।

घर पर सभी कुशल हैं। पिताजी अपने विदेश दौरे की योजना बनाने में व्यस्त हैं। मैं उनकी व्यापक और तीव्र गतिविधियों को देखकर कभी-कभी चकित हो जाता हूँ और डर जाता हूँ। १५ सितम्बर को वे बम्बई के लिये रवाना होंगे और वहाँ से २२ सितम्बर को आगे की यात्रा के लिये प्रस्थान करेंगे।

मेरा बॉस अपने लम्बे विदेश दौरे से लौट आया है और उसने मुझे १० सितम्बर को विदेश जाने के लिये कहा है। इस तरह यह मामला एक बार फिर टल गया है। मुझे संदेह होने लगा है कि क्या मैं वाकई जाऊँगा। मालिक की इच्छा समझ कर मैं इसे जैसे का तैसा स्वीकार करता हूँ। मुझमें न तो जाने की इच्छा है और न ही न जाने की।

आशा है चि. उमेश, बहू और बच्चा सभी स्वस्थ होंगे। श्री कुप्पूस्वामी ने मुझे बताया है कि वे उमेश को निर्देश भेजेंगे कि पहले वे ड्यूटी पर बरेली जायें फिर वहाँ से बम्बई और तब मद्रास वापस आयें। अगर वे अभी चले नहीं हैं तो कृपया श्री सक्सेना से कहिये कि वे मद्रास सेन्टर के लिये २५ प्रति ***रियेलिटी एट डॉन*** भेजवा दें।

प्रिय मालिक! मैं आपकी दिव्य शारीरिक उपस्थिति के लिये तड़प रहा हूँ। आपके दर्शन की तड़प बढ़ती जा रही है। आप यह मुझे कब प्रदान करेंगे?

हम सब यह जानकर दुःखी हैं कि तुलसी (श्री जी. डी. चतुर्वेदी) का दिल्ली में एक्सीडेन्ट हुआ है। इसके बारे में कस्तूरी बहन ने पिताजी को लिखा है कि हम सब उनके पूरी तरह से ठीक होने की प्रार्थना करते हैं। चि. कृष्णा और सौ. सुलोचना आपके दिव्य चरणों का स्पर्श करते हैं और आपसे पथ-प्रदर्शन एवं आशीर्वाद की प्रार्थना करते हैं।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ५२३/एस.आर.सी.एम. 30 अगस्त १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे पत्र मिले। चि. उमेश यहाँ से २३ अगस्त १९७१ को लखनऊ के लिये रवाना हो गया है। वह लखनऊ में अपनी पत्नी के साथ अपने श्वसुर के घर गया है। २७ अगस्त को मद्रास जाने के लिये वह २६ अगस्त १९७१ को दिल्ली पहुँचने वाला था। अब तक वह मद्रास पहुँच गया होगा। उसने तुमको भी छुट्टी के लिये एक दरख्वास्त भेजी थी।

मैंने तुम्हारे पिताजी को लिखा है कि वे दौरे में उतने ही दिन लगायें जितने जरूरी हों। मैंने उन्हें फिर से लिखा है कि वे अपने दौरे का समय घटा दें। वे अपने पश्चिमी देशों के दौरे के लिये इतने उत्साहित हैं कि अगर मैं एक बार भी यह कह दूँ कि मत जाओ तो उन्हें बहुत बड़ा झटका लगेगा।

चीजें तो आती जाती रहती हैं लेकिन तुम वहीं होते हो जहाँ तुम्हें होना चाहिये। तुम आजकल उन्हीं चीजों को महसूस कर रहे हो जो तुम्हारे लिये अच्छी हैं। वे इसलिये बुरी नहीं हैं चूँकि वे तुम्हें आश्चर्यजनक परिणाम देंगी। अपने अभ्यास के दौरान मैं इन सारी ही अवस्थाओं से होकर गुजरा हूँ। तुम आंतरिक शान्ति महसूस करते हो लेकिन बाहर से अशान्ति - ऐसा इसलिये क्योंकि आत्मा के ऊपर आच्छादित चीजें निकाल कर बाहर फेंकी जा रही हैं। क्या मैं तुम्हें बधाई दे सकता हूँ?

मृत्यु जीवन की समस्याओं का समाधान नहीं है बल्कि अगले जीवन के लिये यह जटिलतायें पैदा करती है। अस्तित्व के क्रम में यह एक ऐसी स्थिति है जिससे हमें परेशानी की निरन्तरता न महसूस हो। यह इस जीवन और अगले जीवन के बीच में एक ठहराव है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मृत्यु अगले जीवन की तैयारी है। अगर आदमी को सालों तक एक अँधेरे तहखाने में बन्द करके रखा जाये तो इसमें फिर से जाने के लिये उसे एक बदलाव की जरूरत होगी। मूर्ख मरते हैं सन्त नहीं। वे अपने समय एवं अवस्था में स्थायी होते हैं। इसलिये मृत्यु का महत्व अन्य परेशान लोगों के लिये है। संतों के लिये तो यह एक अन्जान विषय है। मेरे मत में अगर वैयक्तिता को

मैं *हिरण्यगर्भ* कहूँ तो यह बेहतर अर्थ की अभिव्यक्ति करेगा। ***जीवन में जीवन ही हमारा वास्तविक उद्येश्य होना चाहिये।***

तुम मुक्ति की चिन्ता क्यों करते हो? जब तुम खुद किसी को उसकी भलाई के लिये मुक्त कर सकते हो। निस्संदेह इससे प्रमाणित होता है कि स्वतंत्रता तो तुममें है लेकिन इसका अहसास तुममें नहीं है। तुम्हारे पत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि तुम इसका अहसास विकसित करना चाहते हो। यानी तुम आँख से आँख को देखना चाहते हो। जो घट रहा है उसकी चिन्ता मत करो न ही जो घटने वाला है उसका इन्तजार करो।

मेरी राय में तो अगर स्वतंत्रता स्वतंत्रता का विचार देती है तो यह निरर्थक है। स्वतंत्रता और उसका अहसास दोनो एक साथ नहीं रह सकते। अगर स्वतंत्रता अपने नग्न रूप में है तो इसका अहसास इससे दूर होगा और अगर इसका अहसास है तो स्वतंत्रता इससे परे होगी।

मैंने सदैव तड़प और बेचैनी की तारीफ की है और मेरी ख्वाहिश है कि यह सबको मिले। इसलिये मैं तड़प और बेचैनी को तो नहीं हटा सकता लेकिन इस विचार को कि इससे दिल फट जायेगा, तुमसे दूर करता हूँ। ऐसा कभी नहीं होगा। जिसे तुम दबाव जैसा महसूस करते हो वह मेरे हिसाब से दबाव नहीं है बल्कि उन विचारों का वजन है जिन्हें तुमने गहराई से लिया। तुम्हें निश्चित रूप से आराम मिलेगा। इस पत्र के मिलने के बाद तुम इसके बारे में जरूर लिखना। अगर मैं वहाँ होता तो यह दो सिटिंग का मामला होता। मैं इसके लिये आ भी गया होता लेकिन निर्धारित तिथियों पर काफी संख्या में मेहमान आ रहे हैं और २७ सितम्बर १९७१ को मुझे आसाम भी जाना है।

शाहजहाँपुर से ट्रेन द्वारा चलकर मैं २८ की सुबह कलकत्ता पहुँचूँगा और २९ को वहाँ से प्लेन द्वारा आसाम। मि. पटेल ने कस्तूरी के खाते पर पहले ही मुझे प्लेन का किराया भेज दिया है। कस्तूरी वहाँ जाने की हालत में नहीं है क्योंकि वह कफ से पीड़ित है। उसके भाई तुलसीदास को स्कूटर एक्सीडेन्ट में चोटें आयी हैं लेकिन कोई हड्डी नहीं टूटी है। वह ठीक हो रहा है।

मैं श्री रमनलाल मिमानी के साथ ठहरूँगा जिन्होंने मुझे सहृदयता के साथ बुलाया है। मैंने उन्हें तुम्हारी इच्छा के बारे में बताया है कि उन्हें मिशन का प्रिफेक्ट बना दिया जाये। अगर वे सहमत

होते हैं तो मैं यह कर दूँगा। अगर आवश्यक समझो तो तुम भी इसके बारे में उन्हें लिख सकते हो।

तुम्हारी आध्यात्मिक अवस्था अच्छी है और जो तुम महसूस करते हो वह फूलों पर ओस की बूँद की तरह है। सूरज की तेज गर्मी से यह उड़ जायेगी। मैं तुम्हें अपने अभ्यास काल की एक विशिष्ट अवस्था के बारे में लिख रहा हूँ। अगर कोई ईश्वर का नाम लेता था तो मैं अपने दिल में इतनी छटपटाहट महसूस करता था कि कराह के साथ आह! आह! कर उठता था। तुम दिन-प्रतिदिन मुझमें लय होते जा रहे हो। इसलिये अपने अभ्यास काल में जो मैंने महसूस किया उसमें तुम्हें भी सहभागी होना चाहिये।

खूब खुश रहो और ईश्वर को धन्यबाद दो। अभ्यासियों के लिये यह एक प्रकार की तपस्या है। जब सोना आग में रखा जाता है तभी यह कुन्दन बनता है। जिस चीज की तुमने शिकायत की है वह अधिक दिन नहीं रहेगी।

पश्चिम जाने के पहले तुम अपनी अवस्था के बारे में लिखो और अपने दौरे के समय भी जो चाहो लिख सकते हो।

रोम (इटली) से मुझे एक पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें उन्होंने लिखा है कि २३ या २४ नवम्बर १९७१ को वे शाहजहाँपुर आना चाहते हैं। मैं तुम्हें वह पत्र तथा उस पत्र का मेरे द्वारा दिये गये जबाब की एक प्रति संलग्न कर रहा हूँ। मैं इन्हें तुम्हारे पिताजी को भी भेज रहा हूँ। अब मैं अपनी भतीजी की बेटी की शादी में जहाँ मेरी बहुत जरूरत है, हिस्सा लेने मैनपुरी नहीं जा पाऊँगा। मिशन का काम हर चीज से ऊपर है। अगर तुम रोम जाते हो तो उनसे संपर्क करना।

इस समय मैं सिरदर्द से इतना पीड़ित हूँ कि मैं यह नहीं जानता कि मैंने तुम्हारे पत्र का जबाब ठीक से दे दिया है या नहीं। मैंने पिछली रात बहुत काम किया है। अपने दिल में मैं बहुत दबाव महसूस कर रहा हूँ जो इस बात का द्योतक है कि तुम इससे मुक्त हो गये हो।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

रोम
२८ जुलाई १९७१

प्रिय श्रीमान्,

रोम में मैं करीब दो साल से इस विचार के साथ कि इटली में बहुमूल्य भारतीय योग पद्धति का प्रसार हो, एक योग एकेडमी चला रहा हूँ। मैं आपके साथ मित्रतापूर्वक एक होना चाहता हूँ जिससे पश्चिम में योग का और अधिक विस्तार किया जा सके।

नवम्बर में मैं भारत की यात्रा करूँगा। इस दौरान मैं १९ नवम्बर से ५ दिन के लिये दिल्ली में रहूँगा। अपने प्रवास के दौरान मैं योग के अभ्यास पर आपकी बहुमूल्य सलाह लेने के लिये आपसे मिलना पसन्द करूँगा।

क्या मेरे और दूसरे मित्रों (संख्या में ५ या ६) जिनमें महिलायें भी हैं, के कुछ दिन ठहरने और खाने का प्रबन्ध आपके पास हो सकता है? स्वाभाविक रूप से हम इस व्यवस्था के लिये अपेक्षित भुगतान ही करेंगे।

कृपया मुझे अपने पूर्ण सहयोगी के रूप में स्वीकार करें।

अतिसम्मानपूर्ण और मैत्रीपूर्ण भावनाओं सहित,

भवदीय
जार्जियो फर्लान
डायरेक्टर

नं. सी ५२१/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२९/३० अगस्त १९७१

प्रिय श्री जार्जियो फर्लान,

२८ तारीख का आपका पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी हुई। इटली के रोम में आपके द्वारा योग एकेडमी के माध्यम से बहुमूल्य भारतीय योग पद्धति के प्रसार का आपका दृष्टिकोण अत्यन्त प्रशंसनीय है। मुझे आपसे मिलकर और पश्चिम में योग के प्रसार पर उभयनिष्ठ हितों पर आपसे चर्चा करके वस्तुत: बहुत खुशी होगी।

आपका और आपके मित्रों का सदैव स्वागत है। आपका स्वागत करने में, और मैंने योग का अभ्यास करके अब तक योग के बारे में जो समझा है, उसके बारे में आपको सलाह देने में, मुझे बहुत खुशी होगी।

मैं सदैव अच्छा मेजबान रहा हूँ और आप सबों को अपने मेहमान के रूप में पाकर बहुत खुश होऊँगा। आप जानते ही हैं कि हमारा देश अतिथि सत्कार के लिये कितना प्रसिद्ध है।

२२ सितम्बर १९७१ को श्री सी. ए. राजगोपालाचारी बम्बई से रोम के लिये रवाना होंगे। आपके द्वारा पत्र में लिखे गये विषय पर वे आपकी सहायता करने में उपयोगी सिद्ध होंगे। वे हमारे मिशन के एक समर्थ प्रशिक्षक हैं और मिशन के विदेश के केन्द्रों के इन्चार्ज भी। एक और समर्थ प्रशिक्षक श्री पी. राजगोपालाचारी उनसे पहले रोम पहुँचेंगे। उनक कार्यक्रम की तिथि अभी निश्चित नहीं हो पायी है इसलिये मैं आपको उनके पहुँचने की तिथि के बारे में नहीं लिख पा रहा हूँ।

आदर सहित,

भवदीय

रामचन्द्र

प्रेसीडेन्ट

नं. सी ५१८/एस.आर.सी.एम. **२९ अगस्त १९७१**

प्रिय नरसिंहन,

मैंने आपको मद्रास के श्री पी. राजगोपालाचारी के कहने पर मिशन का काम करने के लिये अन्तरिम अनुमति प्रदान की। उस समय आपने काम को गम्भीरता से करने का वादा किया था। लेकिन मैं महसूस करता हूँ कि आप मिशन के काम में रुचि नहीं ले रहे हैं। आपने अपने काम तथा अभ्यासियों के बारे में अब तक मुझे कोई रिपोर्ट नहीं भेजी है।

मद्रास के श्री पी. राजगोपालाचारी ने भी आपको इस संबंध में लिखा है लेकिन आपने इसका कोई जबाब नहीं दिया। इससे लगता है कि आपको ईश्वर की पूजा में कोई रुचि नहीं है। मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि आप मिशन का काम करना चाहते हैं या नहीं। कृपया मुझे स्पष्ट रूप से लिखिये। जो चीज आसानी से मिल जाती है उसकी कीमत महसूस नहीं होती।

कृपया अपने यहाँ के सत्संग में आने वालों के नाम और पते मुझे जल्दी भेजिये।

भवदीय

रामचन्द्र

तार : ४ सितम्बर १९७१

पी. राजगोपालाचारी
श्रीरामनगर, मद्रास

बिजली के तार से उमेश की दशा चिन्ताजनक। अमिता को जल्दी भेज रहा हूँ।

रामचन्द्र

एक्सप्रेस टेलिग्राम

तार : ५ सितम्बर १९७१

सहजमार्ग
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

उमेश बिल्कुल ठीक। तन्जावुर शादी में शामिल होगा। रोकिये, चिन्ता की कोई बात नहीं।

राजगोपालाचारी

मद्रास
१० सितम्बर १९७१

परम आदरणीय मालिक,

३० अगस्त के आपके स्नेहपूर्ण और उत्साहित करने वाले पत्र के लिये आपको धन्यबाद। मैंने आपके द्वारा बतायी गयी बातों पर गौर किया है और अगले हफ्ते आपको इसके बारे में विस्तार से लिखूँगा। कल शाम को मैं यूरोप के लिये रवाना हो रहा हूँ और सीधे यहाँ से मैनचेस्टर जाऊँगा। उसके बाद के कार्यक्रम की एक प्रति आपकी जानकारी के लिये संलग्न कर रहा हूँ।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

परम प्रिय मालिक,

मैं आपके आशीर्वाद के साथ जा रहा हूँ। मेरे पिताजी की तबियत पिछले तीन दिनों से ठीक नहीं है - कुछ उलझन और उल्टी - उनके स्वास्थ्य की असली हालत का पता नहीं है क्योंकि वे खुद को ठीक प्रदर्शित करते हैं जिससे कोई उनकी यात्रा को रोकने की कोशिश

न करे। २० तारीख को वे बम्बई के लिये प्रस्थान करेंगे। मैं आपका अत्यधिक आभारी हूँ कि आपने चि. कृष्णा और सौ. सुलोचना के बारे में सोचना शुरु कर दिया है। वे लगभग एक महीने अकेले रहेंगे। आपके दिव्य पथ-प्रदर्शन में वे आपके थे और हैं भी। मालिक! उन्हें तीव्र आध्यात्मिक प्रगति का आशीर्वाद दीजिये। सुलोचना और कृष्णा आपके दिव्य चरणों का स्पर्श कर रहे हैं और मैं भी अपने परिपूर्ण हृदय से ऐसा ही कर रहा हूँ।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ५८४/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२० सितम्बर १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

दौरे के कार्यक्रम सहित तुम्हारा मद्रास से भेजा गया प्रेमपूर्ण पत्र मिला। आशा है तुम हर जगह अच्छा करोगे और लोगों को लाभ होगा। तुम्हें लिखे गये पत्र को श्री नारायणस्वामी ने बहुत पसन्द किया। वे चाहते थे कि मैं उसकी एक प्रति उन्हें भेज दूँ। मैंने निजी बातों को बचाते हुये उनकी इच्छा पूरी कर दी।

श्री, श्रीमती डेविश और चार्ली से एक केबिल मिला जिसमें उपहारों के लिये उत्साहपूर्ण धन्यबाद दिया गया है।

डेन्मार्क के अभ्यासी तुम्हारी संगत में बहुत खुश होंगे और तुमसे आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे होंगे। तुम्हें यह सूचना देते हुये मुझे बहुत खुशी है कि वीबे तीन अन्य साथियों के साथ दो हफ्तों के लिये यहाँ आ रही है। उसका खुले दिल से स्वागत है।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

श्री पी. राजगोपालाचारी
C/o श्रीमती बर्थे हॉगार्ड
ग्रीव स्ट्रैण्ड, डेन्मार्क

नं. सी ५९१/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
२३ सितम्बर १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा १६ सितम्बर १९७१ का लिखा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मैंने तुम्हें डेन्मार्क के पते पर एक पत्र लिखा है। तुम्हारे पिताजी ने मद्रास से मुझे पत्र लिखा है कि उनके डॉक्टर ने उन्हें पश्चिमं जाने की अनुमति दे दी है। एहतियात के तौर पर उसने उन्हें कुछ दवाइयाँ भी दी हैं। जब रोम में तुम्हारी उनसे मुलाकात हो और आगे के दौरे के लिये तुम्हें उनकी सेहत ठीक न लगे, तुम उन्हें वापस मद्रास भेज सकते हो। मैं उनकी सेहत के लिये सभी सम्भव एहतियात बरत रहा हूँ।

मिशन के काम के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ कि तुम हर जगह जो कुछ भी जरूरी है, करोगे। मैं महसूस करता हूँ कि इस समय तुम्हारा मेरे साथ बहुत गहरा संपर्क है जो काम को बेहतरीन तरीके से करने में तुम्हारी मदद करेगा।

निस्संदेह यह बहुत अच्छी बात है कि तुम मुझे ३० अक्टूबर से बसंतपंचमी तक मद्रास में चाहते हो। मैं इसे इसलिये भी महत्व दे रहा हूँ कि मैं खुद भी तुम्हारे साथ रहना चाहता हूँ लेकिन कुछ कठिनाई है और इच्छा पूरी नहीं हो पा रही है। एक अमेरिकी अभ्यासी १ नवम्बर १९७१ से कुछ समय के लिये यहाँ आ रहा है। १५ को वीबे अपने तीन सहयोगियों के साथ दो हफ्तों के लिये यहाँ आ रही है। १९ नवम्बर के आस-पास ६ इटैलियन आ रहे हैं, जिनके बारे में मैंने पिछले पत्र में तुम्हें लिखा था। इसके बाद भी मैं कुछ अन्य लोगों के आने का इन्तजार कर रहा हूँ।

लक्ष्मी नरसिंहन और एक अन्य ने डेन्मार्क की वीबे को अन्तरिम अनुमति देने की संस्तुति की है। मुझे उसको प्रशिक्षित करने के लिये डेढ़ महीने का समय मिल रहा है। मैं यह नहीं सोच पा रहा हूँ कि इस समय उसको अन्तरिम अनुमति प्रदान करके जब मैं वहाँ जाऊँ तब उसे उच्चतर अनुमति प्रदान करूँ या एक ही बार में उसे उच्चतर अनुमति प्रदान कर दूँ। वह मिशन के काम के लिये बहुत अधिक उत्साहित है।

कलकत्ता के श्री रमनलाल मिमानी काम करने के लिये सहमत हो गये हैं इसलिये मैं उन्हें अन्तरिम अनुमति देने जा रहा हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : कृपया मि. पोरे को मेरा आशीर्वाद कहना।

श्री पी. राजगोपालाचारी
C/o श्री आन्द्रे पोरे
सेनेरी, फ्राँस

नं. सी ६०७/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२५ सितम्बर १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैंने एक पत्र कोपेनहेगेन और एक सेनेरी भेजा है। आशा है कि तुम्हारा व्यापार और कार्य दोनो ठीक चल रहा होगा। मुझे इस बात की खुशी है कि मिशन के काम के सिलसिले में तुम उतना कर रहे हो जितनी तुम्हारी क्षमता है।

ऐसा लगता है कि इस समय सर्वोत्तम सेन्टर कोपेनहेगेन है। मुझे मि. राकोटोन्ड्रेनाइव का एक पत्र मिला है, जिसमें उसने लिखा है कि वह हठयोग के आसन कर रहा है और साथ ही सहजमार्ग का अनुसरण भी। हमारी पद्धति में वह रुचि ले रहा है और मुझे आशा है कि वह इसमें बढ़ेगा। अगर तुम महसूस करते हो कि वहाँ किसी प्रशिक्षक की जरूरत है तो तुम राको को तैयार करके मेरी तरफ से उसे अन्तरिम अनुमति प्रदान कर सकते हो। हालाँकि उसके स्तर पर यह जल्दी है क्योंकि वह बहुत स्थूल (ग्रास) है। अगर तुम मेहनत कर सकते हो और उसके पिण्ड प्रदेश को पूरी तरह साफ कर सकते हो तो आगे बढ़ सकते हो। मैं इस मामले को तुम्हारे निर्णय पर छोड़ रहा हूँ। मेरी सलाह है कि मि. रवि वर्मा ने वादा भी किया था और वे वहाँ तुम्हारी मदद करने के लिये हैं भी। तुम उनसे मदद ले सकते हो।

मैं तुम्हें यहीं से लिख रहा हूँ कि मद्रास में बहू और कृष्णा ठीक चल रहे हैं। जब से तुम मद्रास से चले हो बहू तुम्हारे बारे में सोच रही है लेकिन चिन्तित नहीं है। मेरा मानना है कि इससे उसको

फायदा हो रहा है। कृष्णा को किसी की चिन्ता नहीं है और कभी-कभार के अलावा उसमें तुम्हारा कोई विचार नहीं होता।

मैं मि. राको के पत्र की और उसको मेरे द्वारा लिखे गये जबाब की एक प्रति तुम्हें भेज रहा हूँ। उसका कहना है कि मेडागास्कर में बहुत से ऐसे लोग हैं जिन्होंने भारत के स्वामियों द्वारा बतायी गयी हठयोग की विधियों को अपना रखा है। देखो! हम कैसे अच्छे लोगों को बेकार बना देते हैं। जिन्हें ईश्वर चाहिये उन्हें शैतान दे दिया गया है।

शुभकामनाओं सहित,

संलग्नक : दो

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

श्री पी. राजगोपालाचारी
C/o बगदाद

तनानारीव
२४ अगस्त १९७१

प्रिय और श्रद्धेय गुरुजी,

तनानारीव वापस आये करीब दो महीने हुये हैं। आपको अपने बारे में, अपने प्रयासों के बारे में और उन परिणामों के बारे में, जिन्हें मैं समझता हूँ कि मैंने पाया है, बताना चाहता हूँ!

आने के तुरंत बाद मैंने ध्यान की पद्धति का अभ्यास शुरु कर दिया जिसे मैं समझता हूँ कि मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ।

मैंने आपको पहले ही बताया है कि ध्यान पर बैठने के पहले मैं रोज भुजंगासन, मत्स्येन्द्रासन, सूर्यनमस्कार और प्राणायाम सहित कुछ व्यायाम करता हूँ।

मैंने महसूस किया है कि दो या तीन बार सूर्यनमस्कार दुहराने पर मुझे पीठ में गर्मी की अनुभूति होती है - एक नहीं बल्कि दो चक्रों के स्तर पर जो कि हृदय और गर्दन के क्षेत्रों के हैं।

जब मैंने आपकी उपस्थिति में ध्यान किया था तब भी एक विशिष्ट मौके पर मुझे इसी तरह की अनुभूति हुई थी।

आज भी कुम्भक (जब श्वॉस अंदर ली जाती है और मसल सिकोड़े जाते हैं।) के दौरान उन्हीं जगहों पर गर्मी की अनुभूति हुई।

हालाँकि यह अनुभूति सदा उतनी ही सघन या उतनी ही अवधि के लिये नहीं होती। एक ही दिन के अलग-अलग सिटिंग में यह बदल

भी सकती है। उदाहरण के तौर पर शाम को जब मैं श्वॉस रोकता हूँ, इसे महसूस नहीं करता। कभी-कभी मैं खुद से इसकी सच्चाई पूछता हूँ और अनुभव करने पर उस समय के आध्यात्मिक साक्षात्कार के अपने प्रयासों के महत्व और उससे इसके संबंधों के बारे में अपने आप से प्रश्न करता हूँ।

मैं चक्रों की जागृति या उनके शोधन की शुरुआत पर हूँ या चेतना के उत्थान पर हूँ? मैं अपने आप से पूछता हूँ कि कहीं यह काल्पनिक तो नहीं है चूँकि मुझे यह ग़र्मी अवास्तविक लगती है और यह वाह्य वास्तविक लक्षणों में प्रकट भी नहीं होती। आदतों और स्वाद में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। दूसरी ओर मैं स्वयं को यह समझाता हूँ कि यह मामला इतना नया है कि इसका कोई गहरा प्रभाव नहीं हो सकता।

मैं यह पत्र पूर्णता और सच्चाई के लिये लिख रहा हूँ। दो या तीन अवसरों पर आज्ञा चक्र के स्तर पर मैंने अचानक बन्द आँखों से पीला, बैंगनी प्रकाश का वृत्त देखा है। यह २-३ मिनट तक रहा।

यहाँ भी मैंने अपने आप से पूछा कि इसका वर्तमान जीवन की प्रगति के संदर्भ में उपयोगिता और महत्व क्या है? ऐसा इसलिये कि गुरुजी! आपने मुझसे नहीं कहा था लेकिन मैंने सुनकर अपने लिये इसे मंत्र की तरह महत्वपूर्ण मान लिया था। आपने अपने एक चेले से कहा था कि ***जीवन का एक ही लक्ष्य है ईश्वर - केवल ईश्वर और हमारे सारे प्रयास इसी दिशा में होने चाहिये चाहे जितना समय लगे।***

अनुभूतियाँ और छापें उपयोगी हैं? ये किस चीज को दर्शाती हैं? मेरी बहुत इच्छा है कि मेरे गुरुजी इन चीजों की व्याख्या करें।

गुरुजी! उस वादे के लिये आपको मेरा धन्यबाद कि आप मेरी उम्र को देखते हुये श्री राजगोपालाचारी की तरह कृपा करेंगे और आप मेरी युवा लोगों से अधिक मदद करेंगे, जिनके पास अभी अधिक समय है। वास्तव में आयु, परिवार, व्यावसायिक जिम्मेदारियों और मेहनत की वजह से मुझे ऐसा लगता है कि एक निश्चित उम्र के बाद गुरु की विशेष कृपा के बिना प्रगति का कोई प्रश्न ही नहीं पैदा होता।

मैंने कहा था कि तनानारीव में योग का अभ्यास करने वाले बहुत से मैलेगेसी और यूरोपियन लोग हैं - मैं इसकी पुष्टि करता हूँ। १० सालों में कई बार स्वामीजी आये और उन्होंने हठयोग की शुरुआत करायी। कुछ चेले २० साल से भी ज्यादा समय से योग का अभ्यास कर

रहे हैं - कुछ मेडागास्कर आने के पहले से और कुछ पत्राचार से सीखकर। मेरे मामले में यह गुरु की कृपा है कि शुरुआत आपसे हुई।

हालाँकि मैंने अभी शुरु ही किया है लेकिन मेरे सारे प्रयासों का उद्येश्य मेडागास्कर में योग के लिये उपयोगी होने का है। अंत में प्रिय गुरुजी मुझे गुरु की प्रशंसा में यह वन्दना पढ़ने की अनुमति दीजिये।

हरि रामचन्द्रजी, रामचन्द्रजी, रामचन्द्रजी हरे हरे!

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः ; गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

आपका

राकोटोन्ड्रेनाइव

पुनश्च : एक्यूपंक्चर की किताब के सम्पादन को सफलतापूर्वक पूरा करने में अपनी सहायता के लिये आपकी कृपा की याचना करता हूँ।

डा. सी. ए. राजगोपालाचारी
श्री रामनगर, मद्रास

नं. सी ६०६/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२५ सितम्बर १९७१

मेरे प्रिय राकोटोन्ड्रेनाइव एलेक्जेन्ड्रा,

मुझे हठयोग के बारे में बहुत कम जानकारी है। आसन आदि के रूप में हम जो कुछ भी करते हैं, वह पूरी तरह से हठयोग का अभ्यास नहीं है। आसनों को हठयोग में बहुत कम महत्व है। आसन तो शारीरिक स्वास्थ्य के लिये हैं। विविध प्रकार की गतियों से विविध प्रकार के प्रभाव पैदा होते हैं। कभी-कभी इन गतियों से उत्पन्न गर्मी का असर मेरुदण्ड के विभिन्न केन्द्रों पर पड़ता है। मेरी राय में यह गर्मी स्पाइनल कॉर्ड के दोनो ओर के तन्तुओं की तीव्र गति से उत्पन्न होती है।

हमारे ट्रांसमिशन में भी कभी-कभी अभ्यासी ऐसा महसूस करता है क्योंकि तन्तु तेज काम करने लगते हैं लेकिन मैं इसे महत्व नहीं देता। वास्तविकता में तो न ही गर्मी है और न ही ठण्ढक। स्वामी विवेकानन्द ने हठयोग के बारे में लिखा है कि यह बड़े कठिनाइयों के साथ हमें आज्ञा चक्र तक ले जा सकता है। इसके बाद तो अभ्यासी बिना राजयोग की सहायता के आगे नहीं बढ़ सकता। इस प्रकार के हठयोग से हमें आध्यात्मिक बुखार वाली अवस्था की प्राप्ति होती है, जिससे बाहर आने के लिये हमें किसी चिकित्सक की मदद लेनी पड़ती है।

आपने आज्ञा चक्र में वृत्त जैसी जिस चीज के बारे में लिखा है, वह ब्रह्माण्ड का रंग है, जिसमें आज्ञा चक्र का रंग मिला हुआ है।

मुझे खुशी है कि मि. पी. राजगोपालाचारी आपके पास जा रहे हैं। इनका अनुसरण करने वाले सभी लोगों को बहुत अधिक लाभ होगा। उस जगह के लोग २० साल से हठयोग का अभ्यास कर रहे हैं। अगर वे इनसे अधिकाधिक सिटिंग लेते हुये हमारी पद्धति का २० दिन भी अनुसरण करेंगे तो वे हमारी पद्धति की क्षमता को जान सकेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

रामचन्द्र

सेनेरी

२८ सितम्बर १९७१

परम प्रिय मालिक,

आपका २० सितम्बर का श्रीमती बर्थे के पते पर छोड़ा गया पत्र मुझे मिला और आज सेनेरी में २३ तारीख का लिखा हुआ आपका पत्र भी मिला। मैं कल रात ही कोपेनहेगेन से यहाँ पहुँचा हूँ। कोपेनहेगेन में श्रीमती बर्थे आश्चर्यजनक तरीके से काम कर रही हैं। मैं वीबे को अन्तरिम अनुमति देने की संस्तुति करता हूँ। श्रीमती बर्थे को परेशानी यह है कि श्री लक्ष्मी नरसिंहन और वीबे एक साथ काम करते हैं और बर्थे कभी-कभी अपने को उपेक्षित महसूस करती हैं। वीबे बर्थे की तुलना में लक्ष्मी नरसिंहन की ओर ज्यादा देखती है। मेरी राय में यह गलत है। वीबे लक्ष्मी नरसिंहन और उसके परिवार के लिये भौतिक क्षेत्र में बहुत कुछ कर रही है जो बर्थे की राय में लक्ष्मी नरसिंहन के अपने लड़के की मृत्यु के बाद उनको सामान्य बनाने में बाधक है। यह आपकी सूचना के लिये है।

डेन्मार्क का सेन्टर बहुत अच्छा काम कर रहा है और मिशन के काम के लिये बर्थे ने पूरे दिल से जो प्रयास किये हैं, उसकी तारीफ के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। मेरा विश्वास है कि सेन्टर बहुत तरक्की करेगा और डेन्मार्क में मिशन बहुत अच्छी तरह स्थापित हो जायेगा। लक्ष्मी नरसिंहन को यह नहीं सोचना चाहिये कि भारतीय होने से वे पश्चिमी लोगों से ज्यादा श्रेष्ठ हैं। उन्हें चाहिये कि वे बर्थे के पास ज्यादा से ज्यादा लोगों को भेजें। मेरी समझ में इन बातों के लिये वीबे उनको उत्साहित करती है।

प्रिय मालिक! मैं आपके प्रेम में आपकी कृपा से ही जीवित हूँ - मुझे अस्तित्व की सारी बेवकूफियों और गलतियों से बचाओ।

श्री और श्रीमती डेविश एक दिन की छुट्टी पर यहाँ आये हैं। सभी आपको अपना प्रेम भेज रहे हैं।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

सेनेरी
२८ सितम्बर १९७१

परम प्रिय मालिक,

पिछले पत्र में मैं कुछ चीजों को लिखना भूल गया था। मि. पोरे को मैंने आपका आशीर्वाद कहा। वे बहुत खुश हैं।

मेरे पिताजी के बारे में सुलोचना ने मुझे लिखा है कि २० सितम्बर को जब उन्होंने मद्रास छोड़ा तो उनकी तबियत खराब थी, वे बहुत कमजोर थे और अपना जूता तक बिना किसी की सहायता लिये नहीं पहन पा रहे थे। वे अपने सभी पत्रों में लोगों को यह बता रहे हैं कि आपने उन्हें अमेरिका सहित इतना लम्बा दौरा करने की सलाह दी थी, जो गलत है। कृपया उनको तुरंत लिखिये कि वे अपना दौरा छोटा करें और ८ हफ्तों के अंदर यूरोप और ब्रिटेन के केन्द्रों पर होकर वापस लौटें। अमेरिका दूसरे अवसर की प्रतीक्षा कर सकता है। कृपया ऐसा कीजिये। वे इतने दुराग्रही और अपने मौज में चलने वाले व्यक्ति हैं कि जब तक आप उन्हें निर्देश नहीं देंगे वे नहीं मानेंगे और कहेंगे कि मालिक मुझसे इतना प्यार करते हैं इसलिये वे मुझे ऐसी सलाह देते हैं। इसलिये कृपया ऐसा निश्चित निर्देश दीजिये। वे कमजोर हैं। मैं उन्हें आपका पत्र दिखाकर वापस भेज दूँगा।

कल ही ब्रिटेन से श्री और श्रीमती डेविश १५ दिन के लिये यहाँ आये हैं। वे यहाँ श्री पोरे के घर हमारे साथ लंच करने आयेंगे। डेन्मार्क के लिये मैं बर्थे की पुत्री एल्जाबेथ के लिये भी अंतरिम अनुमति दिये जाने की संस्तुति करता हूँ। वह केवल १८ साल की है लेकिन बहुत गम्भीर तथा उत्साही है और दर्शन तथा मनोविज्ञान का अध्ययन कर रही है। बर्थे के पास बहुत काम है और एल्जाबेथ उनकी मदद कर सकती है। यह आपके विचार के लिये है।

मालिक को सप्रेम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

लजुव्लजन
५ अक्टूबर १९७१

परम प्रिय मालिक,

आपका प्रेमपूर्ण पत्र मैंने सेनेरी में मि. पोरे के घर पर प्राप्त किया। मि. पोरे के साथ मैंने दो उपयोगी दिन बिताये और इन दो दिनों में उन्हें तीन सिटिंग दीं। श्री और श्रीमती डेविश भी एक छोटे अवकाश पर लन्दन से वहाँ आ गये थे। पोरे के घर से १० मील की दूरी पर उनका एक बहुत अच्छा घर है। हमने एक दिन शाम को उनके घर पर भी सत्संग किया। श्री और श्रीमती डेविश की पड़ोसी एक वृद्ध महिला ने भी पूजा शुरु की।

३० को मुझे अपने पिताजी से एक केबिल प्राप्त हुआ है जिसमें लिखा है कि पीलिया से उनकी तबियत खराब हो गयी है इसलिये आगे का दौरा निरस्तं करके वे मद्रास लौट रहे हैं। कल २९ सितम्बर को लिखा गया स्वामीनाथन का एक पत्र भी मुझे मिला, जिसे पढ़कर मैं समझ गया कि सुलोचना ने आपको एक टेलिग्राम किया और सम्भवत: आपके निर्देश पर पिताजी ने अपना दौरा समाप्त किया। वे इतने जिद्दी और लापरवाह हैं कि वे यह महसूस नहीं करते कि अगर वे यूरोप में बीमार हो जाते तो कितनी अधिक परेशानी होती और लोगों को कितनी तकलीफें उठानी पड़तीं। आपकी कृपा से सब कुछ ठीक है। मालिक! आप मेरे और मेरे परिवार के लिये जो कुछ भी कर रहे हैं, जो अनन्त प्रेम, कृपा और दया आप हम पर बरसा रहे हैं, उसके लिये मैं आपका आभार कभी कैसे प्रकट कर पाऊँगा?

एयर इण्डिया की गलती की वजह से मैं म्यूनिख नहीं जा पाया और स्विटजरलैंड से ज्यूरिख होते हुये यहाँ आ गया। इसलिये श्री और श्रीमती कोच से मेरी मुलाकात नहीं हो पायी। उन्हें यह बात बहुत खलेगी।

यूगोस्लाविया के इस शहर लजुव्लजन में मेरी एक मित्र हैं, जिन्हें मैं १९ साल से जानता हूँ - तब से जब मैं १९५२ में यहाँ सरकारी स्कालरशिप से टेक्निकल ट्रेनिंग के लिये आया था। इनका

नाम श्रीमती जोरा ट्यूनर है। ये अपनी १८ साल की बेटी आइरेने के साथ यहाँ रह रही हैं। इनके पति ने ११ साल पहले इन्हें छोड़ दिया था। ये बहुत अच्छी और प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व वाली महिला हैं। इन्होंने हमारी पद्धति में पूजा करना शुरु कर दिया है। मेरी प्रार्थना है कि आप इन्हें ट्रांसमिट करें और इनकी देखभाल करें। इनका जीवन बहुत कठिन रहा है और मुझे ऐसा लगता है कि ये आपकी कृपा और संरक्षण के योग्य हैं। ये एक सुशिक्षित और सुसंस्कृत कलाकार हैं, एक सरकारी म्यूजियम में काम करती हैं और पुरानी पेंटिंग सम्भाल कर रखती हैं। इनके लिये मेरे मन में बहुत सम्मान और प्रेम है और मैं इनकी आपके अनन्त प्रेम और कृपा के लिये संस्तुति करता हूँ।

कल सुबह मैं बेलग्रेड और रोम होते हुये बेरुत रवाना हो रहा हूँ। रोम में कोई व्यक्तिगत संपर्क न हो पाने के कारण और समय की कमी की वजह से मैं उस सेन्टर पर नहीं जा पा रहा हूँ। स्थानीय समय के अनुसार मैं रात १९:३० पर बेरुत पहुँचूँगा। वहाँ से बगदाद (८ अक्टूबर), दमस्कस (११ अक्टूबर) और फिर ५ दिन के प्रवास पर १३ अक्टूबर को कैरो पहुँचूँगा। मि. हेनरी एस्ट्रिनोस ने मुझे लिखा है कि वे अक्टूबर के अंत तक स्थायी रूप से इजिप्ट छोड़ देंगे और आप्रवासी के रूप में ऑस्ट्रेलिया में रहेंगे। शायद वे ऑस्ट्रेलिया जाने से पहले आपसे मिलने जायेंगे। मुझे यह नहीं मालूम लेकिन जब मैं कैरो पहुँचूँगा तो उनसे पूछकर लिखूँगा।

कैरो से १८ अक्टूबर को मैं अदिसअबाबा जाऊँगा, २१ को नैरोबी और फिर २३ को तनानारीव की आखिरी यात्रा करके २५ या २६ को फिर नैरोबी लौटूँगा और वापस प्लेन से बम्बई या मद्रास पहुँचूँगा। मैं अधिकतम २७ अक्टूबर को वापस घर पहुँच जाऊँगा।

आपकी कृपा से अभी तक मेरी यात्रा आरामदेह और समस्यारहित रही है और उम्मीद है कि आगे भी ऐसी ही रहेगी। अगर आपके पास समय हो तो कृपया मुझे लिखियेगा कि आपने क्या धारणा बनायी है। अगर आगे मेरे लिये कोई निर्देश हो तो उसे भी C/o नील होटल, कैरो, यू. ए. आर. पर लिखियेगा। मैं यूरोप के प्रशिक्षकों को आपस में नजदीक लाने का प्रयत्न कर रहा हूँ, जिससे उनके काम में तालमेल हो और उनके बीच विचारों का आदान-प्रदान हो सके। श्रीमती बर्थे के काम करने के ढंग की सभी तारीफ करते हैं। प्रिय

मालिक! मैं श्रीमती बर्थे को इनिसियेशन के लिये संस्तुत करता हूँ। कृपया इस पर विचार कीजिये।

मैं अपने इस पत्र के साथ आपके लिये श्रीमती ट्यूनर का एक छोटा नोट भी संलग्न कर रहा हूँ। मैं आपके लिये उनसे मुझे मिला यूगोस्लाविया का एक पेपर कटर भी ला रहा हूँ।

शायद आप श्रीमती ट्यूनर को अपने पास बुलाते हुये एक छोटा सा नोट लिख देंगे जिसके लिये वे आपकी बहुत आभारी होंगी।

मैंने अभी श्रीमती बर्थे को इनीसियेशन के बारे में बताया नहीं है। अगर आपकी अनुमति हो तो मैं बता दूँ।

संपूर्ण प्रेम और प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

☐ **श्रीमती ट्यूनर का पता :**
श्रीमती जोरा ट्यूनर
लजुव्लजन, १/२ स्टिस्का यूलिका
यूगोस्लाविया

बगदाद
११ अक्टूबर १९७१

मेरे परम प्रिय मालिक,

बगदाद में मुझे आपका २५ सितम्बर का पत्र मिला, जिसके लिये मैं आपका आभारी हूँ। मुझे विश्वास है कि आपको मेरे सारे पत्र मिल गये होंगे। पिछला पत्र मैंने यूगोस्लाविया में लिखा था और ६ अक्टूबर को रोम में पोस्ट किया था। मालिक! मैं आपको अपना प्रेम और आभार कैसे व्यक्त कर सकता हूँ। आपके बिना मेरा जीवन बेकार हो गया होता और जिस तरह सूखे पत्ते को हवा उड़ा ले जाती है, उसी तरह मैं कहीं उड़ गया होता। आपने मेरे जीवन को अर्थ प्रदान किया है और मेरे अस्तित्व को आधार दिया है। यह एक रहस्य है कि आपके लिये मेरा प्रेम मुझे रोज बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। हालाँकि रोज ऐसा भी लगता है कि मैं आपको इससे ज्यादा प्रेम नहीं कर सकता। मालिक! कृपया आप मुझको अपने जैसा बनाइये। मैं हर चीज में आपके जैसा बनना चाहता हूँ। मैं आपमें पूरी तरीके से लय हो जाना चाहता हूँ। मेरा पृथक अस्तित्व मुझे असह्य है और उन समस्त खतरों और लालचों

से भरा हुआ है, जिनसे मानव जीवन सदैव खतरे में रहता है। आपके निरन्तर पथ-प्रदर्शन की मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। मेरी आपसे निरन्तर प्रार्थना है कि अगर मैं गलतियाँ करूँ तो आप अपनी दया और करुणा मुझे प्रदान करें। गलतियाँ तो मैं सदा करता हूँ। मुझे आपके द्वारा बतायी हुई वह घटना याद है जिसमें लालाजी महाराज ने आप पर अप्रसन्नता व्यक्त की थी। मेरे परम प्रिय मालिक! अगर आप कभी भी मुझ पर नाराज होंगे तो मैं जिन्दा नहीं रहूँगा। मैं आपकी नाखुशी या अपने प्रति नाराजगी के जरा सा लक्षण को भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे जैसा बनाना चाहते हैं वैसा जल्दी बनाइये, जिससे मैं जो कुछ भी करता हूँ, उसे करने में मुझे कोई अफसोस न हो।

मैंने आपको कोपेनहेगेन सेन्टर और श्रीमती बर्थे के बारे में विवरण भेजे हैं। यह सर्वश्रेष्ठ सेन्टर है और यहाँ मिशन के पास सबसे अच्छी कार्यकर्त्री है। कृपया इनके जैसे और लोगों को बनाइये।

मैंने राको के बारे में आपकी टिप्पणियों पर गौर किया है और रोज आधे घंटे उसकी सफाई कर रहा हूँ। तनानारीव पहुँचने पर आपके संकेत के अनुसार करूँगा। मैं आपका आभारी हूँ कि आप मेरे पिताजी, सुलोचना और कृष्णा की देखभाल कर रहे हैं। मुझे उनकी कोई चिन्ता नहीं है। वे तो ईश्वरीय पथ-प्रदर्शन और संरक्षण के अधीन हैं।

मालिक को सप्रेम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

पुनश्च : बेरुत में मेरी मुलाकात सऊदी अरब के एक युवा से हुई। हम एक दूसरे की ओर आकर्षित हुये और एक घंटे से अधिक हमने आपस में बातचीत की। योग की हमारी पद्धति में उसकी बहुत रुचि है और विश्वास है कि वह इसमें और रुचि लेगा। कृपया श्री सक्सेना से कहकर ***रियेलिटी एट डॉन*** की एक प्रति उसे भिजवा दें और साथ में एक पत्र भी भेजें, जिसमें ८ अक्टूबर को बेरुत के होटल कैडमास में मेरी और उसकी मुलाकात का जिक्र हो।

मेजर उमर बी. इदरीस
रायल एयर फोर्स
रियाद, सऊदी अरब

पंजीकृत

नं. सी १५/एस.आर.सी.एम. १४ अक्टूबर १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

२८ सितम्बर १९७१ को सेनेरी से और ५ अक्टूबर १९७१ को लजुव्लजन से लिखे तुम्हारे दो पत्र मिले। तुम्हारे पिताजी का भी एक पत्र मिला है कि वे पीलिया से पीड़ित हैं। उन्होंने अपने पत्र में एक अच्छी सलाह दी है कि जब वे पश्चिम के लिये चले तो मुझे कुछ दिनों के लिये वहाँ होना चाहिये था। जो कारण उन्होंने दिया है, वह बहुत मजबूत है। मैंने उन्हें लिखा है कि चि. पार्थसारथी के मद्रास लौट आने पर मैं इस बारे में कोई निर्णय लूँगा।

तुम्हारी वापसी पर तुम्हारा स्वागत करने के लिये मैं मद्रास में होता लेकिन मेरी डायरी नवम्बर में मिलने आने वालों से भरी हुई है।

मैंने श्रीमती बर्थे हॉगार्ड को एक पत्र लिखा है और उसकी एक प्रति एक अन्य पत्र के साथ लक्ष्मी नरसिंहन को भी भेजी है। तुम्हारी जानकारी के लिये मैं इन दोनो पत्रों की प्रतियाँ तुम्हें भेज रहा हूँ।

बर्थे के इनीसियेशन के बारे में मेरे मन में २-३ बार विचार उठा लेकिन मैं किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका। तुम्हारे लौटने पर मैं इस संबंध में तुमसे बात करूँगा। यह पश्चिम के लिये एक नयी चीज होगी और वे इसे बहुत महत्व नहीं देंगे। बर्थे को पहले इसका महत्व जानना चाहिये।

तुम बुद्धिमान लोगों में से नहीं चुने गये हो इसलिये बेवकूफी करने का कोई सवाल नहीं पैदा होता। (तुम्हें हँसाने के लिये लिख रहा हूँ।)

संलग्नक : दो

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

☐ श्री पी. राजगोपालाचारी
C/o राकोटोन्ड्रेनाइव एलेक्जेन्ड्रा
१३, रियू सर्जेन्ट डिवास्ट
बी. पी ८३५
तनानारीव (मेडागास्कर)

नं. सी १६/एस.आर.सी.एम. १४ अक्टूबर १९७१

मेरे प्रिय लक्ष्मी,

मुझे खुशी है कि डेन्मार्क का सेन्टर बढ़ रहा है। इसमें श्रीमती बर्थे हॉगार्ड की भूमिका सराहनीय है। वास्तव में उसने ही वह काम शुरु किया है जो तुम सभी कर रहे हो। वह सारे पुरस्कारों को पाने के लायक है। उसकी अवस्था अपनी पहुँच वाले भारतीय अभ्यासियों से बहुत बेहतर है। भारतीय अपने पूर्वाग्रहों में उलझे हुये हैं इसलिये उन्होंने बहुत से बन्धन बना लिये हैं।

उसकी भक्ति खुद हमारे लिये शिक्षा है। मैं उसे जल्दी ही बहुत ऊँचाई पर देखना चाहता हूँ। वह अपने अवचेतन मन से सदैव मुझे अपनी ओर आकर्षित करती रहती है जबकि तुम्हें आकर्षित करने के लिये मुझे कोशिश करनी पड़ती है। ईश्वर की दुनिया में सबको उसकी ओर बढ़ने का हक है। पश्चिम के लोग शान्ति के पीछे दौड़ रहे हैं और वे चाहते हैं कि कोई उनकी जरूरत पूरी करे। लेकिन उनके रास्ते में यह कठिनाई है कि पहले वे बौद्धिक रूप से संतुष्ट होना चाहते हैं। अगर वे एक बार संतुष्ट हो गये तो फिर सदा के लिये आपके हो जाते हैं जबकि भारतीयों के साथ ऐसा नहीं है।

मैं श्रीमती बर्थे हॉगार्ड को लिखी गयी अपने पत्र की कॉपी तुम्हें भेज रहा हूँ। श्री सी. ए. राजगोपालाचारी को पीलिया हो जाने की वजह से वे पश्चिम नहीं जा पाये। वे बम्बई से ही वापस लौट गये हैं।

संलग्नक : एक

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

नं. सी ०७/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
११ अक्टूबर १९७१

प्रिय बहन,

आपका प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मुझे जानकर यह खुशी है कि आप डेन्मार्क में लोगों की बेहतरीन आध्यात्मिक सेवा कर रही हैं। बहन! मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि आपका हर कदम दिव्यता द्वारा पुरस्कृत होगा। लिखने में मैं सदैव सीधा रहा हूँ इसलिये जो भी देखता या महसूस करता हूँ, लिख देता हूँ। मैं आपको और अधिक प्रोत्साहित करने के लिये लिख रहा हूँ कि मैंने आपको आध्यात्मिकता में बहुत

ज्यादा शक्तिशाली बनाकर वापस डेन्मार्क भेजा है। इस बात में कोई सच्चाई नहीं है कि कोई भारतीय अध्यात्म में यूरोपियन से बेहतर तरक्की कर सकता है। जिसका भी रुझान दिव्यता की ओर है, वह अध्यात्म के लिये उपयुक्त है। अगर मेरे जैसा मालिक हो और आपके जैसा शिष्य तो उन्नति में कुछ भी समय नहीं लगता। मेरी प्रार्थना है कि मैंने जो कुछ भी आपको शाहजहाँपुर में दिया है आप उसे जल्दी से जल्दी आत्मसात कर लें। मैंने आपके अस्तित्व के प्रत्येक कण को आध्यात्मिकता से भर दिया है और मैं आपको इसकी अगली खुराक देने का इन्तजार कर रहा हूँ।

पुन: मैं आपको यह लिख रहा हूँ कि डेन्मार्क की आप एकमात्र इन्चार्ज हैं और दूसरे जो भी वहाँ हैं वे आपके सहायक हैं। सच कहा जाय तो हम सभी को अपने व्यक्तिगत प्रयास के अतिरिक्त संयुक्त प्रयास भी करना चाहिये जिससे मानव जाति का उत्थान करके इस संसार को उच्चतर संसार के समान बनाया जा सके।

आपने वीबे को प्रशिक्षक बनाने की संस्तुति की है इसलिये मैंने उस पर काम करना शुरु कर दिया है। उसका आपके साथ बहन जैसा संबंध होना चाहिये और आशा करता हूँ कि ऐसा है भी।

जन्गे एम्बस अपने पिछले जीवन में एक फ्रेन्च महिला थीं। नीले रंग की साड़ी पहनने का उनको बहुत शौक था। अगर मैं पेन्टर होता तो उनकी तस्वीर खींच देता। उनको कोई बच्चा नहीं था और वह धनी भी नहीं थीं। उनका लगाव चर्च से था दिव्यता से नहीं। रेड इण्डियन के साथ उनका रहना उनकी निजी इच्छा है, पूर्वनिर्धारित नहीं है। मैंने उनके बारे में इतना कुछ लिख तो दिया लेकिन इसकी परीक्षा कैसे होगी कि यह सत्य है या नहीं। मुझे पूरा यकीन है कि मैं सही हूँ।

मुझे पार्थसारथी का एक पत्र मिला है, जिसमें उसने आपकी बेटी को प्रशिक्षक बनाने की संस्तुति की है। मैं इससे सहमत हूँ। उसने इसका नाम एल्जाबेथ लिखा है जबकि आपने शाहजहाँपुर रेलवे स्टेशन से अपनी बेटी का जो चित्र भेजा था उसमें आपने उसका नाम एलिजाबेथ लिखा था। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या यह वही लड़की है जिसके नाम की संस्तुति पार्थसारथी ने की है। अगर यह वही है तो कृपया उसके पूरे नाम के साथ मुझे जल्दी सूचित कीजिये।

धीरे-धीरे आप अभ्यासियों की अवस्था पढ़ना शुरु कर देंगी और जब मैं डेन्मार्क आऊँगा तो आपको इस मामले में कुछ प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दूँगा। अपनी जानकारी के लिये आप जो कुछ भी चाहेंगी, वहाँ होने पर मैं उन सारी बातों को स्पष्ट कर दूँगा।

आशीर्वाद सहित,

भवदीय
रामचन्द्र

पुनश्च : मैं बहुत खुश हूँ कि अपने मालिक की कृपा से मैंने पश्चिम में भी संत बनाने शुरु कर दिये हैं। मेरी मेहनत सफल हो।

कैरो
१७ अक्टूबर १९७१

परम प्रिय मालिक,

मुझे यकीन है कि आपको मेरे सारे पत्र मिल गये होंगे और आप स्वस्थ होंगे। सन्त कस्तूरी ने मुझे लिखा है कि आप आसाम के दौरे पर गये थे और किसी चीज से चिन्तित थे। आशा है कि आप अक्षुण्ण स्वास्थ्य के साथ लौटेंगे।

मालिक! जब से मैंने सुना है कि मि. हेनरी एस्ट्रिनोस ऑस्ट्रेलिया में बसने जा रहे हैं। मेरी इच्छा है कि वे किसी तरह आपके पास जायें और काम करने की अन्तरिम अनुमति ले लें ताकि उस देश में मिशन का काम शुरु हो सके। आपने मुझे बताया था कि ऑस्ट्रेलिया हमारे काम के लिये बहुत अच्छा होगा। यहाँ आने पर मुझे मालूम हुआ कि वह आपके पास इसलिये नहीं आ सका कि उसके पास समय नहीं था और वह सीधा ऑस्ट्रेलिया चला गया। इसी बीच बगदाद में मुझे आपका पत्र मिला कि मैं आपकी तरफ से राकोटोन्ड्रेनाइव को अन्तरिम अनुमति दे सकता हूँ। इसका लाभ उठाते हुये आज मैंने दो लोगों को मालिक की ओर से अन्तरिम अनुमति प्रदान कर दी है :

१. श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास

२. मैडम डीना जोन्नाइड्स

कृपया श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास का सर्टिफिकेट उसके ऑस्ट्रेलिया के पते पर ५ नवम्बर या इसके बाद भेजें।

धीरे-धीरे आप अभ्यासियों की अवस्था पढ़ना शुरु कर देंगी और जब मैं डेन्मार्क आऊँगा तो आपको इस मामले में कुछ प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दूँगा। अपनी जानकारी के लिये आप जो कुछ भी चाहेंगी, वहाँ होने पर मैं उन सारी बातों को स्पष्ट कर दूँगा।

आशीर्वाद सहित,

भवदीय

रामचन्द्र

पुनश्च : मैं बहुत खुश हूँ कि अपने मालिक की कृपा से मैंने पश्चिम में भी संत बनाने शुरु कर दिये हैं। मेरी मेहनत सफल हो।

कैरो

१७ अक्टूबर १९७१

परम प्रिय मालिक,

मुझे यकीन है कि आपको मेरे सारे पत्र मिल गये होंगे और आप स्वस्थ होंगे। सन्त कस्तूरी ने मुझे लिखा है कि आप आसाम के दौरे पर गये थे और किसी चीज से चिन्तित थे। आशा है कि आप अक्षुण्ण स्वास्थ्य के साथ लौटेंगे।

मालिक! जब से मैंने सुना है कि मि. हेनरी एस्ट्रिनोस ऑस्ट्रेलिया में बसने जा रहे हैं। मेरी इच्छा है कि वे किसी तरह आपके पास जायें और काम करने की अन्तरिम अनुमति ले लें ताकि उस देश में मिशन का काम शुरु हो सके। आपने मुझे बताया था कि ऑस्ट्रेलिया हमारे काम के लिये बहुत अच्छा होगा। यहाँ आने पर मुझे मालूम हुआ कि वह आपके पास इसलिये नहीं आ सका कि उसके पास समय नहीं था और वह सीधा ऑस्ट्रेलिया चला गया। इसी बीच बगदाद में मुझे आपका पत्र मिला कि मैं आपकी तरफ से राकोटोन्ड्रेनाइव को अन्तरिम अनुमति दे सकता हूँ। इसका लाभ उठाते हुये आज मैंने दो लोगों को मालिक की ओर से अन्तरिम अनुमति प्रदान कर दी है :

१. श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास

२. मैडम डीना जोन्नाइड्स

कृपया श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास का सर्टिफिकेट उसके ऑस्ट्रेलिया के पते पर ५ नवम्बर या इसके बाद भेजें।

पता :
मि. हेनरी जी. एस्ट्रिनास
ब्ध्व लुईगी सैन्जॉन
५२, प्रिन्सेज स्ट्रीट
ठुर्रामुर्रा - एन.एस.डब्लू. २०७४
ऑस्ट्रेलिया

मि. एस्ट्रिनास याद करते हैं कि जब वे आपके साथ मद्रास में थे, आपने कई बार कहा कि आस्ट्रेलिया अध्यात्म के लिये अच्छी जगह है और उन्हें आश्चर्य हुआ कि आप उनसे आस्ट्रेलिया के बारे में इतनी बातें क्यों कर रहे हैं जबकि वे इजिप्ट से आये हैं। अब वे महसूस करते हैं कि इजिप्ट को छोड़कर ऑस्ट्रेलिया में उनका बसने का फैसला आपकी ईश्वरीय या आध्यात्मिक योजना का हिस्सा है। उन्होंने वादा किया है कि वे ऑस्ट्रेलिया में मिशन के लिये पूरे मन से काम करेंगे।

मिसेज डीन विवाहित हैं और यहाँ एक रेस्टोरेन्ट चलाती हैं। मैंने उन्हें यहाँ काम करने के लिये सर्वोत्तम व्यक्ति के रूप में चुना है। वे अच्छा काम करेंगी। उनका इतिहास आध्यात्मिक और अर्द्ध आध्यात्मिक प्रयासों और अभ्यास का रहा है। १५ सालों से वे फ्रेन्च, ग्रीक, मलेशियन और अन्य स्कूलों से जुड़ी हुई हैं और सुशिक्षित हैं। कृपया उनका सर्टिफिकेट पंजीकृत डाक से निम्न पते पर भिजवा दीजिये।

मैडम डीना जोन्नाइड्स
कैसिनो सेन्सौसी
मिडान एल गिजा
गिजा, कैरो (यू.ए.आर.)

मैं इस पत्र के साथ मैडम डिना, मि. एस्ट्रिनास तथा एक और चित्र, जिसमें मैडम डिना अपने पति के साथ हैं, संलग्न कर रहा हूँ।

प्रिय मालिक! जो अधिकार आपने मुझे दिया है और इस मामले में आपके जो इरादे हैं, उम्मीद है कि मैंने उनकी सीमाओं को तोड़ा नहीं है और मैं इस पर आपकी अनुमति का इन्तजार कर रहा हूँ।

राको के मामले में आपका पत्र मिलते ही मैंने उसकी विस्तृत सफाई शुरु कर दी है। मैं तनानारीव से चलने से पहले मालिक की ओर से उसे 'अन्तरिम अनुमति प्रदान करूँगा। कल मुझे रवि वर्मा से उनके साथ रुकने को निमन्त्रण मिला और मैंने उसे स्वीकार करके

उन्हें केबिल से इसकी सूचना दे दी है। मैं पूरे तीन दिन वहाँ रहूँगा और मॉरीशस होकर २८ अक्टूबर १९७१ को वापस मद्रास लौटूँगा। वापस लौटकर मैं अपने इस दौरे की पूरी रिपोर्ट आपको भेजूँगा। अगर मैंने कुछ गलत किया है तो कृपया मुझे क्षमा कर दीजियेगा। मैं एक अदना इन्सान हूँ और आपकी क्षमा और आपका आशीर्वाद चाहता हूँ।

परम प्रिय मालिक! मैं आपको बहुत प्रेम करता हूँ।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

पुनश्च : मैं अपनी प्रार्थना का एक अरेबिक अनुबाद संलग्न कर रहा हूँ। इस बात में कुछ संशय है कि हमें ***ला इलाही*** कहना चाहिये या ***ला सैयदी।*** सम्भव है कि बाद वाला शब्द मुसलमान भाइयों को स्वीकार न हो। कृपया इसकी जाँच करके एक औपचारिक और स्वीकृत अनुबाद प्रदान कीजिये। मैं एक नये अभ्यासी हुसैन अल्टावर्जी का चित्र संलग्न कर रहा हूँ।

नं. पी ०२/४०/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
१९ अक्टूबर १९७१

प्रिय भाई,

मैं आपको सूचित कर रहा हूँ कि मिशन के प्रेसिडेन्ट को मिशन की आर्गनाइजेशन की सब कमिटी में आपको सदस्य नामांकित करते हुये प्रसन्नता है। इस संबंध में हुये आदेश की एक प्रति भी मैं इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ। मैं आपसे यह भी निवेदन करता हूँ कि इस उपसमिति की पहली बैठक के लिये कोई उपयुक्त तारीख निर्धारित करने की कोशिश कीजिये। बेहतर होगा कि उपसमिति के सभी सदस्य पत्र-व्यवहार के माध्यम से आपस में संपर्क बनाये रहें।

मालिक की सेवा में,

संलग्नक : एक

आपका
जे. आर. के. रायजादा
ज्वाइंट सेक्रेटरी

श्री पी. राजगोपालाचारी
मद्रास

आदेश

अक्टूबर १९६९ में संगठन के बारे में जारी किये गये निर्देशों को लागू करने और ३० जनवरी १९७१ की वर्किंग कमिटी की मीटिंग के प्रस्ताव संख्या ३ में किये गये निवेदन को पूरा करने के लिये मैं मिशन की ऑर्गनाइजेशनल सबकमिटी में उक्त सदस्यों को नामांकित करता हूँ :

१. श्री राघवेन्द्र राव	रायचूर
२. बहन कस्तूरी चतुर्वेदी	मोदीनगर
३. श्री पी. राजगोपालाचारी	मद्रास
४. डॉ. वी. पार्थसारथी	विजयवाड़ा
५. श्री जे. आर. के. रायजादा	शाहजहाँपुर

यह उपसमिति प्रेसिडेन्ट के पथ-प्रदर्शन में मिशन के संगठनात्मक कार्य का संचालन, देखभाल और निर्देशन करने के लिये जिम्मेदार होगी। इस उद्येश्य की पूर्ति हेतु पथ-प्रदर्शन के लिये जरूरी होने पर प्रेसिडेन्ट की पूर्व अनुमति से यह मिशन के केन्द्रों को जरूरी निर्देश भेज सकती है।

यह उपसमिति हर साल के अंत में मिशन के सेक्रटरी को अपने संगठनात्मक कार्य की रिपोर्ट देगी ताकि वे इसे मिशन की सालाना रिपोर्ट में शामिल कर सकें और इस रिपोर्ट को वर्किंग कमिटी की सालाना मीटिंग में रखा जा सके।

यह कमिटी राज्य स्तर पर काम करने के लिये ऑर्गनाइजरों की नियुक्ति करने के लिये भी अधिकृत होगी।

मैं आशा करता हूँ कि इस उपसमिति को मिशन के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

रामचन्द्र
प्रेसिडेन्ट
श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

स्थान : शाहजहाँपुर
दिनांक : ४ अगस्त १९७१

मद्रास
२५ अक्टूबर १९७१

परम आदरणीय मालिक,

शनिवार २३ तारीख को मैं वापस भारत लौटा। २२ को रात ८:२० पर नैरोबी से एयर इण्डिया की फ्लाइट से बम्बई के लिये रवाना होकर मैं २३ की सुबह ७:१५ पर मद्रास पहुँचा। फ्लाइट आरामदेह थी और आपकी कृपा से मैं सकुशल वापस आ गया।

अफसोस के साथ मुझे आपको यह सूचना देनी पड़ रही है कि मैं मेडागास्कर नहीं जा पाया क्योंकि वहाँ का वीसा तीन हफ्ते से कम में बन पाना सम्भव नहीं था। मि. राकोटोन्ड्रेनाइव ने मुझे सूचना दी थी कि उन्होंने वीसा के सारे प्रबन्ध कर लिये हैं और नैरोबी में उनके वाणिज्य दूतावास पर संपर्क करने पर यह मुझे मिल जायेगा लेकिन नैरोबी में मेडागास्कर दूतावास ने मुझे बताया कि न तो उन्हें मेरे लिये किसी वीसा के आवेदन की जानकारी है और न ही उनसे इस विषय पर कोई पत्राचार हुआ है। उन्होंने कहा कि मेरे वीसा आवेदन को जाँच और अनुमति के लिये तनानारीव में उनकी फारेन अफेयर्स मिनिस्ट्री में भेजना जरूरी होगा। वहाँ से निर्देश आने पर ही वीसा दिया जा सकता है। इस काम में कम से कम तीन हफ्ते लगेंगे और इसमें तीन महीने भी लग सकते हैं। हालात नियंत्रण के बाहर होने की वजह से अपने दौरे के एक हिस्से को मुझे अफसोस के साथ छोड़ना पड़ा।

आशा है कि आपको कैरो से मेरे द्वारा लिखा गया पत्र मिला होगा। मैं इस दौरे में किये गये आध्यात्मिक कार्य की रिपोर्ट भी साथ में संलग्न कर रहा हूँ। इसके संबंध में आपकी टिप्पणी मिलने पर मैं आपका आभारी होऊँगा। मेरा निवेदन विशेष रूप से मैडम डीना के अनुभव के बारे में है, जो शुक्रवार १५ अक्टूबर को कैरो में लिखे गये पत्र के पृष्ठ संख्या २ पर है।

पिताजी को कस्तूरी बहन का एक पत्र मिला है जिसमें लिखा है कि आप श्रीवीरराघवन की बेटी की शादी में मद्रास आ रहे हैं इसलिये विदेशी अभ्यासी सीधे मद्रास आ सकते हैं। अगर ऐसा कोई कार्यक्रम तय हुआ है तो कृपा करके मुझे खबर दीजिये।

पिताजी मेरे उम्मीद से कहीं ज्यादा बेहतर हैं और वे अभी भी विदेश के दौरे पर जाने के लिये उत्साहित हैं। मेरी राय में आप इन्हें

विदेश जाने की अनुमति तभी दें जब इनके चिकित्सक लोग यह प्रमाणित कर दें कि ये अब पूरी तरह स्वस्थ हैं। इनका दौरा केवल यूरोप तक ही सीमित होना चाहिये और इस बार इसमें अमेरिका को शामिल करने की जरूरत नहीं है। भारत से बाहर पिताजी का दौरा दस हफ्तों से ज्यादा का नहीं होना चाहिये। इस यात्रा में हुये अनुभवों से मुझे लगता है कि लम्बा प्रवास न तो अपेक्षित ही है और न ही उपयोगी। निस्संदेह एक व्यक्ति यूरोप में सालों बैठकर एक के बाद दूसरे व्यक्ति को आकर्षित कर सकता है लेकिन मैंने अपने पिताजी को सदैव यही सलाह दी है कि यह स्थानीय प्रशिक्षकों का काम है और यात्रा करने वाले भारतीय प्रशिक्षकों से उम्मीद की जाती है कि वे स्थानीय प्रशिक्षकों को मार्गदर्शन करें और उनके प्रयत्नों को बढ़ायें न कि अपने व्यक्तिगत तरीके से काम करें। मेरा विश्वास है कि आप इन टिप्पणियों से सहमत होंगे और समय के साथ जैसा भी उचित होगा वैसा आदेश देंगे।

मैं आपको अफसोस के साथ सूचित कर रहा हूँ कि जब मेरे पिताजी मद्रास से बम्बई के लिये रवाना हुये तभी उन्हें मालूम था कि पीलिया से उनकी तबियत खराब है लेकिन उन्होंने जानबूझकर इस सूचना को दूसरों से छिपाया जिससे लोग उनकी यात्रा में हस्तक्षेप न करें। उन्होंने अपने चिकित्सकों को भी कह दिया था कि परिवार के लोगों को उनकी बीमारी के बारे में कुछ न बतायें। इस उम्र और आध्यात्मिक उपलब्धि के इस स्तर पर उनका यह व्यवहार बचकाना प्रतीत होता है। इस पत्र में मैं ये सब बातें विदेश यात्रा के प्रति उनकी ललक को प्रदर्शित करने के लिये लिख रहा हूँ। यह ललक इतनी ज्यादा है कि वे अपने भौतिक स्वास्थ्य और सुरक्षा की भी उपेक्षा कर रहे हैं। भविष्य में इसको प्रोत्साहन नहीं दिया जाना चाहिये।

मुझे १९ अक्टूबर का भाई रायजादा का पत्र मिला है, जिसमें ऑर्गनाइजेशन संबंधी उपकमिटी के गठन और उसके सदस्य के रूप में मेरी नियुक्ति के संबंध में आपके आदेश की कॉपी भी संलग्न है। मैं दूसरे सदस्यों से पत्र-व्यवहार करके देखूँगा कि कौन से जरूरी काम किये जाने हैं और कैसे उन्हें उत्कृष्टता से किया जाये।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

संलग्नक : उपरिलिखित

आध्यात्मिक कार्यों का विवरण

लन्दन

१६ सितम्बर १९७१ - गुरुवार
⇒ श्रीमती वेरा डेविश को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ श्री एलिडिर डेविश को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ नई अभ्यासी - पहली सिटिंग - मैडम इथेल फेन्टन

१७ सितम्बर १९७१ - शुक्रवार
⇒ श्रीमती इथेल फेन्टन - दूसरी सिटिंग
⇒ श्रीमती वेरा डेविश को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ श्री एलिडिर डेविश को व्यक्तिगत सिटिंग

१८ सितम्बर १९७१ - शनिवार
⇒ श्रीमती वेरा डेविश को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ श्री एलिडिर डेविश को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ श्रीमती इथेल फेन्टन को व्यक्तिगत सिटिंग

१९ सितम्बर १९७१ - रविवार
⇒ श्रीमती वेरा डेविश को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ श्री एलिडिर डेविश को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ श्रीमती इथेल फेन्टन को व्यक्तिगत सिटिंग

कोपेनहेगेन

२४ सितम्बर १९७१ - शुक्रवार
⇒ शाम ३:०० बजे श्रीमती बर्थे को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ शाम ६:०० बजे ४ अभ्यासियों के साथ सत्संग
⇒ रात ८:०० बजे ३५ अभ्यासियों के साथ सत्संग
⇒ प्रश्नों का उत्तर देते हुये २ घंटे बोला।

२५ सितम्बर १९७१ - शनिवार
⇒ सुबह १०:०० बजे श्रीमती बर्थे को व्यक्तिगत सिटिंग

⇒ रात ८:०० बजे डॉ. ए. लक्ष्मी नरसिंहन के परिवार के साथ सत्संग
⇒ रात ९:०० बजे ८ अभ्यासियों के साथ सत्संग
⇒ श्रीमती बर्थे की जगह मालिक दिखे।

२६ सितम्बर १९७१ - रविवार
⇒ दोपहर १२:०० बजे से रात ११:०० बजे तक सेन्टर पर अभ्यासियों को १५ व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ श्रीमती बर्थे को ट्रांसमिट करते समय फिर उनकी जगह मालिक को देखा।

२७ सितम्बर १९७१ - सोमवार
⇒ सुबह १०:०० बजे से दोपहर १:०० बजे तक सेन्टर पर अभ्यासियों को ७ व्यक्तिगत सिटिंग

सेनेरी

२८ सितम्बर १९७१ - मंगलवार
⇒ सुबह ८:०० बजे मि. पोरे को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ शाम ७:०० बजे मि. पोरे को व्यक्तिगत सिटिंग

२९ सितम्बर १९७१ - बुधवार
⇒ सुबह ८:०० बजे मि. पोरे को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ शाम ७:०० बजे श्रीमती वेरा डेविश, श्री एलिडिर डेविश और मि. पोरे के साथ सत्संग
⇒ रात ८:०० बजे नयी अभ्यासी श्रीमती डेविश के पड़ोसी को पहली सिटिंग

लजुब्लजन - यूगोस्लाविया

४ अक्टूबर १९७१ - सोमवार
⇒ श्रीमती जोरा ट्यूनर को पहली सिटिंग
⇒ रात ८:०० बजे श्रीमती जोरा ट्यूनर को दूसरी सिटिंग

५ अक्टूबर १९७१ - मंगलवार
⇒ सुबह ११:०० बजे श्रीमती ट्यूनर को व्यक्तिगत सिटिंग
⇒ रात ८:०० बजे श्रीमती ट्यूनर को व्यक्तिगत सिटिंग

कैरो

१३ अक्टूबर १९७१ - बुधवार
⇒ श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास को व्यक्तिगत सिटिंग। हृदय क्षेत्र की विस्तृत सफाई।

१४ अक्टूबर १९७१ - गुरुवार
⇒ सुबह ९:०० बजे श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास को सिटिंग
⇒ दोपहर ३:०० बजे मैडम डीना को सिटिंग
⇒ रात १०:०० बजे श्री एन्टोनी क्रेडि को सिटिंग

१५ अक्टूबर १९७१ - शुक्रवार
⇒ सुबह ९:०० बजे श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास को सिटिंग
⇒ दोपहर ३:०० बजे मैडम डीना को सिटिंग। पिछले १०-१२ सालों से वे फ्राँस के एक टीचर का अनुसरण कर रही हैं। हमारी पद्धति को उन्होंने गम्भीरता से नहीं अपनाया है। पिछले साल श्री सी. ए. राजगोपालाचारी द्वारा दी गयी पुस्तक ***इफिकेसी ऑफ राजयोग*** को भी उन्होंने नहीं पढ़ा है फिर भी सिटिंग के समय उनके दिल में मैंने एक महत्वपूर्ण बात यह देखी कि एक लाइन में अगल-बगल पाँच मालिक बैठे हुये हैं - सभी हमारे मालिक। मुझे इस बारे में मालिक की व्याख्या चाहिये।
⇒ शाम ७:०० बजे श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास को सिटिंग
⇒ रात ९:०० बजे - नये अभ्यासी हुसैन अल्टावर्जी को पहली सिटिंग

१६ अक्टूबर १९७१ - शनिवार
⇒ सुबह ८:०० बजे श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास को सिटिंग
⇒ दोपहर ३:०० बजे मैडम डीना को सिटिंग
⇒ शाम ७:०० बजे श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास को सिटिंग

(श्रीमती डीना ने बताया कि उन्हें पिछले सालों में रीढ़ और पीठ की हड्डी में दर्द होता रहा है जो परसों पहली सिटिंग लेने के बाद से गायब हो गया है। इससे उनका हमारी पद्धति में विश्वास बढ़ा है।)

⇒ रात १२:०० बजे श्री अल्टावर्जी को दूसरी सिटिंग। वह बहुत डरा हुआ है और डर की वजह से ध्यान नहीं कर पा रहा है। जरा सी आवाज से उसकी आँख खुल जाती है। उसने बताया कि कल वह यह सोच कर डर गया था कि आँख बन्द करते ही मैं उसे मार डालूँगा। मैंने उसे यकीन दिलाया कि ध्यान से उसका कोई नुकसान नहीं होगा।

१७ अक्टूबर १९७१ - रविवार

⇒ सुबह ८:०० बजे मालिक की ओर से श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास को अन्तरिम अनुमति प्रदान किया।

⇒ सुबह ९:०० बजे मालिक की ओर से श्रीमती डीना जोन्नाइड्स को अन्तरिम अनुमति प्रदान किया।

⇒ शाम ३:०० बजे श्री अल्टावर्जी को व्यक्तिगत सिटिंग। वह बिना किसी परेशानी के ३० मिनट तक बैठ पाया। गहरी सिटिंग - अच्छी सफाई। उसने अपनी तरफ से सूचना दी कि वह आज रात में अच्छी तरह से सो पाया। उसने बताया कि सिटिंग के समय एक समय उसे ऐसा लगा कि उसका शरीर ही नहीं है।

⇒ रात १०:०० बजे मैंने श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास से एक सिटिंग माँगी। शुरुआत बहुत ढीली रही लेकिन बाद में ट्रांसमिशन बहुत तेज हो गया। उसने बताया कि उसने मेरी आकृति को देखा जैसे वह स्फटिक की हो।

१८ अक्टूबर १९७१ - सोमवार

⇒ सुबह ८:०० बजे श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास और मैडम डीना होटल आये। मैंने हेनरी से डीना और मुझे एक सिटिंग देने को कहा। बाद में श्री अल्टावर्जी आये जिन्हें हेनरी ने एक सिटिंग दी।

मैडम डीना को एक बहुत अच्छा अनुभव हुआ। ध्यान के दौरान उनका पुराना टीचर उपस्थित हुआ और उसने बताया कि खोज में वह अब मैडम डीना की ज्यादा सहायता नहीं कर सकता। उसने बताया कि यहाँ एक व्यक्ति है, जो उन्हें आगे और ऊपर ले जा सकता

है। कृपया उसका अनुसरण करो। डीना ने कहा कि वह अब मालिक के बारे में पूरी तरह संतुष्ट है।

शाहजहाँपुर
२६ अक्टूबर १९७१

प्रबंधक
इलाहाबाद बैंक
शाहजहाँपुर
प्रिय महोदय,

कृपया हमारे जनरल फण्ड एकाउन्ट (बचत खाता संख्या २६७/३) से २०५/- रुपये मद्रास में इलाहाबाद बैंक के श्री रामचन्द्र मिशन के एकाउन्ट में ट्रांसफर कर दीजिये।

भवदीय
रामचन्द्र
प्रेसिडेन्ट

- श्री पी. राजगोपालाचारी, जनरल सेक्रेटरी, एस.आर.सी.एम., ११/ई नार्थ स्ट्रीट, श्री रामनगर, मद्रास-१८ को सूचना के लिये प्रेषित।

यह धनराशि हेडक्वार्टर पर डॉ. के.सी.वी. मेमोरियल लाइब्रेरी के लिये दिये गये डोनेशन का है।

हमारी रसीद संख्या १५४० दिनांक ८ अगस्त १९७१ पर ५/- रुपये रसीद संख्या १६८४ दिनांक २५ अक्टूबर १९७१ को ५०/- रुपये क्रमश: मेसर्स गणेश प्रसाद मेहरोत्रा, बरेली, एम. कृष्णामाचार्या, नैडाडवोलू और शक्तिमूर्ति नैडाडवोलू ने दिया है। रसीद संख्या १६८९८२२६/१६/७१ पर १००/- रुपये श्री पी. सुब्रह्मनियम, राजामुंदरी ने दिया है।

नं. सी ५०/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
२६/२७ अक्टूबर १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे सारे पत्र मिले। तुम्हारे पत्रों का हर शब्द प्रेम और अनुराग से भरा हुआ था। उनमें समर्पण था। इस तरह के प्रेम का बदला मैं कैसे चुकाऊँ?

निस्संदेह बहुत से ऐसे लोग हैं जो मुझे बहुत प्रेम करते हैं लेकिन तुममें और कस्तूरी में मुझे प्रेम की कशिश मिलती है। यहाँ कशिश शब्द के माध्यम से मैं जो कहना चाह रहा हूँ उसके लिये शब्द नहीं मिलते। यह धीरे-धीरे सुलगने का शांत अहसास है, जो अन्तर्जागृति का विकास करता है। यह सामान्य बात नहीं है। कौन जानता है कि इस पत्र के मिलने तक तुममें इसका विकास होने लगे।

कभी-कभी तुम अपने पत्रों में लिखते हो कि तुम्हें मुझसे भय लगता है। मुझे यह अच्छा नहीं लगता। इससे मुक्त हो जाओ। इसे बनाये रखोगे तो अपने को विस्तार के लिये स्वतंत्र नहीं पाओगे। यह अँगूठे में चुभे हुये काँटे की तरह काम करेगा। गलतियों के बारे में मत सोचो। मुहाबरा भी है कि ***गलती तो आदमी से ही होती है।***

तुमने पश्चिम में आश्चर्यजनक काम किया है। तुम लम्बे समय तक जीवित रहो। इस बार मैंने सिवाय तुम्हारी देखभाल के पश्चिम में और कोई काम नहीं किया।

हमारी प्रार्थना का अरेबिक अनुबाद मुझे ठीक प्रतीत होता है। ***या इलाही*** शब्द बेहतर है। मेरा एक दोस्त अरबी जानता है। मैं उससे राय लेकर तुम्हें भेजूँगा जिससे तुम जहाँ चाहो इसे भेज सको।

तुम्हारे पिताजी के पत्र की एक प्रति मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। जब तुम तनानारीव में थे तो मैंने इसके बारे में तुम्हें लिखा भी था। उन्होंने लिखा है कि वे १९७२ में पश्चिम जायेंगे और इसके लिये उन्होंने अच्छे तर्क भी दिये हैं। उन्होंने लिखा है कि आपको १९७३ में पश्चिम जाना चाहिये जिससे आपको अपने काम के लिये क्षेत्र तैयार मिले। लेकिन मैं अपने १९७२ के पश्चिमी दौरे को स्थगित नहीं करना चाहता चूँकि एक साल बाद मैं पश्चिम के दौरे के लिये शारीरिक रूप से अस्वस्थ हो सकता हूँ।

मैंने अभी तक तुम्हारे पिताजी के पश्चिम जाने के बारे में सोचा नहीं है लेकिन अगर वे जाना चाहते हैं तो इटली के केन्द्र को स्थिर बनाने के लिये वे इटली जा सकते हैं और हॉलैण्ड या लन्दन होकर वापस मद्रास आ सकते हैं। अगर वे अपने रिश्तेदारों से मिलने के लिये अमेरिका जाने को बहुत उत्सुक हैं तो वे ८-१० दिन के लिये वहाँ भी जा सकते हैं बशर्ते उनका स्वास्थ्य उन्हें इस बात की इजाजत दे। अगर उनका कार्यक्रम इस तरीके से तय हो और अपने स्वास्थ्य से वे मुझे संतुष्ट कर दें तो मार्च १९७२ में विदेश जाकर तीन हफ्ते में

लौट सकते हैं। इस संबंध में यह केवल मेरी राय है अंतिम निर्णय नहीं।

इधर रोम के श्री जी. एल. श्रवनमुत्तू से मेरा पत्र-व्यवहार होता रहा है। वे मिशन का काम करने के लिये तैयार हैं और समर्पित भी। मैंने उन्हें मेरे पत्र का इन्तजार किये बिना १ नवम्बर १९७१ से काम शुरु कर देने को लिखा है। उन्होंने मुझे लिखा था कि उनके पास ऐसे कई लोग आये जिन्हें तुम्हारे पिताजी ने ध्यान शुरु कराया था।

तुमने ऑस्ट्रेलिया जा रहे मि. एस्ट्रिनास को और मैडम डीना को अन्तरिम अनुमति देकर अच्छा काम किया है। अब देखो! यहाँ मुझसे एक गलती हो गयी। तुम खुद अपनी गलतियों के लिये मुझसे शिकायत करते हो लेकिन मैं भी गलतियों से रहित नहीं हूँ। मुझे चाहिये था कि दौरा शुरु करने के पहले ही मैं तुम्हें लोगों को काम करने के लिये तैयार करने की अनुमति दे देता।

मैं श्रीमती डेविश के पत्र और उनको दिये गये जबाब की एक प्रति तुम्हें भेज रहा हूँ। उन्होंने तुम्हारे बारे में भी लिखा है।

मुझे चि. उमेश का एक पत्र मिला है जिसमें उसने मुझे पोते के अन्नप्राशन के लिये बुलाया है लेकिन मैं नहीं समझता कि मैं नवम्बर में आ पाऊँगा चूँकि डेन्मार्क, इटली और अमेरिका से इस महीने में २ हफ्तों के लिये लोग आ रहे हैं। फिर भी मैं कोशिश करूँगा। अगर मैं नहीं आ सका तो अन्नप्राशन के लिये कुछ प्रबंध करूँगा।

मुझे यकीन है कि तुम मद्रास में बिल्कुल स्वस्थ और प्रसन्न होगे। तुमसे मिलने के लिये मैं बहुत अधीर हूँ।

पासपोर्ट के लिये मैंने फार्म ले लिया है और इसे मैं निम्नलिखित देशों के लिये भर रहा हूँ :

इजिप्ट, इटली, मैडागास्कर, स्विटजरलैण्ड, हॉलैण्ड, बेल्जियम, वेस्ट जर्मनी, डेन्मार्क, यूगोस्लाविया, फ्राँस, यू.के., ग्रीनलैण्ड और यू.एस.ए.

अगर तुम्हारी सहमति हो तो मैं यह फार्म भर दूँ। सच कहूँ तो मैं मैडागास्कर, ग्रीनलैण्ड और यूगोस्लाविया नहीं जा रहा हूँ। हाँ, अमेरिका जा सकता हूँ क्योंकि वहाँ से बुलावा आया है और वहाँ कुछ लोगों ने अभ्यास शुरु भी किया है।

मुझे विश्वास है कि मैडागास्कर के पते पर लिखे गये रजिस्टर्ड कवर में भेजे गये पत्रों की प्रतियाँ, जो श्रीमती बी. हॉगार्ड और ए. लक्ष्मी नरसिंहन को लिखी गयी थीं, तुम्हें मिल गयी होंगी। आज मुझे

लक्ष्मी नरसिंहन का जबाब मिला है। तुम जानते ही हो कि मैंने उनके पत्र में सारे तथ्यों को नहीं लिखा था लेकिन बर्थे को मेरे पत्र के असर में, उनके मन में जो कुछ भी था, उसे उन्होंने खोल कर रख दिया है। मैंने उन्हें बर्थे को लिखे गये पत्र की एक कॉपी भी साथ में भेज दी थी। मैं श्री लक्ष्मी नरसिंहन के पत्र का सार साथ में भेज रहा हूँ। मुझे लगता है कि मेरे पत्र लिखने का उद्येश्य पूरा हो गया है।

तुम्हारी संस्तुति के आधार पर मैंने एलिजाबेथ को तैयार करना शुरु कर दिया है। क्या तुम मुझे बताओगे कि एलिजाबेथ को तैयार करने में मुझे कितना समय लेना चाहिये?

तुम सबको आशीर्वाद सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

श्री सी. ए. राजगोपालाचारी के पत्र की प्रति

बम्बई
२९ सितम्बर १९७१

मेरे प्रिय परमप्रिय बाबूजी,

आपको आश्चर्य होगा कि अभी भी मैं भारत में हूँ। २६ को रोम के लिये मुझे प्लेन पकड़ना था लेकिन मेरी तबियत बुरी तरह खराब हो गयी। भूख पूरी तरह खत्म हो गयी, मितली महसूस होने लगी जिसकी वजह से मैं दूध लेने में भी असमर्थ हो गया। शरीर और खासकर जोड़ों में मुझे बहुत कमजोरी अनुभव हो रही थी। मेरा आत्मविश्वास हिल गया था। मैं चिकित्सक के पास गया तो उसने कहा कि इस हालत में विदेश दौरा करना ज्यादा खतरनाक हो सकता है। उसने एक महीने के बेड-रेस्ट के साथ इलाज भी बताया। उसने यह भी बताया कि खोये हुये स्वास्थ्य की वापसी में लगभग एक महीना और लगेगा। इस प्रकार मैं अपना दौरा निरस्त करने के लिये बाध्य हो गया। मैंने रोम में केबिल से सूचना भेज दी है और कल प्लेन से मद्रास लौटने का प्रबंध कर लिया है। मैं अब कुछ बेहतर हूँ लेकिन इलाज के बाद भी पीलिया की अवस्था मौजूद है। मैं पश्चिम के अपने सारे मित्रों को अपने कार्यक्रम के निरस्त होने की सूचना भेज रहा हूँ जो मेरा वहाँ इन्तजार कर रहे हैं। मुझे लगता है कि मेरे नियन्त्रण से

परे परिस्थितियों का निर्माण कर आखिरी मिनट में मेरे यात्रा कार्यक्रम में परिवर्तन करने के लिये मुझे बाध्य करने का यह कार्य आपका ही है ताकि मैं अमेरिका के जाड़े के मध्य में जमा देने वाली ठंढक से अपने आप को बचा सकूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि बिल्कुल स्वस्थ होकर आपकी कृपा से मैं यह दौरा मार्च १९७२ में फिर से प्रारम्भ कर सकूँगा। उस समय मुझे अपने साथ भारी कपड़े भी नहीं ले जाने होंगे और मैं हल्के वजन के साथ यात्रा कर पाऊँगा। निस्संदेह यह निर्णय आपको करना है कि मुझे १९७२ में जाना चाहिये या नहीं। आप खुद १९७२ में पश्चिम का दौरा करना चाहते हैं इसलिये मेरी राय थी कि मेरे पहले दौरा कर लेने से आपको हर सेन्टर पर एक अनुकूल और स्वागतपूर्ण वातावरण मिलेगा। अभी केवल कोपेनहेगेन, मर्सिली और १० अक्टूबर को पेरिस में केन्द्र के खुल जाने पर वहाँ जाना उपयोगी होगा। रोम भी अभी पूरी तरह विश्वसनीय नहीं है क्योंकि पाओलो ने मेरे एक भी पत्र का जबाब नहीं दिया है। हालाँकि लगभग आधा दर्जन अभ्यासी मुझसे नियमित पत्र-व्यवहार कर रहे हैं और आपसे और मुझसे मिलने के लिये बहुत उत्सुक हैं। जर्मनी में अभी कोई काम नहीं हुआ है और लन्दन में भी केवल वेरा डेविश और एलिडिर हैं और कुछ हद तक मि. एम. एल. सरदाना। मैं नहीं समझता कि इतना कठिन और परेशानी से भरा हुआ दौरा शुरु करने के पीछे आपकी मंशा क्या है? क्या केवल इतना समझाना कि हमारी पद्धति में आकर ध्यान शुरु करो? इसलिये मेरी राय में १९७३ की गर्मी का समय आपके दौरे के लिये उपयुक्त होगा। जमीन तैयार हो चुकी होगी, मिशन में कुछ नये अभ्यासी आ चुके होंगे और यूरोप तथा अमेरिका दोनो जगह विविध स्थानों पर पूर्णकालिक नहीं तो कम से कम आंशिक केन्द्र स्थापित हो चुके होंगे।

आपका निर्णय चाहे जो हो, मैं उसका पालन करूँगा। मेरा आपसे केवल इतना निवेदन है कि अगर मुझे मार्च में बाहर जाने की इजाजत दी जाती है तो निर्णय शीघ्र होना चाहिये जिससे मैं सारे संबंधित लोगों से संपर्क कर सकूँ और ठीक से कार्यक्रम बना सकूँ। देर होने पर परिवर्तन करने में बहुत असुविधा का सामना करना पड़ेगा क्योंकि पश्चिम में स्थितियाँ भारत से भिन्न प्रकार की हैं।

मेरा विश्वास है कि आसाम का आपका दौरा सफलतापूर्वक चल रहा होगा और आसाम में मिशन के अभ्यासी अपने बीच आपको पाकर

आपका पूरा फायदा उठा रहे होंगे। कृपया मद्रास के पते पर उत्तर दीजिये।

४ अक्टूबर को रोम में मेरी मुलाकात पार्थसारथी से होनी तय थी लेकिन कार्यक्रम निरस्त हो जाने के बाद मैंने केबिल से उसको सूचना भेज दी है। मुझे नहीं मालूम कि वह अपने कार्यक्रम में क्या परिवर्तन करेगा। उसकी वापसी मद्रास में ३१ अक्टूबर को होनी तय है।

सदा की तरह आपके दिव्य चरणों में प्रणाम सहित,

सी. ए. राजगोपालाचारी

श्रीमती वेरा डेविश के पत्र की प्रति

लन्दन

३ अक्टूबर १९७१

परम प्रिय मालिक,

आशा है कि आप आसाम से सुरक्षित और अच्छे स्वास्थ्य के साथ लौट आये होंगे। चारी हमारे साथ लन्दन में रुके थे। उनका नाम लम्बा होने की वजह से हम उन्हें ***चारी*** कहकर बुलाते हैं। (उम्मीद है कि टेलिग्राम में चारी पढ़ा गया होगा चार्ली नहीं।) अभी हम फ्राँस में हैं और हमारा घर भाई आन्द्रे के घर के पास ही है इसलिये हम पुन: उनसे मिल पाये। उनके पिताजी के बारे में जो खबर आयी थी, उसकी उम्मीद उन्हें पहले से थी। भौतिक स्तर पर पीलिया का तीव्रतम और सर्वोत्तम इलाज एक्यूपंक्चर पद्धति में है। चीन, फ्राँस, जर्मनी और भारत में भी कहीं-कहीं इस पद्धति का प्रयोग किया जाता है। डेन्मार्क से अपनी वापसी पर चारी बहुत थके हुये दिख रहे थे। लोगों के साथ देर रात तक जगना और कॉफी पीना - वे बहुत ही कड़ी कॉफी पीते हैं, जिसे भौतिक हृदय के लिये जहर समझा जाता है लेकिन वे केवल आपके बारे में सोचते हैं और उन्हें किसी दूसरी चीज की चिन्ता नहीं है। मरना और न मरना दोनो उनके लिये एक समान है क्योंकि वे आपमें ही डूबे रहते हैं। उन्होंने कुछ आश्चर्यजनक ट्रांसमिशन दिये। हमने यहाँ आन्द्रे के साथ चारी से ट्रांसमिशन पाया और इस दौरान मैंने आपके दिल में तेज प्रकाश का विजन देखा। चारो तरफ प्रकाश और आपकी पूरी संरचना शुद्ध प्रकाशमय थी। जहाँ आपका भौतिक

शरीर था, वहाँ उसकी एक बहुत धुँधली छाया का संकेत मात्र था। यह बहुत सुंदर अनुभव था और मैं हर समय इसे अपनी आँखों के सामने पाती हूँ। मैं समझती हूँ कि मेरे ७५ प्रतिशत विचार आपके साथ शाहजहाँपुर के हैं। चारी को यूरोप के बारे में आपको बहुत कुछ बताना पड़ेगा। इंग्लैण्ड में इधर एक धार्मिक पुनर्जागृति हो रही है, जिसमें आध्यात्मिक सम्भावना अंतर्निहित है। यह लोगों में इच्छाओं की तीव्रता की वृद्धि को दर्शाती है। छोटी-छोटी अनेक ज्योतियाँ जो लम्बे समय से अँधकार में, गैर-पारम्परिक, छिपे हुये स्थानों पर प्रकाशित थीं, अब सामने आ रही हैं और जल्दी ही काफी प्रकाश दिखेगा। निस्संदेह तेज हवायें बह रही हैं लेकिन वे खुद को उड़ा कर बाहर ले जा रही हैं।..............

रुसियों ने पदार्थ का विलोम जान लिया है। आइन्सटाइन को इस बात का सदैव डर था कि एक दिन यह किसी के हाथ में होगा। प्रत्यक्ष रूप में इसका सीधा अर्थ यह है कि किसी दिन वे इस पूरे ग्रह को समाप्त कर सकेंगे। औसत मानव कुछ नहीं से कुछ नहीं की कल्पना नहीं कर पाता इसलिये यह आश्चर्यजनक खबर भी वैज्ञानिक और गणितीय क्षेत्रों के बाहर बहुत कम लोगों का ध्यान आकर्षित कर पायी। अखबार, रेडियो, टेलिविजन आदि ने इस खबर की उपेक्षा की। आप, जो कि सर्वज्ञाता हैं, के लिये इसका क्या अर्थ है? कृपया इसका उत्तर जल्दी दीजिये चूँकि हर गतिविधि, घटना या अघटना, व्यक्ति या स्थान अर्थहीन हो गये हैं। दूसरे ब्रह्माण्डों और आकाशगंगाओं पर इसका क्या असर होगा? आकाश में एक छेद हो जायेगा और हर चीज अपनी धुरी से हट जायेगी। अगर यह कहना कि आकाश में छेद हो जायेगा और हर चीज अपनी धुरी से हट जायेगी - परस्पर विरोधी है तो इसे क्या कहा जाये? चाँद ऊपर जायेगा या नीचे या कहीं और? और सूरज? और सारी आत्मायें फिर किस ग्रह से जोड़ी जायेंगी? मुक्ति होगी या नहीं? क्या सृष्टि का ऐसे ही अन्त हो जायेगा? मैं समझती हूँ कि व्यक्ति को कुछ नहीं की कल्पना करनी चाहिये, केवल कुछ नहीं और यही हमारे हर सवाल का जबाब होगा। अगर यह दया रहित हो तो अंत में व्यक्ति को आश्चर्य हो सकता है। दर्द, तकलीफें और भय की आशंका को सहज बनाने के लिये अगर एक रहस्यमय शक्ति - ईश्वर का अस्तित्व नहीं है तो उसका अन्वेषण करना होगा। भ्रम पैदा करने के लिये यह जरूरी है। क्या यही हमारे ब्रह्माण्ड का सच है? रुसी क्या

करने वाले हैं? पदार्थ - पदार्थ का विपरीत - सत्य - असत्य। क्या यह अंतिम प्रलय होगा जैसा कि कुछ धर्मग्रंथों में कहा गया है? कृपया हर चीज का उत्तर अपनी प्रिय और भक्त अभ्यासी वेरा डेविश को जल्दी लिखिये।

इसे फ्राँस से पोस्ट किया है। आप कृपया पत्र लन्दन के पते पर ही लिखिये जहाँ हम जल्दी ही लौट रहे हैं।

वेरा डेविश

नं. सी ३९/एस.आर.सी.एम. **२३ अक्टूबर १९७१**

मेरी प्रिय बहन,

तुम्हारा और मि. डेविश का प्रेमपूर्ण पत्र मिला। पदार्थ के विलोम के बारे में तुम्हारा प्रश्न कुछ अन्य प्रकार का हो गया है। रुसी सिद्धान्त के विवरण में गये बिना अगर मैं तुम्हें अपनी खोज के बारे में बताऊँ तो मुझे विश्वास है कि तुम्हें तुम्हारे सवाल का जबाब मिल जायेगा।

प्रत्येक वस्तु का एक केन्द्र होता है या वस्तुओं ने स्वयं अपना केन्द्र बनाना शुरु कर दिया। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि जब सृष्टि अस्तित्व में आयी तो इसका अपना केन्द्र था और इस दुनिया और ब्रह्माण्ड का कारण केन्द्रीय शक्ति थी। शक्ति विचारों के निश्चित आयामों के साथ उतरी, जिसमें से प्रत्येक खुद के लिये काम कर रहा था। यह एकत्व से नीचे आयी और विविधता में फैल गयी। अब यह विविधता केन्द्र की शक्ति प्राप्त कर रही है। दूसरे शब्दों में इसका एक केन्द्र है और इसके निकट शक्ति का प्रवाह हो रहा है। पूर्ण प्रलय - महाप्रलय के समय केन्द्र और ब्रह्माण्ड के बीच संपर्क टूट जायेगा और ब्रह्माण्ड भारविहीन हो जायेगा। यह शक्ति सृष्टि का कारण थी और यही विनाश का कारण होगी।

इस अभौतिक पूर्ण शक्ति के, जिसे तुम पदार्थ का विलोम कह सकती हो, दो कार्य हैं। भौतिकतावादी लोग विनाश के लिये शक्ति एकत्र करने की कोशिश करते रहते हैं और इस उद्येश्य के लिये इसका प्रयोग करते हैं जबकि आध्यात्मिक लोग इसी शक्ति का उपयोग रचनात्मक कार्यों के लिये करते हैं। परिवर्तन के लिये योगी का उपकरण केवल संकल्प है - एसिड या केमिकलों के तालमेल या क्रिया-प्रतिक्रिया का

प्रयोग वे नहीं करते। पदार्थ के विलोम की स्थिति कभी भी कोई व्यक्ति नहीं ला सकता क्योंकि ऐसा करने वाला स्वयं अपना जीवन खो देगा।

योगियों की पद्धति यह है कि वे शक्ति को उतनी ही मात्रा में लेते हैं जितनी मनुष्य के रूपान्तरण के लिये आवश्यक होती है। वे शक्ति की कोई भी मात्रा ले सकते हैं। अगर मैं यह कहूँ कि केन्द्र की संपूर्ण शक्ति पृथ्वी पर लायी जा सकती है तो लोग इस पर तब तक विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि ऐसा कर नहीं दिया जाता। जब मैं इंग्लैण्ड आऊँगा तो तुम मुझे याद दिलाना, मैं तुम्हें उस शक्ति के सकारात्मक कार्य को दिखाऊँगा। अगर किसी प्रकार पृथ्वी पर या इसके किसी हिस्से पर संपूर्ण शक्ति उतार दी जाय तो परिणाम होगा विनाश। आइन्सटाइन ने कहा कि द्रव्यमान को ऊर्जा में बदला जा सकता है। इसके बाद वे मौन हो गये। लेकिन मैं कहता हूँ कि ऊर्जा को इसके पूर्ण स्वरूप यानी महानतम शक्ति में बदला जा सकता है। अणु का प्रतिकार इसके अंदर है, जिसे हमारे वैज्ञानिक अभी तक पता नहीं लगा पाये हैं लेकिन जिस केन्द्रीय शक्ति के बारे में मैंने बताया, इसका कोई प्रतिकार नहीं है। इसका प्रयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है।

योगी का प्रकृति की शक्तियों पर नियन्त्रण हो जाता है। वह योगी हो ही नहीं सकता जिसका ऐसा नियन्त्रण नहीं हो। लेकिन वह तब तक इन शक्तियों का प्रयोग नहीं करता जब तक ऐसा करना समय की माँग न हो। हमारी सहजमार्ग पद्धति में शरीर के अणु ऊर्जा में और फिर इसकी पूर्णता में बदल जाते हैं। इस प्रकार संपूर्ण संरचना का दिव्यीकरण हो जाता है। मैंने यह सब कुछ अपने अनुभवों और प्रयोगों के आधार पर लिखा है।

काफी पहले ***राजयोग का दिव्य दर्शन*** में इस विषय को स्पर्श करते हुये मैंने लिखा है कि पूरी दुनिया एक अण्डाकार चीज के संपर्क में है और अगर यह अण्डा टूट जाये तो इससे जुड़ी हुई दुनिया नष्ट हो जायेगी और ऐसा करने का उपकरण केवल वह संकल्प है जो ईश्वर में लय है।

जीवन में जीवन ही वास्तविक जीवन है फिर हम मृत्यु से क्यों डरें?

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

श्रीमती वेरा डेविश
लन्दन

श्री ए. लक्ष्मी नरसिंहन के मिले पत्र का सार

२२ अक्टूबर १९७१

मैं आपके सामने वे सारी चीजें रख रहा हूँ जो मेरे डेन्मार्क आने के बाद घटीं। मेरे निजी घंटे केवल अभ्यासियों के लिये हैं, जिसमें मैं उनकी सफाई करता हूँ। मैंने मालिक के काम के अलावा कभी किसी अन्य काम के बारे में नहीं सोचा यहाँ तक कि अपने साथी के काम के बारे में भी नहीं। मैं सदा महसूस करता हूँ कि मैं एक अभ्यासी हूँ जो मालिक और मिशन के लिये काम कर रहा है। मैं इस बात को अच्छी तरह जानता हूँ कि श्रीमती बर्थे मुझसे बड़ी प्रशिक्षक हैं और केवल वे ही इस सेन्टर की इंचार्ज हैं। मैंने इमानदारी के साथ इसके अलावा कोई अन्य भूमिका नहीं निभायी है और एक अभ्यासी और प्रशिक्षक से बढ़कर कभी कोई जिम्मेदारी नहीं ली है। मैं बहुत संकोची और एकाकी रहने वाला व्यक्ति हूँ लेकिन बहुत संवेदनशील भी हूँ और मैंने अपने पास व्यक्तिगत सिटिंग के लिये आने वाले किसी भी अभ्यासी को कभी रोकने की कोशिश नहीं की है। मैंने सदैव इस बात पर बल दिया है कि सामूहिक सिटिंग श्रीमती बर्थे के घर पर ही हो। मैं अभ्यासियों को बताता रहता हूँ कि श्रीमती बर्थे का घर (ग्रीव स्ट्रैन्ड) ही सेन्टर है और वे ही सेन्टर इंचार्ज हैं। मेरा घर उन लोगों के लिये जो मेरे यहाँ आना चाहें, केवल व्यक्तिगत सिटिंग के लिये ही है। अभी मैंने श्रीमती बर्थे से बात की है और सारे अभ्यासियों को सलाह दी है कि वे बारी-बारी से मुझसे और श्रीमती बर्थे से व्यक्तिगत सिटिंग लें। मैंने ऐसी सलाह इसलिये दी चूँकि मुझे लगा कि श्रीमती बर्थे को यह महसूस होता है कि सारे अभ्यासियों की संगति उन्हें नहीं मिलती है। अपने पिछले पत्र की तरह मैं अपने प्रिय मालिक को यकीन दिलाता हूँ कि मैंने तिरुपति के श्री नारायणा की सलाह पर कुछ नियमित अभ्यासियों की ***यात्रा*** शुरु करवा दी थी और तुरंत मालिक को लिखा था कि मुझे इस गलती के लिये अगर यह गलती है तो क्षमा कीजिये। मैंने मालिक से इस विन्दु पर स्पष्टीकरण भी चाहा था लेकिन मैं इतना भाग्यशाली नहीं हूँ कि मुझे इस विन्दु पर मालिक से कोई निर्देश प्राप्त हो सके।

मैं यकीन दिलाता हूँ कि मैं अपने दिमाग का उपयोग कर पाने वाला बुद्धिमान अभ्यासी न होकर एक तुच्छ, मूर्ख और अज्ञानी अभ्यासी हूँ, जिसे परम आदरणीय मालिक कोई भी आदेश दे सकते हैं। गरुण

और सुदर्शन जैसा होने की बजाय मैं सदैव आपके चरणों की धूल में रहना पसंद करता हूँ। फैसले के दो मापदण्डों इमानदारी और ईश्वर में से मैं इमानदारी को चुनता हूँ क्योंकि मैं इसे जानता हूँ जबकि ईश्वर को अभी तक नहीं जान पाया हूँ। इमानदारी के साथ मैं कह सकता हूँ कि मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया है जिससे मिशन या मालिक की कोई बदनामी हो। मैं तो हर उस आदमी तक मालिक और मिशन को पहुँचाने का प्रयास कर रहा हूँ जो इसे पाना चाहता है। मैं यह बात निर्भीकता और इमानदारी के साथ कह रहा हूँ और इसे मालिक के सामने रखता हूँ कि वे इसका फैसला करें। निस्संदेह मैंने उन तीनों बंधनों को नहीं त्यागा है जिनका उल्लेख मैंने पहले किया है लेकिन मैं उस दिन का इन्तजार कर रहा हूँ जिस दिन मालिक की कृपा से ये हटा दिये जायेंगे। मैं पूज्य मालिक से शीघ्र ही वास्तविकता के उदय की प्रार्थना करता हूँ जिससे मैं पूज्य मालिक का सच्चे अर्थों में सेवक बन सकूँ।

मैं अपने अंदर भक्ति की बहुत कमी महसूस करता हूँ और आपकी आंतरिक कृपा पाने के योग्य बनने की कोशिश कर रहा हूँ। मालिक! आपसे प्रार्थना है कि अपने सेवक को भक्ति बढ़ाने के पथ पर कुछ निर्देश दीजिये ताकि आपके डेन्मार्क आने पर जब मैं आपके सामने खड़ा होऊँ तो आपकी संपूर्ण कृपा पाने के योग्य बन सकूँ।

कृपया इस लम्बे पत्र को लिखने के लिये आप मुझे क्षमा कर दीजिये। मैं इसे लिखने के बाद अब अपने को बहुत बेहतर महसूस कर रहा हूँ। कृपया मुझे और अधिक भक्ति तथा निर्देशों का आशीर्वाद दीजिये और इसका एवं मेरे पिछले पत्र का जबाब दीजिये।

मालिक! आपको मेरा साष्टाँग प्रणाम!

मद्रास

३० अक्टूबर १९७१

मेरे परम प्रिय और प्रेमपूर्ण मालिक,

कल प्राप्त हुये आपके २६/२७ तारीख के पत्र के लिये मैं आपको कैसे आभार व्यक्त करूँ? आपने जो कुछ भी लिखा है उसके लिये मैं आपका आभारी हूँ। काम आप करते हैं और श्रेय तथा प्रशंसा मुझे मिलती है। यह वास्तव में ईश्वरीय न्याय और ईश्वरीय कृपा है।

मुझे यकीन है कि आपको मेरा २५ तारीख का पत्र मिला होगा और आपने गौर किया होगा कि प्रतिकूल परिस्थितियों की वजह से मैं मेडागास्कर नहीं जा सका। ऐसा लगता है कि अगर किसी को वहाँ जाना हो तो उसे कम से कम तीन महीने पहले वीसा के लिये आवेदन करना चाहिये।

मालिक! मैं कभी उससे कैसे डर सकता हूँ जिसे मैं दिल और आत्मा से प्रेम करता हूँ? मैं आपसे नहीं डरता और पहले भी कभी नहीं डरता था। मैं केवल इस बात से डरता हूँ कि आप नाखुश ना हो जायें या मेरे किसी व्यवहार या गलती से आपको कोई दुःख या कष्ट न पहुँचे। मैं केवल आपके और आपके काम के लिये जीता हूँ और इसमें भी मालिक! मेरा लक्ष्य त्रुटिहीन कार्य करने का नहीं है बल्कि आपको खुश करने का है। इस बारे में मेरे मत अपने पिताजी के मत से मेल नहीं खाते। उनका जोर त्रुटिहीन कार्य करने पर रहता है जबकि मैं उन्हें यह बात बराबर बताता हूँ कि त्रुटिरहित कार्य या पूर्ण कार्य तों केवल ईश्वर ही कर सकता है। हम तो केवल मनुष्य हैं इसलिये पूरे हृदय और पूरी भक्ति के साथ हमें परिणामों को मालिक पर छोड़ कर केवल कार्य करना चाहिये। इसीलिये मैं कभी-कभी अपने कामों में परिणाम की चिन्ता नहीं करता लेकिन कल मेरे पिताजी ने कहा कि मुझमें कर्तव्य की भावना नहीं है।

पुनः मैं यह कहना चाहूँगा कि मेरे पिताजी का छोटा विदेश दौरा ही बेहतर होगा और वह भी जब वे पूरी तरह स्वस्थ हों। कृपा करके उनके विदेश दौरे में अमेरिका को शामिल नहीं कीजियेगा। यह लम्बी और बहुत थका देने वाली यात्रा है और मैं समझता हूँ कि उनका विदेश दौरा केवल यूरोप तक ही सीमित होना चाहिये - रोम, सेनेरी, लन्दन, कोपेनहेगेन, फ्रीबर्ग और कैरो। इसमें चार हफ्तों से ज्यादा नहीं लगेंगे।

कृपया अपने पासपोर्ट में यू.ए.आर. (इजिप्ट), इटली, यूगोस्लाविया, स्विटजरलैण्ड, फ्राँस, वेस्ट जर्मनी, हॉलैण्ड, बेल्जियम, डेन्मार्क, यू.के., ग्रीनलैण्ड और यू.एस.ए. अंकित कराने के लिये कहियेगा। ये सभी आपके पत्र में हैं। आप इसमें कनाडा और सीलोन भी जोड़ सकते हैं।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपकी अनुमति से १ नवम्बर १९७१ से श्री श्रवनमुत्तु काम करना शुरु कर देंगे। मेरे पिताजी को

यकीन है कि वे अच्छा काम करेंगे। मेरे हिसाब से एलिजाबेथ के लिये २ या ३ हफ्तों की तैयारी काफी होगी लेकिन आप इसे धीरे-धीरे भी कर सकते हैं और उसे १ जनवरी १९७२ से अनुमति दे सकते हैं।

आपके पत्र के साथ संलग्न सारे पत्रों की प्रतियाँ मुझे मिल गयीं। श्री लक्ष्मी नरसिंहन एक अच्छे व्यक्ति हैं। इन सब चीजों के लिये मुख्य रूप से वीबे जिम्मेदार है। मैं समझता हूँ कि जब वह आपके पास आये आप उसे सलाह दें कि केवल भारतीय होने से लक्ष्मी किसी यूरोपियन से योग में बेहतर नहीं हो जाते। मेरी समझ में यही मुख्य बात है जो हमें डेन्मार्क के कुछ अभ्यासियों के दिमाग से हटाने की जरूरत है। वीबे बहुत प्रभावपूर्ण और धनी है, जिसकी वजह से बर्थे को काफी परेशानी हुई। अब आपके कृपापूर्ण पत्रों से मुझे ऐसा लगता है कि यह मामला पूरी तरह से सुलझ जायेगा।

मुझे आशा है कि मि. राको मेडागास्कर के पते पर मुझे लिखी गयी चिठ्ठियों को मुझे वापस भेज देंगे।

यहाँ सब कुशल हैं। पिताजी के स्वास्थ्य में लगातार सुधार हो रहा है और कुछ ही दिनों में वे सामान्य हो जायेंगे। उन्हें केवल आराम की जरूरत है। मेरी अनुपस्थिति में कृष्णा की तबियत कुछ खराब थी और आज उसे फिर से बुखार है।

मेरे चचेरे भाई चक्रपाणि की शादी २१ नवम्बर को है। वह इस बारे में आपको लिखेगा। आपकी कृपा से उसने मास्टर्स' इक्जामिनेशन भी पास कर लिया है और इस तरह वह किसी जहाज पर कैप्टन होने के योग्य हो गया है।

कम्पनी की तरफ से हम एक पेपर मिल खरीद रहे हैं जिसका चार्ज मुझे लेना होगा इसलिये जिम्मेदारियाँ बढ़ेंगी।

मैं आपसे मिलने के लिये व्यग्र हूँ।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास

१ नवम्बर १९७१

परम आदरणीय मालिक,

आपकी ओर से कैरो में दो लोगों को अन्तरिम अनुमति प्रदान करने के बाद मैंने उन्हें निर्देशों की एक छोटी सूची भी दी थी, जिसे

आपके सम्मुख रखने के लिये मैं उसे इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ। अगर इसमें कुछ जोड़ने या बदलने की जरूरत है तो कृपया मुझे बताइये।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

संलग्नक : उपरिलिखित

प्रशिक्षकों को निर्देश

- किसी अभ्यासी को सिटिंग देते समय सोचें कि आपकी जगह मालिक बैठा है और ट्रांसमिट कर रहा है .... आप नहीं।
- ट्रांसमिशन सूक्ष्म हो लेकिन संकल्प दृढ़ होना चाहिये।
- अभ्यासी की अच्छी तरह से सफाई कीजिये और इसके लिये यह जरूरी है कि आप उसी अवस्था को पढ़ें या देखें। कुछ मिनट के लिये अभ्यासी को ट्रांसमिट करके जब आप अभ्यासी की अवस्था पर एकाग्र होंगे तो अवस्था निम्न प्रकार से प्रकट होगी :
  - ⇒ स्याह धब्बों के साथ व्यक्ति का शारीरिक रेखाचित्र, जिसे विचार शक्ति का प्रयोग कर आपको हटाना है।
  - ⇒ आपके मस्तिष्क में यह भाव कि किसी विशिष्ट विन्दु पर स्थूलता है।
  - ⇒ आपकी अपनी संरचना में प्रतिक्रिया के रूप में।

- जब अध्ययन स्पष्ट हो जाये तो अभ्यासी की सफाई का विचार लेकर अपने संकल्प का प्रयोग करें।
- प्रत्येक व्यक्तिगत सिटिंग में प्वाइन्ट A और B की पूरी सफाई करें। सफाई जैसे-जैसे आगे बढ़ती है, प्वाइंट्स में चमक बढ़ती जाती है।
- सामूहिक सिटिंग में स्वाभाविक रूप से बने अभ्यासियों के समूह को प्रति समूह साफ करें और फिर सभी को ट्रांसमिट करें।
- नये लोग जो ध्यान शुरु करना चाहते हों उन्हें कम से कम दो और कभी-कभी तीन सिटिंग देना जरूरी होगा। पहली सिटिंग में हृदय को ठीक प्रकार से साफ करना होता है। अगर यह पहली सिटिंग में पूरी तरह से साफ न हो तो अगले दिन दूसरी सिटिंग में

इसकी सफाई करें। सफाई पूरी हो जाने पर अभ्यासी के हृदय में मालिक का दिव्य प्रकाश ट्रांसमिट करें और स्थापित करें।

- अभ्यासियों से यह निवेदन करें कि वे प्रशिक्षक से हर हफ्ते कम से कम एक व्यक्तिगत सिटिंग जरूर लें।
- सबकी सुविधा और अपनी सुविधा देखते हुये हफ्ते में एक दिन सामूहिक ध्यान कराने की व्यवस्था करें।
- अभ्यासियों को मिशन की प्रार्थना सिखायें जिसे उसके द्वारा मानसिक रूप से सुबह के ध्यान की शुरुआत के समय दुहराया जाना है।
- मिशन धर्म, जाति या लिंग के आधार पर कोई भेद-भाव नहीं करता। मानवता के लिये खुले उच्चतम लक्ष्य तक आध्यात्मिक विकास के लिये प्रयास करने हेतु यहाँ सबका स्वागत है। कोई शुल्क या अन्य प्रकार का खर्च नहीं है।
- प्रशिक्षक को चाहिये कि दिये गये कार्य के प्रति वह अपने आप को पूरे हृदय से समर्पित करे।

मद्रास

१ नवम्बर १९७१

परम आदरणीय मालिक,

मेरे हाल की यूरोप यात्रा और स्थानीय प्रशिक्षकों और अभ्यासियों से वार्ता के दौरान मैंने उनमें आपको पत्र लिखने में झिझक की भावना का अनुभव किया है - खासकर व्यक्तिगत समस्याओं पर। यह झिझक इसलिये है कि पत्र के शाहजहाँपुर पहुँचने पर हर व्यक्ति को यह स्वतंत्रता है कि अगर वह चाहे तो इसे पढ़ सकता है। यूरोपियन लोग तथा अँग्रेज लोग यह समझते हैं कि उनके पत्रों के संचालन का यह तरीका ठीक नहीं है। दुःख के साथ बहुत से लोगों ने मुझसे कहा है कि अगर उनकी व्यक्तिगत समस्यायें सार्वजनिक हो जायेंगी तो उनके लिये कुछ भी लिखना सम्भव नहीं होगा।

मैं उनलोगों की इस बात से पूरी तरह से सहमत हूँ चूँकि मैंने कई अवसरों पर खुद देखा है कि हर उस व्यक्ति को पत्र पढ़ने की स्वतंत्रता होती है जो उसे पढ़ना चाहता है। मैं समझता हूँ कि जैसे-जैसे मिशन बढ़ेगा पत्राचार भी बढ़ेगा इसलिये इन पत्रों के गोपनीय तरीके से संचालन के लिये कोई तरीका विकसित करना होगा ताकि व्यक्तिगत बातें आम लोगों की जानकारी में न पहुँचें। श्रीमती बी. हॉगार्ड इस बात

से विशेष रूप से दु:खी थीं कि वह पत्र जो उन्होंने आपको लिखा था, कोपेनहेगेन के श्री लक्ष्मी नरसिंहन के सौजन्य से सहजमार्ग पत्रिका में प्रकाशित हुआ। उनको नहीं मालूम कि ऐसा कैसे हुआ। इसी तरह की कई शिकायतें मिसेज डेविश ने भी मुझसे की हैं। इस मामले में मेरा सुझाव है कि आप जिन एक या दो व्यक्तियों को पत्रों के संचालन की जिम्मेदारी सौंपें, उनका संचालन केवल उन्हीं के द्वारा किया जाये और मेहमानों को यह बता दिया जाये कि कोई भी पत्र तब तक नहीं पढ़ा जा सकता जब तक आपकी इस बारे में कोई स्पष्ट इजाजत न हो। यही बात उन पत्रों और उनके जबाबों पर भी लागू होती हैं जो श्रीकृष्ण मुरारी सक्सेना अपने दफ्तर में रखते हैं। मैं समझता हूँ कि इस बात को आप तक पहुँचाने का आप बुरा नहीं मानेंगे।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ७५/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
३ नवम्बर १९७१

प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा २५ और ३० अक्टूबर १९७१ का स्नेह भरा पत्र मिला। मैं तुम्हारे ३० तारीख के पत्र से इतना खुश हूँ कि तुम्हारी आध्यात्मिक प्रगति के लिये प्रार्थना और प्रार्थना ही करना चाहता हूँ।

मैं समझता हूँ कि चि. कृष्णा अब स्वस्थ हो गया होगा। उसके स्वास्थ्य के बारे में मुझे लिखना। मौसम के बदलने से अक्सर ऐसी घटना हो जाया करती है।

मैं इधर मद्रास नहीं आ पाऊँगा क्योंकि कुछ यूरोपियन लोगों के आने की उम्मीद है और कुछ ने तो अपने आने की तारीख भी भेज दी है। इसी वजह से मैं अपने संबंधी की बेटी की शादी में भी नहीं जा पा रहा हूँ जहाँ मेरी सख्त जरूरत है। प्रकाश और बहू को वहाँ भेज रहा हूँ।

तुम्हारे सुझावों से मैं सहमत हूँ क्योंकि ये तुम्हारे अनुभव पर आधारित हैं। जब मैं भारत में दूसरे केन्द्रों पर जाता हूँ तो इस तथ्य का हमेशा आदर करता हूँ, विदेश में भी इसका आदर करूँगा। इस

संबंध में मैं कोई आदेश तो नहीं जारी करना चाहता लेकिन जब जरूरत समझूँगा तो जरूरी हिदायतें जरूर दे दूँगा।

श्रीमती डीना के अनुभव के बारे में कुछ कहने के पहले मैं तुम्हें एक कहानी बताना चाहता हूँ। जब मैं बीजापुर में था तो एक आदमी मेरे पास आया। उसने बताया कि वह शिरडी के साईं बाबा की समाधि पर गया था और उन्हें साष्टॉग प्रणाम कर उसने उन्हें अपना गुरु बना लिया। उसी समय से वह उनके बारे में सोचने लगा और उनके रूप पर ध्यान भी करने लगा। उसे इस तरीके से लाभ भी हो रहा था। मैंने उसे कहा कि ऐसी दशा में उसे इसी पद्धति का अनुसरण करना चाहिये। अगली बार जब वह मुझसे शाम को फिर से मिलने आया उसने बताया कि उसके स्वप्न में साईं बाबा के साथ मैं भी प्रकट हुआ और उसके मालिक साईं बाबा ने मेरी तरफ इशारा करके उससे कहा कि उनके रूप पर ध्यान न करके वह मेरे रूप पर ध्यान किया करे चूँकि मैं ही सही आदमी हूँ जिसका ध्यान किया जाना चाहिये। उसने बताया कि इसके बाद उसने मेरे रूप पर सारे दिन ध्यान किया और अपने आपको उसने अनुकूल और शान्ति में पाया। इतनी शान्ति उसने पहले कभी नहीं अनुभव की थी।

इसी से मिलता जुलता मामला डीना का भी है क्योंकि उसने अपने ध्यान में अपने मालिक को यह कहते हुये देखा है कि तुम उसे यात्रा में आगे ले जा सकते हो। अच्छी आत्मायें जिन्हें अपने जीवन काल में थोड़ा सा उद्बोधन हो जाता है, अपने अनुयायियों को अच्छा कार्य करने का निर्देश देती हैं। ऐसा जीवित मालिक के द्वारा भी किया जा सकता है जैसे मुझे मेरे मालिक से जब उन्होंने दीक्षा के विषय में मेरे आग्रह को अस्वीकार कर दिया था, कुछ कार्य करने का निर्देश मिला था। तुम तो इस बात को जानते ही हो।

डीना के दूसरे अनुभव के बारे में मेरा मानना है कि अपने अवचेतन मन में वह पाँच लोगों को श्रेष्ठ मानकर सम्मान करती होगी। तुमने उसके दिल में बैठे लोगों का पता लगा लिया लेकिन चूँकि उस समय मालिक की शक्तियाँ गतिविधि में थीं, तुम्हें वे पाँचों व्यक्ति मालिक के रूप में दिखे।

तुम्हें मालूम ही है कि ***प्रपन्न प्रभु*** के बाद आने वाले तुम्हारे विन्दुओं को मैंने लिया है। जब मैं मद्रास में था तो मैंने तुम्हें पहले विन्दु पर रख दिया था और तुमसे कहा था कि इसे लिख लेना। बाद में

मैंने तुम्हें ***दूसरे विन्दु*** पर रख दिया था। देखने में ये विन्दु सूई की नोंक के बराबर हैं। इसलिये अगर यह लिखा नहीं रहता तो मेरे लिये यह जानना बहुत कठिन हो जाता है कि अभ्यासी किस विन्दु पर है। अब मैंने तुम्हें तीसरे विन्दु पर खींचा है या नहीं यह पता लगाना मेरे लिये मुश्किल हो गया है। क्या तुम्हारी डायरी में इसका कोई उल्लेख है? अगर हाँ, तो कृपया मुझे सूचित करना।

मैंने तुम्हारे पिताजी को एक कार्ड भेज कर उनसे आग्रह किया है कि वे २० नवम्बर १९७१ से पहले चि. उमेश के बेटे का अन्नप्राशन करा दें। इसका विस्तृत वर्णन मैंने उमेश को लिखे गये पत्र में किया है। विश्वास है कि दोनो को मेरा पत्र मिल गया होगा।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : चि. नारायणा ने अमेरिका में अच्छा काम किया है। अब वह तेजी से परिवर्तित हो रहा है और उस स्तर पर पहुँच रहा है जहाँ उसे मैं पहुँचाना चाहता हूँ।

ओहियो की ग्रेस किम्बाल ने उसे सुझाव दिया है कि अमेरिकी विश्वविद्यालयों में सहजमार्ग पाठ्यक्रम के रूप में चलाया जा सकता है। वह आश्वस्त है कि कार्नेल या वेस्टर्न रिजर्व यूनिवर्सिटी में से किसी एक में वह सहजमार्ग पर पाठ्यक्रम चालू कराने में कामयाब होगी। वह किसी विश्वविद्यालय की कुलपति है। इस संबंध में नारायणा ने मेरी आज्ञा माँगी है और मैंने उसे आज्ञा दी है। मैंने उससे कहा है कि वह इस मामले में आगे बढ़े। नारायणा ने उनसे कहा है कि प्रशिक्षण के लिये अगर वे हमें कम से कम एक शैक्षिक वर्ष दें तो हमें पाठ्यक्रम शुरु करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। तुम क्या सोचते हो?

मद्रास
६ नवम्बर १९७१

मेरे प्रिय मालिक,

मुझे आपकी ३ नवम्बर की चिठ्ठी कल दोपहर में मिली। मैंने मैडम डीना के अनुभवों की व्याख्या पर गौर किया है और इसे नोट कर लिया है।

जब आप पिछली बार यहाँ आये थे, आपने मुझसे कहा था कि मैंने तुम्हें ***दूसरे विन्दु*** पर रख दिया है। फिर मुझे भेजे गये अपने पत्र संख्या सी ३९२/एस.आर.सी.एम. दिनांक ९जुलाई १९७१ में आपने लिखा था कि तुम्हारी पश्चिम की यात्रा शुरु होने के पहले मैं तुम्हें ***तीसरे विन्दु*** पर रख दूँगा। लेकिन मुझे नहीं मालूम कि आपने यह किया या नहीं क्योंकि आपने इसके बारे में मुझे कुछ लिखा नहीं है।

मालिक! मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। अधिकांश समय ऐसा ही होता है कि आप मेरे विचारों में छाये रहते हैं या लगभग विचारशून्यता की दशा होती है। सब कुछ - यह सारा संसार मुझे काल्पनिक प्रतीत होता है। क्या यह सतत स्मरण है? क्या मेरे मन में सतत स्मरण है? मैं किसी चिन्ता की वजह से यह सवाल आपसे नहीं पूछ रहा हूँ। बस, ख्याल आया कि पूछ लें और पूछ रहा हूँ।

मुझे खुशी है कि चि. नारायणा ने अमेरिका में अच्छा कार्य किया है। वह अच्छा लड़का है और आगे चलकर अच्छा काम करेगा। उसे केवल मानसिक परिपक्वता की आवश्यकता है। उसके पास उत्तम बौद्धिक क्षमता है केवल उसे अच्छे निर्देशन की आवश्यकता है। अमेरिका के विश्वविद्यालयों में सहजमार्ग के पाठ्यक्रम को चलाने का विचार अच्छा है लेकिन जैसा आपने कहा था पाठ्यक्रम कम से कम एक साल का होना चाहिये। अन्नप्राशन का धर्मानुष्ठान १९ तारीख की सुबह होना तय हुआ है। पिताजी आपके द्वारा दिये गये निर्देशों के अनुसार यह कार्य संपन्न करायेंगे। चि. उमेश और बहू स्वस्थ हैं। बच्चे का स्वास्थ्य भी अच्छा है।

कृष्णा भी स्वस्थ है हालाँकि उसे अक्सर छोटी-मोटी बीमारी होती रहती है। मुझे सुलोचना की चिन्ता है। त्वचा की तकलीफ के कारण उसके गले के चारो ओर लगभग कण्ठे की आकृति बन गयी है। यह एक-एक कर खुलती है और इसमें से एक रंगहीन तरल पदार्थ निकलता रहता है। जब मौसम गर्म होता है तो इसमें जलन भी होती है। यह कुछ सालों से है। आपकी कृपा से उसकी आध्यात्मिक अवस्था धीरे-धीरे सुधर रही है।

पिताजी अब पूरी तरह सामान्य हैं और भोजन भी संतोषजनक ढंग से कर रहे हैं। मैं सोचता हूँ कि हाल की यह बीमारी उनके लिये एक प्रकार से चिकित्सा का कार्य करेगी। बाहर से तो वे वैसे ही हैं

लेकिन अंदर से शायद उन्होंने यह अहसास कर लिया है कि उन्हें अपनी देखभाल अधिक अच्छी तरह से करनी होगी।

प्रिय मालिक! आशा करता हूँ कि आप दिसम्बर में अवश्य आयेंगे और यहाँ बसंतपंचमी तक रुकेंगे। निकट भविष्य में मेरी उधर आने की कोई सम्भावना मुझे नहीं दिखती। मैंने आपको लिखा था कि कोयम्बटूर से ४० मील दूर हमलोग एक पेपर मिल खरीद रहे हैं और मैं उसमें बहुत ज्यादा व्यस्त हूँ। हमलोग अपने एक ब्रिटिश सहयोगी रिश्तेदार के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनलोगों के पूरा अध्ययन कर लेने के बाद हमें सामान बनाने के लिये मिल को खोलना होगा क्योंकि मिल एक साल से बन्द है। इस प्रकार मैं जनवरी के अंत तक बहुत ज्यादा व्यस्त हूँ। इसलिये आपसे मद्रास आने की प्रार्थना करता हूँ। मालिक! हम आपके दर्शन के भूखे हैं।

प्रेम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी १०२/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
१३ नवम्बर १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे पत्र मिले। तुम्हारे द्वारा दी गयी हिदायतें उचित और उपयोगी हैं। मुझे ऐसा महसूस होता है कि तुम्हारा हर कदम मिशन में नयी जान लाता है। मामूली परिवर्तन करते हुये मैं तुम्हें निर्देशों की एक प्रति भेज रहा हूँ - साथ ही श्रवनमुत्तु का अन्तरिम अनुमति का प्रमाण-पत्र भी। बाकी काम खुद तुम्हें करना है।

तुम्हारे पश्चिम रवाना होने के पूर्व मैंने तुम्हें ***तीसरे विन्दु*** पर रख दिया था और तुम्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि इस समय तुम तीसरे विन्दु पर हो। जब तुम ***चौथे विन्दु*** पर होगे तो तुम्हें लिखूँगा। इन विन्दुओं पर तुम बहुत ही सूक्ष्म परिवर्तन महसूस करोगे।

कस्तूरी ने अनेक विन्दुओं पर अपनी दशा के अनुभवों का विवरण दिया है और मैंने उसको इसके बारे में स्पष्ट भी कर दिया है। इन विन्दुओं के बारे में उसके पास अति महत्वपूर्ण विवरण हैं। मेरे मत में तुम्हारे मामले में यह प्रचुरता अभी शुरु हुई है जैसा मैंने अपने पिछले पत्र में लिखा भी था। ऊपरी स्तर पर कुछ स्थूलता है। यह

तुम्हारे मौजूदा कार्यों की उलझन की वजह से है। हालाँकि यह मार्ग या दशा में अवरोध नहीं पैदा करता लेकिन मेरी आँखों को भद्दा लगता है। कृपया उलझन में मत पड़ो। आज रात में मैं इसे साफ कर दूँगा और पत्र के मिलने तक तुम बिल्कुल आराम महसूस करने लगोगे।

यह कहना कि आप मेरे ख्यालों में हैं - अपने आप में सतत स्मरण है। विचारशून्य की अवस्था में तुम महसूस करते हो कि इस संसार में सब कुछ अवास्तविक है। यह वस्तुतः सत्य है लेकिन इस संसार की हर चीज के अंदर असलियत है। मालिक तुमको ऐसी अवस्था प्रदान करेंगे जहाँ वास्तविक और अवास्तविक का भाव स्पष्ट हो जायेगा।

जब तुम अपने बारे में इतना कुछ लिखते हो तो मुझे भी अपने बारे में कुछ लिखना चाहिये। मैं कहाँ हूँ - मुझे इसका ज्ञान नहीं है। मुझे अपने विद्यमान होने का भी अनुभव नहीं हो रहा है। असलियत और गैर असलियत का भाव मेरे मन को नहीं छू रहा है। मुझे नहीं मालूम कि यह क्या है। शरीर की दृष्टि से मैं एक आलसी व्यक्ति हूँ। मैं तो इस संसार से घृणा उत्पन्न कर लेना चाहता हूँ ताकि यथार्थता के एक कदम और करीब हो जाऊँ। लेकिन मैं यह नहीं कर सकता क्योंकि मैं अपने आप में नहीं हूँ।

डेन्मार्क का मामला अब पूरी तरह से निपट गया है। श्रीमती बर्थे को लिखे गये पत्र की एक प्रति मैंने लक्ष्मी को भेज दी है, जिसने उसकी आँखें खोल दी हैं। मुझे लगता है कि मैंने इन चिठ्ठियों की प्रतियाँ तुम्हें भी भेज दी हैं। शायद अब मुझे इस विषय को फिर से छूने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

तुमने मुझे यह बताकर अच्छा किया कि पश्चिम के लोगों के पत्र सार्वजनिक नहीं करना चाहिये लेकिन उनके जबाब में जो विषय आमरुचि का है उसमें से व्यक्तिगत विषय और नाम हटाकर उसे सार्वजनिक तो करना ही पड़ेगा। ***ऋतवाणी*** में इस प्रकार की बातें हैं। मेरे ख्याल में जब नाम नहीं है तो उनको आपत्ति नहीं होना चाहिये।

श्रीमती डेविश ने मुझे लिखा था कि मैंने सृष्टि रचना के बारे में जो कुछ लिखा है उसी परिकल्पना या सिद्धान्त पर अब विचारक भी आ रहे हैं। वे चाहती हैं कि मैं अब प्राणिजगत के बारे में भी कुछ लिखूँ। मैंने इसके बारे में भी अपना विचार व्यक्त कर दिया है और इसकी एक प्रति बर्थे के साथ लक्ष्मी को भी भेज दिया है क्योंकि मैं चाहता था कि ये दोनो ही मेरे इस विचार को जान सकें। सम्भवतः

लक्ष्मी की जानकारी के लिये मैंने उसे उन दस्तावेजों के बारे में भी लिखा है जिसे बर्थे प्रस्तुत करने जा रही हैं। हो सकता है कि मैंने बर्थे के पत्रों की एक प्रति तुम्हें भेज दी हो। सहजमार्ग पत्रिका के सितम्बर १९७० के अंक में पृष्ठ संख्या ५ पर लक्ष्मी ने बर्थे की प्रशंसा में कुछ लिखा है और पृष्ठ संख्या ६ पर उसने इन पत्रों का जिक्र भी किया है। इसके अतिरिक्त मुझे याद नहीं आता कि पश्चिम के किसी भी व्यक्ति के पत्र की प्रति कहीं भेजी हो। हो सकता है कि मैंने इन्हें तुम्हें भेजा हो चूँकि सेक्रेटरी की हैसियत से तुम्हें यह सब मालूम होना चाहिये।

श्री एम. ए. सईद ने मुझे लिखा है कि जब वे मेरा मनन करते हैं तो मेरा स्वरूप जीसस क्राइस्ट का रूप धारण कर लेता है। इससे वे बहुत उलझन में हैं। मैंने उन्हें जबाब दिया है कि जब क्राइस्ट का रूप मेरे रूप को धारण कर ले तो उलझन में मत आ जाइयेगा। अगर आप चाहें तो केवल प्रक्रिया को उलट दें और जीसस क्राइस्ट के स्वरूप को मेरा स्वरूप समझें। मैं इस विषय को लिखकर स्पष्ट नहीं करना चाहता लेकिन यह किसी बात का संकेत है। इस बारे में मैं तुम्हें जबानी बता सकता हूँ। तुम्हें कस्तूरी के पत्र का सार और साथ में उनके द्वारा अपने स्वप्नों पर की गयी व्याख्या भेज रहा हूँ। क्या तुम इन्हें समझ पाओगे?

मैं तुम्हें व्यक्तिगत रूप से अपने पिताजी की स्थूलता की सफाई करने की सलाह दे रहा हूँ। तुम वहाँ मौके पर मौजूद हो और बेहतर तरीके से समझते हो कि क्या आवश्यक है।

मेरी राय में कृष्णा अच्छा कर रहा होगा। बहू की दशा जानने के लिये मैं चिन्तित हूँ। कृपया उसके बारे में मुझे अगले पत्र में लिखना। मैं १८ नवम्बर १९७१ को प्रकाश को उसकी पत्नी और बच्चों के साथ अपने संबंधी की बेटी की शादी में शामिल होने के लिये मैनपुरी भेज रहा हूँ। उन्हें मेरी बहुत जरूरत है और मुझे बुलाने के लिये उन्होंने इसके पहले तार भी भेजा था। लेकिन डेन्मार्क से १७ तारीख को कुछ अभ्यासी आ रहे हैं इसलिये मैं नहीं जा पा रहा हूँ।

मैं धर्मग्रन्थों में लिखी इन बातों पर मनन कर रहा था जिसके अनुसार बड़े संतों, धर्मात्मा और अवतार पुरुषों की एक दृष्टि से मनुष्य के समस्त पाप, दोष धुल कर साफ हो जाते हैं। मुझे उसका हल मिल गया। सबसे पहला और आसान उपाय तो यह है कि उसे असलियत में डुबकी लगवा दिया जाये लेकिन इसकी प्रतिक्रिया क्या होगी - यह देखना

होगा। दूसरा तरीका यह है कि पापों और छापों को दिव्यता की गर्मी से आहिस्ता-आहिस्ता गर्म किया जाये। अब यह अनुमान करने की बात है कि अगर सारे पाप धुल कर बाहर आ जायें तो व्यक्ति जिन्दा कैसे रहेगा? क्योंकि इसकी बुनियाद ही खत्म हो जायेगी। एक और तरीका है जिस पर मैं विचार कर रहा हूँ कि उसके पापों और छापों को धोने के बाद उसमें दूसरों के संस्कारों को उसकी जिन्दगी बनाये रखने के लिये ले आया जाये। यह चीज बहुत कठिन है क्योंकि यह उसमें इस तरह बहना चाहिये कि उसे धीरे-धीरे मिलता रहे। मैं इस विषय पर आगे सोचना चाहता हूँ कि इसे कैसे किया जाये। तुम भी इस पर सोचो।

मैं समझता हूँ कि चि. उमेश स्वास्थ्य लाभ कर रहे होंगे।

तुम सभी को आशीर्वाद के साथ,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

प्रशिक्षकों के लिये अनुदेश

- जब आप किसी को सिटिंग दे रहे हों तो यह ख्याल लें कि आपके स्थान पर मालिक सिटिंग तथा प्राणाहुति दे रहे हैं ....आप नहीं।
- अनिवार्यत: प्राणाहुति सूक्ष्म हो लेकिन संकल्प सशक्त हो।
- अभ्यासी की पूरी तरह सफाई करें। इसके लिये अभ्यासी की आध्यात्मिक दशा को पढ़ना या देखना आवश्यक है। अभ्यासी की दशा पर एकाग्र होकर कुछ मिनटों के लिये प्राणाहुति दें। अभ्यासी की अवस्था निम्न प्रकार से प्रकट होगी :
  - ⇒ व्यक्ति का शारीरिक नक्शा, जिसमें गहरे दाग या धब्बे होंगे।
  - ⇒ आपके मन में किसी विचार के रूप में कि किसी विन्दु पर स्थूलता है।
  - ⇒ आपकी अपनी शारीरिक संरचना में प्रतिक्रिया के रूप में।
- जब आपने स्पष्ट रूप से समझ लिया तो अपनी विचार शक्ति को विश्वास के साथ प्रयुक्त करते हुये अभ्यासी की सफाई करें।
- प्रत्येक व्यक्तिगत सिटिंग में A और B विन्दु की जरूर सफाई कीजिये। जैसे-जैसे सफाई होती जायेगी, ये विन्दु उज्जवल होते जायेंगे।

- सामूहिक सिटिंग में अभ्यासियों को स्वाभाविक रूप से निर्मित समूहों में लेकर उनकी सफाई करें और फिर उन सभी को प्राणाहुति दें।
- उन नये व्यक्तियों के लिये जो अभ्यास शुरु करना चाहते हों कम से कम दो और कभी-कभी तीन सिटिंग काफी है। पहली सिटिंग में पूरी तरह से हृदय की सफाई करें और संपूर्ण संरचना को हल्के से लें। अगर पहली सिटिंग में यह कार्य पूरा न हो तो दूसरी सिटिंग में यह कार्य पुन: करें। सफाई के पूरा हो जाने पर अभ्यासी के हृदय में दिव्यता का सम्प्रेषण करें जो प्राणाहुति का स्वाभाविक परिणाम है।
- अभ्यासी से यह आग्रह करें कि वह हरेक सप्ताह में प्रशिक्षक से व्यक्तिगत सिटिंग अवश्य ले।
- सप्ताह में किसी एक ऐसे दिन जो सबके लिये सुविधाजनक हो, उपयुक्त समय पर सामूहिक ध्यान आयोजित करने की कोशिश करें।
- अभ्यासी को मिशन की प्रार्थना सिखायें, जिसे वह सुबह ध्यान के प्रारम्भ में मानसिक रूप से केवल एक बार दुहराये।
- धर्म, जाति या लिंग के आधार पर हमारा मिशन कोई अंतर नहीं करता। उन सब लोगों का स्वागत है जो मानव जाति को उपलब्ध आध्यात्मिक विकास के चरम उद्येश्य तक पहुँचने के इच्छुक हैं।
- प्रशिक्षकों को अपने निर्धारित आध्यात्मिक कार्य के लिये पूरी तरीके से समर्पित होना चाहिये।

मालिक के नाम बहन कस्तूरी चतुर्वेदी का पत्र
दिनांक २५ अक्टूबर १९७१

२२ की रात में जब मैं कुछ-कुछ सोयी भी थी और जगी भी, मैंने एक सपना देखा कि मैं आपकी आज्ञा से किसी को सिटिंग दे रही हूँ। इस व्यक्ति के पास न तो शरीर है और न ही यह इस संसार में विद्यमान है। मैं भी इस संसार में विद्यमान नहीं हूँ फिर भी मैं आपके निर्देश पर इस व्यक्ति को सिटिंग दे रही हूँ। सिटिंग समाप्त होते ही सपने में ही आधे सेकेंड के लिये आँखें खोलीं तो देखा कि आप नाच रहे हैं और इस वजह से ब्रह्माण्ड के सारे संसार हिल रहे हैं। ऐसा लगा कि इसी के कारण मैं भी पूरी तरह जगकर अपनी अवस्था में आकर

बैठ गयी। अब भी मैं यही दृश्य देख रही थीं। ऐसा लगा कि आपके पैर विनाश के नृत्य कर रहे थे, जिसके परिणामस्वरूप ताजगी और पवित्रता फैल रही है। आप ही जान सकते हैं कि यह क्या था। मैं तो केवल इसे आपको लिख सकती हूँ।

मद्रास
२२ नवम्बर १९७१

मेरे परमप्रिय मालिक,

आपके १३ नवम्बर १९७१ के पत्र के लिये आपको धन्यबाद। एक सप्ताह विरुधनगर और कोयम्बटूर में था फिर अपने चचेरे भाई चक्रपाणि के विवाह में व्यस्त हो गया। इसलिये पत्र का जबाब देने में विलम्ब हुआ। जब से भारत लौटा हूँ अपने अंदर विपुल स्फूर्ति, हल्केपन और आनन्द में वृद्धि का अनुभव कर रहा हूँ। यह दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। यह सब आपकी कृपा है।

पश्चिम निवासियों के पत्रों के संदर्भ में मैं सोचता हूँ कि अगर बिना नाम दिये इन पत्रों के कुछ अंशों को आवश्यकतानुसार प्रकाशित किया जाय तो इसमें उनको कोई आपत्ति नहीं होगी। दरअसल उनकी आपत्ति उन लोगों पर है जो आपके लिये उनके पत्रों को पढ़ते हैं।

पिताजी के बारे में आपके द्वारा दी गयी हिदायतों को मैंने नोट कर लिया है और उसी के अनुसार कार्य करूँगा। कृष्णा अब पहले से बेहतर है। सुलोचना की तकलीफ ऐसा लगता है कि त्वचा की वजह से है जो मौसम की गर्मी में पसीने की वजह से कपड़े की रगड़ से और बढ़ जाती है। रगड़ से त्वचा छील जाती है और जख्म ताजा हो जाता है। इसमें जलन भी होती है और कोई रंगहीन द्रव रिसता है। ऐसा लगता है कि इसे ठीक होने में कछ समय लगेगा। बहुत छोटी उम्र से ही इसका मासिक धर्म भी बहुत अनियमित रहा है। कभी-कभी साल में एक बार भी यह नहीं होता। होम्योपैथी के चिकित्सकों की राय है कि यह रोग इस कष्ट से आराम देने के लिये भी हो सकता है। आजकल सुलोचना बहुत चिड़चिड़ी और झगड़ालू हो गयी है। मैंने अपनी तरफ से भरसक कोशिश की कि मैं शान्त और तटस्थ बना रहूँ लेकिन मेरी राय में इसकी दशा पर आपको थोड़ा ध्यान देने की जरूरत है।

इधर कुछ दिनों से ऐसा लग रहा है कि विनाश की शक्तियाँ अधिक प्रबल और सक्रिय हो रही हैं और व्यापक पैमाने पर कार्यवाही

होने में अब देर नहीं है। मेरे मत में बहन कस्तूरी के दिव्य दर्शन का अर्थ यही है कि आपने ब्रह्माण्डीय व्यक्तित्व के तांडव नृत्य को उन्मुक्त कर दिया है। आपकी दिव्य दया और कृपा सब पर बरसती रहे।

चि. उमेश के बच्चे का अन्नप्राशन संस्कार समारोह अच्छी तरह से संपन्न हो गया। हम सबों ने आपकी और लालाजी साहब की मौजूदगी को महसूस किया। लेकिन इसमें एक विलक्षण बात यह थी कि मैंने आपको सीधा नहीं देखकर समकोण अवस्था में देखा - जमीन के समानान्तर अवस्था में यानी आसन की मुद्रा में जैसा निम्न चित्र में दर्शाया गया है।

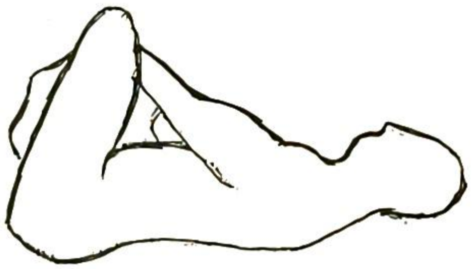

कृपया इसे मुझे समझाइये।

एक बात और! कुछ दिन पहले मैंने एक सपना देखा जो इस प्रकार था :

मैं एक ऊँची पहाड़ी के निचले हिस्से में हूँ और किसी पगडंडी के सहारे ऊपर चढ़ रहा हूँ। अंततः मैं वहाँ चढ़ गया हूँ। खड़ी चट्टान पर एक खुली हुई गुफा है जहाँ से सारा देश दिखाई देता है। जब मैं गुफा में प्रवेश करके किनारे पर खड़ा होकर देखता हूँ तो पाता हूँ कि श्री वीरराघवन मेरे पास खड़े हैं। वे कुछ बोलते नहीं हैं। मुझे ऐसा महसूस होता है कि किसी व्यक्ति की हत्या हुई है और डा. के. सी. वरदाचारी ही वे व्यक्ति हैं जिन्होंने यह हत्या की है। मैं नहीं जानता कि यह सपना किस बात की सूचना देता है। जहाँ तक मुझे याद है यह सपना बुधवार, २४ नवम्बर १९७१ का है।

चि. उमेश स्वस्थ हैं और बहू और बच्चे भी स्वस्थ हैं। बच्चा देखने में काफी स्वस्थ है और अपनी उम्र के हिसाब से सामान्य है। अब वह पहले की तरह रोता नहीं है। चि. उमेश और उसके परिवार के लिये आपको परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है।

बताइये कि विदेश यात्रा के लिये पासपोर्ट का आवेदन पत्र दिया गया या नहीं। विदेश के सारे प्रशिक्षकों के लिये आवश्यक है कि वे आपको आमंत्रित करने का पत्र भेजें, जिसमें स्पष्ट हो कि अपने-अपने

क्षेत्र का स्थानीय व्यय वे स्वयं पूरा करेंगे। यू.के. के लिये अनुज्ञा पत्र जरूरी है और इसके पहले कि भारत में यू.के. के उच्चायुक्त यह अनुज्ञा पत्र जारी करें श्री एवं श्रीमती डेविश को ब्रिटिश सरकार के समक्ष शपथ पत्र दाखिल करना होगा। इसमें तीन महीने का समय लग जाता है। इस संबंध में श्रीमती डेविश से आवश्यक कार्यवाही करने का आग्रह करना पड़ेगा। मि. सुन्दर को भी यह पता लगाने को कहना होगा कि क्या रिजर्व बैंक आपको यू.एस.ए. की यात्रा के लिये विदेशी मुद्रा का प्रबंध करेगा। अमेरिका का आप्रवास कानून बहुत कड़ा है इसलिये वीसा मिलना बहुत कठिन होता है। प्रस्तावित यात्रा के कम से कम तीन महीना पहले यू.एस.ए. दूतावास में हमें आवेदन कर देना चाहिये। अगर आप चाहते हैं कि यहाँ से मैं इस संबंध में कुछ करूँ तो मुझे लिखिये।

सप्रेम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
२५ नवम्बर १९७१

परम प्रिय मालिक,

आपको कुछ लिखने की लालसा का भाव मुझमें प्रतिदिन आता है। आप इतने दूर हैं और आपसे मिलने की उत्कंठा इतनी ज्यादा है कि यह पत्र, जिसे आप दूर की आवाज कहते हैं, अकेले ही इस आवश्यकता की पूर्ति करता है। अगर मैं बहुत ज्यादा लिखता हूँ तो कृपया मुझे क्षमा कर दीजिये।

पिताजी के बारे में : सामान्यतया उनका स्वास्थ्य ठीक है। वे ठीक से खाते हैं और ठीक से सोते हैं। हालाँकि वे अभी भी बहुत चिड़चिड़े हैं लेकिन उनका यह चिड़चिड़ापन बहुत जल्दी खत्म हो जाता है। यह महत्वपूर्ण है कि अब उनपर इसका प्रभाव भी कम पड़ता है। यह आपकी कृपा है जो परिवर्तन की दैवीय शक्ति के रूप में अभिव्यक्त हो रही है। पिताजी का इलाज कर रहे डा. उमापति मुदालियर ने उनसे कहा है कि अभी भी उनका नाड़ी तन्त्र ठीक से काम नहीं कर रहा है। उन्होंने पिताजी से प्रार्थना की है कि वे १९७२ में विदेश दौरे पर न जायें। वे चाहते हैं कि उनकी नाड़ी तन्त्र को मजबूत करने के लिये उन्हें पूरा एक साल का समय दिया जाये। इसलिये पिताजी १९७३ में ही

विदेश जाने की सोच रहे हैं। जो भी हो, आप तो १९७२ में विदेश के केन्द्रों को देखने जायेंगे ही। मैं भी सोचता हूँ कि एक साल में दो बार यात्रा करने की अपेक्षा यह विचार अच्छा है। इससे विदेश के केन्द्रों से ज्यादा संपर्क बना रहेगा। पिताजी अपने निर्णय के बारे में आपको सूचित करेंगे। वे हमारे पारिवारिक ज्योतिषी के इस विचार से प्रभावित हो गये लगते हैं कि जून १९७२ के अंत तक उनकी जान को खतरा है और यह मेरी जन्मकुण्डली के अनुसार उनकी गणना है। ये वही ज्योतिषी हैं, जिन्होंने अप्रिल १९७१ में पिताजी की गम्भीर बीमारी की भविष्यवाणी की थी और यह भी बताया था कि इसमें उनकी जान को खतरा है। जब पिताजी बीमार थे और आपके दैवी स्नेह और संरक्षण में शाहजहाँपुर में थे, मैंने आपको इसके बारे में बताया भी था। आपने पिताजी को आश्वस्त किया है कि उनके पास जीने के लिये अभी कई साल हैं। आपके द्वारा कहे गये शब्द कभी असफल नहीं हो सकते। कृपया पिताजी को सीधी सलाह दें कि उन्हें किस मार्ग पर चलना है।

सामान्य :- परसों शाम को पिताजी ने मुझे मिलाकर तीन लोगों को एक सिटिंग दी। सिटिंग बहुत ही सुखद थी। मैं इसमें पूरी तरह लय हो गया था। मैंने इसी दौरान महसूस किया कि मेरे दोनो तरफ दो व्यक्ति या दो अस्तित्व बैठे हुये हैं और ये दोनो व्यक्ति उनके अतिरिक्त हैं जो बैठकर पिताजी से सिटिंग ले रहे थे। सिटिंग के बाद पिताजी ने बताया कि मेरे दोनो ओर बर्थे और रोम की लूसी मौजूद थीं। हालाँकि मैंने जो देखा यह बात उसकी पुष्टि करता है फिर भी मुझे इस बात में संदेह है कि जीवित व्यक्ति भी इस प्रकार किसी सिटिंग में उपस्थित हो सकता है या केवल देह मुक्त आत्मा ही इस तरह से सत्संगों में शामिल हो सकती हैं। इस संबंध में मैं आपका स्पष्टीकरण चाहता हूँ।

जहाँ तक मि. सईद के कई साल पहले के उस अनुभव का सवाल है जिसमें उन्होंने क्राइस्ट के चेहरे के समान आपका चेहरा देखा था। कई साल पहले मेरे मिशन में शामिल होने और सहजमार्ग की ध्यान प्रणाली अपनाने के ६ महीने बाद मैंने क्राइस्ट को क्रूस पर चढ़ाये जाने का सजीव दृश्य देखा था। यह ठीक वैसे ही था जैसे क्राइस्ट को क्रूस पर चढ़ाये जाते समय मैं भी वहाँ उपस्थित होऊँ। यह घटना तब घटी थी जब मुझे श्री वीरराघवन सिटिंग दे रहे थे। जब मैंने उन्हें इसके बारे में बताया तो उन्होंने मुझे बताया कि क्राइस्ट आत्मा चक्र या

दूसरे विन्दु के प्रभारी हैं और जब कभी अभ्यासी इस विन्दु पर होता है तो उसको इस प्रकार के अनुभव हो सकते हैं। उन्होंने मुझे यह भी बताया कि मोहम्मद साहब पाँचवें विन्दु के प्रभारी हैं। कृपया इसे स्पष्ट कीजिये और मुझे यह भी बताइये कि क्या और दूसरे संत भी ऐसे हैं जो अन्य विन्दुओं के प्रभारी हैं। साथ ही मुझे यह भी स्पष्ट कीजिये कि चक्र की रूपरेखा और विन्दुओं में क्या संबंध है?

अपने बारे में : जब मैं विदेश में था, मैंने सिगरेट पीना शुरु कर दिया था और कुछ अवसरों पर मैंने मदिरा भी पी थी। मई १९६५ में, जब से मैंने सहजमार्ग के अंतर्गत अभ्यास शुरु किया, मैंने इसका सेवन करना बन्द कर दिया। लेकिन अब कभी-कभी धूम्रपान करने की इच्छा होती है। कृपा करके मुझे बताइये कि क्या आध्यात्मिक दृष्टि से धूम्रपान करने की अनुमति है और क्या कभी-कभी मदिरा का सेवन करना हानिप्रद है। इस सलाह को माँगते हुये मुझे संकोच हो रहा है क्योंकि मैं लज्जित हूँ। लेकिन लगता है कि इस संबंध में मुझे आपके मार्गदर्शन और सहारे की जरूरत है। कृपा करके मेरी मदद कीजिये।

श्री वीरराघवन से पता चला है कि आप अब फरवरी १९७२ में ही मद्रास आयेंगे। चि. उमेश ने भी यही बात बतायी है। हम सब आपके दर्शन के लिये लालायित हैं। मैं बसंत में निश्चय ही आऊँगा लेकिन मुझे आशा है कि उससे पहले ही आपके दर्शन का सौभाग्य मिलेगा।

अपने संपूर्ण प्रेम के साथ मेरे परमप्रिय मालिक,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी १५४/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२७ नवम्बर १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैं समझता हूँ कि तुम अब तक मदुरै से लौट आये होगे। डेन्मार्क से मि. जोर्न और ओले यहाँ आये हैं। २५ की सुबह वीबे और थामस भी आ गये। मि. जोर्न पूरी तरह से संतुष्ट हैं और उन्होंने जब से अभ्यास शुरु किया है, वे अपनी पूरी दिनचर्या में प्राणाहुति का अनुभव करते हैं। तुम्हारी इच्छा के मुताबिक मैं वीबे को अन्तरिम

अनुमति दे रहा हूँ। अमेरिका में मैंने डा. राजेन्द्र पाल सिंह (३५०१, टोलेडो टिरेस, अपॉर्टमेन्ट बी-१, हयात्सविले, मोल, जिप कोड २०७८३, यू.एस.ए.) को भी अन्तरिम अनुमति दे दी है। वे हमारे पुराने अभ्यासी हैं। अमेरिका के काम के लिये मैं दक्षिण भारत के चिरंजीवी को भी तैयार कर रहा हूँ। वे वहीं बस गये हैं और समर्पित अभ्यासी हैं। (पता : श्री चिरंजीवी, ५०० ऑरिज, कोरिकाना, टेक्सास ७५११०, यू.एस.ए.) अंत में मैं श्रीमती बर्थे हॉगार्ड की पुत्री एलिजाबेथ के कार्य को अपने हाथ में लूँगा। एक अभ्यासी श्रीमती ग्रेस किम्बॉल (C/o श्री सी.सी. किम्बॉल, १८१०२ क्लिफ्टन रोड, लेकवुड, ओहियो ४४१०७, यू.एस.ए.) ने मुझे लिखा है कि वे शाहजहाँपुर आकर मुझे अपने साथ अमेरिका ले जायेंगी ताकि मैं अमेरिका के महत्वपूर्ण शहरों की यात्रा कर सकूँ। मैंने उन्हें लिख दिया है कि मैं खुद अमेरिका आ रहा हूँ और तभी इस विषय पर विचार करूँगा। वे अगर यहाँ आना चाहती हैं तो उनका यहाँ स्वागत है। मिशन की शिक्षा से पूरी तरह संतुष्ट होकर उन्होंने वहाँ काम करना शुरु कर दिया है।

मुझे राकोटोन्ड्रेनाइव का एक पत्र मिला है। मैं चाहता हूँ कि तुम इस पत्र का जबाब देकर उन्हें संतुष्ट कर दो। अगर तुम्हें कोई परेशानी न हो तो तुम अपने जबाब की एक प्रति मुझे भी भेज दो ताकि अगर वे मुझसे सीधे राय लेते हैं तो मैं उनके आगे के पत्रों का जबाब उसी के आधार पर दे सकूँ। मूल प्रति रखकर मैं उनके पत्र की प्रति तुम्हें भेज रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि तुमने उन्हें अन्तरिम अनुमति के लिये तैयार कर लिया होगा। अगर कुछ बाकी बचा हो तो उसे भी कर दो। जब तुम्हें अपने काम से संतोष हो और वह भी काम करने का वचन दे दे तो मुझे बताना। मैं उसे प्रमाण पत्र भेज दूँगा। मैंने यह मामला तुम्हें सौंप दिया है। पिछले दो सप्ताह से मेरे मन में यह विचार बार-बार आ रहा है कि तुम्हें अमेरिका और पश्चिम के लिये तैयार करूँ क्योंकि तुम्हें उन्हें बौद्धिक रूप से संतुष्ट करना पड़ेगा और यह तुम्हारी जिम्मेदारी होगी। लेकिन मुझे यह भी लगता है कि तुम पश्चिम के लिये पहले से ही तैयार हो। चाहे जैसा हो लेकिन जो मैं चाहता हूँ, उसे करने के लिये अपने आपको विवश पाता हूँ। इन सब कार्यों के लिये यह आवश्यक है कि सहयोगी मालिक की निगरानी और देखरेख में रहे। इसलिये मैं यह निर्णय लेना चाहता हूँ कि मैं फरवरी १९९२ के पहले सप्ताह में तुम्हारे साथ रहूँ।

मैं तुम्हें अपनी *प्रार्थना का अरबी भाषा में अनुवाद* भेज रहा हूँ, जिसे ऐसे ही *कैरो* भेजा जाना है। हालाँकि मुझे अरबी नहीं आती लेकिन मैं अनुभव करता हूँ कि यह सही है। इसे जिस तरह से पढ़ा जाये इसका अर्थ हमारी इच्छा के अनुसार ही होता है। प्रोत्साहन के ख्याल से तुम्हें चाहिये कि तुम श्रीमती डीना को बराबर लिखते रहो।

पत्र लिखने के बाद तुम्हारा २२ नवम्बर का पत्र मिला। यू.के. और अमेरिका जाने की कठिनाइयाँ देखकर मैं बहुत परेशान हूँ जबकि अमेरिका और यू.के. जाना महत्वपूर्ण भी है। मैंने अभी तक पासपोर्ट के लिये आवेदन पत्र नहीं भरा है। इसमें भी कठिनाइयाँ हैं। किसी तरह इसे भरूँगा लेकिन इसके आगे मुझे कुछ नहीं मालूम। तुम मुझे विदेश ले जाना चाहते हो तो बाकी का सारा काम तुम्हें खुद करना होगा।

मुझे मालूम हुआ है कि मुझे तीन इंजेक्शन भी लेने पड़ेंगे - हैजा, चेचक और पीतज्वर का। इजिप्ट के लिये पीतज्वर का टीका लेना आवश्यक है और मैं वहाँ भी जा रहा हूँ इसलिये मुझे यह भी लेना होगा। स्वास्थ्य प्रमाण पत्र भी चाहिये होगा। तुम्हें तो पहले से ही पता है कि मैं कितना स्वस्थ हूँ। मुझे नहीं मालूम कि शाहजहाँपुर या कहीं और इस कार्य के लिये नियुक्त डाक्टरों से मुझे यह इंजेक्शन और प्रमाणपत्र कैसे मिल पायेगा। वीबे तुमसे विदेशी मुद्रा के विनिमय के संबंध में बात करेंगी। मि. सुन्दर अपनी पत्नी के साथ सरकारी खर्चे पर अमेरिका तथा अन्य देशों में गये हैं। वे इस महीने के अंत तक या दिसम्बर के पहले सप्ताह तक वापस आयेंगे। वापस आने पर मैं विदेशी मुद्रा के संबंध में उन्हें लिखूँगा। कानपुर के रिजर्व बैंक में मेरा एक सत्संगी है। उसने मुझे लिखा था कि जब कभी मैं विदेश जाऊँगा तब विदेशी मुद्रा प्राप्त करने में वह मेरी सहायता करेगा।

बड़ी बहू के आध्यात्मिक प्रगति के संबंध में मेरे विचार उत्साहजनक हैं लेकिन इस संबंध में मैं तुम्हें जानकारी १० दिन बाद दूँगा। तुम्हें उसके चिड़चिड़ाहट और अन्य बातों तथा दशा के बारे में मुझे लिखना चाहिये।

मैंने अपने पत्र में अमेरिका के प्रशिक्षकों के पते लिख दिये हैं। अन्य प्रशिक्षकों को तुम जानते ही हो। अब तुम उनके साथ पत्र व्यवहार कर सकते हो।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : सेलम के नरसिंहन को कार्य करने की अन्तरिम अनुमति दे दी गयी है लेकिन उन्होंने अभी तक कुछ किया नहीं है न ही उन्होंने मेरे पत्रों का उत्तर दिया है - पत्र चाहे जितना महत्वपूर्ण क्यों न हो। मद्रास के के. महालिंगम उनसे मिलने गये थे और उनसे सत्संग का आग्रह भी किया था किन्तु उन्होंने टाल दिया। एक शिक्षित व्यक्ति ने महालिंगम से कहा कि वे मिशन में आना चाहते हैं लेकिन जब ऐसे बेकार लोग मिशन में प्रशिक्षक हैं तो मैं कैसे आऊँ? इन परिस्थितियों में मैं उनके बारे में तुम्हारे विचार जानना चाहता हूँ। ***फोड़े में अगर पस हो जाये तो उसकी शल्य क्रिया आवश्यक हो जाती है।*** कुछ समय के लिये मैंने महालिंगम को वहाँ मिशन का प्रबन्धक बना दिया है। उसने फिर से सत्संग को चालू किया है और वहाँ सप्ताह में एक बार सामूहिक ध्यान होने लगा है।

मैं तुम्हें दिल्ली के श्री जे. पी. खन्डूरी द्वारा भेजी गयी विदेश यात्रा संबंधी आवश्यक जानकारी की एक कॉपी भेज रहा हूँ। फार्म को भरने तथा उसमें वर्णित आवश्यक शर्तों की पूर्ति करने के बाद मुझे फार्म को लखनऊ के क्षेत्रीय पासपोर्ट ऑफीसर या लखनऊ के एयर इण्डिया ऑफिस में भेजना होगा।

मैंने २६ नवम्बर के पायनियर में यू.के. में प्रवेश कर रहे भारतीयों को परेशान करने की खबर देखी है। इस विषय को हमारे यहाँ संसद में भी उठाया गया है। मैं अखबार में छपे आवश्यक अंशों को तुम्हारी जानकारी के लिये लिख रहा हूँ।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

संलग्नक :

- **राकोटोन्ड्रेनाइव एलेक्जेन्ड्रा के पत्र की प्रति**
- **हमारी प्रार्थना का अरबी अनुबाद**
- **श्री जे. पी. खन्डूरी से प्राप्त सूचना**
- **२६ नवम्बर के पायनियर की कटिंग**

तनानारीव
४ नवम्बर १९७१

परम प्रिय एवं परम आदरणीय गुरुजी,

मैं आपका और श्री पी. राजगोपालाचारी का आभारी हूँ कि आपने मुझे जिम्मेदारी सौंपी और उन्होंने मुझे पत्र से ट्रांसमिट किया।

आपकी सूचना से मुझे यह विश्वास हो गया है कि श्री पी. राजगोपालाचारी द्वारा मुझे प्रशिक्षक बनाया जाना सम्भव है।

एक गलतफहमी की वजह से श्री पी. राजगोपालाचारी का नैरोबी से तनानारीव आना सम्भव नहीं हो पाया और सोची गयी शुरुआत नहीं हो पायी।

परमप्रिय गुरुजी! आप अनुमान लगा सकते हैं कि यह जानकर मुझे कितना दुःख हुआ कि मेरे अंदर अभी वह योग्यता नहीं आ पायी है, जिससे मैं आध्यात्मिक सेवा शुरु कर सकूँ।

परमप्रिय गुरुजी! जब मैं आपसे मिला था तो मैंने आपको अपने कर्म के बारे में बताया था जिसका भार मैं महसूस करता हूँ। आपने जबाब दिया था कि अतीत के बारे में सोचना ठीक नहीं। जो घटित हुआ है वह मेरे कर्म की जटिलता पर मेरे दृष्टिकोण की पुष्टि करता है। मैंने यह सवाल अपने आप से पूछा है और आपसे भी पूछ रहा हूँ कि क्या आप मेरे मामले में ऐसा ट्रांसमिशन दे सकते हैं जो मेरे इस जीवन के दौरान बुने गये कर्म के बंधन को तोड़ दे।

यह कहा जाता है कि आध्यात्मिक जागृति और खासकर समाधि में यह प्रभाव है। मेरे लिये यह सवाल कुछ ज्यादा ही महत्वपूर्ण है क्योंकि आप अपनी कृपा से मुझे दूसरों को निर्देश देने का कार्य सौंप रहे हैं। मुझे आश्चर्य है कि कहीं यह बहुत जल्दी तो नहीं है। क्या मैं दूसरों को शिक्षा देने के लिये कुशल और उपयोगी उपकरण बन पाऊँगा? जब मैं खुद को ही कर्म के बंधन से मुक्त महसूस नहीं करता, खुद अपनी आध्यात्मिक प्रगति का पता लगाने में अक्षम हूँ, मुझे लगता है कि दूसरों का मार्गदर्शन करने के लिये सहमत होना और उनकी जरूरतों को संतुष्ट करना और उनके बारे में फैसला करना मेरी धृष्टता होगी।

परमप्रिय गुरुजी! फिर भी मैं आपको स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जो कुछ भी आप मुझे प्रेम से देना चाहते हैं मैं उसे लेने से इन्कार नहीं कर रहा हूँ। मैं तो केवल अपनी कमज़ोरियाँ बता रहा हूँ जिनका मुझे भय है। मुझे काम करने में कोई समस्या नहीं है लेकिन ऐसे काम को करने की मुझमें योग्यता भी होनी चाहिये।

श्री पी. राजगोपालाचारी ने मुझे लिखा है कि उन्होंने मुझे तैयार करने का काम भी शुरु कर दिया है। शायद यह काम श्री सी. ए.

राजगोपालाचारी भी जारी रख सकें जिन्होंने मुझे लिखा है कि वे तनानारीव आना चाहते हैं।

मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझ पर कृपा करके मेरे लिये शाहजहाँपुर आना सम्भव बनावें और मुझे शीघ्रातिशीघ्र सर्वोच्च अनुभव (समाधि) पाने की अनुमति दें।

परमप्रिय गुरुजी! आपके पत्र से मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ कि जिन्हें मैं अध्यात्म के लक्षण समझता था वे तो केवल सामान्य भौतिक प्रतिक्रिया हैं। लेकिन यह भी मुझे यही अहसास कराती है कि मैं अभी भी लक्ष्य जो न सत्य है न असत्य, गरम है न ठण्ढा, से बहुत दूर हूँ। असलियत तो वह है जो स्व और शरीर की गलत पहचान को तोड़ता है और मेरे मन की गोपनीय और निरन्तर इच्छा भी इसी को पाने की है। मैं अपने आप से ही पूछता हूँ कि क्या मेरे शरीर की भौगोलिक स्थिति - गुरु से दूर - मुझे इस भेद के ज्ञान को अर्जित करने की शक्ति देगी? मुझे यकीन है कि अगर आप कृपापूर्वक ट्रांसमिशन से ऐसा करें तो चेतना के विभिन्न केन्द्र शोधित हो जायेंगे। ऐसा सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्ति के बहुत पहले नहीं होगा।

परमप्रिय मालिक! मैं पुन: आपको अपनी कृतज्ञता अर्पित करता हूँ और आपको पूरे समर्पण के साथ यह प्रार्थना अर्पित करता हूँ :

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माअमृतम् गमय।

आपका प्रिय
राको

मॉडल टाऊन, दिल्ली - ९
२२ नवम्बर १९७१

पूज्य बाबूजी,

सादर प्रणाम!

आपके आशीर्वाद से ही मैं आपके द्वारा माँगी गयी निम्नलिखित सूचनाओं को एकत्र कर पाया हूँ :

- **पासपोर्ट**

⇒ पहला जरूरी दस्तावेज
⇒ ६ साल के लिये वैध

⇒ लखनऊ से पाया जा सकता है।

⇒ पासपोर्ट के लिये आवेदन पत्र संलग्न है, जिस पर एक जगह पेंसिल से निशान लगाया गया है। यह वेरिफिकेशन सर्टिफिकेट प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट या डिप्टी सेक्रेटरी के स्तर के किसी अधिकारी या किसी उच्च गजटेड अधिकारी से लेना चाहिये अन्यथा सामान्य तरीके से ६ महीने से लेकर एक साल के बीच का कोई भी समय लग सकता है।

⇒ ये अधिकारी लखनऊ या शाहजहाँपुर के होने चाहिये और वे टेलिफोन पर उपलब्ध होने चाहिये जिनसे पासपोर्ट अधिकारी सर्टिफिकेट को कन्फर्म कर सके।

⇒ तुरंत आवेदन किया जाये जिससे हम वीसा आदि के लिये आवेदन कर सकें।

⇒ इस दस्तावेज के प्राप्त हो जाने पर दूसरी औपचारिकतायें एक या दो दिन में पूरी की जा सकती हैं।

⇒ पासपोर्ट के लिये आवेदन पत्र के दो सेट यहाँ संलग्न हैं।

⇒ आवेदन पत्र को दो प्रतियों में पूरा किया जाना है और क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी को १५/- रुपये शुल्क के साथ दिया जाना है। इस आवेदन पत्र को उल्लिखित (देखें निशान ३) लोगों के माध्यम से या लखनऊ स्थित एयर इण्डिया के ऑफिस के माध्यम से भेज सकते हैं। एयर इण्डिया के माध्यम से भेजने के लिये साइक्लोस्टाइल्ड फार्म भी संलग्न है। इसे एयर इण्डिया लखनऊ के श्री बर्मन को दिया जाये और उन्हें एयर इण्डिया दिल्ली के श्री जे. एस. नागपत का संदर्भ दिया जाये। वे कागजों को आगे बढ़वाकर पासपोर्ट ले लेंगे। कठिनाई होने पर हम उन्हें लिख सकते हैं।

⇒ प्रश्न संख्या २२ के उत्तर में यह बताना है कि यात्रा में कौन-कौन से देश सम्मिलित हैं।

⇒ आवेदन पत्र के साथ तीन पासपोर्ट आकार के चित्र भी लगाने हैं, जिसमें से एक के पीछे प्रथम श्रेणी का मजिस्ट्रेट या डिप्टी सेक्रेटरी के स्तर का कोई अधिकारी इसे प्रमाणित करे।

- **अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रमाण पत्र**

⇒ यह एक और जरूरत है।

⇒ स्मॉल पाक्स और कॉलरा के लिये क्रमशः ६ महीने और ३ साल तक टीका प्रभावी रहता है।

⇒ यह प्रस्थान की तारीख से ७ दिन से पहले का होना चाहिये।

⇒ भारत में इस उद्येश्य के लिये अधिकृत कोई भी व्यक्ति प्रमाण पत्र प्रदान कर सकता है। सामान्यतया नगरपालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को इसे प्रदान करने का अधिकार होता है। इसका प्रबंध श्री सुभाष चन्द्रा की मदद से नई दिल्ली नगरपालिका कमिटी से किया जा सकता है।

- **वापसी टिकट**

⇒ भारत वापसी के उद्येश्य को प्रकट करने के लिये जरूरी है।

- **वीसा**

⇒ पासपोर्ट के बाद यह एक अन्य जरूरी चीज है।

⇒ इसे दिल्ली से प्राप्त करना है।

⇒ इसके लिये हमें पासपोर्ट प्राप्त करने के बाद हर दूतावास में आवेदन करना पड़ता है।

⇒ तीन महीने के लिये वैध (प्रत्येक देश)

⇒ पासपोर्ट और वापसी टिकट दिखाना पड़ता है।

⇒ मार्गदर्शन के लिये साहित्य भी हर दूतावास से प्राप्त किया जा सकता है।

⇒ जिस देश के वीसा के लिये आवेदन किया जाये वहाँ प्रवास के दौरान समर्थन की घोषणा करना जरूरी है।

⇒ हर देश के लिये पासपोर्ट साइज के फोटो की एक दो प्रतियों की आवश्यकता होगी।

⇒ लगभग २ दर्जन पासपोर्ट साइज के फोटो की जरूरत होगी।

⇒ हर देश में प्रवास की अवधि का उल्लेख भी करना होगा।

- **किराया**

⇒ यात्रा का मार्ग तय हो जाने के बाद ही इसका निर्धारण किया जा सकता है।

⇒ संपूर्ण विश्व की यात्रा की दोनो ओर की अनुमानित राशि ११०००/- रुपये हैं। (१० प्रतिशत टैक्स अतिरिक्त)

निम्नलिखित मार्ग का अनुमानित किराया एक तरफ से ४२००/- रुपये है : *तेहरान, कैरो, रोम, फ्रैंकफर्ट, पेरिस, लन्दन, न्यूयार्क*

⇒ इस मार्ग में पड़ने वाले देशों में रुकने से किराये में कोई बदलाव नहीं आयेगा।

⇒ इस औपचारिक दर में कुछ छूट ५ से १० प्रतिशत तक ट्रैवल एजेन्टों से अगर वे परिचित हों, प्राप्त किया जा सकता है। हमारा एक परिचित है।

⇒ धनराशि को ठीक से तभी निर्धारित किया जा सकता है जब यात्रा का स्पष्ट मार्ग, आवागमन की तारीखें और समय निर्धारित हो जायें और छूट प्राप्त हो जाये।

⇒ हाँगकाग से होकर वापस लौटने पर किराया थोड़ा कम है।

⇒ लखनऊ या दिल्ली से किराया समान है।

पूज्य बाबूजी! कृपया विलम्ब के लिये मुझे क्षमा कर दीजिये। आपके अनन्त दिव्य आशीर्वाद के लिये प्रार्थना करता हूँ।

आपका अनुरागी
जय प्रकाश खंडूरी

पुनश्च : यू.के. में प्रवेश करने वाले भारतीयों को परेशानी
दिनांक २६ नवम्बर १९७१ के ' पायनियर ' का सार
सरकार बदले में कुछ कार्यवाही करने पर क्रियाशील

नयी दिल्ली, २५ नवम्बर -- उप विदेश मंत्री श्री सुरेन्द्र पाल सिंह ने आज राज्यसभा को आश्वासन दिया कि यूनाइटेड किंगडम में प्रवेश करने वाले भारतीयों को परेशान किये जाने के मामले को सरकार गंभीरता से ले रही है और बदले में कुछ करने को सोच रही है।

सी. डी. पाण्डेय और कुछ अन्य सदस्यों द्वारा इस विषय पर ध्यान आकर्षित किये जाने पर उन्होंने कहा " ऐसी स्थिति आ गयी है जब हम इस सवाल से बच नहीं सकते और प्रतिक्रिया में हमें कुछ करना ही पड़ेगा। "

मंत्री ने श्री चित्त बसु को बताया कि ब्रिटिश सरकार का यह संप्रभु अधिकार है कि वह किसी के प्रवेश को रोकने के लिये कानून बना दे। भारत यह चाहता है कि कॉमनवेल्थ के देशों के नागरिकों के बीच किसी भी प्रकार का भेदभाव न बरता जाये।

उन्होंने कहा कि ब्रिटिश रेग्यूलेशनों के तहत जो कॉमनवेल्थ नागरिक सीमित अवधि के लिये ब्रिटेन में प्रवेश करता है, उसे वीसा या स्पेशल इंट्री परमिट की जरूरत नहीं पड़ती लेकिन ब्रिटिश हाई कमीशन यात्रियों को उनके हित में भारत छोड़ने से पहले इंट्री सर्टिफिकेट के लिये आवेदन पत्र भरने की सलाह देता रहा है। उनका मुख्य इरादा केवल वहाँ जाकर बसने वालों के प्रवेश को सीमित करने का था।

मद्रास
११ दिसम्बर १९७१

परम प्रिय मालिक,

मुझे आपका २७ नवम्बर का पंजीकृत पत्र संलग्नकों सहित मिला लेकिन जबाब देने में कुछ विलम्ब हुआ क्योंकि मुझे एक बार फिर मदुरै और विरुधनगर जाना पड़ा और वापसी में कुडप्पा भी। इसके बाद कुछ दिन अस्वस्थ था। देरी के लिये मुझे क्षमा कर दीजिये।

मि. राकोटोन्ड्रेनाइव : मैंने उनके पत्र का जबाब दे दिया है, जिसकी प्रति संलग्न है और आपकी ओर से कल दिनांक १० दिसम्बर १९७१ को उन्हें अंतरिम अनुमति भी प्रदान कर दी है। कृपया उन्हें काम शुरु करने के लिये लिखिये। उन्हें सर्टिफिकेट भी भेजा जाना है।

आपके यू.के. और यू.एस.ए. के दौरे के संबंध में : कठिनाइयाँ बहुत हैं परन्तु ऐसी नहीं कि उन्हें पार न किया जा सके। जब आप फरवरी १९७२ में मद्रास आयेंगे तो यहीं टीका लगवाकर यहीं स्वास्थ्य प्रमाण पत्र हासिल किया जा सकता है।

स्मॉल पाक्स का टीका ३ साल के लिये वैध होता है। कॉलरा का टीका केवल ६ महीने की अवधि तक प्रभावी रहता है। पीले बुखार का टीका १० साल तक प्रभावी रहता है।

इसलिये इन्हें फरवरी में मद्रास में लेना ही बेहतर होगा। पीले बुखार के लिये सामान्यतया हर राज्य में केवल एक सेन्टर है। मद्रास हाफकिन इन्स्टीच्यूट में अच्छे प्रकार का सीरम है और इसकी कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। इसलिये कृपया ऐसा ही निर्णय करें।

विदेशी मुद्रा के बारे में चिन्ता मत कीजिये। मैंने जरूरी इन्तजाम कर लिये हैं। इस मामले में आपको किसी से कोई सहायता माँगने की जरूरत नहीं है।

पासपोर्ट के लिये कोई परेशानी नहीं होगी लेकिन यू.के. और यू.एस.ए. का वीसा प्राप्त करने के लिये प्रत्याभूति की जरूरत होगी। जब आप मुझे जाने की तारीख का मोटे तौर पर अनुमान दे देंगे तो मैं यहाँ से जरूरी पत्राचार कर लूँगा। वीसा की सीमित वैधता होती है और ये कई प्रकार के होते हैं :

- **ट्रांजिट वीसा** : जारी होने की तारीख से ३ महीने के अंदर सामान्यतया एक हफ्ते के लिये।
- **इंट्री वीसा** : सामान्यतया एक महीने के लिये - जारी होने की तारीख से ६ महीने के अंदर ३ महीने के लिये।
- **इंट्री परमिट** : यू.के. - प्रार्थनानुसार ३ महीने या ६ महीने के लिये वैध। यू.के. के लिये वीसा की जरूरत नहीं होती। केवल इंट्री परमिट लेना होता है।

पश्चिम जर्मनी, डेन्मार्क और यूगोस्लाविया के लिये भी किसी प्रकार के वीसा की जरूरत नहीं होती।

आपका पासपोर्ट जारी होने के बाद इन बातों पर चर्चा की जा सकती है और जरूरी प्रबंध किये जा सकते हैं। मेरे पास आपसे मिलने का अभी एक अवसर है। अब भारतीय पासपोर्ट केवल ३ सालों के लिये बनता है और इसे केवल और अगले ३ सालों तक बढ़ाया जा सकता है। इसके बाद नये पासपोर्ट के लिये आवेदन करके फिर से पासपोर्ट बनवाना पड़ता है।

श्री एम. वी. नरसिंहन, सेलम : वे बुरी आदतों वाले आदमी थे लेकिन मिशन में आने के बाद उन्होंने स्वयं को पूर्णतया परिवर्तित कर लिया। मैं इसे प्रमाणित करता हूँ। सबका अतीत है और ऐसे लोग कम ही हैं जिनका अतीत शर्मनाक नहीं है। अगर कोई नरसिंहन की तरह खुद को बदल सके तो यह बहुत बड़ी बात है। जब मैं पहली बार उनसे मिला तो वे राक्षस थे और अब वे मानव हो गये हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि उन्हें एक स्वामीजी (श्री ज्ञानानन्द स्वामी) की शिक्षा ने आकर्षित किया और उन पर उन्होंने अपनी गहरी पकड़ बना ली। उनका आश्रम सेलम से केवल ६० मील दूर तिरुक्कोइलुर में है इसलिये श्री

नरसिंहन का स्वामीजी के साथ जल्दी-जल्दी और लम्बा संपर्क बना हुआ है। मैं उनसे एक अंतिम सवाल पूछूँगा कि उन्हें हमारे साथ गंभीरता से रहना है या नहीं और फिर आपको अपना दृष्टिकोण लिखूँगा। एक बार आपने मुझे बताया था कि सेलम सेन्टर तेजी से विकसित हो रहा है और आप इस सेन्टर के आधार में से कुछ शक्ति वापस लेंगे। शायद काफी ज्यादा वापस हो गयी जिससे उस सेन्टर में निष्क्रियता आ गयी। मेरा आपसे निवेदन है कि आप इस पर गौर कीजिये।

मैंने यू.एस.ए. के नये प्रशिक्षकों के पते नोट कर लिये हैं। अब उनसे पत्राचार करूँगा।

मैं अभी भी अपने २२ नवम्बर और २५ नवम्बर के पत्रों में लिखे कुछ सवालों के जबाब का इन्तजार कर रहा हूँ।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी २०५/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
१३ दिसम्बर १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा २५ नवम्बर १९७१ का प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मैं इसका जबाब दे रहा हूँ। आशा है कि मेरा पंजीकृत पत्र अन्य पत्रों की प्रतियों और अन्य चीजों के साथ मिल गया होगा। मैंने सारी औपचारिकताओं को पूरा करने के बाद ६ दिसम्बर १९७१ को पासपोर्ट के लिये आवेदन कर दिया है। मैंने इसमें उन सभी देशों के नाम लिख दिये हैं जहाँ वास्तव में मैं जाना चाहता हूँ। मैंने कुछ और देशों के लिये आवेदन किया है जैसे - ग्रीनलैण्ड और यूगोस्लाविया। मैंने इजिप्ट, इटली, स्विटजरलैण्ड, हॉलैण्ड, वेस्ट जर्मनी, डेन्मार्क, यू.एस.ए., यू.के. और फ्राँस के नाम का भी उल्लेख किया है। मुझे नहीं लगता कि बेल्जियम में मेरा कोई काम है। इस बारे में मुझे तुम्हारे सलाह की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि तुमने विदेश में प्रशिक्षकों को उनकी सरकारों से मुझे और खुद को बुलाने की अनुमति लेने के लिये लिखा होगा। तुमने मुझे लिखा था कि मुझे यू.के. और यू.एस.ए. के लिये वीसा प्राप्त करने में कठिनाई होगी। तुमने यह भी लिखा है कि श्री डेविश को यह

शपथ पत्र दाखिल करना होगा कि वे ही मुझे और तुम्हें बुला रहे हैं और वे हमारे वहाँ रहने तक का सारा स्थानीय खर्चा खुद वहन करेंगे।

अमेरिका में मैंने डा. राजेन्द्र पाल सिंह को अन्तरिम अनुमति दे दी है। अगर तुमने अभी तक उन्हें नहीं लिखा है तो हमारे अमेरिका में प्रवेश के लिये उन्हें जरूरी कार्यवाही करने के लिये लिख सकते हो। ध्यान रखो कि प्रशिक्षक मुझे ही नहीं तुम्हें भी बुलाने के लिये लिखें। मैं अप्रिल में तुम्हारे साथ वहाँ जाना चाहता हूँ लेकिन वीसा प्राप्त करने में अधिक समय लगने पर यह कठिन लगता है। मूल कार्यक्रम तो अप्रिल १९७२ में ही जाने का है लेकिन मई के महीने में तो हमें जरूर ही चल देना चाहिये।

मेरी समझ में वीसा मिल जाने के बाद मुझे विदेशी मुद्रा के लिये आवेदन कर देना चाहिये। अगर यह काम मुझे करना है तो मुझे लिखो। क्या मुद्रा के लिये मुझे यहाँ और तुम्हें वहाँ मद्रास में अलग-अलग आवेदन करना होगा। इस बारे में मैंने वीबे और ओले से कुछ बात की है। वे तुमसे बात करेंगे। उत्सव में शामिल होने के लिये वे यहाँ आ रहे हैं और उस समय तुम भी यहाँ होगे इसलिये उसी समय सारा मामला तय हो जायेगा।

तुम्हारे पिताजी की अवस्था अच्छी है। उनकी पहुँच उच्चतर है और उनमें समर्पण भी है। इसीलिये जब वे ट्रांसमिट करते हैं, काम हो जाता है। लेकिन मैं किसी भी आदमी में भारीपन पसंद नहीं करता इसीलिये मैंने तुम्हें उनकी सफाई करने को लिखा था। वे ज्यादातर साफ हो गये हैं लेकिन पिंड प्रदेश में कुछ धब्बे अभी भी हैं। अब तुम्हें ब्रह्माण्ड मंडल की सफाई की तरफ ध्यान देने की जरूरत है।

तुमने लिखा है कि पिताजी से सिटिंग लेते समय तुमने पाया कि तुम्हारे बगल में दो आकृतियाँ बैठी हुई हैं और तुम्हारे पिताजी ने गलती से उन्हें लूसी और बर्थे समझा। ट्रांसमिशन के समय कभी-कभी भूखी आत्मायें आ जाती हैं और कभी-कभी बुरी आत्मायें भी आ जाती हैं जब वे किसी आदमी को परेशान करना चाहती हैं। वे ट्रांसमिशन के समय प्रशिक्षक से शक्ति का सार लेने बैठती हैं। यह जानना बहुत कठिन है कि आत्मा अध्यात्म के लिये भूखी है या उसका कोई बुरा उद्येश्य है। थोड़ा ध्यान देने पर इसे जाना जा सकता है। जब भी मुझे लगता है कि उनका कोई बुरा उद्येश्य है, मैं उन्हें वापस फेंक देता हूँ। अक्सर वे मेरे पास आती हैं और पैर छूकर दूर चली जाती हैं क्योंकि उन्हें पता

है कि यहाँ उनका स्वागत नही होगा। निस्संदेह ऐसी भूखी आत्माओं की सेवा करना हमारा कर्तव्य है लेकिन इस संबंध में मेरे अनुभवों ने मुझे कठोर बना दिया है। ऐसा नहीं है कि केवल इसी संसार की आत्मायें हमारे पास आयें बल्कि कभी-कभी उच्चतर संसारों से भी आत्मायें हमारे पास आती हैं। ऐसे मामलों में मैं इन्कार नहीं करता। उन्हें छोड़कर जिन्हें उच्चतर आध्यात्मिक उपलब्धियाँ हुई हैं और इसके बारे में उच्चतर ज्ञान है, जीवित लोग इस तरह से उपस्थित नहीं हो सकते।

तुम्हारा अन्नमय कोश टूट चुका है इसलिये तुममें यह शक्ति विकसित हो गयी है कि तुम अपने सूक्ष्म शरीर को बाहर निकाल सकते हो। तुम चमत्कार भी कर सकते हो लेकिन अगर तुम मुझसे पूछो कि यह कैसे किया जाये तो यह मैं नहीं जानता।

सम्भवत: मैंने तुमको यह लिखा था कि तुम्हें मैं पश्चिम में काम करने के लिये तैयार करना चाहता हूँ। मैंने अपना काम शुरु कर दिया है और लगभग पिछले डेढ़ महीने से मैं इस काम को कर रहा हूँ। यह तैयारी उस चीज की तैयारी है जिसे मैं करना चाहता हूँ। उम्मीद है कि अभी भी तुम कुछ महसूस कर रहे होगे।

सूफी साहित्य में कहा गया है कि ५वाँ विन्दु मोहम्मद साहब के पैर के नीचे है अर्थात् इस पर उनका नियंत्रण है लेकिन जब भी मैं किसी को यह तथ्य बताता हूँ तो मैं साथ में यह भी कहता हूँ कि ऐसा सूफियों का कहना है। सूफियों ने ही यह भी कहा है कि क्राइस्ट का दूसरे विन्दु पर नियंत्रण था। मुसलमानों ने हिन्दुओं को छोड़कर दूसरे धर्मों के कई प्रवर्तकों को स्वीकार किया है।

मेरे मत में कंठ चक्र का बहुत महत्व नहीं है। मेरे मालिक ने इसे माया का स्थान कहा। इसे प्रतीक रूप में दुर्गा चक्र भेदन या दुर्गा का स्थान भी कहा गया है लेकिन तांत्रिक ग्रंथों के इस विवरण से मैं सहमत नहीं हूँ। *क्राइस्ट के लिये मैं यह जोड़ना चाहता हूँ कि उनमें दूसरे विन्दु की अवस्था थी। इसके बाद की उन्हें कोई जानकारी नहीं थी।* मेरे मत में उनकी यह प्रतिभा प्राकृतिक थी। मैं अपनी वर्तमान स्थिति में अपने मालिक की कृपा से हूँ। क्राइस्ट मेरे सामने यह कहते हुये प्रकट हुये थे कि मुझे क्रिश्चियनिटी के लिये काम करना चाहिये। कुछ अन्य संतों ने भी ऐसा किया।

विन्दु ऐसे केन्द्र हैं जिनमें विशिष्ट ऊर्जा होती है लेकिन वृत्त विन्दुओं से श्रेष्ठतर हैं। इसकी व्याख्या करना बहुत कठिन है इसीलिये मैंने बहुत स्पष्टता के बिना ही इसे केवल स्पर्श किया है।

अपने पिछले पत्र में मैंने बहू की अवस्था के बारे में पूछा था। मैं उसके मामले में बहुत कुछ नहीं कर सका। अभी भी मुझे उसकी अवस्था की जानकारी चाहिये।

हमारे ऊपर युद्ध थोप दिया गया है इसलिये शांत स्थिति में मैंने अपने आप को एक सैनिक महसूस करना शुरु कर दिया है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : मैं अन्तरिम अनुमति के सर्टिफिकेट की २५ प्रतियाँ भेज रहा हूँ, जिनका उपयोग वहाँ मेरे आने पर होगा। तुम इसी की कुछ प्रतियाँ टाइप करवा लेना, जिन पर प्राप्ति करवायी जा सके।

पता :
डा. राजेन्द्र पाल सिंह (डा. आर. पी. सिंह)
३५०१, टोलेडो टेरेस
अपॉर्टमेन्ट बी-१, हयात्सविले
जिप कोड २०७८३ यू.एस.ए.

तार : १७ दिसम्बर १९७१

पी. राजगोपालाचारी
पंजीकृत पत्र की प्राप्ति और अनुपालन

रामचन्द्र

एक्सप्रेस तार :
सहजमार्ग शाहजहाँपुर
आपका टेलिग्राम और पंजीकृत पत्र जबाब ११ को प्राप्ति की पुष्टि कीजिये।

पार्थसारथी

मद्रास
१८ दिसम्बर १९७१

परम आदरणीय मालिक,

वीबे के माध्यम से १३ दिसम्बर का आपका पत्र मिला। मुझे कल रात आपका टेलिग्राम भी मिला जिससे मैं समझ गया कि आपको मेरा ११ का पत्र नहीं मिला। मैंने आपके पंजीकृत पत्र का उत्तर विस्तृत विवरण सहित दिया है। आज सुबह मैंने आपको एक टेलिग्राम भी दिया है, जिसमें लिखा है कि आपका टेलिग्राम और पंजीकृत पत्र मिला और जबाब ११ को भेजा। इसकी पुष्टि कीजिये।

पत्र सारे विदेशी प्रशिक्षकों को भेजे गये हैं और पत्राचार की प्रतियाँ आपकी फाइल के लिये संलग्न हैं। जो कुछ भी जरूरी है उसे हम मद्रास में करेंगे और आपको अपने विदेश दौरे के संबंध में परेशान होने की जरूरत नहीं है। आपको केवल जितना जल्दी हो सके अपना पासपोर्ट बनवा लेना है। मैंने अपने ११ तारीख के पत्र में यह लिखा है कि आपके स्वास्थ्य संबंधी सारे मामले यहाँ मद्रास में बहुत आसानी से निपटाये जा सकते हैं।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

संलग्नक : उपरिलिखित

मद्रास
२२ दिसम्बर १९७१

परम आदरणीय मालिक,

आज ट्रेवेल एजेन्टों से बात हुई है कि विदेशों से निमंत्रण पत्र संगठन की तरफ से मिलने चाहिये न कि व्यक्तियों की तरफ से। इसलिये मैंने बदले हुये प्रलेख अपने सारे विदेशी प्रशिक्षकों को इस निर्देश के साथ भेज दिये हैं कि अगर जरूरी हो तो वे एक लेटर हेड छपवा सकते हैं। मुझे विश्वास है कि इसमें आपकी सहमति होगी।

आप पिछले तीन सालों से बाहर नहीं गये हैं इसलिये आपके मामले में पी. फार्म की कोई कठिनाई नहीं होगी और आपको अपने आप ही $100/- की विदेशी मुद्रा मिल जायेगी। मुझे किसी प्रकार की कोई विदेशी मुद्रा नहीं मिलेगी क्योंकि मैंने पिछले तीन सालों में विदेश यात्रा की है।

रिजर्व बैंक के लोगों ने मुझे बताया है कि किसी धार्मिक या आध्यात्मिक संगठन के किसी प्रतिनिधि को कोई विदेशी मुद्रा निर्गत नहीं होती। वस्तुत: श्री रामकृष्ण मिशन और थियोसोफिकल सोसाइटी से काफी संख्या में लोग विदेश जाते हैं और सारे मामलों में निमंत्रण विदेश से आता है और सारे खर्चों को भी विदेशी केन्द्र ही वहन करते हैं। केवल टिकट भारतीय रुपयों से भारत में खरीदने की अनुमति है। इसलिये मैं नहीं समझता कि $100/- से ज्यादा विदेशी मुद्रा हमें मिलेगी। हर विदेश जाने वाले यात्री को एयरपोर्ट छोड़ने से पहले £3/- भी दिया जाता है। मैं हर दिन होने वाली प्रगति से आपको अवगत कराता रहूँगा।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी २५३/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२३ दिसम्बर १९७१

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

टेलिग्राम में जिस पत्र का संदर्भ था वह तो पत्र मिला ही विदेशी प्रशिक्षकों को भेजे गये पत्रों की प्रतियों वाला पत्र भी मिला।

मुझे चि. उमेश की पत्नी से पता चला है कि उमेश के थूक में फिर से खून आने लगा है और वह कमजोर और चिड़चिड़ा हो गया है। मेरे निवेदन पर मि. आर. वीरराघवन उसे डाक्टर के पास ले गये, जिसने उमेश के कई टेस्ट किये और जो दवा उसने बतायी उसे वह ले रहा है। उसके पेट में भी दर्द है। इसने मुझे परेशान कर दिया है। मुझे नहीं पता कि इस मामले में मुझे क्या करना चाहिये और उसे जाँच के लिये पुन: कहाँ ले जाना चाहिये। मेरे पुत्र प्रकाश उसे मेडिकल इन्स्टीच्यूट, नयी दिल्ली ले चलने के लिये कह रहे हैं। मैंने कल ही श्री वीरराघवन को लिखा है कि अगर आवश्यक हो तो उसे फिर से डाक्टर के पास ले जायें और फिर से जाँच आदि करवायें। इस बारे में कृपया श्री वीरराघवन से मिलो और उनकी राय लेने के बाद मुझे लिखो कि मुझे क्या करना है। ***तुम वहाँ मेरी जगह हो इसलिये मैं तुम्हें ही यह मामला सौंप रहा हूँ। उसका अच्छे से अच्छा इलाज***

किया जाना चाहिये। तुम्हें रुपयों की जरूरत पड़े तो लिखो। तत्काल जरूरत होने पर तुम खर्च कर सकते हो, मैं तुम्हें रुपये भेज दूँगा।

वीरराघवन दो महीने की छुट्‌टी पर जा रहे हैं। वे परिवार सहित बसंत उत्सव में शाहजहाँपुर आयेंगे।

उमेश के श्वसुर इतने परेशान हैं कि उन्होंने मुझे बहुत दबे हुये स्वर में लिखा है :

"आपने बहुत से बीमार लोगों की मदद की है और आज भी आप सदैव उन लोगों के दर्द और कष्ट को दूर करने की बात सोचते हैं, जो परेशानी में आपको याद करते हैं। मैं नहीं जानता कि अब तक चि. उमेश का निवेदन आप तक क्यों नहीं पहुँचा। अगर उससे कोई गलती हो गयी है, जिसकी वजह से मौन स्थापित हो गया है तो मैं महसूस करता हूँ कि उसे क्षमा कर दिया जाना चाहिये और इस संकट से उबारने में उसकी मदद की जानी चाहिये।"

इस पत्र ने मुझे बहुत विचलित कर दिया है। मैं तुमसे निवेदन करता हूँ कि तुम उसके जल्दी ठीक होने की प्रार्थना करो। मेरी कामना और प्रार्थना है कि हमारे पश्चिम के लिये चलने के पहले चि. उमेश बिल्कुल ठीक हो जायें। यह बिल्कुल सम्भव है। केवल ईश्वर की कृपा की जरूरत है जो प्रार्थना से जगायी जा सकती है।

चि. नारायणा ने मुझे लिखा है कि लेकवुड, ओहियो (यू.एस.ए.) से श्रीमती ग्रेस किम्बाल एक महीने के लिये भारत आ रही हैं। वे अपने दौरे में मद्रास, तिरुपति और बंगलोर भी जायेंगी। १० दिन वे शाहजहाँपुर में रुकेंगी। उम्मीद है कि १० फरवरी के आस-पास वे शाहजहाँपुर पहुँचेंगी। मैं फरवरी १९७२ के पहले हफ्ते में टीका आदि के लिये तुम्हारे साथ मद्रास में होना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि मुझे चि. नारायणा को लिखना चाहिये कि मैं अपना कार्यक्रम नहीं बदल सकता। इसलिये वे मुझसे पहले मद्रास में मिल सकती हैं और जब मेरा यह काम पूरा हो जाये तो फिर शाहजहाँपुर आ सकती हैं।

२० जनवरी की सुबह ६:३० से लेकर २५ जनवरी की सुबह ७:३० तक उत्सव है, जिसमें तुम सब लोगों की प्रतीक्षा करूँगा। तुम सबों को आशीर्वाद के साथ,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
२७ दिसम्बर १९७१

परम आदरणीय मालिक,

२३ तारीख का लिखा आपका व्यक्तिगत पत्र मिला। मैंने परसों यानी शनिवार की शाम को उमेश से लम्बी बातचीत की और कल सुबह इसी संबंध में श्री वीरराघवन से भी बातचीत की। उमेश को पिछले १५ दिनों से कोई परेशानी नहीं है। मुझे लगता है कि उसे अपनी खुराक को प्रभावी तरीके से नियन्त्रित करना चाहिये। आप उसे इस बात के लिये अपनी कृपापूर्वक सलाह दे सकते हैं। श्री वीरराघवन ने मुझे बताया कि एक बहुत अच्छे डाक्टर के द्वारा दी गयी तीन दवाइयों में से एक को उमेश ने बिना किसी से पूछे बन्द कर दिया। यह दवा रक्तस्राव रोकने के लिये थी। श्री वीरराघवन ने उनसे इसे पुनः शुरु करने का निवेदन किया है। श्री वीरराघवन उसके केस की जाँच होम्योपैथी के माध्यम से भी कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वे खुद उमेश का इलाज करना शुरु करेंगे क्योंकि उमेश भी होम्योपैथिक इलाज ही करवाना चाह रहे हैं। श्री वीरराघवन के अनुसार उमेश ने उन्हें बताया कि उसे बहुत सारी परेशानियाँ हैं, जिन्हें वह आपके सामने फरवरी में रखेगा और उसके अनुसार इन समस्याओं को आपके अलावा और कोई हल नहीं कर सकता। हम सभी को इस बात का दु:ख है कि उमेश इस मामले में हम लोगों को विश्वास में नहीं लेता। हमारी चाहे जो भी सीमा हो, हम आपकी कृपा से उसकी सहायता करने की कोशिश तो कर सकते हैं। सहायता के लिये भी वह आपसे सीधा संपर्क नहीं करता बल्कि दूसरों के माध्यम से आपसे संपर्क करने की कोशिश करता हुआ प्रतीत होता है। बेहतर होगा कि हममें से कुछ लोगों के सामने जो हर तरह से उसके शुभेच्छु हैं, वह अपना मन खोले। कृपया उसे इस बारे में सलाह दीजिये।

अगर आप जरूरी समझते हों तो पिताजी उसे डा. उमापति मुदालियार के पास ले जाना चाहेंगे। निस्संदेह वे मद्रास के सर्वोत्तम होम्योपैथ हैं। मैं इस संबंध में आपकी सलाह का इन्तजार कर रहा हूँ। लेकिन अगर उन्हें दिखाया जाता है तो उनके इलाज को ठीक से अपनाना होगा। हम सभी उमेश के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहे हैं। व्यक्तिगत रूप से मैं आपको यह यकीन दिलाता हूँ कि यह परेशान होने लायक कोई गम्भीर मामला नहीं है। केवल जिगर और

तिल्ली में थोड़ी गड़बड़ी है जो आसानी से ठीक हो सकता है। कई बार एक्स-रे कराया जा चुका है और सारे अंग स्वस्थ हैं। हम सब महसूस करते हैं कि खुराक पर उचित नियन्त्रण करने और दवा को ठीक से लेने पर वह एक महीने से कम समय में ही ठीक हो जायेगा। कृपया उमेश के बारे में परेशान मत होइये।

मि. जोर्न ३० तारीख को अपनी पत्नी से मिलने बम्बई जा रहे हैं, जो २ को वहाँ पहुँच रहीं हैं। वहाँ से दोनो बसंत उत्सव में शामिल होने के लिये आपके पास शाहजहाँपुर जायेंगे। मुझे उम्मीद है कि दोनो ७ को वहाँ पहुँचेंगे। वैसे जोर्न अपने पहुँचने की निश्चित तारीख खुद आपको बतायेंगे। दूसरे तीन थामस, वीबे और ओले १५ को मद्रास से चलेंगे और उत्सव में शामिल होने के लिये १८ को वहाँ पहुँचेंगे। हमें जानकर खुशी हुई कि श्रीमती किम्बाल आपका दर्शन करने आ रही हैं। मेरे पिछले दो पत्रों के कुछ प्रश्नों का जबाब अभी आपने नहीं दिया है। मेरी प्रार्थना है कि विस्तृत उत्तर दीजिये।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

১৯৮২

मद्रास
६ जनवरी १९७२

परम प्रिय मालिक,

आशा है आप स्वस्थ होंगे। मैं फिर एक हफ्ते के दौरे पर मदुरै, विरुधनगर, कोयम्बटूर, भवानीसागर, विरुधनगर, कोयम्बटूर, भवानीसागर (जहाँ हमारी पेपर मिल स्थित है), मैसूर और बंगलोर गया था। मंगलवार ४ तारीख की शाम को वापस लौटा तो पाया कि पिताजी बीमार होकर बिस्तर पर पड़े हैं। ऐसा लगा कि पिछले बुधवार को मेरे निकलने के दो दिन बाद ही वे बीमार हो गये। उन्हें १०४° बुखार हुआ और बुखार उतरने पर पुरानी मितली वापस आ गयी। २ जनवरी की रात उनके लिये संकटपूर्ण थी। इसके बाद उनमें पर्याप्त सुधार आया है। उन्होंने कल स्नान किया था लेकिन पिछली रात और आज फिर उनकी तबियत खराब हो गयी। उन्हें बहुत अधिक कफ, खड़खड़ाहट और खाँसी है, जिससे वे बहुत कमजोर हो गये हैं। आज उन्हें हल्का बुखार भी है। कल वे डा. उमापति मुदालियर के पास गये थे। डा. ने बताया है कि तंत्रिका तंत्र और संवाहन तंत्र आपस में बहुत नजदीक हैं और परस्पर प्रतिक्रिया कर रहे हैं इसलिये कफ, निद्राहीनता और कुछ रक्तप्रवाह की गड़बड़ी है। मालिक! हम सभी उनके बारे में चिन्तित हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं कि उन्हें स्वास्थ्य और लम्बा जीवन प्रदान करें।

सुलोचना मेरे न होने पर उनके साथ अकेले होने पर डरती है। पिताजी को बसंत पर मेरे शाहजहाँपुर जाने में कुछ संशय है। मैं केवल तभी आ सकता हूँ जब मेरे पिताजी पूरी तरह से स्वस्थ हों। मैं आपसे इसके लिये प्रार्थना करता हूँ क्योंकि मेरी आपसे मिलने की उत्कट अभिलाषा है। आपकी दिव्य उपस्थिति का आश्वासन और आपके सुख की कामना करता हूँ।

हम सभी जिनमें डेन्मार्क के लोग भी शामिल हैं, बीमार हैं। हमें खाँसी, जुकाम और बुखार है। लेकिन हम अगले कुछ दिनों में ठीक हो जायेंगे - ऐसी आशा है।

मैंने आपको पिछले हफ्ते दौरे पर जाने से पहले उमेश के बारे में एक पत्र लिखा था। आशा है कि आपको मिल गया होगा। मैं आपके निर्देश की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

मेरी निगाह बसंत उत्सव पर आपसे मिलने की ओर है। सबकी ओर से प्रेम!

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

तार : ७ जनवरी १९७२

पी. राजगोपालाचारी
पिताजी की अवस्था बताओ। उमेश के लिये उमापति का इलाज बेहतर।

रामचन्द्र

तार : ८ जनवरी १९७२

सहजमार्ग, शाहजहाँपुर
पिताजी कमजोर और १० दिनों से बिस्तर पर। सीने में जकड़न, खाँसी। हल्का बुखार रुका। उमेश के लिये उमापति के इलाज की व्यवस्था शीघ्र।

पार्थसारथी

मद्रास
१० जनवरी १९७२

परम आदरणीय मालिक,

आपके कृपापूर्ण टेलिग्राम के लिये आपका धन्यबाद। मैंने शनिवार को ही टेलिग्राम भेज कर इसका जबाब दे दिया था। पिताजी की अवस्था में सुधार हुआ है। हालाँकि उनके सीने में जकड़न और खाँसी अभी है। उम्मीद है कि आपकी कृपा से वे अगले ४-५ दिनों में बिल्कुल सामान्य हो जायेंगे।

मैं अपने दो मित्रों विरुधनगर के श्री वी. रामचन्द्रन और मद्रास के श्री टी. के. नरसिंहन के साथ १८ की रात को दिल्ली के लिये निकलने की योजना बना रहा हूँ। श्री आर. स्वामीनाथन और कलकत्ता के श्री ए. एन. रे भी शायद दिल्ली में होंगे। हम पाँचों २० तारीख की दोपहर उत्सव में शामिल होने के लिये शाहजहाँपुर पहुँचेंगे।

हम सभी दिल्ली तक प्लेन से और शाहजहाँपुर तक कार से यात्रा करेंगे।

आपका दर्शन जल्दी पाने की चाहत में,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. पी ८९/२६८/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
११ जनवरी १९७२

मिशन के समस्त प्रशिक्षकगण

मैंने पाया है कि जब भी अभ्यासी मेरे पास शाहजहाँपुर मुझसे मिलने आते हैं, सामान्यतया उन्हें अधिक सफाई की जरूरत होती है और इस कार्य में मुझ पर बहुत जोर पड़ता है क्योंकि वास्तविक आध्यात्मिक कार्य जिसके लिये अभ्यासी आते हैं, उसे शुरु करने के लिये पहले मुझे उनकी सफाई पर पर्याप्त ध्यान देना पड़ता है। इसके कुछ कारण हैं, जिन्हें मैं आपसबों के सामने रखना पसंद करूँगा :

- सामान्यतया प्रशिक्षक सोचते हैं कि वे अभ्यासी की अवस्था नहीं पढ़ सकते। मैंने बार-बार कहा है कि पढ़ने की शक्ति अभ्यास द्वारा आसानी से विकसित हो सकती है। जब प्रशिक्षक इस विचार के साथ कार्य शुरु करता है कि वह अभ्यासी की अवस्था नहीं पढ़ सकता तो उसके लिये अवस्था पढ़ना असम्भव हो जाता है। जरूरत इसकी है कि ट्रांसमिशन शुरु करें और कुछ मिनट बाद अभ्यासी की अवस्था पर इस दृढ़ इच्छा के साथ एकाग्र हों कि अवस्था प्रकट हो। ऐसा किया जाये तो अवस्था आसानी से पढ़ी जा सकती है।
- प्रशिक्षक के लिये कार्य में रुचि और गम्भीरता जरूरी है। वास्तविक पद्धति यह है कि जब आप ट्रांसमिट करते हैं, अभ्यासी की अवस्था में जो दिखे, उस पर एकाग्र हों। सामान्य तौर पर अधिक भारीपन पिण्ड प्रदेश में पाया जाता है। कभी-कभी इसकी प्रकृति बहुत कठोर होती है। पद्धति यह है कि सबसे पहले ५ मिनट के लिये ट्रांसमिशन दें फिर उसकी अवस्था पर एकाग्र हों। आपका अपना दिल भारीपन की प्रकृति के बारे में बतायेगा। इससे आपके दिल को भी संतुष्टि होगी कि आप उचित परिणाम तक पहुँचे। जैसे ही आप

अपनी आँखें किसी व्यक्ति को देखने के प्रयास में बन्द करते हैं, उसकी अवस्था की जानकारी होने की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से शुरु हो जाती है। शेष एकाग्रता पर निर्भर करता है। एकाग्रता किसी वस्तु को जानने का उपकरण मात्र है। इसका ईश्वर से कोई संबंध नहीं है।

- प्रशिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य अभ्यासी की सफाई करना है लेकिन इसे केवल औपचारिकतावश बिना इच्छाशक्ति के प्रयोग के किया जाता है। इसका मतलब यह होता है कि सफाई की क्रिया तो हुई लेकिन इससे उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। कम से कम १०-१५ मिनट सफाई पर समर्पित किया जाना चाहिये। कुछ मामलों में अधिक समय और ध्यान देने की जरूरत होती है।
- प्रशिक्षक के लिये त्याग जरूरी है और अभ्यासी को उसे स्वीकार करना भी जरूरी है। प्रशिक्षकों को मिशन और इसके काम को अपने काम की तरह समझना चाहिये। प्रशिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि वे चंचल और अनावश्यक गतिविधियों से दूर रहें। उन्हें कोशिश करनी चाहिये कि उनके जीवन के हर क्षण का उपयोग खुद के सुधार और दूसरों के बेहतरी के लिये हो। पूज्य लालाजी कहा करते थे कि जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं करना चाहिये। उन्होंने पूरे जीवन ऐसा ही व्यवहार किया।
- मैंने बहुत सारे प्रशिक्षक केवल अपना काम आसान करने के लिये नहीं बनाये बल्कि यह सोचकर बनाया कि इससे दूसरों को फायदा भी होगा। प्रशिक्षकों को खुद के सुधार के साथ काम करना चाहिये। अगर मुझे केवल रूपान्तरण और ईश्वर के उच्चतर क्षेत्रों तक ले जाने के लिये छोड़ दिया जाये तो कहा जायेगा कि कार्य का विभाजन ठीक तरह से किया गया है। मेरा मतलब यह नहीं है कि प्रशिक्षक यह कार्य नहीं कर सकते। वास्तव में मालिक जो कुछ भी करता है, प्रशिक्षक वह सब कुछ कर सकता है।

मैं आप सबों से गम्भीरतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि इन विन्दुओं पर आप ध्यान दें और अपने तथा मानवता के लाभ के लिये इस कार्य को गम्भीरतापूर्वक करें।

रामचन्द्र
प्रेसीडेन्ट

नं. सी २९८/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
१२ जनवरी १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा टेलिग्राम मिला। मुझे विश्वास है कि पिताजी के स्वास्थ्य में सुधार होगा। उनका स्वास्थ्य सुधरे!

यहाँ शाहजहाँपुर में अच्छी कॉफी नहीं मिलती। इसलिये कृपया वहाँ से तीन किलो कॉफी भेजने की व्यवस्था करो। यहाँ मूल्य चुका दिया जायेगा।

तुम सबको आशीर्वाद सहित,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

१७ जनवरी १९७२

परम आदरणीय मालिक,

मैं १०००/- रुपये का एक डिमाण्ड ड्राफ्ट, जिसका नम्बर ००६७५५ दिनांक १० जनवरी १९७२ है और जो आपके पक्ष में इलाहाबाद बैंक, शाहजहाँपुर पर देय है, भेज रहा हूँ। कृपया इसकी प्राप्ति कीजिये।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

होटल ब्राडवे, नयी दिल्ली
२६ जनवरी १९७२

परम प्रिय मालिक,

मुझे आपके निकट अत्यधिक आनन्द रहा। रविवार की सुबह जब मैं आपके पास से १० बजे चला तो मैं दिव्य नशे की अवस्था में था। जैसे मैं वास्तव में किसी दूसरी दुनिया में था हालाँकि इस दुनिया की चेतना भी मुझे थोड़ी-थोड़ी थी। मैं आपको लिखकर यह बताना चाह रहा था।

परम प्रिय मालिक! हम आज शाम को ४:०० बजे मद्रास के लिये रवाना हो रहे हैं। मैं मद्रास में आपके आने का बेसब्री से इन्तजार करूँगा। कल शाम को हम श्री वीरराघवन से मिलने गये थे। जब आप

दिल्ली से होकर गुजरेंगे वे आपको बेचैनी से दिल्ली में इन्तजार करते हुये मिलेंगे। वे ७ फरवरी १९७२ को डिस्चार्ज होंगे और इसके बाद अपने चचेरे भाई श्री सारंग राजन के यहाँ आर. के. पुरम में रुकेंगे।

कृपया आप अपने साथ श्री पोरे का वह निमंत्रण पत्र लेते आइयेगा जो उन्होंने मेरे लिये भेजा है।

प्रेम सहित प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ३१२/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
३० जनवरी १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैं दिल्ली से प्लेन से चलकर १५:२० पर मद्रास पहुँचूँगा। यह समय प्लेन के टाइमटेबुल के अनुसार है। प्लेन दिल्ली से १२:२० पर चलता है। श्रीमती ग्रेस किम्बाल १३ फरवरी को १:०५ पर मद्रास पहुँच रही हैं। मैं एयरपोर्ट पर ही उनका स्वागत करूँगा।

उन्होंने यू.एस.ए. में हमारे प्रवेश के लिये पूरी तरह भरा हुआ शपथ पत्र भेजा है और दूतावास को भी सूचना दे दी है। मेरा विश्वास है कि दूतावास में इन कागजों को दिखाने पर हमें आसानी से वीसा मिल जायेगा। उन्होंने हमें यह भी लिखा है कि अगर आपको कोई परेशानी हो तो आप मेरे पति का नाम ले सकते हैं। मैं यह सारे कागज उन्हें दिखाने के लिये ले आऊँगा।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मि. जी. सी. आथानास्सोलिस, इन्टरनेशनल हॉल, ब्रुन्सविक स्कवायर, लन्दन, डब्ल्यू.सी.आई. के पत्र की प्रति

---

२३ जनवरी १९७२

प्रिय मालिक,

आशा है कि आपको श्रीमती वेरा डेविश का पत्र मिला होगा, जिसमें उन्होंने मेरे बारे में लिखा है।

आशा है कि आप मुझे अपना शिष्य स्वीकार करेंगे और इसके लिये मैं आपको धन्यबाद देता हूँ।

मेरी नागरिकता ग्रीक है और मैं २९ साल का हूँ। मेरा व्यवसाय सिविल इन्जीनियर और कम्प्यूटर साइन्टिस्ट का है।

छोटी उम्र से ही एप्लाइड साइन्सेज से जुड़ा होने के बावजूद मेरा संबंध दार्शनिक सवालों और कठिनाइयों से रहा है। मैं शुरु से ही जीवन के सच्चे अर्थों को समझने की कोशिश करता रहा हूँ। ब्रह्माण्ड की रचना और इन जटिलताओं का क्या रहस्य है? अपने लिये भी मैं आध्यात्मिक मार्ग पाने की कोशिश करता रहा हूँ।

मैंने बहुत से सिद्धान्त और दृष्टिकोण पढ़े हैं, जिनसे मेरे कुछ प्रश्नों का समाधान भी हुआ या मेरे चरित्र का सुधार भी हुआ लेकिन कुल मिलाकर अभी भी मैं महसूस करता हूँ कि अभी मुझे बहुत लम्बा रास्ता तय करना है।

आपके मिशन में आने के बाद मुझे उम्मीद है कि मुझे अध्यात्म का रास्ता मिलेगा और हमारे अस्तित्व एवं चारो ओर की दूरियों से संबंधित कुछ मूलभूत प्रश्नों का उत्तर भी हमें मिलेगा।

एक बार फिर मैं आपके प्रति अपना आदर और कृतज्ञता व्यक्त करना पसन्द करूँगा।

भवदीय

जी. एस. आथानास्सोलिस

नं. सी ३२०/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**

१ फरवरी १९७२

मेरे प्रिय जी. एस. आथानास्सोलिस,

आपका प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मुझे खुशी है कि आपने अभ्यास शुरु किया है। मुझे पूरा यकीन है कि आप कुछ ही दिनों में पद्धति का महत्व जान जायेंगे। अगर आपने हमारी सेवाओं को स्वीकार किया है तो इसका सीधा मतलब यह है कि आप हमारे साथ हैं।

हो सकता है कि मैं अपने आप को सर्वश्रेष्ठ मालिक सिद्ध न कर सकूँ लेकिन आपका अनुभव मुझे सर्वश्रेष्ठ सेवक के रूप में स्वीकार करेगा। आपके पास बहुत से प्रश्न हैं लेकिन कुछ दिनों का अभ्यास करने के बाद वे सभी हल हो जायेंगे।

जीवन वास्तव में अस्तित्व में होने की जागृति है। यह अर्थपूर्ण है। आपको जीवन में केवल जीवन को ढूँढ़ना है और यह खोज आपको जीवन तक ले जाती है जो इस सारे जीवनों का कारण है। जीवन का वास्तविक अर्थ उच्चतर जीवन (*जो जीवन में जीवन है*) की खोज करना है।

मैं बहुत जल्दी ब्रह्माण्ड और इसकी जटिलता पर आ रहा हूँ। जब सृष्टि का समय परिपक्व हुआ, उच्चतम ऊर्जा या शक्ति केन्द्र से शुरु हुई। इसे आप उच्चतम शक्ति, केन्द्र, ईश्वर या कुछ भी कह सकते हैं। जब सृष्टि के लिये ऊर्जा की बरसात हुई, सृष्टि शुरु हुई। इसके नीचे आने पर मन का विकास हुआ, जो मनुष्य के हिस्से में आया। चिन्तन शुरु हुआ और लोगों ने गलत-सही सोचना और एक दूसरे को प्रभावित करना शुरु किया। यह अच्छी और बुरी सोच ही परेशानी और कष्ट की समस्त जटिलताओं का कारण थे। इस प्रकार *जटिलतायें हमारी अपनी सृष्टि हैं।* हमारा कर्तव्य है कि हम दुनिया को उतनी अच्छी बनाये रखें जितनी अच्छी यह शुरु में थी।

मन द्वारा रचित सारे इन्सानी चीजों को ठीक करने के लिये अध्यात्म आगे आता है - चाहे वे जटिलतायें या विषमतायें ही क्यों न हों। इसलिये आदमी भी संसार के लिये उपयोगी हो जाता है। लोग यह भी कहते हैं कि ईश्वर ने ऐसी दुनिया की सृष्टि ही क्यों की जो परेशानी और तकलीफों से भरी हुई है। लेकिन इसके लिये ईश्वर जिम्मेदार नहीं है बल्कि हम खुद ही इसके लिये जिम्मेदार हैं क्योंकि यह हमारी रचना है।

श्रीमती वेरा डेविश आपके आध्यात्मिक प्रयत्नों में आपकी बहुत मददगार होंगी। मैं भी लन्दन आ रहा हूँ। सम्भवत: मैं अप्रिल १९७२ के आखिरी हफ्ते में यहाँ से चलूँगा। मेरे आगमन की जानकारी आपको बहन वेरा डेविश देंगी।

आशीर्वाद सहित,

भवदीय
रामचन्द्र

१०, किट्जान्स एवेन्यू
लन्दन, एन.डब्ल्यू.३

प्रिय मालिक,

भारत की अपनी इस यात्रा में मैं आपके एक शिष्य से मिला, जो आपके घर आपसे मिलने जा रहा था। उसने आपकी ध्यान की पद्धति के बारे में मुझे बहुत कुछ बताया। भारत में युद्ध छिड़ जाने से मैंने वापस लन्दन लौट जाने का निर्णय लिया। उन्होंने मुझे इंग्लैंड के प्रशिक्षक का पता दिया ताकि अगर मैं इस संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहूँ और इस पद्धति को स्वीकार करना चाहूँ तो ध्यान शुरु कर सकूँ। यहाँ वापसी के बाद मैंने श्रीमती वेरा डेविश के यहाँ टेलिफोन किया और चर्चा के बाद मैंने प्रथम ध्यान का समय निर्धारित करा लिया। यह सिटिंग कल शाम को प्रथम यौगिक ट्रांसमिशन के साथ शुरु हुई। मैंने औपचारिक रूप से इसके पहले कभी भी ध्यान नहीं किया था। ध्यान करीब आधा घंटा चला और इसका परिणाम मुझे आश्चर्य में डाल देने वाला था। मैं अपनी याद्दाश्त के मुताबिक ध्यान की व्याख्या कर रहा हूँ। मुझसे हृदय पर ध्यान करने के लिये कहा गया जो मैं बहुत आसानी से कर पाया। मैंने हृदय को स्लेटी श्वेत प्रकाश में एक अस्तित्व के रूप में देखा। कुछ देर बाद मुझे कम्पनों की एक श्रृंखला महसूस हुई जो मेरे शरीर से अनुनाद की तरह होकर गुजरी। यह रुकी और एक क्षण बाद मेरे सीने में हृदय के रिक्त स्थान में आहिस्ते से प्रकाश फूट पड़ा। इसमें मुख्य रूप से लाल, पीले और सफेद रंगों के कणों की एक श्रृंखला थी, जिसकी संरचना परिवर्तित हो रही थी। हृदय को भरने के बाद यह मेरे शरीर के बायीं और दायीं ओर फैलना शुरु हुई और एक प्रकार का स्नेह और दया उसमें भरती गयी। यह मेरे सिर तक पहुँच गया। ऐसा ध्यान के आखिर तक बना रहा। इसके बाद अचानक मुझे ऐसा लगा कि मेरा मस्तिष्क मेरे सिर के पीछे स्थित एक काले शून्य में समाता जा रहा है और पीछे-पीछे मेरा शरीर भी उसी में भरता जा रहा है। इससे मुझे कुछ डर लगा क्योंकि मुझे लगा कि मैं भावसमाधि में जा रहा हूँ और अब सामान्य विवेक से नहीं सोच रहा हूँ। मैंने थोड़ी परेशानी के साथ प्रक्रिया को उलट कर रोक दिया। ऐसा करने के कुछ देर बाद फिर से यही चीज हुई। इस बार अंतर केवल इतना था कि मैं यह महसूस कर रहा था कि मैं इसे रोक नहीं सकता। इसी विन्दु पर श्रीमती डेविश ने ध्यान रोक दिया।

इसके परिणामस्वरूप मुझे यह अहसास हुआ कि वे यह जानती थीं कि क्या हुआ है और जिन स्थितियों का अनुभव मैंने किया, उन्हें शायद उन्होंने ही मुझमें डाला था। मैंने एक बार यह सोचा कि क्या हुआ है और फिर मैंने उनसे यह बताया कि मुझे ध्यान में यह अनुभव हुआ है और मैंने बीच में ध्यान तोड़ देने की बात भी सोची थी। आपस में हमारी बात होने के बाद यह निर्णय लिया गया कि आपको लिखकर आपकी राय लेना लाभकारी होगा। इसकी वजह से मैंने यह पत्र आपको लिखा है और मैं उनके साथ ध्यान करना तब तक के लिये बन्द कर रहा हूँ जब तक मैं इसे करने के लिये फिर से तैयार नहीं हो जाता। मैं अपने विचारों में बहुत स्वतंत्र हूँ और अगर आप बुरा न मानें तो मैं इस घटना के बारे में आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ :

- मैं किसी भी तरह किसी औपचारिक धर्म को नहीं अपनाऊँगा। मैं केवल खुद के अनुभवों और अन्तर्ज्ञान पर भरोसा करता हूँ इसलिये सामूहिक ध्यान या किसी अन्य व्यक्ति के साथ ध्यान करना मुझे तब तक के लिये अनाकर्षक लगेगा जब तक मुझे वह व्यक्ति आपके स्तर का उच्च आध्यात्मिक योग्यता वाला न महसूस हो।
- मेरी निर्भरता बहुत जरूरी ट्रांसमिशन के अलावा किसी प्रशिक्षक पर होना मेरे लिये ठीक नहीं है। मैं प्रशिक्षक को अपने और मालिक के बीच में एक सम्पर्क के रूप में नहीं मानूँगा। उसे आपकी जगह केवल एक सलाहकार मानूँगा। क्या यह सम्भव है? यह निर्धारित करने का क्या मानदण्ड है कि व्यक्ति को प्रशिक्षक की जरूरत है? श्रीमती डेविश ने हफ्ते में एक बार साथ ध्यान करने की सलाह दी है। मेरे लिये तो यह बहुत अधिक निर्भरता है। मैं इस बात पर जोर देना पसंद करूँगा कि जो विचार मैंने यहाँ व्यक्त किया है, वह किसी भी तरह आपके लिये या श्रीमती डेविश के लिये व्यक्तिगत नहीं हैं। मैं उनका बहुत सम्मान करता हूँ।
- क्या प्रार्थना की औपचारिकता और दस उसूलों के बिना आपकी पद्धति का अनुसरण किया जा सकता है? मुझे तो दस उसूल सार्वभौमिक सत्य लगते हैं। प्रार्थना मुझे औपचारिक पद्धति में डालती है और मैं सिद्धान्ततः इसके खिलाफ हूँ।
- हालाँकि मैं कभी भी आपसे मिला नहीं हूँ लेकिन मेरे मन में आपके प्रति उच्चतम आदर है। अगर कभी आप लन्दन आयें और मैं

आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहूँ तो आपकी क्या टिप्पणी होगी?

- आशा है कि आप इस बात का बुरा नहीं मानेंगे कि मैंने आपको इतना खुलकर लिखा। आपकी पद्धति से अपने आपको प्रतिबद्ध करने से पहले मैं यह जानना पसन्द करूँगा कि आप मुझसे क्या उम्मीद रखते हैं और आपके और मेरे बर्ताव में क्या तालमेल होगा? मैं अभी किसी भी धर्म से नहीं जुड़ा हूँ और मैंने अपना मन बना लिया है कि मार्गदर्शन के अधीन होकर मैं अपने रास्ते पर चलूँगा। अपना पिछला जीवन, अतीत के जन्मों को बताने वाले ज्योतिषियों, रहस्य या ऐसी किसी भी चीज से मेरा कोई मतलब नहीं होगा। मेरा मानना है कि प्रासंगिकता केवल इस बात की है कि जो भी किया जाये, सही हो, अच्छा सोचा जाये और अभी इतना ही काफी होगा। इसी कारण से मैं ध्यान करना चाहता हूँ क्योंकि मैं सोचता हूँ कि इससे सत्य को जानने का उचित दृष्टिकोण प्राप्त होता है और इससे आंतरिक शान्ति और स्पष्ट मन को पाया जा सकता है। गीता और उपनिषद आदि अत्यधिक सुन्दरता से लिखे गये ग्रन्थ हैं, जिनके अलावा इस विषय पर मैं अन्य कोई ग्रन्थ नहीं पढ़ना चाहता।

मैं अपने पत्र पर आपकी टिप्पणियों और आपका जबाब सुनने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। अगर आप मुझे गलत समझें तो जरूरी समझकर जो मार्गदर्शन देंगे, उसे मैं स्वीकार करूँगा।

भवदीय
रानमेण्डेल्सन

न. सी ३२१/एस.आर.सी.एम. — शाहजहाँपुर
२ फरवरी १९७२

मेरे प्रिय रानमेण्डेल्सन,

आपका ७ जनवरी १९७२ का पत्र मिला। आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में आपने ध्यान के दौरान जो महसूस किया, उसके लिये मुझे आपको बधाई देनी चाहिये। बहन वेरा डेविश भी प्रशंसा के योग्य हैं।

आप वास्तव में बहुत संवेदनशील और दर्शन के प्रशंसक हैं। मैं ***भारतीयों जैसा हृदय और यूरोपियनों जैसा मस्तिष्क*** चाहता हूँ। अगर मेरे साथ शुरु में ऐसा हुआ होता तो मैं परिणाम की चिन्ता किये बिना

ही इसमें कूद गया होता। पद्धति में कोई खतरा नहीं है। हर चीज हमारी बेहतरी के लिये आती है और जब हम लगातार सत्य से जुड़े रहते हैं तो इसका बड़ा हिस्सा प्राप्त कर पाते हैं। वस्तुतः समस्त क्षमताओं के नियमन की जरूरत है।

सहजमार्ग पद्धति जीवन का एक मार्ग है, कोई धर्म नहीं। यह हमें सिखाता है कि हम अपनी क्षमताओं का उचित प्रयोग कैसे करें। मेरे मत में क्षमताओं का उचित प्रयोग ही संत का गुण है और यह तभी हो सकता है जब हमारा मन पूरी तरह से पवित्र और संतुलित हो। मैं आपकी स्वतंत्रता में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता लेकिन इसका नियमन किया जाना है। मन का नियमन क़रना शिक्षक का कर्तव्य है क्योंकि शिष्य उसके पास इसी उद्येश्य से आता है। निस्संदेह खुद भी प्रयास करने की जरूरत होती है और अभ्यासी से इसकी उम्मीद भी की जाती है लेकिन अगर मन को व्यवस्थित करने में हमें किसी की सहायता मिले तो बुद्धिमानी इसी में है कि हम अपने फायदे के लिये उस व्यक्ति को अपना लें।

अब मैं आपके सवालों पर आता हूँ। यह इतना बेहतरीन पत्र है कि इसे मैं जितनी बार पढ़ता हूँ, उतना ही मजा आता है। आपने धर्म के बारे में पूछा है तो मैं आपके सामने खुद को खोलना चाहता हूँ क्योंकि मुझे अब ऐसा आदमी मिला है जो मेरे विचारों से सहयोग कर रहा है। ***दुनिया के हर धर्म का आधार भय और लालच है - स्वर्ग का लालच और नरक का भय। अध्यात्म में इन चीजों के लिये कोई जगह नहीं है। मैंने कहीं लिखा भी है कि जहाँ धर्म खत्म होता है अध्यात्म वहाँ शुरु होता है।*** लिखते समय जब भी मेरा ध्यान इस सुंदर पत्र की तरफ जाता है, मैं आपको गले से लगा लेना चाहता हूँ। ***प्रशिक्षक मिशन की ऐसी धमनियाँ हैं जो दिल से जुड़ी हुई हैं।***

वास्तव में कहा जाये तो प्रार्थना में हम भीख माँगते हैं और ध्यान में कुछ प्राप्त करते हैं। ***ध्यान मन, बुद्धि और विवेक को ठीक से व्यवस्थित करने के लिये जरूरी है।*** जब हम किसी चीज का अनुसरण करते हैं तो अपने लिये अनुकूल सारी बातों को पाने की कोशिश करते हैं।

अगर कोई ध्यान करता है तो वह अन्जाने ही दस उसूलों का पालन करना शुरु कर देता है।

अनिवार्यता स्वयं में एक बंधन है क्योंकि उस स्थिति में स्वतंत्रता नहीं होती लेकिन स्वतंत्रता लाने के लिये कुछ बंधन जरूरी हैं और इसीलिये व्यवहार के नियम बनाये गये हैं। स्वतंत्रता से स्वतंत्रता ही असली स्वतंत्रता है। जहर व्यक्ति को मारता है लेकिन अगर इसकी खुराक उचित हो तो यह बीमारी को भी दूर करता है। आप अपने पत्र के जबाब में मुझसे जा जानना चाहते हों, यह अगर उससे कुछ अलग हो तो मुझे क्षमा कीजियेगा।

मुझे देखने तो बहुत से लोग आते हैं लेकिन कोई मुझे नहीं देखता। वे भी उन्हीं के समान हैं जो मेरे पास नहीं आये। कृपया आप मुझे बतायें कि ऐसे मामले में मेरी क्या प्रतिक्रिया होगी।

पिछले जन्मों का ज्ञान, अतीत के जन्मों का ज्ञान, ज्योतिष यह ज्ञान की केवल एक शाखा है, सत्य तो इससे बहुत दूर है। ये चीजें शान्त पानी में कम्पन पैदा कर देती हैं। इसलिये इनका परित्याग करके आप ठीक ही कर रहे हैं।

गीता, उपनिषद और कुछ अन्य पुस्तकों को मैंने समय बिताने के ख्याल से पढ़ा है। *''किताबें साक्षात्कार में हमारी मदद नहीं करतीं और साक्षात्कार के बाद ये बेकार हो जाती हैं।''*

आपकी अनुमति से मैं यह कहना पसंद करूँगा कि निस्संदेह आप एक स्वतंत्र विचारक हैं लेकिन थोड़ा-थोड़ा मैं भी हूँ। अब निर्णय आपको करना है कि आपके और मेरे बर्ताव में कितना तालमेल है।

मैं ११ फरवरी १९७२ को मद्रास में होऊँगा और पूरे एक महीने वहाँ रहूँगा। अगर आप मुझे कुछ लिखना चाहें तो निम्न पते पर लिख सकते हैं :

C/o पी. राजगोपालाचारी
''गायत्री''
११/ई नार्थ स्ट्रीट,
श्रीरामनगर, मद्रास - १८

भवदीय
रामचन्द्र

समस्त केन्द्रों के प्रशिक्षक इन्चार्ज

२१ फरवरी १९७२

२१ जनवरी १९७२ को मिशन के हेडक्वार्टर पर हुई वर्किंग कमिटी की मीटिंग में हुई बातचीत के आधार पर निम्न विषयों को आपके सम्मुख रखा जा रहा है, जिससे आप इन चीजों का ध्यान रखते हुये ज़रूरी कार्यवाही करें।

- प्रेसीडेन्ट ने एक ऑर्गनाइजेशनल सब-कमिटी गठित की है, जो मिशन के संगठन से संबंधित सारे मामलों पर मार्गदर्शन और निर्देश प्रदान करेगी। वर्किंग कमिटी की मीटिंग में ऑर्गनाइजेशनल सब-कमिटी की रिपोर्ट तथा उसके द्वारा स्टेट ऑर्गनाइजर्स को नियुक्त किये जाने की संस्तुतियों पर भी विचार किया गया और निम्नलिखित व्यक्तियों को स्टेट ऑर्गनाइजर नियुक्त किया गया :

श्री उमाशंकर आर्य	**उत्तर प्रदेश**
श्री दयाभाई बी. पटेल	**आसाम**
श्री बी. डी. महाजन	**दिल्ली और हरियाणा**
श्री एच. जोगाराव	**आन्ध्रप्रदेश**

अन्य राज्यों के लिये स्टेट ऑर्गनाइजर्स की नियुक्ति समय के साथ की जायेगी। भारत के चार दक्षिणी राज्यों के स्टेट ऑर्गनाइजर्स सीधे सचिव श्री पी. राजगोपालाचारी, मद्रास को रिपोर्ट करेंगे जबकि भारत के अन्य राज्यों के स्टेट ऑर्गनाइजर्स सीधे ज्वाइंट सेक्रेटरी श्री जे. आर. के. रायजादा, शाहजहाँपुर को रिपोर्ट करेंगे। यह भी निर्णय लिया गया कि रायचूर के श्री राघवेन्द्र राव स्टेट ऑर्गनाइजर की नियुक्ति होने तक मैसूर राज्य में मिशन की समस्त गतिविधियों का समन्वय करेंगे।

एकाउन्ट्स

- इस बात पर अफसोस व्यक्त किया गया कि अतीत में सेक्रेटरी के निवेदन के बावजूद बहुत से सेन्टर्स ने अब तक अपने वार्षिक रिपोर्ट्स और लेखा विवरण भेजने नहीं शुरु किये हैं जबकि इस

संबंध में वर्किंग कमिटी पहले भी प्रस्ताव पास कर चुकी है। इससे हेडक्वार्टर के स्तर पर वार्षिक एकाउन्ट्स को तैयार करने में गम्भीर परेशानी होती है। वास्तव में यह एकाउन्ट सारे केन्द्रों के एकाउन्ट्स स्टेटमेन्ट आने के बाद ही पूरा होता है।

- हर सेन्टर के प्रशिक्षक इन्चार्ज कृपया यह ध्यान रखें कि भविष्य में एकाउन्ट्स का वार्षिक स्टेटमेन्ट हेडक्वार्टर पर हर साल ३१ अक्टूबर तक जरूर पहुँच जाये।
- विशेषकर निम्नलिखित केन्द्रों का ध्यान इस मामले की ओर आकर्षित किया जा रहा है, जिन्होंने वर्ष १९७१ के लिये एकाउन्ट नहीं भेजा है :

१. कैन्थ	४. लखीमपुर खीरी
२. बहराइच	५. बीदर
३. सेदम	६. नारायणपुर

लालाजी महाराज की जन्म शताव्दी समारोह का आयोजन

- शताब्दी का वर्ष १९७२ की बसंतपंचमी के दिन से शुरु हो गया है। शताब्दी वर्ष को निम्न प्रकार से मनाये जाने का प्रस्ताव है :
- हर सेन्टर सेक्रेटरी/ज्वाइंट सेक्रेटरी के परामर्श से एक या इससे अधिक विशेष जनसभाओं का आयोजन करेगा। कार्यक्रम को इस प्रकार से निश्चित किया जायेगा कि पूरे साल किसी न किसी सेन्टर पर उत्सव हो। सारे सेन्टर्स से निवेदन है कि वे इस संबंध में तत्काल अपने प्रस्ताव सेक्रेटरी/ज्वाइंट सेक्रेटरी को भेजें। जहाँ स्टेट ऑर्गनाइजर्स की नियुक्ति कर दी गयी है, वहाँ इस संबंध में उनसे भी परामर्श लिया जा सकता है।
- १९७३ के बसंतपंचमी पर ग्रैन्ड मास्टर समर्थ गुरु महात्मा श्री रामचन्द्रजी महाराज, फतेहगढ़ (यू.पी.) का १०१वाँ जन्मोत्सव मनाया जायेगा और निम्न कार्यक्रम होंगे :
- इस दिन एक विशेष शताब्दी स्मारिका का विमोचन किया जायेगा। इस स्मारिका में महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों और भारत एवं विदेश के प्रशिक्षकों के लेख सम्मिलित होंगे। मिशन के सदस्यों और प्रशिक्षकों से निवेदन किया जाता है कि वे इस स्मारिका के लिये विज्ञापन इकठ्ठा करने में सहयोग करें।

इस विषय में समुचित जानकारी जैसे स्मारिका में विज्ञापन की दरें, स्थान रिजर्व करने के फार्म आदि विवरण होंगे, भेजी जायेंगी। स्मारिका का सम्भावित मूल्य भी बताया जायेगा जिस पर यह अभ्यासियों को उपलब्ध करायी जायेगी।

- बसंतपंचमी १९७३ पर एक विशेष आध्यात्मिक डायरी का भी विमोचन किया जायेगा और उम्मीद है कि इसका मूल्य १०/- रुपये होगा। अंतिम रूप से मूल्य के निर्धारित हो जाने पर इसकी सूचना दी जायेगी। आशा की जाती है कि मिशन का प्रत्येक सदस्य इसकी एक प्रति अपने उपयोग के लिये अवश्य लेगा।

हेडक्वार्टर पर आश्रम भवन का निर्माण

- इसके स्वीकृत निर्माण में अनुमानत: १० लाख रुपये की लागत आयेगी, जिसमें केवल ध्यान कक्ष के निर्माण में ही ३ लाख रुपये खर्च होने का अनुमान है। प्रेसीडेन्ट को इस बात की संस्तुति कर दी गयी है कि मिशन के पास पर्याप्त कोष न होने पर भी इसका निर्माण कार्य शुरु कर दिया जाना चाहिये। इसके लिये कोष का संग्रह भी साथ-साथ किया जायेगा।
- मिशन के सारे प्रशिक्षकों से अनुरोध किया जाता है कि वे इसके लिये आवश्यक डोनेशन इकठ्ठा करने में सहयोग करें।

प्रकाशन

- सारे सेन्टरों से अनुरोध है कि वे तुरंत अपने प्रकाशन का कार्यक्रम भेजें। जहाँ स्टेट ऑर्गनाइजर हैं, वहाँ का कार्यक्रम उनके मार्फत भेजा जाये। जहाँ ऑर्गनाइजर्स नहीं हैं, वे मद्रास में सेक्रेटरी को अपना प्रकाशन कार्यक्रम भेजें जबकि ऑर्गनाइजर्स वाले स्टेट्स अपना प्रकाशन कार्यक्रम ज्वाइंट सेक्रेटरी को भेजें। स्टेट ऑर्गनाइजर्स भेजे गये प्रकाशन कार्यक्रम की जाँच करने और प्रकाशित होने की उनकी योग्यता का निर्धारण करने के लिये अधिकृत हैं। स्टेट ऑर्गनाइजर्स केवल ऐसे लेखों को सेक्रेटरी/ज्वाइंट सेक्रेटरी के पास भेजें, जिन्हें वे प्रकाशन के लिये उचित समझते हों। यह निर्णय छपने वाली सारी सामग्री पर लागू

होगा, जिसमें साधारण लीफलेट, बुकलेट या किसी भी भाषा में बड़ा प्रकाशन सम्मिलित है।

सेन्टर्स के प्रशिक्षक इन्चार्जों को सामान्य निर्देश

- प्रशिक्षकों को चाहिये कि वे अभ्यासियों को मिशन की गतिविधियों में भाग लेने के लिये उत्साहित करें।
- प्रशिक्षकों को यह कोशिश भी करनी चाहिये कि सदस्य मिशन की सारी गतिविधियों में सक्रिय रूप से हिस्सा ले और मिशन की सहायता करे।
- प्रशिक्षकों को अपने सेन्टर का काम नियुक्त किये गये स्टेट ऑर्गनाइजर्स के साथ नजदीकी समन्वय बनाकर करना चाहिये।
- हर सेन्टर यह बताये कि वह हेडक्वार्टर को नियमित रूप से कम से कम कितनी वार्षिक धनराशि देगा, जिससे हेडक्वार्टर पर वार्षिक व्यय का प्रावधान किया जा सके और सेन्टर्स खुद आत्मनिर्भर होने के अलावा हेडक्वार्टर की जरूरतों को पूरा करने में भी अपनी हिस्सेदारी निश्चित कर सकें।
- हेडक्वार्टर और सारे सेन्टर पत्रों के रजिस्टर बनायें, जिनसे जरूरत पड़ने पर यह विवरण मिल सके कि कितने, कहाँ से और किसके पत्र आये। रजिस्टर में एक अलग कॉलम तारीख का भी हो, जिससे यह पता चल सके कि किस तारीख को जबाब दिया गया। सारे सेन्टर्स पर उचित कार्यालयीन प्रक्रियाओं का विकास किया जाना चाहिये।

हेडक्वार्टर पर यात्रा

- सबको यह सूचित किया गया था कि हर महीने १० से २० तारीख के बीच कोई भी शाहजहाँपुर मिलने न जाये, जिससे परम आदरणीय मालिक शारीरिक रूप से आवश्यक आराम कर सकें। अफसोस की बात है कि सेन्टर्स के प्रशिक्षक इन्चार्जों और सदस्यों ने इस मामले की गम्भीरता को नहीं समझा है। तत्काल प्रभाव से ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि हेडक्वार्टर की सारी यात्रायें सेन्टर इन्चार्जों के द्वारा ही प्रायोजित हों। सेन्टर इन्चार्जों को यह बात आवश्यक रूप से समझ लेनी चाहिये कि १० से २० तारीख के बीच

किसी को भी हेडक्वार्टर पर जाने की अनुमति नहीं दी जानी है। इस मामले में सारे प्रशिक्षकों से सहयोग की अपेक्षा है।

प्रेसीडेन्ट के आदेश से,

प्रतिलिपि :
समस्त प्रशिक्षकगण

पी. राजगोपालाचारी
सेक्रेटरी

मद्रास
१० मार्च १९७२

परम आदरणीय मालिक,

हम सबों को आशा है कि आपकी शाहजहाँपुर तक की वापसी की यात्रा आरामदेह और सुरक्षित रही होगी। हमें यह जानकर खुशी है कि वीसा का काफी काम पूरा हो गया है। मेरे कागज पी. फार्म की स्वीकृति के लिये रिजर्व बैंक, बम्बई को भेज दिये गये हैं, जहाँ इसे १० दिन और लग सकते हैं।

श्रीमती वेरा डेविश ने आपके दौरे के समय वितरित करने के लिये एक लीफलेट की सामग्री माँगी है। मैंने उन्हें एक लेख भेज दिया है, जिसकी एक प्रति मैं आपको देखने के लिये भेज रहा हूँ। जरूरी होने पर आप इसमें संशोधन कर सकते हैं।

हम सभी की ओर से प्रणाम और प्रेम,

संलग्नक : उपरिलिखित

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

श्री रामचन्द्र मिशन

प्रेसीडेन्ट :
एच. एच. श्री रामचन्द्र जी महाराज
प्रशिक्षक इन्चार्ज :
श्रीमती वेरा डेविश

लन्दन सेन्टर :
१९ मार्लवोरो प्ल.
सेन्ट जान्सवुड
लन्दन एन. डब्ल्यू ८

मिशन और इसकी गतिविधियाँ

- **मालिक** : मि. रामचन्द्र, जिन्हें भारत में श्री रामचन्द्र जी के नाम से जाना जाता है, श्री रामचन्द्र मिशन के संस्थापक प्रेसीडेन्ट हैं।

इनका हेडक्वार्टर भारत के राज्य उत्तर प्रदेश में शाहजहाँपुर नामक शहर में है। ये ७२ साल के हैं और इसमें से ५० साल से भी ज्यादा इन्होंने राजयोग की अद्वितीय पद्धति, जिसे सहजमार्ग के नाम से जाना जाता है, के अधीन पूर्णता प्राप्त करने की कला के विकास में लगाये हैं। इसे वे मोक्ष और आत्म-साक्षात्कार के लिये प्रयास करने वाले आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को उपलब्ध करा रहे हैं।

इन्होंने पहले अपने मालिक के अधीन इस योग का खुद अभ्यास किया। इनके मालिक भी भारत के राज्य उत्तर प्रदेश के फतेहगढ़ नामक स्थान के रहने वाले थे और उनका नाम भी श्री रामचन्द्र ही था। इन्होंने अपने मालिक के नाम पर ही इस मिशन की स्थापना की, जिससे आध्यात्मिक साधना की इस विलक्षण पद्धति को जन सामान्य को उपलब्ध कराया जा सके।

मालिक एक कुशल गृहस्थ हैं और अपने परिवार के साथ रहते हैं। इनका बल हमेशा इस बात पर होता है कि किसी भी लिंग के सामान्य गृहस्थ के लिये यह पद्धति सर्वथा अनुकूल है।

- **मिशन** : मिशन की स्थापना १९४५ में हुई और भारतीय कानून के तहत इसे मान्यताप्राप्त संस्था के रूप में पंजीकृत कराया गया। मालिक इसके संस्थापक प्रेसीडेन्ट हैं। इस समय भारत में मिशन के ४५ केन्द्र हैं और १४ केन्द्र विदेश में हैं। ये केन्द्र प्रशिक्षकों के माध्यम से आध्यात्मिक जिज्ञासुओं को प्रशिक्षित करते हैं। प्रशिक्षकों का चयन अभ्यास करने वाले जिज्ञासुओं में से ही किया जाता है। चुने गये अभ्यासियों को विशेष रूप से प्रशिक्षित करके, शक्ति देकर दूसरे अभ्यासियों को प्रशिक्षित करने की अनुमति दी जाती है। सारी दुनिया में इस समय मिशन के करीब १२० प्रशिक्षक हैं। स्वाभाविक रूप से इनमें से ज्यादातर भारत में हैं। मिशन केवल आध्यात्मिक कार्य-कलापों में ही संलग्न है। सहजमार्ग पर खुद मालिक की और प्रशिक्षकों की लिखी पुस्तकें हैं। मिशन इन पुस्तकों के अलावा सहजमार्ग नामक एक मासिक पत्रिका भी निकालता है।
- **पद्धति** : मिशन के द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक प्रशिक्षण की पद्धति बिल्कुल व्यावहारिक है। आध्यात्मिक अभ्यास ही किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास का आधार है, जिसके लिये दर्शन शास्त्र, धार्मिक ग्रन्थों या वाह्य ज्ञान की न तो कोई जरूरत है और न ही इसकी कोई जरूरत होनी चाहिये। मालिक के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों में से

एक यह है कि यह सबको उपलब्ध होना चाहिये और इसके लिये उनकी जाति, रंग, व्यवसाय, शैक्षणिक उपलब्धियों या लिंग का कोई महत्व नहीं होना चाहिये। इसलिये इस पद्धति का अभ्यास करने के लिये वे सभी लोग योग्य हैं, जो इसे करने के इच्छुक हैं। पद्धति की कुछ विशेषताओं को निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है :

⇒ इस मार्ग में अंतिम सत्य की खोज करने से किसी को रोका नहीं गया है।

⇒ पद्धति पूर्ण रूप से व्यावहारिक है इसलिये अगर परिणामों की अपेक्षा है तो अभ्यास का दृढ़ता से अनुपालन करना जरूरी है।

⇒ मिशन के सारे केन्द्रों पर आध्यात्मिक प्रशिक्षण के लिये प्रशिक्षक उपलब्ध हैं।

आध्यात्मिक विकास से स्वाभाविक रूप से व्यक्ति का वाह्य व्यवहार, उसकी आदतें, उसके रहन-सहन का तरीका सब कुछ बदलेगा। इसकलये कोई भी काम करने या न करने के लिये बहुत कड़ी हिदायत नहीं दी जाती। हालाँकि मिशन के कुछ उसूल हैं जिनके बारे में जिज्ञासु से अपेक्षा की जाती है कि वह उनका अध्ययन करेगा, उन्हें समझेगा और उन्हें अपने व्यवहार में उतारने की कोशिश करेगा।

इस पद्धति का एक अद्वितीय गुण यह भी है कि प्रयत्नकर्ता की आध्यात्मिक प्रगति की शुरुआत और इसे बढ़ाकर मजबूत करने का काम ट्रान्समिशन द्वारा किया जाता है। ट्रान्समिशन देने का काम मालिक या उनके द्वारा नियुक्त उनके प्रशिक्षक करते हैं। ट्रांसमिट की जाने वाली चीज मालिक की अपनी यौगिक आध्यात्मिक ऊर्जा है और यह अभ्यासी को उसकी अपनी क्षमताओं की सीमाओं से आगे की प्रगति करने में सक्षम बनाती है।

मिशन का लन्दन केन्द्र यह सूचना देते हुये बहुत खुश है कि हमारे मालिक श्री रामचन्द्र जी महाराज १९ और २५ मई १९७२ के बीच लन्दन में उपरोक्त पते पर चर्चा के लिये उपलब्ध होंगे। जो लोग उनसे संपर्क करना चाहते हैं या मिशन की गतिविधियों से जुड़ना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे अधोहस्ताक्षरी को मिलने का समय निश्चित करने के लिये टेलिफोन पर संपर्क करें।

वेरा डेविश

<u>व्यक्तिगत</u>

नं. सी ३८८/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
१३ मार्च १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

१० मार्च १९७२ का तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। प्रलेख बहुत अच्छी तरह से लिखा गया था और उसमें किसी भी संशोधन की कोई जरूरत नहीं थी।

श्रीमती ग्रेस किम्बाल अपने साथियों के साथ तीन दिन के लिये इलाहाबाद और वाराणसी गयी थीं। ये लोग आज ही वापस आये हैं और १६ मार्च १९७२ को यहाँ से अपने देश के लिये प्रस्थान करेंगे। वे मिशन के बारे में कुछ रिकार्ड करना चाहती थीं इसलिये उन्होंने श्री रायजादा से इस संदर्भ में निवेदन किया। यू.एस.ए. में प्रचार के लिये उनका यह रिकार्डिंग काम करेगा। उन्होंने मेरे दो लेखों को भी रिकार्ड किया है।

जब मैं दिल्ली में था, डा. हरनाम सिंह ने **कैरो** के लिये वीसा प्राप्त कर लिया था। अन्य जगहों के बारे में उनका कहना था कि वे इसे अप्रिल के पहले हफ्ते में करेंगे क्योंकि फ्राँस में प्रवेश के लिये केवल दो महीने का समय दिया जाता है। अगर वहाँ के लिये आज आवेदन किया जायेगा तो हमारी यात्रा के बीच में ही यह अवधि समाप्त हो जायेगी। डा. हरनाम सिंह ने मुझसे कहा है कि वीसा के लिये अगर उन्हें मेरी जरूरत पड़ेगी तो वे मुझे तार देकर बुला लेंगे।

चूँकि अप्रिल के महीने में सुन्दर के बच्चों के इम्तहान होंगे, वहाँ मेरे रुकने पर उन्हें थोड़ी परेशानी होगी। इसलिये मैं श्री सेथुरत्नम (१४६, जोरबाग, नयी दिल्ली-३) के यहाँ रुकूँगा। मेरे लिये उनके दिल में बहुत प्रेम है।

वीसा के बारे में अगर कोई समस्या है तो उसे डा. हरनाम सिंह से बताया जा सकता है। मैंने पासपोर्ट और टिकट के साथ के सारे कागजात उन्हीं के पास छोड़ दिये हैं। मैंने फ्राँस और तुम्हारे द्वारा बताये गये किसी और देश के लिये उनसे डबल इंट्री वीसा भी हम दोनो के लिये लेने को कहा है। उनमें और उनकी पत्नी में मेरे लिये और मिशन के लिये प्रेम विकसित हो रहा है। उनका एक भतीजा इंग्लैंड में रहता है और जब हम वहाँ होंगे वह भी मिशन में आ जायेगा।

श्री मणि की बहन स्विटजरलैंड में है इसलिये वह चाहती है कि हम वहाँ उसी के घर पर रुकें। तारीख निश्चित हो जाने पर हमें अपने आगमन की सूचना उसे भेज देनी चाहिये। मि. डेविश ने भी मुझे लिखा है कि उनके कुछ दोस्त हमसे मिलने स्विटजरलैंड में आयेंगे। कुछ महीने पहले जर्मनी के मि. राबर्ट कोच ने मुझे लिखा था कि स्विटजरलैंड में भी कुछ काम मिलेगा।

मैं बेचैनी से इस बात की प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि तुम्हें रिजर्व बैंक से जल्दी अनुमति मिल जाये और मुझे यकीन है कि यह जल्दी ही मिल जायेगी। लेकिन तुम जितनी कोशिश कर सकते हो, तुम्हें भी करनी चाहिये।

मेरे मालिक अपने रक्त वंश से ज्यादा अपने आध्यात्मिक वंश के बारे में सोचा करते थे। मेरे मत में तुम इस व्यवहार के लिये सर्वाधिक उपयुक्त हो। इस दृष्टिकोण से तुम्हें मिलाकर मेरे चार पुत्र हैं। इसलिये उमेश के लिये प्रार्थना करना तुम्हारा भी कर्तव्य है, जिससे वह तुम्हारे जैसी क्षमता में पहुँच सके और उचित व्यवहार विकसित करे। मुझे उम्मीद है कि तुम्हें अपनी प्रार्थना के विलक्षण परिणाम मिलेंगे।

आज रात मैं तुम्हें ***४थे विन्दु*** पर भेज रहा हूँ। कृपया अपनी डायरी में इसे लिख लो।

मैं चाहता हूँ कि तुम्हारे पिताजी एक हफ्ते तक आराम करें और इसके बाद रोज करीब एक घंटे का समय ***'दस स्पीक्स'*** नामक पुस्तिका की व्याख्या में लगायें। श्री ग्रेस किम्बाल ने इस पुस्तिका को बहुत पसंद किया और कहा कि अमेरिका को ऐस ही पुस्तिकाओं की जरूरत है, जो पर्याप्त सूचना देती हैं। अगर तुम कहो तो मैं अमेरिका में वितरण के लिये कुछ प्रतियाँ अपने साथ ले चल सकता हूँ। वैसे मुझे सामान से डर लगता है।

श्रीमती ग्रेस किम्बाल की बेटी मिस स्पेन्सर किम्बाल मुझसे इतनी प्रभावित है कि वह भारत में ही रहना चाहती है और तरजीह हमेशा मेरे साथ रहने को देती है। उसने माँस खाने के साथ-साथ पूरा अँग्रेजी खाना ही छोड़ दिया है और अब वह अपने आप को ***पियरे*** कहलाना पसंद करती है।(प्यारी शब्द को वह इसी तरह उच्चारित करती है) वह इस बार मेरे साथ तब तक रहेगी जब तक मैं यहाँ हूँ।

मैं तुम्हें कुछ वाक्य लिख कर भेज रहा हूँ, जिनका प्रयोग तुम वहाँ अपनी वार्ताओं में कर सकते हो :

- **भौतिक और आध्यात्मिक विज्ञान में अंतर :**

सूरज की ओर पीठ करके चलना भौतिक विज्ञान है जबकि सूरज की ओर चलना आध्यात्मिक विज्ञान है।

भाव विकसित होकर विचार का रूप ले लेता है और विचार अपनी सीमा पार करने के बाद अन्तर्ज्ञान बन जाता है। इस सीमा को पार करने का तरीका तुम मुझसे मिलने पर पूछ सकते हो। मेरा विश्वास है कि तुम इसे पहले से जानते भी हो।

तुम्हारे स्टेनोग्राफर ने दिये जाने पर मिशन का बहुत सा टाइप का काम किया है और तुम्हारी जरूरत होने पर अक्सर वह तुम्हारा काम भी करता है। इसलिये मैं उसे उसकी अच्छी सेवाओं के पुरस्कार के रूप में लगभग १०/- रुपये मूल्य का फाउन्टेन पेन देना चाहता हूँ। कृपया तुम उसे मेरी ओर से मिशन से यह दे दो।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
१७ मार्च १९७२

परम प्रिय मालिक,

मैं १३ तारीख के आपके स्नेह और प्रेम से भरे पत्र के लिये आपका आभारी हूँ। आपके उदार और आशीर्वाद भरे देखभाल से मेरा आध्यात्मिक जीवन अत्यधिक आनन्दपूर्ण और प्रगतिशील रहा है और अपने चौथे पुत्र का स्तर प्रदान करके आपने एक अर्थ में मुझे बहुत महत्वपूर्ण स्थिति में ला दिया है। मेरे परम प्रिय और दिव्य पिता! केवल आप ही जानते हैं कि मैं आपको कितना प्रेम करता हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि यह प्रेम दिन प्रतिदिन और बढ़ता ही जा रहा है। यह सब आपकी ही कृपा है।

उमेश की बेहतरी और उसके जीवन के समस्त क्षेत्रों में मेरे द्वारा जो कुछ भी सभव है, मैं करूँगा और मैं इसके लिये प्रार्थना भी करता हूँ। मुझे ***४थे विन्दु*** पर भेजने के लिये आपको धन्यबाद।

मैंने पिताजी को *'दस स्पीक्स'* की व्याख्या संबंधी आपकी सलाह दे दी है और वे इसे जल्दी ही आपकी इच्छानुसार करना शुरु कर देंगे। हम इसकी करीब २५ प्रतियाँ यू.एस.ए. के लिये ले चल सकते हैं।

मुझे आपको इस बात की सूचना देते हुये खुशी हो रही है कि रिजर्व बैंक से विदेश जाने से संबंधित मेरा पी. फार्म स्वीकृत होकर आ गया है।

ज्यादातर वीसा प्राप्त कर लेने के बाद अप्रिल के पहले हफ्ते में मैं टिकट खरीदूँगा। ब्रिटेन जाने के लिये टिकट खरीदने के बाद ही इंट्री परमिट मिलता है। हम सभी यह जानकर खुश हैं कि श्रीमती ग्रेस किम्बाल बहुत खुश होकर वापस गयी हैं। उनकी बेटी स्पेन्सर (पियरे) अच्छी लड़की है। यू.एस.ए. में वह मिशन और मालिक के लिये अच्छा काम करेगी।

मेरी राय में न्यूयार्क से वापसी की यात्रा में अगर हम श्रीमती वेरा डेविश के साथ लन्दन में तीन दिन बितायें तो अच्छा होगा। क्योंकि एयर इण्डिया द्वारा हमें लन्दन होकर ही यात्रा करनी है और इससे पुनः कोपेनहेगेन जाने से पहले आपको थोड़ा आराम भी मिल जायेगा। वापसी में मैं ऐसा ही करने की सोच रहा हूँ। यहाँ सभी स्वस्थ हैं और आपको प्रणाम कह रहे हैं।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ४१८/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२१/२२ मार्च १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा १७ का प्रेमपूर्ण पत्र मिला। १८ को यात्रा शुरु करनी है तो मैं डा. हरनाम सिंह के कहने के अनुसार इससे दो या तीन दिन पहले दिल्ली पहुँच जाऊँगा। वहाँ मैं श्री सेथुरत्नम के साथ रुकूँगा, जिसका पता नीचे लिखा है। स्पेन्सर यहाँ है। नेपाल में रह रहा एक दूसरा अमेरिकी कल यहाँ से वापस जा रहा है। मैं कुछ दिनों में स्पेन्सर को अनुमति दे दूँगा।

मुझे लन्दन से एक पत्र मिला है, जिसकी प्रति मैं तुमको भेज रहा हूँ ताकि तुम यह जान सको कि तुमसे इस दौरे में किस प्रकृति के प्रश्न पूछे जायेंगे। मैंने इसका जबाब दे दिया है लेकिन इसमें मेरा

काफी समय लग गया। तुम पत्र की प्रति अपने पास रखो और जबाब पढ़कर इसे जल्दी मेरे पास वापस भेज दो। जरूरी हो तो इसमें संशोधन या इसका स्पष्टीकरण भी कर सकते हो। इसके बाद मैं उसे यहाँ से पोस्ट कर दूँगा। अगर उत्तर संतोषजनक है तो भी तुम मुझे इसकी सूचना देना।

जब भी जरूरी हो तुम मेरे वीसा आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये डा. हरनाम सिंह से पूछ सकते हो।

मैं समझता हूँ कि अब अंतिम रूप से हमारे जाने की तारीख १८ अप्रिल तय हो चुकी है। अगर ऐसा है तो रुकने के स्थानों सहित सारे कार्यक्रम की एक रुपरेखा बना लो, जिससे जहाँ जरूरी हो मैं भी अपने कार्यक्रम की एक प्रति भेज सकूँ। बम्बई में मुझसे संबद्ध लोग मुझसे वहाँ एयरपोर्ट पर मिलना चाहते हैं लेकिन मैं वहाँ पहुँचने का सही समय नहीं जानता। कृपया मुझे बताओ। अभी तक उनलोगों को यही खबर है कि मैं वहाँ २० तारीख को होऊँगा। अब मैंने १८ अप्रिल लिखना शुरु कर दिया है। कृपया कार्यक्रम की एक प्रति अमेरिका की महिलाओं को भी भेज दो। (पता नीचे लिखा हुआ है।)

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

<u>पते:</u>

१. मि. एस. सेथुरत्नम्, १४६, जोरबाग, नयी दिल्ली - ३
२. डा. हरनाम सिंह, ६२, फ्रेन्डस कॉलोनी, ईस्ट नयी दिल्ली - १४
३. मिसेज सी. सी. किम्बाल, १८१०२, किलिफ्टन रोड, लेक वुड, ओहियो, ४४१०७, यू.एस.ए.
४. मिस स्पेन्सर किम्बाल, १८१०२, किलिफ्टन रोड, लेक वुड, ओहियो, ४४१०७, यू.एस.ए.
५. श्रीमती कैरोलीन एस. मिलर, ३७, ब्राड स्ट्रीट, स्टनिंगटन, कनेक्टिकट, ०६३७८, यू.एस.ए.
६. श्रीमती पाली स्मिड, १६५१, मेन्ट एवेन्यू, अपॉर्टमेन्ट ९०२, पेन्सविले, ओहियो ४४०७७, यू.एस.ए.

नोट : मिस स्पेन्सर को अनुमति दी जा रही है। वे इन दिनों यहीं हैं।

(**संपादकीय टिप्पणी** : उपरोक्त पत्र में ये नाम हाथ से लिख कर जोड़े गये हैं। शुरु के सदस्यों के नाम इसमें यहाँ पर नहीं लिखे हैं।)

५७. श्री जे. आर. दोरैस्वामी अय्यर, बंगलोर
५८. श्री के. रामकृष्ण शेट्टी, आई.पी.एस., अनन्तपुर
५९. श्रीमती के. रामकृष्ण शेट्टी, अनन्तपुर
६०. श्री पी. रामस्वामी, हैदराबाद
६१. श्री आर. एस. महेन्द्राकर, हैदराबाद
६२. श्री श्याम मुरारी गुप्ता, लखीमपुर खीरी
६३. श्री टी. कन्टैया, प्रो., रायचूर
६४. डा. श्याम राव चिल्लापे
६५. श्री के. वी. अभयकुमार, बंगलोर
६६. श्रीमती शान्ताबाई (श्रीमती जागीरदार), चन्नपटना
६७. मिसेज नारायण राव, बीदर
६८. श्रीमती अनुसूया राम शास्त्री
६९. श्री उमाशंकर, सीतापुर
७०. श्रीमती उमाशंकर, सीतापुर
७१. श्री रामचन्द्र रेड्डी, कुडप्पा
७२. श्री लक्ष्मीशंकर, प्रिन्सिपल, इलाहाबाद
७३. डा. वी. पार्थसारथी, विजयवाड़ा
७४. श्रीमती वी. पार्थसारथी, विजयवाड़ा
७५. श्रीमती दक्षारानी, सीतापुर

जी. सी. आथानास्सोलिस
लन्दन, डब्ल्यू. सी. आई, इंग्लैंड

परम सन्त श्री रामचन्द्र जी महाराज
द रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)
भारत

१२ मार्च १९७२

प्रिय मालिक,

आपके २ फरवरी के पत्र के लिये आपको बहुत-बहुत धन्यबाद। इस बात के लिये मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आप उसी तरीके से

मेरी सेवा करना चाहते हैं जैसे आध्यात्मिक प्रगति के पथ पर आप दूसरों की सेवा कर रहे हैं। मैं यह जानकर बहुत खुश हूँ कि मई में हमें आपसे मिलने का और लाभान्वित होने का एक अवसर मिलेगा।

श्रीमती डेविश ने हमें सूचना दी है कि आप करीब एक महीने तक शाहजहाँपुर से दूर मद्रास में रहे और यही आपके लिखने में विलम्ब का कारण है।

आपकी अनुमति से अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ। अगर आप इनका उत्तर स्पष्टता से देंगे तो मैं आपका आभारी रहूँगा :

- **क्या आप मुझे यह बतायेंगे कि *"शिष्य अपने मालिक को पूरी तरह से समर्पण कर दे"* इस विचार को आप कितना महत्व देते हैं?**

अपनी रुझान और अपनी पृष्ठभूमि की वजह से मैं व्यक्ति की अपेक्षा निराकार लेकिन सम्यक् रूप से निर्मित विचारों से जुड़ना ज्यादा पसंद करता हूँ। समर्पण का विचार मेरे दिल में यह ख्याल पैदा करता है कि मानव-मानव के बीच की समानता समाप्त हो जायेगी। हालाँकि भक्ति की धारणा का अनुभव मैंने किया है और मैं इसे स्वीकार भी करता हूँ लेकिन आवश्यकता के रूप में नहीं, बल्कि शिष्य और मालिक के बीच गहरे प्रेम के परिणाम के रूप में, जो अभ्यासी के दिल में अभ्यास के मार्ग पर चलने से धीरे-धीरे विकसित होता है। हालाँकि एक व्याख्या यह भी की जा सकती है कि समर्पण के माध्यम से हम स्वार्थपरता और अहंकार के बंधनों को नष्ट कर डालते हैं लेकिन मुझे अभी भी इसमें कठिनाई महसूस होती है।

- **हालाँकि मैंने कहा है कि मैं निराकार विचारों की ओर अधिक आकर्षित होता हूँ, मैं बहुत दृढ़ता से महसूस करता हूँ कि इन विचारों को ग्रहण करने और अभ्यास करने के लिये मुझे यथासम्भव इस प्रक्रिया में सहभागिता अदा करनी होगी।**

अभी तक मैंने ध्यान के रास्ते को निष्क्रिय पाया है और यह बात मुझे अक्सर परेशान करती है कि स्थूलता और ग्रन्थियों की सफाई में मेरी स्वयं की भूमिका बहुत सीमित है। शायद अपनी पृष्ठभूमि की वजह से मैं ध्यान के दौरान संशय का भाव महसूस करता हूँ। मैं सोचता हूँ कि क्या मैं इसे ठीक से कर रहा हूँ या मैं अपना समय व्यर्थ कर रहा हूँ? क्या यह अध्यात्म की प्राप्ति का सही मार्ग है? क्या यह इतना आसान हो सकता है?

निस्संदेह मुझे पता है कि जब आप किसी चिकित्सक के पास जाते हैं तो उससे उसकी इलाज करने की क्षमता नहीं पूछते। आप उस पर भरोसा करते हैं और आप उसकी बतायी गयी औषधि लेने के लिये तैयार रहते हैं।

इस उदाहरण में मेरी भावनाओं में यह समानता है कि मुझे डाक्टर पर पूरा भरोसा है लेकिन मैं ली जाने वाली औषधि को नहीं देख पाता।

सम्भव हो तो आप ध्यान के रचनातंत्र की व्याख्या करें, जिससे मेरा भटकना बंद हो सके।

- **मेरी एक और बड़ी परेशानी है मेरे आध्यात्मिक और सांसारिक कार्यों में टकराव। कुछ साल पहले तक मैं इस दृष्टिकोण का पक्का समर्थक था कि हम दोनो में अच्छे हो सकते हैं। लेकिन जब मैं विद्यार्थी जीवन से आगे आकर काम करने लगा, मुझे ऐसे मामले मिले जहाँ टकराव की उपेक्षा करना बहुत कठिन दिखने लगा।**

जीवन का आदर्श आध्यात्मिक पथ पर दृढ़ता से टिके रहना है और हमारे अस्तित्व का एकमात्र उद्येश्य अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति है फिर भी समस्त भौतिक वस्तुयें और सांसारिक लोग इस लक्ष्य से हमें भटकाते रहते हैं।

कम से कम पश्चिम में जो लोग आपके इर्द-गिर्द हैं, आपको समझ नहीं पाते। ये आपके व्यवहार को ढीलापन या कमजोरी समझते हैं और जब तक आप उनकी ओर देखें, वे मैदान से बाहर हो जाते हैं और जब इससे बचने के लिये आप समझौता करने का निर्णय लेते हैं, मुझे यह पाखण्ड लगता है। मैं अपने इस विचार को एक उदाहरण से समझाता हूँ।

मान लीजिये कोई व्यक्ति जहाँ काम करता है वहाँ लोग उससे प्रतियोगिता नहीं कर पाते इसलिये वे उससे ऊपर के अधिकारियों से उसकी झूठी शिकायत करते हैं ताकि उसकी साख नष्ट हो जाये, पदोन्नति रुक जाये और खुद उसकी पदोन्नति हो जाये।

अब बेचारा वह आदमी यह भी जानता है कि उससे ऊपर के अधिकारियों को उस पर संशय है और वे भी अनुचित और बुरे हैं तथा इस कहावत में भरोसा करते हैं कि "बिना आग के कहीं धुँआ नहीं होता"। इसलिये वह जानता है कि उससे ऊपर के अधिकारियों तक

उसके साथियों द्वारा की जाने वाली निन्दा नहीं पहुँचनी चाहिये। हालाँकि वह जानता है कि वह इस मामले में निर्दोष है फिर भी उसे डर है कि अगर बार-बार ऐसा होता है तो नौकरी में उसका भविष्य सुरक्षित नहीं है। अच्छा होने की वजह से और आध्यात्मिक लक्ष्यों को पाने के प्रयास में वह अपने साथियों को शान्ति, मैत्री और दुनिया भर के तर्कों से अनैतिक कार्यों को न करने की सलाह देता है लेकिन वे इस पर ध्यान नहीं देते। वे स्वयं ऊपर बढ़ने के लिये उसको नष्ट तक कर देने में विश्वाास करते हैं। वह पूरी कोशिश करता है लेकिन वे बिल्कुल नहीं झुकते। वे उससे यहाँ तक कह देते हैं कि तुम बहुत अच्छे हो और तुम आध्यात्मिक भी हो तो तुम हमारा जीवन आसान करने के लिये इस्तीफा क्यों नहीं दे देते। वे यह भी कहते हैं कि हम तुम्हारी बात समझते हैं लेकिन हमारे लिये सबसे ज्यादा जरूरी है इस जगह को पाना इसलिये हम तो ऐसा ही करेंगे।

यहाँ तर्क उनके दिमागों को बदल पाने में असफल हो जाता है और सहानुभूति और नैतिकता उनकी भावनाओं को और भड़का देता है। वह व्यक्ति किसी अन्य को यहाँ तक कि शत्रु को भी हानि पहुँचाने की बात नहीं सोचता और इसी क्रम में वह इस्तीफा देने तक की बात सोचता है। लेकिन वह अकेला नहीं है। उसका एक परिवार है, उसके बूढ़े माता-पिता हैं। वह बहुत उहापोह में है कि क्या करे? वह समझौता करता है। अपने प्रतिद्वन्दियों की सच्चाई को जानता है इसलिये उन्हें ब्लैकमेल करता है और धमकी देता है कि अगर तुम मेरे खिलाफ कुछ कहते हो तो मैं तुम्हारे खिलाफ भी कहूँगा। वह टिका रहता है। उसे संतोष है कि उसने किसी का नुकसान नहीं किया और केवल अपनी सुरक्षा में उसने छोटी धमकी भर दी।

लेकिन क्या ऐसा है? क्या उसने भौतिक लाभों को आध्यात्मिक लक्ष्य की तुलना में आगे नहीं रखा? क्या उसे यकीन है कि अगली बार उसे इससे ज्यादा करने के लिये बाध्य नहीं किया जायेगा? चूँकि दुर्भाग्य से यह बार-बार होगा। उसे अपने प्रतिद्वन्दियों की साख को पहले से ही खराब करने के लिये बॉस के कानों में फुसफुसाना पड़ेगा। बॉस उससे कहेगा कि अगर तुम यह जगह चाहते हो तो यह झूठ कहो, यह कहो, वह करो।

इसलिये या तो उसे हर बार समझौता करना होगा या इससे कहीं दूर एकान्त में जाना होगा और तब यह कहा जायेगा कि वह अपनी जिम्मेदारियों से भाग रहा है।

क्या आप इस मामले पर कुछ टिप्पणियाँ करेंगे? सामान्य तरीके से नहीं बल्कि इस उदाहरण को सामने रखते हुये।

- **आपकी किताबों को पढ़कर मैं यह ठीक से नहीं समझ पाया कि ईश्वर, ब्रह्माण्ड, आत्मा, वैयक्तिता, अंतिम लक्ष्य आदि के बारे में आपका क्या मत है?**

एक अध्याय में आपने कहा है कि पहले शून्यता थी फिर ईश्वर आया जबकि दूसरे अध्यायों में आपने हर चीज को ईश्वर से जोड़ा है। फिर दूसरे जगहों पर मैंने पाया कि आपके अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी - इन गुणों से विभूषित नहीं है।

अगर ईश्वर से पहले शून्यता थी या सापेक्षता सिद्धान्त के अनुसार शून्य और काल का अस्तित्व था तब तो मैं भौतिकतावादियों के आनन्द की कल्पना करने का भी साहस नहीं कर सकता जिनके अनुसार ईश्वर एक सतही विचार मात्र है, केवल शून्य का ही अस्तित्व था, जो अचानक हुई दुर्घटना से उत्पन्न सृष्टि से भर गया।

अभी तक तो मैं ऐसे ईश्वर को मानता हूँ जो सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी है और ऐसा मैं किसी धार्मिक भावना के तहत नहीं मानता बल्कि प्रकृति की वैज्ञानिक व्याख्या करने की आवश्यकता के कारण मानता हूँ।

उदाहरण के तौर पर भौतिक विज्ञान के एन्ट्रोपी सिद्धान्त को लें। मोटे तौर पर ब्रह्माण्ड में अव्यवस्था के बढ़ने के कारण हरेक चीज का परिवर्तन उष्मा के रूप में होता है, जो धीरे-धीरे विलुप्त हो जाती है और गणित से यह सिद्धान्त सिद्ध भी है कि वापसी सम्भव नहीं है। इसलिये अव्यवस्था से पुन: व्यवस्था को प्राप्त करना असम्भव है। इस तथ्य ने महान भौतिकशास्त्री मैक्सवेल को ऐसे डेमो के अस्तित्व की कल्पना करने के लिये बाध्य किया जिसने अतीत में व्यवस्था की रचना की थी। आज उसी व्यवस्था ने अव्यवस्था का रूप ले लिया और अब अकेला वही है जो इसे पुन: व्यवस्था में परिवर्तित कर सकता है।

अगर ऐसा है तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि ईश्वर या महाशक्ति या डेमो - हम इसे जो भी कहें, के इच्छायें नहीं हो सकतीं। उसका कुछ उद्येश्य होना चाहिये।

अभी तक मेरा विश्वास है कि ब्रह्माण्ड में घटित होने वाली हर घटना का एक उद्येश्य है और हर उद्येश्य का एक उच्चतर उद्येश्य है और ऐसा तब तक चलता रहता है जब तक हम उस अंतिम उद्येश्य या लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाते।

बचपन से ही मेरा विश्वास रहा है कि आध्यात्मिकता की प्राप्ति ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। लेकिन क्या आप मुझे यह नहीं बता सकते कि ऐसा क्यों है? ऐसा होना ईश्वर द्वारा क्यों निर्धारित किया गया? उद्येश्य का उद्येश्य क्या है? चीजों के ऐसा होने का क्या कारण है? हमें अनस्तित्व के लक्ष्य को पाने की कोशिश क्यों करनी है? यह सारी परेशानी क्यों है?

क्या हिन्दू या अन्य दर्शनों का यह मत सही है कि ईश्वर ने ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कीं कि हमारे लिये इस मार्ग का अनुसरण करना आवश्यक हो गया। क्या यह उसके आनन्द के लिये है या इसका कोई अन्य उद्येश्य है या यह कुछ और सिद्ध करता है। अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति के क्रम में आत्माओं के पुनर्जन्म को स्वीकार कर लेने पर हम कह सकते हैं कि यह प्रक्रिया केवल पृथ्वी पर ही नहीं बल्कि अन्य जगहों पर भी चल रही है क्योंकि अगर ऐसा नहीं होता तो पृथ्वी ग्रह का अंत होने पर, जो कि अपरिहार्य है, आत्मायें, जिन्हें अभी सफाई की जरूरत है, कहाँ जायेंगी? दुनिया की जनसंख्या बहुत बढ़ रही है जिसका सीधा मतलब है कि ऐसी आत्मायें पृथ्वी पर आ रही हैं जो पहले कभी नहीं आयी थीं। वे पहले कहाँ थीं? क्या आत्मायें, जिनका व्यक्तिगत अस्तित्व होता है तत्काल यात्रा करती हैं? उन्हें इस कठिन परीक्षा से होकर क्यों गुजरना पड़ता है? वे विकार ग्रस्त कैसे हुईं कि अब उन्हें सफाई की जरूरत पड़ रही है? विकार ग्रस्त होने के कारण सफाई के लिये उन्हें अतीत में जाना पड़ता है। लेकिन विकार ग्रस्त क्यों? ईश्वर या महाशक्ति ने इसकी अनुमति क्यों दी? इसका कोई कारण तो होगा। इसका क्या कारण है? क्या वह केवल प्रयोग था जो ब्रह्माण्डीय मापदण्ड पर केवल एक क्षण के बराबर था?

मुझे इन सभी सवालों का जबाब चाहिये। मेरे लिये यह बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे यह बहुत शक्ति देगा। अगर इनका जबाब नहीं दिया जा सकता या जबाब नहीं दिया जाना चाहिये तो क्यों?

अंत में मेरा पाँचवाँ प्रश्न :

- **अंतिम लक्ष्य अनस्तित्व या वैयक्तिता का ह्रास क्यों है? क्या यह धारणा इस विचार को प्रोत्साहित नहीं करती कि अस्तित्व का अर्थ पीड़ा है और केवल अनस्तित्व की स्थिति ही ऐसी अवस्थाओं की रचना करती है, जिसमें कोई पीड़ा न हो?**

प्रिय मालिक! ये मेरे सवाल हैं और मेरे पास और दूसरे सवाल भी हैं, जिन पर मुझे उम्मीद है कि आपसे मई में बात कर सकूँगा।

पूरे सम्मान के साथ मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि अगर आपका जबाब यहाँ २७ मार्च से पहले न पहुँचे तो बेहतर होगा कि आप जबाब ५ अप्रिल के बाद दें जिससे आपका पत्र ईस्टर की अवधि में चिठ्ठियों की भीड़ में फँस कर खो न जाये। मैं आपकी हर बात के लिये आपको धन्यबाद देता हूँ। अगले हफ्ते मेरी योजना श्रीमती वेरा डेविश के यहाँ जाने की है। एक बार फिर मैं आपके प्रति अपना आदर और आभार प्रकट करता हूँ।

भवदीय

जी. सी. आथानास्सोलिस

मेरे प्रिय आथानास्सोलिस,

मुझे आपका १२ मार्च का प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मैं बहुत खुशनसीब हूँ कि मुझे एक ऐसा साथी मिला जो खुले दिमाग से अपनी सारी परेशानियों को लेकर मेरे सामने आता है। ऐसे पत्र सोचने के लिये मुझे खुराक देते हैं। इसके लिये मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। ईश्वर आप पर कृपा करे!

अपने सारे लेखों में मैंने ईश्वर से सीधा संबंध रखने पर जोर दिया है लेकिन सामान्यतया लोग इसमें कठिनाइ महसूस करते हैं। इसलिये वे खुद मालिक का माध्यम अपनाने पर बल देते हैं। लगभग सभी धर्मों में ईश्वर से सीधे प्रेम करने को कहा गया है। मैं भी सदैव केवल और केवल ईश्वर को ही समर्पण करने को कहता हूँ और उसे केवल ***निर्भरता और प्रेम*** से ही प्राप्त किया जा सकता है। अगर कोई समर्पण की कोशिश करता है तो वहाँ समर्पण करने वाला ***'मैं'*** भी होता है इसलिये वास्तविक समर्पण तो स्वतः विकसित होता है।

मेरा खुद का मामला कुछ अलग किस्म का था। मैंने २१ साल की आयु में अभ्यास करना शुरु किया था। उस समय मैं यह नहीं जानता था कि समर्पण क्या है इसलिये मैंने कभी इसकी कोई कोशिश

नहीं की। मुझे ऐसे मालिक मिले कि मेरे लिये तो मेरे मालिक ही सब कुछ थे। अगर अनजाने में मेरा कोई समर्पण था भी तो वह मेरे मालिक के प्रति ही था। सच कहा जाये तो मालिक का शरीर ईश्वर नहीं होता लेकिन उसके पीछे जो कुछ भी होता है वह दिव्यता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। इसलिये ***मेरा समर्पण तो उस दिव्यता के प्रति था न कि मालिक के उस शरीर के प्रति।*** अगर आप मालिक के पूरे शरीर को अपनी दृष्टि में रखते हैं तो दिव्यता खुद-ब-खुद उसके पीछे-पीछे चली आती है। लेकिन यह केवल मेरे लिये था और मैं किसी को ऐसा करने के लिये नहीं कहता। वस्तुत: मेरा समर्पण मालिक के प्रति न होकर सत्य अस्तित्व के प्रति था। अब मेरा अनुभव दूसरों के सामने प्रमाण के रूप में है और मुझसे संबंधित लोग मेरे इस अनुभव का फायदा अगर उठाना चाहें तो उठा सकते हैं।

हम हृदय में यह विचार लेकर ध्यान का अभ्यास करते हैं कि दिव्य प्रकाश वहाँ है। इसका मतलब यह है कि हम अपने दिल पर खेल भी रहे हैं और यह एक कार्य भी है। हम यह जानते हैं कि हम ध्यान कर रहे हैं जिसका अर्थ है कुछ करना और जहाँ काम की शुरुआत होती है वह भी वहाँ है। जहाँ हमें जाना है उसका विचार भी वहाँ है और हम अवचेतन रूप से उसकी प्रतीक्षा भी कर रहे होते हैं। इसका सीधा मतलब है कि हम निष्क्रिय नहीं हैं बल्कि इतने व्यस्त हैं कि एक साथ तीन काम कर रहे हैं। इसलिये निष्क्रियता सक्रियता में खो जाती है।

हाँ, हमारी पद्धति सचमुच सरलतम है क्योंकि सरलतम को प्राप्त करने की पद्धति सरलतम होनी ही चाहिये। वह तो वहाँ है ही हमें अपने संदेह को विश्वास से प्रस्थापित करके वही हो जाना है।

आपने अपने बारे में जिन कठिनाइयों का उल्लेख किया है, उसमें कुछ भी नया नहीं है। ऐसी चीजें लगभग हर देश में और हर जगह प्रभावी हैं। लेकिन अगर व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक है तो ये चीजें अगर खत्म नहीं भी होतीं तो कम अवश्य हो जाती हैं। इसलिये मुझे तो इन सारी समस्याओं का इलाज अध्यात्म ही लगता है जो प्रेम करने और गले लगाने के बर्ताव को विकसित करने में हमारी मदद करता है। अध्यात्म का हमारे जीवन में स्वाभाविक प्रभाव यह होता है कि हमारे मन की असंतुलित प्रकृति समाप्त होकर हमारे जीवन में प्रेम का मार्ग विकसित होता है। यह सही बोध और सही मनोदशा

की रचना करता है जिसका महत्व हमारे दैनिक जीवन में है। बिना आम को चखे इसके स्वाद का हम पता नहीं लगा सकते। भारत में धार्मिक पृष्ठभूमि का बहुत विस्तार है लेकिन संपूर्ण मानवता के लाभ के लिये मैं अपने प्रशिक्षकों के साथ ही मिशन का केन्द्र जगह-जगह पर स्थापित कर रहा हूँ। अगर यह अच्छी चीज है तो हरेक को हमारे साथ सहयोग करना चाहिये।

जब तक व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास उस स्तर तक नहीं हो जाता कि उसके जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनो पहलू संतुलित हो जायें, सामान्यतया आध्यात्मिक मामलों को आध्यात्मिक तरीके से और भौतिक मामलों को भौतिक तरीके से निपटाया जाना चाहिये।

मैंने लिखा है कि सृष्टि के पहले हर तरफ केवल शून्य था। आपने लिखा है कि मैंने इस संबंध में यह लिखकर कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, अपने मत का खण्डन किया है। मैं आपको स्पष्ट कर दूँ कि ईश्वर अपने दायरे में सर्वशक्तिमान है लेकिन अपने केन्द्र में अनस्तित्व में है। सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी जैसे गुणों से ईश्वर को इसलिये विभूषित किया जाता है जिससे अमूर्त्त को गुण दिये जा सकें और हम गुणों से सार की ओर बढ़ सकें। वस्तुतः परमतत्व सारे गुणों से मुक्त अनस्तित्व की दशा में है जो होने की हम आकांक्षा करते हैं।

जब हम ऊपर उठने की बात सोचते हैं तो हम अपने आधार - वैयक्तितता को खो देते हैं। जब तक हम अपने को किसी विन्दु पर नहीं खोते दूसरा विन्दु अन्धकार में रहता है। अगर वैयक्तितता का यह विचार पूरी तरह नहीं समाप्त होता तो हम वहीं रह जाते हैं जहाँ थे और कहीं भी पूरी तरीके से नहीं रह पाते। अस्तित्व की गहराई में पहुँचने पर हम स्वाभाविक रूप से अपनी वैयक्तिता खो देते हैं और हमारी प्रक्रिया में यही होता है। ***खोओ और पाओ।*** या कहा जाये कि ***यहाँ खोना ही पाना है।*** जब हम अनस्तित्व में प्रवेश करके उसमें स्थित हो जाते हैं तो वैयक्तितता सदा के लिये समाप्त हो जाती है। चूँकि मन एक समय में एक ही चीज के बारे में सोच सकता है इसलिये अगर आप वैयक्तितता के साथ ह तो आगे नहीं जा सकते। ***वास्तव में अस्तित्व की सच्ची स्थिति अनस्तित्व में पहुँचने के लिये हमें वैयक्तितता पर से अपनी पकड़ छोड़नी पड़ती है।***

अगर हम अपना विकास चाहते हैं तो हमें चाहिये कि हम उच्चतम लक्ष्य को अपनायें। लघुता फैलकर ***व्यापकता*** में बदल जाये। वास्तव में यही लक्ष्य का लक्ष्य है और लक्ष्य के बाद तब तक लक्ष्य है जब तक यह भी खो न जाये।

जागृत अवस्था में सुषुप्ति अधिकांश लोगों की व्याधि है।

मान लीजिये कि नयी आत्मायें आ रही हैं। शरीर में आने के बाद ही सही और गलत दोनो प्रकार की सोच का विकास होता है। गलत विचार और कार्य आत्माओं को दूषित कर देते हैं और इसीलिये उन्हें सफाई की जरूरत होती है। हमने स्वयं को खुद अपनी सोच से विकृत कर लिया है इसीलिये हमारी सफाई अनिवार्य है।

आपने व्याख्या करने के लिये मुझे जो विचार दिये उसके लिये आपको मैं पुन: धन्यबाद देता हूँ। ऐसे लोग भी हैं जो सेवा शुरु करने के पहले ही मुझे अस्वीकार कर देते हैं।

भवदीय

रामचन्द्र

एम.एस. **पृष्ठ ४ की तीसरी पंक्ति पर मैंने ईश्वर की क्षमता की वैज्ञानिक व्याख्या की है। कृपया इसे विशेष रूप से देखो।**

नं. सी ४२३/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**

२३ मार्च १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैंने तुम्हें कल लन्दन के आथानास्सोलिस का पत्र और उसके जबाब की एक प्रति भेजा है। उसका पत्र दुबारा पढ़ने पर मैंने पाया कि उसके कुछ प्रश्न अनुत्तरित रह गये हैं। इसलिये मैं जबाब के पृष्ठ ५ की पंक्ति ६ और ७ के बीच संलग्नक जोड़ रहा हूँ जो "अगर हम... .... खो न जायें।" पैरा के बाद है। कृपया इसे भी देख लो।

तुम्हारा स्नेही

रामचन्द्र

संलग्नक : एक

परिशिष्ट, जिसे पृष्ठ ५ पर पंक्ति ६ और ७ के बीच में पढ़ा जाना है।

क) महाप्रलय के समय तो सारी आत्मायें स्रोत तक पहुँच जायेंगी लेकिन हम इसी जन्म में उस अवस्था तक पहुँचना चाहते हैं। इस अवधि को बचाने के लिये ही हम तुरंत स्रोत तक पहुँचने की दिशा में क्रियाशील हो जाते हैं।

ख) आत्माओं की रचना की प्रक्रिया अभी पूरी नहीं हुई है इसलिये आग से अभी चिन्गारियाँ तो निकल ही रही हैं, चिन्गारी से भी चिन्गारी निकल रही है।

ग) हर आत्मा की अपनी पहचान होती है और यह मुक्त होने तक देहपरिवर्तन करती रहती है।

पार्थसारथी :

(क) और (ग) का संदर्भ : मैं समझता हूँ कि जबाब पर्याप्त है। तुम भी देख लो कि यह ठीक है।

(ख) का संदर्भ : मैं यह पैरा नहीं भेजना चाहता क्योंकि यह बहुत विवादास्पद हो जायेगा - विशेषकर ***"चिन्गारी से चिन्गारी"*** यहाँ मैंने अपनी अंत:प्रेरणा का नहीं बल्कि काल्पनिकता का प्रयोग किया है क्योंकि चीजें जिस तरह से घटित हो रही हैं उन्हें उसी तरह अपनी अंतर्दृष्टि में लेने के लिये मुझे बहुत दूर जाना पड़ेगा। अगर वह फिर इस सवाल को पूछता है तो हम एक साथ निर्णय करेंगे। लेकिन अगर इस समय तुम उसे संतुष्ट कर सकने लायक अच्छी व्याख्या कर सको तो मुझे लिखो।

इस विषय पर मेरा दृष्टिकोण निम्न है :

पृथ्वी पर आत्माओं की संख्या हमेशा समान रहती है। मृत्यु का अर्थ होता है पुन: किसी दूसरे रूप में आना। पिछले संस्कारों से गुजरने के बाद जानवर भी मनुष्य बन जाते हैं। हिन्दू ग्रंथों में ८४ लाख योनियों की चर्चा है। लगभग सभी स्त्री-पुरुष संतति चाहते हैं, जिससे जानवर भी मनुष्य रूप में जन्म लेने के लिये आकर्षित होते हैं और उन्हें इसमें मदद मिलती है। पुरुष के पास शक्ति है और जब बहुत सारी इच्छायें काम करती हैं तो उनका प्रभाव पड़ना निश्चित है। अगर इस विषय पर चर्चा की जाये तो यह विषय बहुत लम्बा होगा और कई नये सवालों को जन्म देगा।

मद्रास
२४ मार्च १९७२

परम आदरणीय मालिक,

मैंने अभी-अभी आपका २१/२२ मार्च का लिखा प्रेमपूर्ण पत्र प्राप्त किया।

यात्रा के संदर्भ में :

- आज मैंने अपने दिल्ली कार्यालय के श्री संथानम से यह निवेदन किया है कि वे डा. हरनाम सिंह से आपका एयर इण्डिया का टिकट लेकर रजिस्टर्ड पोस्ट से तुरंत मुझे भेज दें, जिससे सीट का आरक्षण मेरे टिकट के साथ यहीं करवाया जा सके।
- कार्यक्रम वैसा ही है जैसा मूल रूप में बना था और जिसकी एक प्रति मैंने आपको दी थी। १९ की रात, जो वास्तव में २० की सुबह है (०१:०० बजे सुबह) हम बम्बई से चलकर स्थानीय समय के अनुसार ३:०० बजे कैरो पहुँचेंगे। दिल्ली से हम एक दिन पहले चलेंगे ताकि आप बम्बई में एक दिन आराम कर सकें।
- मेरी कोशिश है कि कम से कम मर्सिली तक के सारे आरक्षण करा लिये जायें। फिर वहाँ से आगे का आरक्षण कराने के लिये हमारे पास काफी समय है। आशा है कि सारे आरक्षण हो जायेंगे और मैं ५ अप्रिल तक वितरण के लिये कार्यक्रम की प्रतियाँ भी छपवा लूँगा। आशा है कि ८ अप्रिल तक वितरण के लिये ये प्रतियाँ आपके पास पहुँच जायेंगी। मैं सारे केन्द्रों को और विदेशों में जो पते मेरे पास हैं, उन्हें कार्यक्रम की प्रति यहीं से भेज दूँगा। आपके पास प्रतियाँ भेजते समय मैं पतों की वह सूची भी आपके पास भेज दूँगा जिन्हें मैं कार्यक्रम की प्रति यहाँ से भेज चुका होऊँगा ताकि कोई छूटने न पाये।

आथानास्सोलिस के संदर्भ में :

मैंने रुचि के साथ उसका पत्र और आपका बेहतरीन जबाब पढ़ा। ईश्वर की परिभाषा वाकई लाजबाब है और वैज्ञानिक होने के नाते वैज्ञानिक मस्तिष्कों को बहुत रास आयेगी। इस विचार को और आगे बढ़ाते हुये शायद हम यह भी कह सकते हैं कि मनुष्य अपने परिधीय क्षेत्र में कुछ नहीं है। वह जो कुछ भी है अपने केन्द्रीयकृत

क्षेत्र में ही है। इससे परमाणवीकरण और स्थूलता संबंधी विचारों की पुष्टि होती है।

मैं यह भी महसूस करता हूँ कि समर्पण की प्रक्रिया विश्वास से नहीं भरोसा से शुरु होती है। भरोसा अपनी सीमा पार कर विश्वास में परिवर्तित हो जाता है और विश्वास अपनी सीमा पार करने के बाद प्रेम के रूप में परिवर्तित होता है। यही प्रेम अपनी सीमा पर पहुँच कर समर्पण में रूपान्तरित हो जाता है। मैं नहीं जानता कि मेरे ये विचार किस हद तक सही हैं।

मैं मि. आथानास्सोलिस से मिले पत्र की प्रति अपने पास रख कर आपकी इच्छा के अनुसार आपके द्वारा दिये गये जबाब की प्रति आपको वापस भेज रहा हूँ।

हमारे यू.एस.ए. के कार्यक्रम के संबंध में मैं अभी भी डा. आर. पी. सिंह के पत्र की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जिससे जाना जा सके कि स्टेट्स में हमारे रुकने का उन्होंने क्या इन्तजाम कर रखा है। जब तक डा. आर. पी. सिंह इसकी व्यवस्था कर रहे हैं और हमें न्यूयार्क में मिलेंगे यह मुझे नहीं मालूम हो जाता मुझे नहीं मालूम कि न्यूयार्क में उतरने पर हम कहाँ ठहरेंगे। मैं उन्हें इस बारे में लिख रहा हूँ।

संशोधित कार्यक्रम में मैं लन्दन में २ दिन रुकने का कार्यक्रम बना रहा हूँ जैसा मैंने अपने पिछले पत्र में आपको संकेत भी किया था। आपको यह जानकर खुशी होगी कि मद्रास सेन्टर के श्री आर. विजयराघवन से हुक्के के लिये जो २ किलो तम्बाकू भेजी गयी थी, न्यूयार्क पहुँच गयी है। डेन्मार्क में पहले से ही ५ किलो है। अगर मेरा मित्र इच्छुक होगा तो उसके साथ २ किलो और तम्बाकू लन्दन भेजने की कोशिश करूँगा। मैं समझता हूँ कि उसको इसमें कोई कठिनाई नहीं होगी।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

शाहजहाँपुर
२७ मार्च १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

प्रशिक्षकों की सूची संलग्न है :

तिरुवन्नमलाई के श्री जनार्दन को ६ या ७ साल पहले मिशन का प्रिफेक्ट बनाया गया था। अपनी पत्नी से प्रभावित होकर उन्होंने यह काम छोड़ दिया और मुझे लिखा कि मैं सेन्टर बंद कर रहा हूँ क्योंकि अब यहाँ कोई प्रशिक्षु भी नहीं है। उसके बाद से उन्होंने पत्र-व्यवहार भी बंद कर दिया। एक अभ्यासी का ट्रांसफर तिरुवन्नमलाई होने पर जब वह उनसे मिलने वहाँ गया तो उन्होंने उसे बहुत खुशी से ट्रांसमिट किया। मैंने त्रिचि के श्री एस. राजू को उनका पता लिखने के लिये कहा है। इसलिये मैंने उनका नाम सूची में शामिल नहीं किया है।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : मेरा विश्वास है कि लन्दन के पत्रों के मेरे जबाबी दोनो पत्र तुम्हें मिल गये होंगे।

नं. सी ४३४/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२७ मार्च १९७२

द सेक्रेटरी,

महोदय,

एस.आर.सी.एम. के भारत और विदेशों के समस्त प्रशिक्षकों की एक सूची हमारे रिकॉर्ड में उपलब्ध वर्तमान पतों के साथ यहाँ संलग्न है। आपने ज्वाइंट सेक्रेटरी श्री रायजादा को लिखे १७ मार्च १९७२ के अपने पत्र में इच्छा जाहिर की थी। पत्र का जबाब बाद में जायेगा।

परम आदरणीय मालिक के आदेश से मालिक की सेवा में,

आपका
के. एम. सक्सेना
कृते ज्वाइंट सेक्रेटरी

पुनश्च : डा. हरनाम सिंह का पता परम आदरणीय मालिक के पत्र के माध्यम से आपको पहले ही भेजा जा चुका है।

२७ मार्च १९७२

श्री रामचन्द्र मिशन

शाहजहाँपुर (उ.प्र.) भारत

विदेश में प्रशिक्षकों की सूची
(मार्च १९७२ तक)

ऑस्ट्रेलिया	: श्री हेनरी जी. एस्ट्रिनास
कनाडा	: मिस क्रिस्टीन एम. लैंगस्टाफ
डेन्मार्क	: मिसेज बर्थे हॉगार्ड
	: श्री ए. लक्ष्मीनरसिंहन
	: मिस वीबे ईर्स्टेड
इजिप्ट	: मैडम डिना जोन्नाइड्स
इंग्लैंड	: मिसेज वेरा डेविश
फ्राँस	: श्री ए. पोरे
इटली	: श्री पाओलो पासाक्विन्दिसी
	: श्री जी. एल. श्रवनमुत्तु
मैलागासी (मैडागास्कर)	: श्री राकोटोन्ड्रेनाइव एलेक्जेन्ड्रा
यू.एस.ए.	: डा. राजेन्द्र पाल सिंह
	: श्री एस. चिरंजीवी
	: श्री फ्रेड वीन्स्टाक
	: मिस स्पेन्सर किम्बाल
पश्चिम अफ्रीका	: डा. मिसेज आर. चोद्गम
पश्चिम जर्मनी	: श्री राबर्ट कोच
	: श्रीमती राबर्ट कोच

श्री रामचन्द्र मिशन

शाहजहाँपुर (उ.प्र.) भारत

प्रशिक्षकों की सूची
(मार्च १९७२ तक)

आगरा (उ.प्र.)	: श्री पी. कृष्णमूर्ति
इलाहाबाद (उ.प्र.)	: श्री एम. एल. चतुर्वेदी
	: श्री लक्ष्मी शंकर
अमेठी (लखनऊ) उ.प्र.	: ठा. बासुदेव सिंह

अनन्तपुर (आँध्र प्र.)	: श्री के. रामकृष्ण शेट्टी
	: मिसेज रामकृष्ण शेट्टी
बहराइच (उ.प्र.)	: श्री श्याम सुन्दर मिश्रा
	: श्री देवी बक्श सिंह
बंगलोर (मैसूर)	: श्री जे. आर. दोरैस्वामी अय्यर
	: श्री बी. के. राजगोपाल
बाराबंकी (उ.प्र.)	: श्री आर. एस. भार्गव
बारसी (शोलापुर) महाराष्ट्र	: श्री पी. डी. गायकवाड़ (मिशन के ऑर्गनाइजर)
बस्ती (उ.प्र.)	: श्री जे. के. मेहरोत्रा (मिशन के ऑर्गनाइजर)
भवानीसागर (तमिलनाडु)	: **(संपादकीय टिप्पणी : कोई नाम नहीं है।)**
बीदर (मैसूर स्टेट)	: श्री राम शास्त्री
बीजापुर (मैसूर स्टेट)	: श्री एस. ए. सारनाड
कलकत्ता (पश्चिम बंगाल)	: श्री रमन लाल मिमानी
	: श्रीमती रमन लाल मिमानी
चन्नपटना (मैसूर स्टेट)	: श्री एम. डी. जहागीरदार
	: श्रीमती शान्ता जहागीरदार
चौकिया (सुल्तानपुर) उ.प्र.	: श्री कृष्ण कुमार त्रिपाठी
चित्तूर (आँध्र प्र.)	: श्री डी. राममूर्ति
कुडप्पा (आँध्र प्र.)	: श्री आर. रामचन्द्र रेड्डी
	: मिसेज आर. रामचन्द्र रेड्डी
	: श्री आर. वेंकटसुब्बारेड्डी
दिल्ली	: श्री एम. एस. सुन्दरा
	: मिसेज प्रभा सुन्दरा
	: श्री बी. डी. महाजन
	: श्री आर. कृष्णस्वामी
	: श्री एल. के. शर्मा
	: श्री एस. सी. किशोर
	: श्री एस. सेथुरत्नम
	: श्री सुभाष चन्द्रा
	: मिसेज ए. डी. जोशी

	: श्री आर. शेषाद्रि
	: मिसेज आर. शेषाद्रि
फतेहगढ़ (उ.प्र.)	: डा. एल. पी. श्रीवास्तव
	: श्री आर. एस. सचान
गब्बूर (मैसूर स्टेट)	: श्री डी. बी. अग्निगर्ज
गोण्डा (उ.प्र)	: श्री राम प्यारे पाण्डेय
गुलबर्गा (मैसूर स्टेट)	: श्री बी. पम्पापाति
	: श्री नारायण राव
	: श्री गोपाल राव मजूमदार
	: श्री गुण्डेराव नागनूर
	: श्रीमती शान्ताबाई दत्ताराज
हरदोई (उ.प्र.)	: श्री जे. पी. मिश्रा
हसन (मैसूर स्टेट)	: श्री बी. जी. जनार्दन
हिल कोलोनी (आँध्र प्र.)	: श्री डी. एस. के. सुब्रमन्य शास्त्री
हैदराबाद (आँध्र प्र.)	: श्री एन. कुमारस्वामी
	: श्रीमती एन. कुमारस्वामी
	: श्री आर. एन. महेन्द्रकर
	: श्रीमती महेन्द्रकर
	: श्री एच. जोगाराव
	: श्री सी. ई. गुप्ता
ईसानगर (लखीमपुर खीरी)उ.प्र.	: डा. मुकुन्द मुरारी गुप्ता
कालाहस्ती (आँध्र प्र.)	: श्री टी. धोण्ड राव
कानपुर (उ.प्र.)	: श्री नारायण सहाय
	: श्री रामजी पाण्डेय
काँठ (मुरादाबाद) उ.प्र.	: श्री रमेश चन्द्र प्रेमी
कोलेगल (मैसूर स्टेट)	: श्री एन. आर. नारायणा (मिशन के ऑर्गनाइजर)
लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)	: श्री हरदत्त सिंह
	: श्री भैरो प्रसाद
लखनऊ (उ.प्र.)	: श्री नसीब चन्द
	: श्री पी. सी. शुक्ला
मद्रास	: श्री आर. वीरराघवन
	: श्री सी. ए. राजगोपालाचारी

	: श्री पी. राजगोपालाचारी
	: श्रीमती सुलोचना पार्थसारथी
	: श्री सी. एस. रामकृष्णन
मदुरै (तमिलनाडु)	: श्री थास्मा स्वामी
	: श्री जी. एस. मणि
मोदीनगर (उ. प्र.)	: कुमारी कस्तूरी चतुर्वेदी
	: कुमारी केसर चतुर्वेदी
मुरादाबाद (उ.प्र.)	: श्री रामचन्द्र सक्सेना
मैसूर	: श्री टी. मंजूनाथ अय्यर
नागपुर (महाराष्ट्र)	: श्री के. आर. बासुदेवन
	: श्रीमती डा. एस. वी. काले
नवसारी (गुजरात)	: श्री देवराम एच. चावडा
पठानकोट (हिमाचल प्र.)	: श्री सत्य पाल
पूरनपुर (पीलीभीत) उ.प्र.	: श्री करुणाशंकर
रायचूर (मैसूर स्टेट)	: श्री राघवेन्द्र राव
	: श्रीमती राघवेन्द्र राव
	: श्री डी. आर. विठ्ठल राव
	: श्री एस. कृष्णा राव
रायपुर (मध्य प्र.)	: श्रीमती पी. अन्नपूर्णा
सेलम (तमिलनाडु)	: श्री के. महालिंगम (मिशन के ऑर्गनाइजर)
सावेर (मध्य प्र.)	: श्री के. बी. मोघे
सिकन्दराबाद (आँध्र प्र.)	: श्री सी. राघवेन्द्र राव
	: श्रीमती सरोजिनी
सेदम (मैसूर स्टेट)	: श्री अयाल रेड्डी
	: डा. एस. वी श्यामराव
शाहाबाद (मैसूर स्टेट)	: श्री एस. रामकृष्ण राव
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)	: श्री काशीराम अग्रवाल
	: श्रीमती कमला टण्डन
सीतापुर (उ.प्र.)	: श्री उमाशंकर आर्य
	: श्री रमापति डिंगर
	: श्री कृष्ण कुमार श्रीवास्तव
	: श्री श्री प्रकाश श्रीवास्तव

	: श्रीमती जागेश्वरी
तिनसुकिया (आसाम)	: श्री दयाभाई पटेल
	: श्री राम दास
	: श्री भगवान दास
तिरुचिरापल्ली (तमिलनाडु)	: कैप्टन टी. एन. रामास्वामी
	: श्रीमती रामास्वामी
	: श्री एस. राजू
	: श्री एस. के. राजगोपालन
तिरुपति (आँध्र प्र.)	: डा. जी. कुप्पुस्वामी
	: श्री के. सी. नारायणा
	: श्रीमती चित्रा
	: श्री इर्ला पुलिया
	: डा. के. एस. स्वामी
	: श्री वी. पांडुरंग राव
	: श्रीमती वी. पुष्पम
	: श्री के. सी. अरविन्द राजगोपाल
तिरुत्तनी (तमिलनाडु)	: श्री वी. वेंकटपति
विरुधनगर (आँध्र प्र.)	: श्री बी. राजगोपाल
विजयवाड़ा (आँध्र प्र.)	: डा. वी. पार्थसारथी
	: श्रीमती वी. अनुसूया

मद्रास
२९ मार्च १९७२

परम आदरणीय मालिक,

मि. राबर्ट कोच ने केबिल से सूचित किया है कि आपकी यात्रा मई की अपेक्षा जून में ज्यादा अच्छी होगी इसलिये कार्यक्रम में थोड़ा फेरबदल किया है और यात्रा के सभी पहलुओं को ध्यान में रख कर यात्रा का अंतिम कार्यक्रम टाईप कराकर आपके तत्काल अवलोकन के लिये यहाँ संलग्न कर रहा हूँ। आशा है कि छप जाने के बाद मैं इसकी ५० प्रतियाँ आपके पास वितरण के लिये भेज दूँगा ताकि शाहजहाँपुर के स्थानीय लोगों को कार्यक्रम की प्रतियों का वितरण आप कर सकें। सभी केन्द्रों के प्रशिक्षकों के पास इस कार्यक्रम की प्रति मद्रास से ही भेजी जायेगी। विदेश के सेन्टरों को भी यह कार्यक्रम यहीं से भेज दिया

जायेगा। मुझे आशा है कि न्यूयार्क पहुँचने तक के हमारे कार्यक्रम में अब कोई बदलाव नहीं होगा। अभी तक डा. आर. पी. सिंह ने मेरे २८ फरवरी के उस पत्र का जबाब नहीं दिया है ज़िसमें मैंने उन्हें यू.एस.ए. के पूरे कार्यक्रम का प्रबंध करने की बात लिखी है। उन्होंने अभी तक मेरे पत्र की प्राप्ति की भी सूचना नहीं दी है इसलिये तत्काल पत्र भेजने के निवेदन के साथ उनको एक और पत्र भेजा जा रहा है। आपकी इच्छानुसार यू.एस.ए. में तीन हफ्ते रुकने का कार्यक्रम है। यहीं से वापसी की यात्रा का कार्यक्रम स्पष्ट होगा। इसीलिये वापसी की यात्रा की उड़ानों के बारे में अभी अंतिम रूप से कोई निर्णय नहीं लिया गया है। यह लन्दन या यू.एस.ए. में पहुँचने के बाद ही तय होगा।

मुझे आपका २३ का लिखा पत्र क्रमांक सी/४२३ मिला, जिसमें आथानास्सोलिस के पत्र के अन्य प्रश्नों के जबाब हैं। मानव जनसंख्या में विशाल वृद्धि के बारे में मुझे डा. वरदाचारी द्वारा कही गयी एक बात याद आती है कि बड़े पैमाने पर कीटनाशकों, पेस्टिसाइड्स, फंगीसाइड्स आदि के प्रयोग से जीवन के निम्न स्वरूपों जैसे कीड़ों आदि का लगभग पूरा सफाया होता जा रहा है और इन स्वरूपों में जो आत्मायें हैं उन्हें फिर से उसी स्वरूप में पुनर्जन्म लेने से रोक लग जाने के कारण वे आत्मायें मानवीय स्तर पर जन्म ले रही हैं। यह बात कुछ साल पहले उन्होंने मुझे बतायी थी। इसके अलावा आपने जो कुछ भी लिखा है उसमें कुछ और जोड़ने की बात मैं सोच भी नहीं सकता। आपका यह निर्णय ही बेहतर है कि आथानास्सोलिस से मिलने पर ही उससे व्यक्तिगत रूप से चर्चा की जाये।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
३० मार्च १९७२

परम आदरणीय मालिक,

श्रीमती बर्थे हॉगार्ड ने पत्र लिखा है कि कोपेनहेगेन में अच्छी तरह से बने हुये एक घर 'नोबिस' को बर्थे और वीबे मिलकर संयुक्त रूप से खरीद रही हैं, जिनके कागजात वकील तैयार कर रहा है। उसने मुझे लिखा है कि इसमें जरूरी सारी कानूनी सावधानियाँ बरती

जायेंगी जिससे आगे चल कर आपसी संबंधों में या मिशन और व्यक्तिगत संबंधों के बीच किसी प्रकार के विवाद की स्थिति न आये।

निस्संदेह अभी यह घर श्रीमती बर्थे और वीबे की संयुक्त संपत्ति होगा और कोपेनहेगेन का सेन्टर यहाँ से कार्य करेगा लेकिन भविष्य में मिशन के पास पर्याप्त कोष होने पर मिशन इसे इन दोनो स्वामियों से अपने स्वामित्व में ले लेगा। मैं समझता हूँ कि इस मामले में आप भी यही चाहते हैं और श्रीमती बर्थे भी यही चाहती हैं। उन्होंने लिखा है कि ऐसे तमाम काम किये जा रहे हैं जिससे भविष्य में सबको खुशी मिल सके। मैंने उनसे इस मामले में आगे बढ़ने के लिये कहा है। कृपया आप अपने पत्र द्वारा उन्हें सीधी अनुमति प्रदान कर दीजिये। श्रीमती हॉगार्ड को भेजे गये अपने पत्र की एक प्रति मैं आपके अवलोकनार्थ संलग्न कर रहा हूँ।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

संलग्नक :
श्रीमती बर्थे हॉगार्ड को लिखे गये पत्र की प्रति

मद्रास
१ अप्रिल १९७२

परम आदरणीय मालिक,

आपके विदेश दौरे की छपी हुई ५० प्रतियाँ भेज रहा हूँ। कृपया इन्हें प्राप्त कीजिये। मैंने आपको अपने पिछले पत्र में यह संकेत किया था कि भारतीय केन्द्रों, प्रशिक्षकों और विदेश के केन्द्रों और प्रशिक्षकों को यह विवरण यहीं से भेज दिया जायेगा। इसलिये आपको भेजी गयी प्रतियों का उपयोग आप अपनी सुविधा से व्यक्तिगत वितरण के लिये कर सकते हैं। पुराने कार्यक्रम में हुये संशोधन इस प्रकार हैं :

- हम २१ अप्रिल १९७२ को कैरो पहुँचेंगे और रविवार को वहाँ से चल देंगे। इस प्रकार हम वहाँ लगभग ४८ घंटे रुकेंगे। इसे बढ़ाना अब सम्भव नहीं है क्योंकि बम्बई से कैरो के लिये केवल दो उड़ानें हैं और आगे रोम के लिये केवल शुक्रवार और रविवार को उड़ान है। वैसे मेरी राय में इतना समय वहाँ के लिये पर्याप्त है।
- श्री राबर्ट कोच चाहते थे कि वहाँ की यात्रा जून में की जाये इसलिये जाने के मार्ग में से फ्रीबर्ग को हटाकर वापसी के मार्ग में कर दिया गया है।

- फ्रीबर्ग की यात्रा निरस्त हो जाने के कारण मैंने ज्यूरिख की यात्रा को भी निरस्त कर दिया है। अब हम पेरिस से सीधे कोपेनहेगेन जा सकते हैं। बर्थे हमें वहाँ शनिवार और रविवार के दिन चाहती थीं क्योंकि ये उनके अवकाश के दिन हैं। प्रबंध इसी के अनुसार कर दिया गया है। हफ्ते के अन्य दिनों में अवकाश लेने पर उन्हें एक स्थानापन्न शिक्षक की व्यवस्था करनी पड़ती है और अपनी तनख्वाह इस टीचर को देनी पड़ती है। इसलिये ऐसा प्रबंध कर दिया गया है कि उन्हें अवकाश न लेना पड़े।

मैंने डा. आर. पी. सिंह से अभी तक कोई पत्र नहीं प्राप्त किया हालाँकि उन्हें एक पत्र मैंने याद दिलाने के लिये भी लिखा है।

कार्यक्रम में आपका दिल्ली में आगमन मैंने १८ अप्रिल को दिखाया है लेकिन आप शायद जल्दी आ रहे हैं। आप अगर मुझे भी जल्दी चाह रहे हों तो कृपया मुझे बताइये कि मैं किस तारीख को दिल्ली पहुँचूँ। अभी तक तो मेरी योजना मद्रास से प्लेन द्वारा १८ को दिल्ली पहुँचने की है।

एक बात और है। कार्यक्रम में मैंने दिल्ली से गुरुवार २० की रात को मध्यरात्रि के बाद एयर इण्डिया की उड़ान से, जो एक प्रकार से शुक्रवार की सुबह होगी, चलने की योजना बनायी है। अगर आप बम्बई में एक दिन आराम करना चाहें तो बुधवार १९ को चलना बेहतर होगा। यह मेरे दिल्ली पहुँचने पर भी हो सकता है या फिर अगर आप चाहें तो मुझे इसकी सूचना दे सकते हैं।

प्रणाम

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ४६४/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२ अप्रिल १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा २४ और २९ मार्च का प्रेमपूर्ण पत्र विदेश के दौरे के कार्यक्रम के साथ मिला। जेनेवा को छोड़कर अन्य जगहों पर जहाँ भी हम रुकेंगे वहाँ का पता भी इसमें दिया हुआ है। श्री जी. एस. मणि ने मुझे मद्रास में बताया था कि जेनेवा में उनकी बहन अपने घर पर हमारा स्वागत करेगी।

श्री रामचन्द्र मिशन

श्री रामचन्द्रजी का १९७२ का विदेश दौरा

अध्यक्ष, श्री रामचन्द्र मिशन, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

विदेश यात्रा										
	आगमन				प्रस्थान					
स्टेशन	दिन	तारीख	समय	उड़ान	दिन	तारीख	समय	उड़ान	स्थानीय पता	फोन नं.
दिल्ली	मंगलवार	१८ अप्रिल		रेल	गुरुवार	२० अप्रिल	१७:५०	आई.सी. ४०५	C/o श्री एस. सेथुरत्नम १४६, जोरबाग, नयी दिल्ली	
बम्बई	गुरुवार	२० अप्रिल	१९:३५	आई.सी. ४०५	शुक्रवार	२१ अप्रिल	०१:००	ए.आई. १०९		
कैरो	शुक्रवार	२१ अप्रिल	०४:३०	ए.आई. १०९	रविवार	२३ अप्रिल	०५:१०	ए.आई. ११५	C/o मैडम डिना जोन्नाइडस कैसिनो सन्सूसी, मिदान एलगिजा गिजा, कैरो, इजिप्ट	कार्यालय ८९६३७८ आवास ८९४८६३
रोम	रविवार	२३ अप्रिल	०६:२५	ए.आई. ११५	शनिवार	२९ अप्रिल	१२:१०	ए.जेड. ३४२	C/o मि. जी. एल. श्रवनमुत्तु आइसोला २६, नार्द विलिनो २३/१२ कैसल पलोक्को, रोम ००१२४, इटली	६०-९२-६००
मर्सिली	शनिवार	२९ अप्रिल	१३:३०	ए.जेड. ३४२	सोमवार	१ मई				
सेनेरी	सोमवार	१ मई			शुक्रवार	५ मई			C/o मि. आंद्रे पोरे एल'हिप्पो कैम्पे, पोर्ट आइसोल, सेनेरी ८३, फ्रांस	७४-०४-६६
नीसे	शुक्रवार	५ मई			सोमवार	८ मई				
मर्सिली	सोमवार	८ मई			सोमवार	८ मई	१०:५०	आई.टी. ७०२		
पेरिस	सोमवार	८ मई	१२:१०	आई.टी. ७०२	बुधवार	१० मई	१४:५०	एस.के. ५६६		
कोपेनहेगेन	बुधवार	१० मई	१६:३५	एस.के. ५६६	सोमवार	१५ मई	११:५५	बी.ई. ७४१	C/o मिसेज वर्ये हॉगार्ड स्टेशनवेज १८, ग्रीवस्ट्रैन्ड २६७०, डेन्मार्क	९००६७८
लन्दन	सोमवार	१५ मई	१३:३५	बी.ई. ७४१	सोमवार	२२ मई	१३:००	ए.आई. १०१	C/o मिसेज वेरा डेविश १९ मार्लबोरो प्लेस सेन्ट जान्स वुड, लन्दन एन. डब्ल्यू. ८	०१-६२४-३८८६
न्यूयार्क	मंगलवार	२३ मई	१५:३५	ए.आई. १०१	सोमवार	१२ जून			C/o डा. आर. पी. सिंह ३५०१, टोलेडो टेरेस, अपॉर्टमेन्ट बी १ हयात्सविले, मेरीलैन्ड २०७८३ यू.एस.ए.	

श्री रामचन्द्र मिशन

श्री रामचन्द्रजी का १९७२ का विदेश दौरा

अध्यक्ष, श्री रामचन्द्र मिशन, शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

वापसी यात्रा

	आगमन				प्रस्थान					
स्टेशन	दिन	तारीख	समय	उड़ान	दिन	तारीख	समय	उड़ान	स्थानीय पता	फोन न.
लन्दन	सोमवार	१२ जून			शुक्रवार	१६ जून	१३:००		C/o मिसेज वेरा डेविश १९ मार्लबोरो प्लेस सेन्ट जान्स वुड, लन्दन एन. डब्ल्यू. ८	०१-६२४-३८८६
कोपेनहेगेन	शुक्रवार	१६ जून			मंगलवार	२० जून			C/o मिसेज बर्थे हॉगार्ड स्टेशनवेज १८, ग्रीवस्ट्रैन्ड २६७०, डेन्मार्क	९००६७८
म्यूनिख	मंगलवार	२० जून			सोमवार	२६ जून			C/o मि. राबर्ट कोच ७८०१, जार्टन बी.ई.आई. फ्रीवर्ग फ्लौनरस्ट्रैसी ५, वेस्ट जर्मनी	(०७६६१) ४३१०
पेरिस	सोमवार	२६ जून			सोमवार	२६ जून				
मर्सिली	सोमवार	२६ जून			शुक्रवार	३० जून			C/o मि. आंद्रे पोरे एल'हिप्पोकैम्पे, पोर्ट आइसोल, सेनेरी ८३, फ्रांस	७४-०४-६६
जेनेवा	शुक्रवार	३० जून			सोमवार	३ जुलाई	१२:२०	ए. आई. ११६		
बम्बई	मंगलवार	४ जुलाई	०४:००	ए. आई. ११६	मंगलवार	४ जुलाई				
मद्रास	मंगलवार	४ जुलाई								

मुझे लगता है कि तुम्हें उनका पता नहीं मिल पाया। मैंने मदुरै के जी. एस. मणि को लिखा है कि वे तुमको उनका पता तुरंत भेज दें।

मिस स्पेन्सर वापस अमेरिका चली गयी हैं। वे हमसे रोम में मिलना चाहती हैं। मुझे विश्वास है कि डा. हरनाम सिंह बचे हुये देशों का वीसा लेने का प्रबंध कर रहे होंगे। अगर कोई चीज अपने दौरे के लिये जरूरी हो तो कृपया उन्हें लिखो। मैं उन्हें लिख कर पूछ रहा हूँ कि क्या वीसा और अन्य चीजों के लिये दिल्ली में मेरी जरूरत होगी? मैं शुक्रवार १४ अप्रिल को दिल्ली पहुँचना चाहता हूँ।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : मैं लन्दन के मि. आथानोस्सोलिस को ५ अप्रिल १९७२ को जबाब भेजूँगा।

नं. सी ४६६/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
३ अप्रिल १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैंने कल ही तुम्हें एक पत्र भेजा है। श्रीमती मिलर का पता नीचे दे रहा हूँ, जो मद्रास में अन्य महिलाओं के साथ आयी थीं और तुम उनसे मिले भी थे। न्यूयार्क और वोस्टन के बीच स्थित अपने घर आने का निवेदन उन्होंने बार बार किया है। न्यूयार्क में एयरपोर्ट पर मिलकर वे अपनी कार से हमें अपने घर ले जायेंगी, जिसमें ढाई घंटे लगेंगे। वे वहाँ बहुत मददगार होंगी। इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम उन्हें न्यूयार्क तक का सारा कार्यक्रम तारीख और पहुँचने के समय के विवरण के साथ भेज दो और अपने पत्र में मेरे पत्र का संदर्भ भी दे दो। श्री फ्रेड वीन्स्टाक के माता पिता भी उसी रास्ते में पेन्सिलवानिया में हैं।

मैं डा. राजेन्द्र पाल सिंह को लिख रहा हूँ कि वे तुम्हारे पत्र का जबाब तुरंत दें। मैं उनको यह भी सूचित कर रहा हूँ कि श्रीमती मिलर ने मुझे अपने घर आने का आमंत्रण दिया है। उन्होंने यहाँ शाहजहाँपुर में रुचिपूर्वक ध्यान करना शुरु किया है।

बच्चों को प्यार,

संलग्नक : एक

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
४ अप्रिल १९७२

परम आदरणीय मालिक,

मुझे अफसोस है कि कल मैंने आपको जो कार्यक्रम भेजा है उसमें एक छोटी गलती हो गयी है। न्यूयार्क में हमारा आगमन सोमवार, २२ मई को होगा न कि जैसा छपा है - २३ मई, मंगलवार को। कृपया अपनी प्रतियों में इसी के अनुसार सुधार कर लीजिये।

विदेश जा रही प्रतियों में यहाँ सुधार कर लिया गया है।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ४८५/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
५ अप्रिल १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मेरा विश्वास है कि तुम्हें मेरा पत्र मिल गया होगा। मैंने तुम्हारे द्वारा बनाये गये कार्यक्रम के अनुसार २० अप्रिल को जाने का तय किया है। मैं बक्सर दिल्ली एक्सप्रेस से १६ अप्रिल की शाम को करीब ७:३० पर दिल्ली पहुँचूँगा।

तुम्हें मोती का चूर्ण मिल गया है तो तुम इसे शहद या अनार के शरबत में लेना शुरु करो। इसमें अच्छे प्रकार का कैल्शियम होता है और यह हृदय और मस्तिष्क के लिये बहुत अच्छी औषधि है। मैं यहाँ इसे तुम्हारे और अपने लिये खरीदूँगा और फिजीशियन से राय भी ले लूँगा कि इसमें कुछ और मिलाने की जरूरत तो नहीं है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : मुझे इस दौरे पर १०९ डॉलर मिलेंगे। मैं इस एक्सचेंज के लिये अपने साथ पैसा लाऊँगा।

मद्रास
५ अप्रिल १९७२

परम आदरणीय मालिक,

अभी-अभी आपका २ और ३ अप्रिल का प्रेमपूर्ण पत्र प्राप्त हुआ। अभी-अभी मुझे भाई आर. पी. सिंह का पत्र मिला है। उन्होंने लिखा है कि कार्यक्रम की तैयारी हो रही है। मैंने संलग्न पत्र की प्रति के अनुसार उनसे निवेदन किया है कि वे कृपया मुझे मेरे मद्रास छोड़ने से पहले पूरे कार्यक्रम के बारे में लिखें।

ऐसा लगता है कि वहाँ कोई दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर हैं, जो आपकी यात्रा में बहुत रुचि ले रहे हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें दिव्य लालाजी महाराज का दर्शन करने का असाधारण अवसर भी मिला था। वे अपने घर का कोई कार्यक्रम बना रहे हैं जिसका पूरा विवरण भाई डा. सिंह से मिलने की उम्मीद है। मैंने श्रीमती कैरोलीन एस. मिलर को भी पत्र लिख दिया है। वैसे मैंने उन्हें पहले ही कार्यक्रम की एक प्रति भेज दी है फिर भी मैं उन्हें उस पत्र की प्रति भी भेज रहा हूँ जो मैंने भाई डा. सिंह को लिखी है। मैंने आपके उस पत्र पर गौर किया है जिसमें आपने शुक्रवार १४ तारीख को दिल्ली पहुँचने की बात लिखी है। मैं वहाँ १६ या १८ को पहुँचूँगा। अगर आप मेरी जरूरत पहले समझते हों तो कृपया मुझे बताइये।

हम सब की ओर से प्रेम और प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ५०५/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
६ अप्रिल १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैंने तुम्हें मि. आथानास्सोलिस के पत्र की एक प्रति पहले ही भेज दी है। अब मैं खुद के द्वारा उसको लिखे गये जबाब की एक प्रति तुमको भेज रहा हूँ। उसके पिछले पत्र और उसको दिये गये जबाब की एक प्रति भी तुम्हारी जानकारी के लिये भेज रहा हूँ। मैंने उसके पत्र के साथ एक कागज भी संलग्न किया है जो उसके डेमो के विचार के बारे में है। यह सारा पत्र-व्यवहार तुम्हारे पास भेजने का मेरा उद्देश्य

यही है कि तुम्हें इस बात की जानकारी हो जाये कि वहाँ तुमसे किस तरह के सवाल पूछे जायेंगे।

मि. फ्रेड वीन्स्टाक दिल्ली से इंग्लैंड जाने के लिये कल यहाँ से प्रस्थान करेंगे। वे वहाँ श्रीमती डेविश से भी मिलेंगे। वे सभी जगहों पर अच्छा काम करेंगे। उन्होंने मुझसे अनुरोध किया है कि मैं न्यूयार्क में उनके घर भी आऊँ। मैं भी वहाँ निश्चित रूप से जाना चाहता हूँ। वे पेन्सिलवानिया में रहते हैं जो न्यूयार्क से एक ओर करीब ९० मील दूर है दूसरी ओर कैरोलीन एस. मिलर का घर, जहाँ हमें ठहरना है, न्यूयार्क से करीब १५० मील दूर है। मैं इन स्थानों को नहीं छोड़ सकता। दूसरी चीजों के बारे में मैंने तुम्हें पहले ही सूचित कर दिया है। हम रास्ते में साथ मिलकर निर्णय करेंगे।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

नं. सी ४९४/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
५ अप्रिल १९७२

मेरे प्रिय आथानास्सोलिस,

मुझे आपका १२ मार्च का प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मैं बहुत खुशनसीब हूँ कि मुझे एक ऐसा साथी मिला जो खुले दिमाग से अपनी सारी परेशानियों को लेकर मेरे सामने आता है। ऐसे पत्र सोचने के लिये मुझे खुराक देते हैं। इसके लिये मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूँ। ईश्वर आप पर कृपा करे!

अपने सारे लेखों में मैंने ईश्वर से सीधा संबंध रखने पर जोर दिया है लेकिन सामान्यतया लोग इसमें कठिनाइ महसूस करते हैं। इसलिये वे खुद मालिक का माध्यम अपनाने पर बल देते हैं। लगभग सभी धर्मों में ईश्वर से सीधे प्रेम करने को कहा गया है। मैं भी सदैव केवल और केवल ईश्वर को ही समर्पण करने को कहता हूँ और उसे केवल ***निर्भरता और प्रेम*** से ही प्राप्त किया जा सकता है। अगर कोई समर्पण की कोशिश करता है तो वहाँ समर्पण करने वाला ***'मैं'*** भी होता है इसलिये वास्तविक समर्पण तो स्वत: विकसित होता है।

मेरा खुद का मामला कुछ अलग किस्म का था। मैंने २१ साल की आयु में अभ्यास करना शुरु किया था। उस समय मैं यह नहीं

जानता था कि समर्पण क्या है इसलिये मैंने कभी इसकी कोई कोशिश नहीं की। मुझे ऐसे मालिक मिले कि मेरे लिये तो मेरे मालिक ही सब कुछ थे। अगर अनजाने में मेरा कोई समर्पण था भी तो वह मेरे मालिक के प्रति ही था। सच कहा जाये तो मालिक का शरीर ईश्वर नहीं होता लेकिन उसके पीछे जो कुछ भी होता है वह दिव्यता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। इसलिये ***मेरा समर्पण तो उस दिव्यता के प्रति था न कि मालिक के उस शरीर के प्रति।*** अगर आप मालिक के पूरे शरीर को अपनी दृष्टि में रखते हैं तो दिव्यता खुद-ब-खुद उसके पीछे-पीछे चली आती है। लेकिन यह केवल मेरे लिये था और मैं किसी को ऐसा करने के लिये नहीं कहता। वस्तुतः मेरा समर्पण मालिक के प्रति न होकर सत्य अस्तित्व के प्रति था। अब मेरा अनुभव दूसरों के सामने प्रमाण के रूप में है और मुझसे संबंधित लोग मेरे इस अनुभव का फायदा अगर उठाना चाहें तो उठा सकते हैं।

हम हृदय में यह विचार लेकर ध्यान का अभ्यास करते हैं कि दिव्य प्रकाश वहाँ है। इसका मतलब यह है कि हम अपने दिल पर खेल भी रहे हैं और यह एक कार्य भी है। हम यह जानते हैं कि हम ध्यान कर रहे हैं जिसका अर्थ है कुछ करना और जहाँ काम की शुरुआत होती है वह भी वहाँ है। जहाँ हमें जाना है उसका विचार भी वहाँ है और हम अवचेतन रूप से उसकी प्रतीक्षा भी कर रहे होते हैं। इसका सीधा मतलब है कि हम निष्क्रिय नहीं हैं बल्कि इतने व्यस्त हैं कि एक साथ तीन काम कर रहे हैं। इसलिये निष्क्रियता सक्रियता में खो जाती है।

हाँ, हमारी पद्धति सचमुच सरलतम है क्योंकि सरलतम को प्राप्त करने की पद्धति सरलतम होनी ही चाहिये। वह तो वहाँ है ही हमें अपने संदेह को विश्वास से प्रस्थापित करके वही हो जाना है।

आपने अपने बारे में जिन कठिनाइयों का उल्लेख किया है, उसमें कुछ भी नया नहीं है। ऐसी चीजें लगभग हर देश में और हर जगह प्रभावी हैं। लेकिन अगर व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक है तो ये चीजें अगर खत्म नहीं भी होतीं तो कम अवश्य हो जाती हैं। इसलिये मुझे तो इन सारी समस्याओं का इलाज अध्यात्म ही लगता है जो प्रेम करने और गले लगाने के बर्ताव को विकसित करने में हमारी मदद करता है। अध्यात्म का हमारे जीवन में स्वाभाविक प्रभाव यह होता है कि हमारे मन की असंतुलित प्रकृति समाप्त होकर हमारे जीवन

में प्रेम का मार्ग विकसित होता है। यह सही बोध और सही मनोदशा की रचना करता है जिसका महत्व हमारे दैनिक जीवन में है। बिना आम को चखे इसके स्वाद का हम पता नहीं लगा सकते। भारत में धार्मिक पृष्ठभूमि का बहुत विस्तार है लेकिन संपूर्ण मानवता के लाभ के लिये मैं अपने प्रशिक्षकों के साथ ही मिशन का केन्द्र जगह-जगह पर स्थापित कर रहा हूँ। अगर यह अच्छी चीज है तो हरेक को हमारे साथ सहयोग करना चाहिये।

जब तक व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास उस स्तर तक नहीं हो जाता कि उसके जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनो पहलू संतुलित हो जायें, सामान्यतया आध्यात्मिक मामलों को आध्यात्मिक तरीके से और भौतिक मामलों को भौतिक तरीके से निटाया जाना चाहिये।

मैंने लिखा है कि सृष्टि के पहले हर तरफ केवल शून्य था। आपने लिखा है कि मैंने इस संबंध में यह लिखकर कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, अपने मत का खण्डन किया है। मैं आपको स्पष्ट कर दूँ कि ईश्वर अपने दायरे में सर्वशक्तिमान है लेकिन अपने केन्द्र में अनस्तित्व में है। सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी जैसे गुणों से ईश्वर को इसलिये विभूषित किया जाता है जिससे अमूर्त्त को गुण दिये जा सकें और हम गुणों से सार की ओर बढ़ सकें। वस्तुतः परमतत्व सारे गुणों से मुक्त अनस्तित्व की दशा में है जो होने की हम आकांक्षा करते हैं।

मनुष्य की उत्कृष्टता उसके व्यवहार में होती है जो जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण को दर्शाता है और जब वह आध्यात्मिक हो जाता है तो उसका व्यवहार भी पूर्णता को प्राप्त कर लेता है। दार्शनिक रूप से अगर हम इस विचार को आगे बढ़ायें तो यह बात वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित हो जाती है कि मनुष्य अपने लघु परिधीय क्षेत्र में कुछ नहीं है और वह चाहे जो कुछ भी हो अपने केन्द्रीयकृत क्षेत्र में ही होता है।

जब हम ऊपर उठने की बात सोचते हैं तो हम अपने आधार - वैयक्तितता को खो देते हैं। जब तक हम अपने को किसी विन्दु पर नहीं खोते दूसरा विन्दु अन्धकार में रहता है। अगर वैयक्तितता का यह विचार पूरी तरह नहीं समाप्त होता तो हम वहीं रह जाते हैं जहाँ थे और कहीं भी पूरी तरीके से नहीं रह पाते। अस्तित्व की गहराई में पहुँचने पर हम स्वाभाविक रूप से अपनी वैयक्तितता खो देते हैं और

हमारी प्रक्रिया में यही होता है। ***खोओ और पाओ।*** या कहा जाये कि ***यहाँ खोना ही पाना है।*** जब अनस्तित्व में प्रवेश करके उसमें स्थित हो जाते हैं तो वैयक्तितता सदा के लिये समाप्त हो जाती है। चूँकि मन एक समय में एक ही चीज के बारे में सोच सकता है इसलिये अगर आप वैयक्तितता के साथ हें तो आगे नहीं जा सकते। वास्तव में अस्तित्व की सच्ची स्थिति अनस्तित्व में पहुँचने के लिये हमें वैयक्तितता पर से अपनी पकड़ छोड़नी पड़ती है।

महाप्रलय के समय हर आत्मा खुद-ब-खुद अपने स्त्रोत तक पहुँच जायेगी लेकिन चूँकि हम इसी जन्म में उस अवस्था में पहुँचना चाहते हैं इसलिये समय बचाने की प्रक्रिया में हम स्त्रोत तक पहुँचने की दिशा में क्रियाशील हो जाते हैं।

अगर हम अपना विकास चाहते हैं तो हमें चाहिये कि हम उच्चतम लक्ष्य को अपनायें। लघुता फैलकर ***व्यापकता*** में बदल जाये। वास्तव में यही लक्ष्य का लक्ष्य है और लक्ष्य के बाद तब तक लक्ष्य है जब तक यह भी खो न जाये।

हर आत्मा की अपनी पहचान है और यह तब तक देह परिवर्तन करती रहती है जब तक मुक्त न हो जाये।

जागृत अवस्था में सुषुप्ति अधिकांश मनुष्यों की व्याधि है।

मान लीजिये कि नयी आत्मायें आ रही हैं। शरीर में आने के बाद ही सही और गलत दोनो प्रकार की सोच का विकास होता है। गलत विचार और कार्य आत्माओं को दूषित कर देते हैं और इसीलिये उन्हें सफाई की जरूरत होती है। हमने स्वयं को खुद अपनी सोच से विकृत कर लिया है इसीलिये हमारी सफाई अनिवार्य है।

आपने व्याख्या करने के लिये मुझे जो विचार दिये उसके लिये आपको मैं पुन: धन्यबाद देता हूँ। ऐसे लोग भी हैं जो सेवा शुरु करने के पहले ही मुझे अस्वीकार कर देते हैं।

भवदीय

रामचन्द्र

एक दृष्टिकोण :

उष्मा अंतत: ध्वनि में और फिर प्रकाश में, जो कि चेतना है, जीवन का जीवन है, बदल जाती है। ब्रह्माण्ड के मामले में भी पाँच शक्तियों में से एक का बीज की तरह प्रयोग किया गया है, जो अव्यवस्था की स्थिति को सीमित कर रहा है और इस अतिवृद्धि या

अल्पविकास को रोकता है। इसलिये तथाकथित 'डेमो' को बहुत अधिक महत्व देने की जरूरत से छुटकारा पाना सम्भव है।

मद्रास
८ अप्रिल १९७२

परम आदरणीय मालिक,

आपका ५ तारीख का पोस्टकार्ड कल मिला और ६ तारीख का पत्र अभी-अभी मिला है। मेरे पिताजी को ट्राय के श्री रामकृष्णन का एक पत्र अभी मिला है, जिसका जबाब मैंने दे दिया है। इसकी एक प्रति आपकी जानकारी के लिये भेज रहा हूँ। आपने कैरोलीन एस. मिलर के यहाँ न्यूयार्क एयरपोर्ट से ही सीधे जाने का कार्यक्रम बना लिया है और इसके बाद फ्रेड वीन्स्टाक के यहाँ भी। लेकिन रामकृष्णन के नजदीक रहने वाले बाँग्ला देशी दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर २२ मई के बाद जितना जल्दी हो सके एक व्याख्यान का प्रबंध करने को बहुत उत्सुक हैं इसलिये हो सकता है कि कार्यक्रम में कुछ बदलाव लाना पड़े। ये ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें लालाजी महाराज से मिलने का असाधारण अवसर प्राप्त हुआ था। इनके बारे में मैं आपको पहले भी लिख चुका हूँ। कृपया अपने मन में इस सम्भावना को भी रखिये कि हमें सीधे स्टोर्स भी जाना पड़ सकता है। फिर बाद में हम कैरोलीन और वीन्स्टाक के यहाँ जा सकते हैं। आप १६ की शाम को दिल्ली आ रहे हैं लेकिन मैंने अभी अपना कार्यक्रम निश्चित नहीं किया है। मैं आपके निर्देशों का इन्तजार कर रहा हूँ। मुझे वहाँ अगर १६ को आना है तो उसके अनुसार आऊँगा अन्यथा १८ को आऊँगा।

आपकी कृपा से घर पर सभी ठीक हैं।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ५८४/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१०/११ अप्रिल १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला, जिसमें ट्रॉय के श्रीरामकृष्णन को भेजे गये पत्र की एक प्रति भी संलग्न है। मैं श्री फ्रेडरिक वीन्स्टाक

और श्रीमती कैरोलीन एस. मिलर के यहाँ जाना चाहता हूँ। तुम देखोगे कि इससे कुछ अच्छा परिणाम निकलेगा। इसका मतलब यह नहीं कि मैं बाँग्ला देश के दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर को छोड़ना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे अपने कॉलेज में भाषण देने के लिये निमंत्रित किया है। कार्यक्रम इस तरह बनाया जाना चाहिये कि हम दूसरी जगहों पर जाने के बाद वहाँ भी पहुँच सकें। कार्यक्रम में तुम्हारे द्वारा किये गये संशोधन मुझे मंजूर हैं।

मैं १६ को दिल्ली इसलिये जा रहा हूँ ताकि अगर मेरे वीसा आदि में कोई कमी हो तो वह दूर कर ली जाये। तुम १८ को भी आ सकते हो।

डा. हरनाम सिंह ने मुझसे पूछा है कि क्या उन्हें हॉलैंड के लिये भी वीसा लेना चाहिये। उन्होंने यह बात इसलिये पूछी है क्योंकि हमारे कार्यक्रम में हॉलैंड छूट गया है। मैं उन्हें लिख रहा हूँ कि हॉलैंड के लिये किसी वीसा की जरूरत नहीं है। तुम श्रीमती बर्थे को लिख सकते हो कि अगर कोई हॉलैंड में हो तो हमारे कोपेनहेगेन आने की खबर वे हॉलैंड के साथियों को दे दें। कार्यक्रम की छपी हुई प्रतियाँ मुझे मिल गयी हैं।

हम स्वस्थ हैं। बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : श्री वीरराघवन ध्रुव पद पर होने की वजह से बहुत शक्तिशाली व्यक्ति हैं। यह उनका कर्तव्य है कि पृथ्वी के पश्चिम भाग में जहाँ हम जा रहे हैं, मालिक के संदेश को फैलाने में वे हमारी मदद करें।

ऑफिस ऑर्डर

कैम्प नयी दिल्ली
१९ अप्रिल १९७२

सेक्रेटरी

भारत और विदेश दोनो जगहों पर मिशन की गतिविधियों का तीव्र विस्तार होने की वजह से वर्तमान व्यवस्था में कुछ पुनर्गठन

जरूरी हो गया है इसलिये निम्नलिखित आदेश आपके ध्यान देने और तत्काल कार्यवाही करने के उद्येश्य से जारी किये जा रहे हैं।

१) सेक्रेटरी का पदनाम तत्काल प्रभाव से जनरल सेक्रेटरी किया जाता है। वह भारत या विदेश में गठित की जाने वाली किसी भी समिति का सेक्रेटरी होगा। जनरल सेक्रेटरी विदेश की सभी वर्किंग कमिटियों का, जिन्हें स्थानीय जरूरतों के मुताबिक सृजित किया जायेगा, स्थायी सदस्य होगा।

२) जनरल सेक्रेटरी मिशन के सभी विदेशी केन्द्रों का ठीक ढंग से गठन हो सके इसके लिये हर देश में जहाँ कहीं भी मिशन का केन्द्र सक्रिय हालत में है और जहाँ वर्किंग कमिटी के गठन का औचित्य है, वर्किंग कमिटी का गठन करेगा। इन वर्किंग कमिटियों में कम से कम सात सदस्य होंगे, जिनमें निम्न चार सदस्य स्थायी होंगे :

- **प्रेसीडेन्ट**
- **जनरल सेक्रेटरी**
- **विदेशी केन्द्रों के प्रिसेप्टर इन्चार्ज**
- **संबंधित देश में केन्द्रों के प्रिसेप्टर इन्चार्ज**

कमिटी के शेष सदस्यों को या तो प्रेसीडेन्ट नामांकित करेगा या स्थानीय कानूनों के अनुसार ये स्थानीय सदस्यों के द्वारा निर्वाचित किये जायेंगे।

३) समस्त विदेशी केन्द्रों का, जहाँ कहीं भी मिशन के संविधान और स्थानीय कानूनी प्रावधान के अनुसार पंजीकरण सम्भव है, पंजीकरण कराने के लिये आवश्यक कदम उठाये जायें।

४) स्थायी प्रेसीडेन्ट की अनुपस्थिति में सारे वर्किंग कमिटियों की मीटिंगों की अध्यक्षता वहाँ के प्रिसेप्टर इन्चार्ज द्वारा की जायेगी। स्थानीय कमिटियों का एक ज्वाइंट सेक्रेटरी होगा जिसकी नियुक्ति की जायेगी। मिशन का स्थानीय संगठन ठीक से काम करे - इसके लिये ज्वांइट सेक्रेटरी जिम्मेदार होगा। वह अपनी रिपोर्ट सीधे जनरल सेक्रेटरी को देगा और अपने सारे कामों के लिये जरनल सेक्रेटरी से ही मार्गदर्शन लेगा।

५) हालाँकि ४) के अंतर्गत किया गया आदेश विदेश के केन्द्रों पर लागू होता है लेकिन भारत में भी ऐसे केन्द्रों पर जहाँ काम का बोझ अधिक है और ज्वाइंट सेक्रेटरी के पद का औचित्य है, ज्वाइंट सेक्रेटरी का पद सृजित किया जा सकता है। ऐसे ज्वाइंट सेक्रेटरी काम

में आपकी सहायता करेंगे और समय-समय पर आपके द्वारा जारी किये गये निर्देशों का पालन करेंगे। आपकी अनुपस्थिति में वे शाहजहाँपुर स्थित ज्वाइंट सेक्रेटरी से निर्देशित होंगे जिनका पदनाम तत्काल प्रभाव से हेडक्वार्टर्स ज्वाइंट सेक्रेटरी किया जाता है। स्थानीय वर्किंग कमिटी के ज्वाइंट सेक्रेटरी अगर पहले से ही केन्द्रीय वर्किंग कमिटी के सदस्य नहीं हैं, तो वे ज्वाइंट सेक्रेटरी होने के नाते इसके सदस्य नहीं होंगे।

६) भारत में संगठन के मामलों को पहले से जारी निर्देशों के तहत आप निपटाते रहेंगे।

मिशन के विदेश स्थित केन्द्रों के संगठन के मामले पूरी तरीके से आपके द्वारा निस्तारित किये जायेंगे और आपकी अनुपस्थिति में इन मामलों का निस्तारण वह व्यक्ति करेगा, जिसे आप अधिकृत करेंगे। विदेशी केन्द्रों की सारी रिपोर्टें आपके पास भेजी जायेंगी और विदेशी केन्द्रों से संबंधित सारी फाइलें और रिकार्ड आपको रखने होंगे। आवश्यकता होने पर आप इन्हें हेडक्वार्टर को उपलब्ध करायेंगे। विदेशी केन्द्रों के एकाउन्ट के रख-रखाव की जिम्मेदारी भी आपकी होगी और इसे पूरी तरह से आप ही देखेंगे।

ये आदेश तत्काल प्रभाव से लागू किये जाते हैं और इन्हें ठीक से लागू करने के लिये जो भी कार्यवाही आप आवश्यक समझते हों, करें और इसकी जानकारी समय-समय पर मुझे देते रहें।

रामचन्द्र
प्रेसीडेन्ट

संदेश

(विदेश के प्रवास से वापस लौटने पर मालिक के स्वागत के लिये एकत्रित अभ्यासियों के सम्मुख दिया गया मालिक का संदेश)

मद्रास : ९ जुलाई १९७२

ईश्वर सरल है और उसे पाने की पद्धति भी सीधी और सरल है। मनुष्य जिसे तकनीकी रूप से 'होमो सैपियन्स' कहा जाता है यानी बुद्धिमान मनुष्य ने ईश्वर को पाने की कोशिश की है। विचार अगर पूरी तरीके से शुद्ध होता है तो यह असफल हुये बिना सीधे स्रोत तक

पहुँच जाता है। लेकिन गुणों और लक्षणों से उत्पन्न विकार साक्षात्कार को भी विकारग्रस्त और निम्नस्तरीय बना देते हैं। स्थूल पद्धतियाँ हमेशा स्थूल परिणाम देती हैं।

केवल सरल, शुद्ध और सर्वोच्च का ध्यान ही मनुष्य को संकट से बचा सकता है। यह उसे पूरी तरीके से सरल बनाता जाता है और उसको उसके मूल निवास के निकटतर लाता जाता है। हम जैसा सोचते हैं वैसा ही बनते हैं।

सूक्ष्मतम का साक्षात्कार तो सूक्ष्मतम पद्धति से ही किया जा सकता है। ***एक पद्धति, एक मालिक और एक ही ईश्वर होना चाहिये। हाँ, इसका चयन हमें खुद करना पड़ता है।***

केवल सूक्ष्म पद्धति के प्रयोग से ही हम विचारों की सघनता को दूर कर सकते हैं। इस बारे में मेरा खुद का मत तो यही है कि अगर हम दिव्यता चाहते हैं तो आसान, सरल और प्राकृतिक पद्धति ही अपनानी चाहिये।

मुझे यहाँ तमाम कठिनाईयाँ दिखती हैं। लोग अपनी मर्जी के मुताबिक पद्धति का अनुसरण करते हैं और वही करते हैं जो करने का उनका जी चाहता है लेकिन उस परिणाम की आशा करते हैं जो मैं चाहता हूँ, जो उन्हें और मुझे दोनो को ही प्रिय है। इसके परिणामस्वरूप एक प्रकार की बाधा उपस्थित हो जाती है। यह मुझे कईयों के हृदय में दिखाई देता है। इससे वास्तविकता पर्दे में चली जाती है और यह अभ्यासियों की नजरों से ओझल हो जाती है। अगर आप मुझे इसके लिये जिम्मेदार बनाना चाहते हैं तो आपको वही करना होगा जो मैं कहता हूँ। लोग जप करते हैं बिना यह जाने कि यह कैसे किया जाता है। इसी प्रकार पूजा की दूसरी पद्धतियों को भी वे स्वयं की खुशी के लिये करते हैं न कि ईश्वर की खुशी के लिये। मैं आपके स्वभाव को ऐसा बनाना चाहता हूँ कि यह प्रकृति से बिल्कुल मिल जुल जाये लेकिन आप लोग यंत्र की तरह बनना चाहते हैं। इस तरह आप दर्पण को पीछे से देखते हैं।

यह अत्यंत दुःख की बात है कि राजयोग पर लिखे प्रामाणिक ग्रंथों को हम नहीं पढ़ते। राजयोग तभी हमारे अंदर प्रवेश करता है जब हमारे द्वारा अपनायी गयी गलत पद्धतियों से एकत्रित चीजें हमारी संरचना से दूर हो जाती हैं। प्रशिक्षक स्थूलता को साफ करता है लेकिन लोग फिर इसे ओढ़ लेते हैं। इसलिये आपको इस समस्या को

खुद ही सुलझाना होगा ठीक वैसे ही जैसे आपको खुद अपने पैरों से ही चलना होता है। हाँ, यह ठीक है कि इसके लिये शक्ति की जरूरत पड़ेगी और हमारी मदद अपरिहार्य होगी जो हमेशा उपलब्ध है।

मुझे आशा थी कि आज मैं मद्रास के अपने सत्संग में कई उच्च व्यक्तित्वों को देख सकूँगा लेकिन मुझे कुछ ही दिख रहे हैं।

रामचन्द्र

- जनरल सेक्रेटरी की प्रति

सर्कुलर

नं. सी ८९/६९९/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**

१ अगस्त १९७२

समस्त प्रशिक्षकगण
श्रीरामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर

यह देखा गया है कि कुछ अभ्यासियों और कुछ प्रशिक्षकों ने विदेश में स्थित मिशन के सदस्यों के साथ पत्र-व्यवहार करना शुरु कर दिया है। इन पत्रों में वे ऐसी चीजें लिखते हैं जो पूरी तरीके से अवांछित हैं और मिशन के आदर्शों के खिलाफ हैं। कुछ तो सहजमार्ग साधना और इसके दर्शन के सिद्धान्तों और तकनीकों से ही मेल नहीं खाते। कभी-कभी इससे हमें लज्जित होना पड़ता है।

इसलिये यह निर्देश दिया जाता है कि जब तक इसकी बहुत अधिक आवश्यकता न हो कोई भी विदेश स्थित मिशन के भाइयों से पत्र-व्यवहार न करे। जरूरी मामलों में भी पत्रों को प्रेसीडेन्ट के पास भेजकर उनसे इसकी स्वीकृति ली जाये। केवल जनरल सेक्रेटरी और विदेशी केन्द्रों के प्रशिक्षक इन्चार्ज इस नियम के अपवाद होंगे।

प्रशिक्षक इस आदेश को कड़ाई से लागू कराने के लिये सभी सदस्यों की जानकारी में ले आयें।

रामचन्द्र
प्रेसीडेन्ट

- **प्रति : जनरल सेक्रेटरी**

कई साथियों ने मालिक के पश्चिम के दौरे पर उनके द्वारा दी गयी वार्ताओं, उनके साथ हुये प्रश्नोत्तरों के संबंध में जानकारी चाही है। प्रत्येक को इस विषय में लिखकर जानकारी दे पाना सम्भव नहीं है

इसलिये इसे एक पुस्तक के रूप में लाने का निर्णय लिया गया है। जो भी भाई इससे संबंधित जानकारी चाहते हों, उनसे निवेदन है कि वे जनरल सेक्रेटरी, श्री पी. राजगोपालाचारी, ११/ई नार्थ स्ट्रीट, श्रीरामनगर, मद्रास-१८ को इसके लिये १०/- रुपये शीघ्र भेजें।

प्रेसीडेन्ट के आदेश से
के. एम. सक्सेना

४ अगस्त १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैं समय-समय पर तुम्हारी याद करता हुआ यहाँ सुरक्षित पहुँच गया। मैंने रायजादा से उसके काम की ढिलाई के संबंध में बात की है - खासकर तब जब मैं कहीं दौरे पर होता हूँ। अगर यहाँ कोई काम करने वाला न हो तो मुझे बहुत शान्ति रहती है बजाय इसके कि यहाँ कोई है और काम न करे। आशा है कि तुम मेरी इस बात से सहमत होगे।

मुझे उम्मीद है कि मेरे द्वारा लिखे गये आदेशों को तुम निर्गत कर दोगे। ज्यादातर चीजों की जानकारी तुम्हें है ही बाकी मिलने पर तुम्हें बताऊँगा।

आशा है कि मेरे लिखे प्रपत्रों को तुम उसी रूप में निर्गत कर दोगे जैसे वे हैं और उन्हें शीघ्र ही मेरे पते पर C/o श्री रामचन्द्र मिशन, शाहजहाँपुर पंजीकृत डाक से भेज दोगे। कृपया इसे अति आवश्यक समझो।

दर्द ने फिर से मुझे परेशान करना शुरु कर दिया है लेकिन ठोस आहार लेना छोड़ देने पर इसका बढ़ना रुक जाता है। मैं दूध ले रहा हूँ। वहाँ के डाक्टर द्वारा बताये गये इंजेक्शन 'डेकाडेराबुलिन', जिसे आज ही मैंने डा. पार्थसारथी से प्राप्त किया है, को मैं आज से लेना शुरु कर रहा हूँ।

सर्वेश ने मुझे एक पत्र लिखा है, जिसमें उसने तमिल में अपने दस्तखत किये हैं। इसका मतलब है कि वह ठीक से रह रहा है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : कस्तूरी का पत्र मिला। कस्तूरी को दो सप्ताह बाद बड़ी बहू की दशा के बारे में विस्तार से लिखने को कहो।

४ अगस्त १९७२

प्रेसीडेन्ट
श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर

आदरणीय महोदय,

मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप एक्जिक्यूटिव काउन्सिल की अगली बैठक तक के लिये हेडक्वार्टर पर नियुक्त क्लर्क श्री के. एम. सक्सेना को पत्र-व्यवहार और जरूरी प्रशासनिक कार्यों को करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश जारी कर दीजिये। इस संबंध में मैंने पहले ही श्री जे. आर. के. रायजादा से निवेदन किया है कि वे श्री के. एम. सक्सेना को इस तथ्य से अवगत करा दें।

आशा है आप हमारे विनम्र निवेदन को अपनी सहमति देंगे।

भवदीय
पी. राजगोपालाचारी
जनरल सेक्रेटरी
श्री रामचन्द्र मिशन

४ अगस्त १९७२

श्री जे. आर. के. रायजादा
ज्वाइंट सेक्रेटरी
श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर

मेरे प्रिय मित्र,

परिस्थितिवश मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप हेडक्वार्टर पर नियुक्त क्लर्क श्री के. एम. सक्सेना को यह निर्देश दें कि वे एक्जिक्यूटिव काउन्सिल की अगली बैठक होने तक मिशन के हित को देखते हुये हर मामले में केवल प्रेसीडेन्ट से ही राय लें न कि हेडक्वार्टर पर स्थित किसी अन्य व्यक्ति से।

उम्मीद है कि आप मेरे इस निवेदन के अनुरुप कार्य करेंगे।

भवदीय

पी. राजगोपालाचारी

जनरल सेक्रेटरी

श्री रामचन्द्र मिशन

४ अगस्त १९७२

श्री के. एम. सक्सेना
क्लर्क
श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर

प्रिय श्री के. एम. सक्सेना,

आपको तत्काल प्रभाव से यह निर्देश दिया जाता है कि आप इस पत्र के मिलने के बाद हेडक्वार्टर पर मिशन से संबंधित हर काम के सिलसिले में केवल प्रेसीडेन्ट की राय लेंगे, किसी और की नहीं चाहे वह व्यक्ति कोई भी हो।

आपसे मेरा यह भी अनुरोध है कि इस पत्र के प्राप्त होने के बाद से इस आदेश का अनुपालन हो रहा है, इसकी मुझे सूचना दें।

जनरल सेक्रेटरी

पी. राजगोपालाचारी

श्री रामचन्द्र मिशन

मद्रास

७ अगस्त १९७२

परम आदरणीय मालिक,

मुझे अभी-अभी आपका ४ तारीख का पत्र मिला है और यह जानकर मैं बहुत दुखी हूँ कि अभी भी आपकी तबियत खराब है। उम्मीद है कि दवाइयों के मामले में आप डाक्टरों के निर्देशों का पालन कर रहे होंगे। समय और जरूरत के हिसाब से दवा लेने पर आपको निश्चय ही फायदा होगा और आप जल्दी स्वस्थ होंगे। अगर आप अनावश्यक परेशानी से बचना चाहते हैं तो मेरी आपसे एक बार फिर विनम्र विनती है कि आप समय पर और बताया गया खाना ही लें तथा

अंतराल पर दूध की उचित मात्रा भी लेते रहें। हर २ घंटे पर ठंढा दूध लेना आपके लिये बहुत आवश्यक है। आपके समस्त अभ्यासियों और भक्तों के हित में हम निष्ठापूर्वक आपके कल्याण की प्रार्थना करते हैं। मैं आपसे इन शर्तों का पालन करने की प्रार्थना करता हूँ क्योंकि बहुत से लोग अपने कल्याण के लिये आप पर निर्भर हैं और खुद उनके अपने जीवन के लिये उन्हें आपकी जरूरत है। आशा है कि आप मुझे लिखकर आश्वस्त करेंगे कि आप डाक्टरों की सलाह की उपेक्षा नहीं कर रहे हैं।

मुझे इस बात का कष्ट है कि मिशन का काम इतने ढीले ढंग से और खराब तरीके से चल रहा है। इसके लिये हमें कुछ करने की जरूरत है। जब हम विदेश में थे, मैंने आपसे इस संबंध में चर्चा की थी कि प्रेस के मामले में भी हमें सस्ते श्रम पर नहीं निर्भर रहना चाहिये। हमें कुशल लोगों को काम में लगाना चाहिये और काम की कुशलता और उसकी निरन्तरता के लिये अगर आवश्यक हो तो भुगतान करने से भी नहीं घबराना चाहिये। क्लर्क के काम के लिये भी हमें वेतन की परवाह किये बिना एक अच्छा क्लर्क और स्टेनोग्राफर नियुक्त करना चाहिये। वह अभ्यासी न भी हो तो कोई बात नहीं। अगर हम प्रेस को चलाना चाहते हैं तो हमें इसमें भी व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिये और समय-समय पर जो भी जरूरी खर्चे हों, करना चाहिये। मैं पत्रिका के सदस्यों के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। उन्हें पत्रिका समय से मिलनी चाहिये लेकिन दुख की बात है कि इस साल अब तक केवल जनवरी का संस्करण छप सका है और सम्भवतः मार्च का संस्करण बँटने के लिये तैयार है। मई और जुलाई को एक में जोड़ने की तैयारी चल रही है। अगर यह सब इसी तरीके से चलेगा तो प्रेस के प्रबंध में भी समस्यायें आयेंगी और इससे मिशन की छवि भी धूमिल होगी। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप इसे गंभीरता से लें और मुझे निर्देश दें कि मैं किस तरह आगे बढ़ूँ। मिशन बढ़ रहा है और अब हम राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज की ओर बढ़ रहे हैं। यह आसान नहीं है लेकिन इसे हम ठीक शक्ल देकर निश्चित ही इस स्तर तक ले जा सकते हैं। मैं नहीं जानता कि आपसे शाहजहाँपुर में मेरी मुलाकात कब होगी लेकिन मैं जल्दी ही आपसे मिलना चाहता हूँ।

बहन कस्तूरी स्वस्थ हैं और मिशन के काम में लगी हुई हैं। बुधवार और शुक्रवार को हमारे घर पर होने वाले सत्संग में अच्छी संख्या में लोग आ रहे हैं और पहले जो उत्साह उनमें नहीं दिख रहा था, अब उनमें फिर से दिखने लगा है। मेरा विश्वास है कि इतनी देर से आध्यात्मिक साधना शुरु करने के बावजूद आपकी कृपा से इस केन्द्र के अभ्यासी आध्यात्मिक रूप से विकसित होंगे।

मेरे पिताजी स्वस्थ हैं और बड़ी बहू और कृष्णा भी। 'इण्डिया इन द वेस्ट' के छपने की तैयारी शुरु हो गयी है। 'सहजमार्ग के दस उसूलों की शरह' का तमिल अनुबाद पहले से ही प्रेस में है। अगले साल मनाये जाने वाले शताब्दी समारोह की तैयारी के सिलसिले में हम अक्सर इस उद्येश्य के लिये बनायी गयी कमिटी की बैठकें करते रहते हैं। कुल मिलाकर दिये गये मिशन के काम को करने में हम बहुत व्यस्त हैं और आपकी कृपा से सब कुछ बहुत सफलतापूर्वक होने की सम्भावना है।

मैं इस पत्र की समाप्ति पर आपसे पुनः निवेदन करता हूँ कि आप अपनी सेहत का ध्यान रखिये और विशेषकर खाना और दूध के मामले में जो लोग आपकी देखभाल कर रहे हैं उनसे सहयोग कीजिये।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

पुनश्च : मैं श्री रायजादा और श्री सक्सेना को लिखे गये पत्र भी संलग्न कर रहा हूँ, जिन्हें कृपया उन्हें दे दें। आपकी जानकारी के लिये इनकी प्रतियाँ यहाँ संलग्न हैं।

मद्रास
७ अगस्त १९७२

पूर्ण गोपनीय

परम आदरणीय मालिक,

आपकी इच्छा के अनुसार आपने जिन पत्रों के प्रारूप मुझे भेजे थे और जो मेरे द्वारा निर्गत किया जाना था, मैं आपकी जरूरत के हिसाब से उन्हें आपको भेज रहा हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि प्रेसीडेन्ट के रूप में आप खुद आधिकारिक रूप से इन पत्रों को जारी कर सकते थे चूँकि अगर लोगों ने यह महसूस किया कि ये परिवर्तन मेरे दृष्टिकोण

का परिणाम हैं तो लोगों में गलत संदेश जायेगा। मैं नहीं जानता कि आप इस मामले को निपटाने में यह खास तरीका क्यों अपना रहे हैं फिर भी मैं आपके निर्देशों का पालन करते हुये इन पत्रों को आपको भेज रहा हूँ। यह बेहतर होता कि ये निर्णय आपके आदेश से होते। वैसे आप जैसा ठीक समझते हों वैसा ही करें। अगर आप महसूस करते हैं कि आदेश आपकी तरफ से ही होना चाहिये तो संलग्न किये गये इन पत्रों को जो श्री रायजादा और श्री सक्सेना को लिखे गये हैं, आप वहीं नष्ट कर सकते हैं।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
७ अगस्त १९७२

परम आदरणीय मालिक,

जरूरी लगता है कि पत्र-व्यवहार और जरूरी प्रशासनिक कार्यों को देखने के लिये नियुक्त क्लर्क श्री के. एम. सक्सेना को यह निर्देश जारी किया जाये कि वे हर मामले में आवश्यक रूप से निर्देश लें। मैं श्री जे. आर. के. रायजादा को एक पत्र अलग से लिखकर उनसे निवेदन कर रहा हूँ कि वे देखें कि ऐसा ही हो। एक अलग पत्र लिखकर मैं श्री के. एम. सक्सेना को यह निर्देश सीधे भी दे रहा हूँ। श्री रायजादा और श्री सक्सेना को लिखे गये पत्रों की प्रतियाँ आपकी जानकारी के लिये यहाँ संलग्न हैं। आपसे अनुरोध है कि आप इन कदमों को अपनी कृपापूर्ण अनुमति देंगे।

प्रणाम सहित,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी
जनरल सेक्रेटरी

मद्रास
७ अगस्त १९७२

श्री जे. आर. के. रायजादा
ज्वाइंट सेक्रेटरी
श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

मेरे प्रिय भाई,

शाहजहाँपुर में पत्र-व्यवहार और सामान्य प्रशासनिक कार्यों की हालत देखकर यह निर्णय लिया गया है कि क्लर्क श्री के. एम. सक्सेना इन मामलों को सीधे प्रेसीडेन्ट पूज्य श्री रामचन्द्रजी महाराज की सलाह एवं निर्देश से सम्पादित करेंगे। श्री! सक्सेना मिशन के हित को ध्यान में रखते हुये हर मामले में सलाह और मार्गदर्शन केवल प्रेसीडेन्ट से लें न कि हेडक्वार्टर पर स्थित किसी अन्य व्यक्ति से। यह निर्देश तब तक के लिये है जब तक एक्जिक्यूटिव कमिटी (वर्किंग कमिटी) की अगली बैठक नहीं होती। मुझे विश्वास है कि आप इन निर्देशों का पालन करेंगे और यह भी देखेंगे कि श्री सक्सेना इन निर्देशों का पालन ठीक से कर रहे हैं।

शुभकामनाओं सहित,

आपका
मालिक की सेवा में
पी. राजगोपालाचारी
जनरल सेक्रेटरी

मद्रास
७ अगस्त १९७२

श्री के. एम. सक्सेना
क्लर्क,
श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

प्रिय श्री सक्सेना,

आपको तत्काल प्रभाव से यह निर्देश दिया जाता है कि आप मिशन से संबंधित मामलों के सारे पत्राचार और मिशन की सामान्य

गतिविधियों का काम आप मिशन के अध्यक्ष परम पूज्य श्री रामचन्द्र जी महाराज के प्रत्यक्ष सलाह और मार्गदर्शन में सम्भाल लें। आपको यह भी निर्देश दिया जाता है कि मिशन से संबंधित मामलों में आप अध्यक्ष के अलावा और किसी की सलाह न लें।

कृपया इस पत्र के पाने की स्वीकृति दें और यह सुनिश्चित करें कि इस पत्र के अनुसार ही कार्यवाही हो रही है।

आपका
मालिक की सेवा में
पी. राजगोपालाचारी
जनरल सेक्रेटरी

शाहजहाँपुर
११ अगस्त १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

रजिस्ट्री से भेजा गया तुम्हारा पत्र मिला। मेरे पिछले पत्र से संबंधित विषयों में यह जरूरी था कि आदेश तुम्हारे द्वारा प्रदान किये जायें। मैं जानता हूँ कि मेरे पास अधिकार हैं लेकिन अगर इन अधिकारों का प्रयोग बार-बार किया जायेगा तो इनका प्रभाव जाता रहेगा। इसे लोग रोजमर्रा की चीज समझकर इसे महत्व देना बंद कर देंगे। मुझे अपनी शक्ति का प्रयोग केवल तब करना चाहिये जब ऐसा करना बिल्कुल जरूरी हो जाये। दूसरी बात यह भी है कि मिशन के अन्य अधिकारियों का अभ्यासियों पर कोई दबाब ही नहीं रह जायेगा। ***टके सेर खाजा और टके सेर भाजी*** वाली कहावत चरितार्थ होने लगेगी। इसलिये मुझे अपने आपको तब तक के लिये सुरक्षित रखना चाहिये जब तक मिशन किसी गंभीर परेशानी में न फँस गया हो। अगर १० बार कोई आवाज दुहरायी जाये तो लोग उसे ११वीं बार सुनेंगे ही नहीं। मैं इस बात को १०१ बार स्वीकार करने के लिये तैयार हूँ कि इसे मैंने अपने सेक्रेटरी से करवाया क्योंकि यह उसके कार्यक्षेत्र में आता है। ऑफिस तो कमरे में है लेकिन काम बाहर है इसलिये हमें पहले काम की तरफ देखना चाहिये और तब ऑफिस के बारे में सोचना चाहिये।

परिस्थितिवश यह आवश्यक हो गया था कि यह आदेश तुम्हारे द्वारा हो क्योंकि प्रकाश का विचार था कि उसके पिता को यथासंभव

विश्राम मिले जबकि रायजादा खुद को यथासंभव विश्राम देना चाहते थे। आपस में खींचतान थी और दोनो सारे सर्कुलरों और सामान्य आदेशों की अपने-अपने तरीके और कलम से अवहेलना कर रहे थे। निस्संदेह दोनो में कोई झगड़ा नहीं था लेकिन रायजादा की ढिलाई और प्रकाश की अकड़ से कभी भी कोई अप्रिय स्थिति पैदा हो सकती थी। यहाँ काम सुचारु रूप से चले इसके लिये आवश्यक है कि काम में न तो ढिलाई हो और न ही अकड़। मैं समझता हूँ कि तुम्हें इससे ज्यादा विवरण की जरूरत नहीं है।

मुझे तुम्हारे द्वारा भेजे गये आदेश की प्रतियाँ मिल गयी हैं। जरूरी होने पर मैं उन्हें अपनी इच्छानुसार जारी कर सकता हूँ। अभी मैं परिस्थिति को सामान्य तरीके से सम्भालने की कोशिश कर रहा हूँ और मैंने इन आदेशों को अभी तक जारी नहीं किया है। प्रयास करने पर स्थिति में कुछ परिवर्तन ी आशा है। तुम्हारी स्थिति का मुझे पूरा ख्याल है और मैं खुद को तुम्हारी ढाल ही समझता हूँ। इसलिये अपने दिल से इस विचार को हटा दो कि कभी कोई ऐसी चीज होगी जिससे तुम्हारे ऊपर कोई इलजाम लगा सकेगा। मैं इन सभी चीजों के लिये पूरी तरीके से तैयार हूँ क्योंकि मुझे मिशन चलाना है लेकिन तुम भी इस जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। मेरा विश्वास है कि तुम इस स्पष्टीकरण से संतुष्ट हो गये होगे।

जगन निश्चित रूप से एक अच्छे वक्ता हैं और वे अपनी इस खूबी से संतुष्ट हैं। अगर तुम उनकी आंतरिक अवस्था का अध्ययन करो तो वहाँ केवल अँधकार पाओगे। ऐसे लोगों को मैं ठीक कहना पसंद नहीं करता। उनकी बुद्धि की कुशाग्रता भी धीरे-धीरे कम हो रही है।

मैं अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत सजग हूँ चूँकि तुम चाहते हो कि मैं स्वस्थ रहूँ। अगर मेरा आलस्य खत्म हो जाये तो मैं दो महीने में स्वस्थ हो सकता हूँ। मेरे मत में आलसी आदमी में खून का बहाव ठीक तरीके से नहीं होता। अपनी सुरक्षा में मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि शरीर से मैं आलसी जरूर हूँ लेकिन निष्क्रियता में भी सक्रिय रहता हूँ। इसलिये वास्तविक कार्य का नुकसान नहीं हो रहा है। अगर मैं यहाँ हूँ तो निश्चित रूप से वहाँ भी हूँ।

मैंने सीतापुर के उमाशंकर को एक पत्र लिखा है जिसकी प्रति मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। इससे तुम्हें इस बात का अहसास भी होगा कि मैं

कुछ सख्त भी होता जा रहा हूँ। *पैदावार उगाने के लिये निराई की जरूरत होती है।* मैंने पूरी तरीके से यह काम नहीं शुरु किया है लेकिन कुछ मात्रा में ऐसा करने का विचार मन में है।

मैं काँठ के प्रेमी जी के खातों की जाँच के लिये विवश हूँ और मैं उसकी जाँच कर भी रहा हूँ। विश्वसनीय लोगों की गवाही के आधार पर उनके खिलाफ मैंने आरोप पत्र भी तैयार किया है। इस बारे में जरूरी कार्यवाही की जायेगी। अब मैं तुम्हें ऐसा क्या लिखूँ जिसमें मेरा सम्मान न हो। मैंने इस शब्द का प्रयोग क्यों किया? चूँकि ऐसा करके मैं खुद का सम्मान कर सकूँ। जानवरों के प्रकार होते हैं - सड़क पर घूमने वाले कुत्ते सड़क के कुत्ते कहलाते हैं, सड़क पर घूमने वाले साधु सड़क के साधु कहलाते हैं और अगर ईश्वर सड़क पर घूमे तो वह सड़क का ईश्वर कहलायेगा। लेकिन उस स्थिति में उसका मूल्य क्या होगा - ठीक ऐसी ही स्थिति मेरी भी होनी चाहिये।

इस चुटकुले के बाद अब मैं तुम्हें एक गोपनीय बात बताने जा रहा हूँ। वीरराघवन में एक प्रकार की स्थूलता विकसित हो गयी है और काफी ध्यान देने पर मुझे मालूम हुआ कि यह स्थूलता खुद उन्हीं से विकसित हुई है क्योंकि दिव्यता वहाँ काम नहीं कर रही थी। मैंने इसे खींचकर बाहर निकाला और यही इसे दूर करने का एकमात्र तरीका था। पिघलने का अर्थ है - शरीर में स्थूलता का विस्तार। मैंने इसे जड़ से उखाड़ दिया लेकिन इस जगह एक काल्पनिक गढ्ढा छोड़ दिया है। सवाल यह है कि इसे भरा कैसे जाये? इससे आगे की प्रगति बाधित हो रही है। वे तब तक इससे आगे नहीं जा सकते जब तक इसे भर नहीं दिया जाता। मैं नहीं कह सकता कि इसे करने में मुझे कितना समय लगेगा - कुछ महीने, कुछ साल या फिर एक जन्म। लेकिन मेरी बात सुनता ही कौन है या मुझ पर कौन विश्वास करता है। अगर मैं अपने मालिक को इसके लिये परेशान करूँ तो ऐसा लगता है कि वे इस मामले में तटस्थ हो गये हैं। यह उनके खुद के कृत्यों का बदला है। चीनी लेते रहना और कड़वी गोलियाँ खाना। मेरा हृदय ऐसा है कि मैं अपने साथियों में कोई बुरी चीज नहीं देख सकता। तुम मेरे निष्कर्ष को कस्तूरी से बता सकते हो। शेषाद्रि ने खुद में स्थूलता की एक चादर ही बना डाली है लेकिन उन्होंने यह वादा किया है कि वे भविष्य में इसे उत्पन्न नहीं होने देंगे। मैं इसे धीरे-धीरे हटाऊँगा।

मैंने उन्हें वीरराघवन के बारे में सब कुछ बताया जिससे वे भी कोशिश कर सकें लेकिन सम्भव है कि उन्हें सफलता न मिले। कस्तूरी कोशिश कर सकती हैं लेकिन उनके भी सफल होने की सम्भावना केवल पाँच प्रतिशत ही है। हालाँकि मुझे इसकी सम्भावना नहीं है। मैंने उन्हें शक्ति देकर उनसे यह अनुरोध किया था कि वे पश्चिम के काम में मेरी मदद करें। मुझे लगता है कि यह उसी को अस्वीकार करने का परिणाम है। हालाँकि मुझे किसी प्रकार की शक्ति नहीं चाहिये थी। उनके मुताबिक जब दिल बीमार था, दिमाग ठीक था। मान लो कि दिमाग काम नहीं कर रहा था तो भी आसानी से प्रार्थना तो की ही जा सकती थी।

हो सकता है कि उन्होंने मान लिया हो कि जब मैंने उन्हें शक्ति दे दी है तो मेरी शक्ति समाप्त हो गयी है और शायद इसीलिये मैंने अपने पत्र में उनकी इतनी खुशामद की है। उनके दिल की बीमारी अभी भी ठीक नहीं हुई है और उसकी हालत ऐसी है जैसे बरसात में किसी चमड़े को पानी में फेंक दिया जाय और इसमें सिकुड़न आ जाये। मैं उनके ठीक हो जाने की प्रार्थना करता हूँ।

बच्चों को प्यार,

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा स्नेही

रामचन्द्र

मद्रास

१४ अगस्त १९७२

परम प्रिय मालिक,

आशा है कि आप स्वस्थ होंगे। हम सब पूज्य लालाजी साहब से प्रार्थना करते हैं कि वे आपको अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करें।

शनिवार १२ अगस्त को कस्तूरी जीजी ने मुझे एक सिटिंग दी। मैंने महसूस किया कि मैं पूरी तरह से अचेतन होकर उसमें खो गया हूँ। मैंने यह भी महसूस किया कि कोई मेरे पास बैठा है। जीजी ने मुझे बताया कि सिटिंग समाप्त होने पर उन्होंने देखा कि कोई दूसरा व्यक्ति मेरे हृदय में कूद रहा है और कूदने वाला वह व्यक्ति आप ही थे। कृपया मुझे इसके बारे में बताइये।

आज जीजी ने मुझे फिर एक सिटिंग दी। इसमें मैंने अपने पूरे मस्तिष्क को और उच्चतर क्षेत्रों को प्रकाशित देखा। फिर मैंने देखा कि चौथे विन्दु की मेरी यात्रा पूरी हो गयी है और अब मैं अगले विन्दु पर जाने के लिये तैयार हूँ। सिटिंग के बाद जीजी ने बताया कि उन्होंने पाया कि इस शरीर के प्रति मैं बिल्कुल मृत हो गया हूँ और उन्होंने भी यह देखा कि चौथे विन्दु की मेरी यात्रा पूरी हो गयी है और इस विन्दु में मेरी लयावस्था पूर्ण है। इस पर मैं आपका स्पष्टीकरण चाहता हूँ।

आपकी कृपा से हम सभी ठीक हैं। चि. कृष्णा की तबियत पिछले पूरे हफ्ते ठीक नहीं थी और वह स्कूल नहीं जा सका। जीजी की तबियत भी ठीक नहीं थी।

लगता है कि बेबी नवनीत के बायें हाँथ में कुछ गड़बड़ है। चि. उमेश और छोटी बहू बेबी नीतू के साथ आये थे और वे उसे एक्स-रे कराने के लिये अस्पताल ले गये हैं। चि. सर्वेश ठीक हैं और नियमित रूप से सत्संग में आते हैं।

शताब्दी समारोह का काम प्रगति पर है। इण्डिया इन द वेस्ट की पांडुलिपि भी तैयार हो रही है। सहजमार्ग के दस उसूलों की शरह का तमिल अनुबाद प्रेस में है और आशा है कि यह सितम्बर के अंत तक तैयार होकर लोगों को उपलब्ध हो जायेगी। इसे हम केवल ५०० प्रति ही छाप रहे हैं।

कृपया अपने व्यक्तिगत हालचाल की सूचना हमें देते रहिये।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ८९/७१२/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
२० अगस्त १९७२

श्री रामचन्द्र मिशन के समस्त केन्द्रों के प्रशिक्षक इन्चार्ज

प्रिय भाई,

आपको पता ही है कि हमारे मिशन का लेखा वर्ष ३० सितम्बर १९७२ को पूरा हो रहा है। मिशन के लेखे की समेकित रिपोर्ट तैयार करने के लिये यह जरूरी है कि सारे प्रशिक्षक अपने दायित्वों का अहसास करते हुये हमारी मदद करें और अक्टूबर १९७२ तक अपने-अपने केन्द्रों की वार्षिक लेखा रिपोर्ट हेडक्वार्टर पर भेज दें

जिससे हम ऑडिट के लिये उसे ऑडिटरों के सम्मुख रख सकें और मिशन की वार्षिक रिपोर्ट में भी इसे शामिल किया जा सके।

देखा गया है कि प्रशिक्षकों को प्रत्येक वर्ष के अंत में एक साथ लेखा विवरण तैयार करने में परेशानी होती है। इस परेशानी से बचने और हेडक्वार्टर का काम आसान बनाने के लिये यह सोचा गया है कि हर केन्द्र अपना अर्द्धवार्षिक लेखा विवरण हेडक्वार्टर को भेजे जिससे एक समेकित लेखा अंतिम समेकित लेखा विवरण तैयार करने के लिये मौजूद रहे।

अगर प्रशिक्षक कड़ाई से इन आदेशों का पालन करें और समय से जरूरी स्टेटमेन्ट भेजें तो उनका यह कदम स्वागतपूर्ण होगा।

आपका

रामचन्द्र

प्रेसीडेन्ट

- प्रति : जनरल सेक्रेटरी, एस.आर.सी.एम. को सूचनार्थ प्रेषित।

मद्रास

२२ अगस्त १९७२

परम प्रिय मालिक,

मुझे आपका ११ अगस्त का लिखा गोपनीय पत्र कल मिला चूँकि मैं कम्पनी के काम से बम्बई गया हुआ था। आपने अपनी शक्तियों के सीमित और समुचित प्रयोग के बारे में जो कुछ भी कहा उससे मैं पूरी तरह से सहमत हूँ। मुझे आपके द्वारा श्री उमाशंकर जी को लिखे गये पत्र की प्रति भी प्राप्त हुई।

हालाँकि मैं बाहर से सामान्य हूँ लेकिन पिछले चार-पाँच दिनों से उदासी महसूस कर रहा हूँ। बाहरी दुनिया का मेरे लिये जो भी अर्थ और आकर्षण था, वह पूरी तरह से खत्म हो गया है लेकिन इससे मेरे अंदर रिक्तता पैदा हो गयी है जो वहाँ एक निर्वात की तरह है। इससे कुछ अस्पष्ट सी उदासी की हालत महसूस होती है। इस आंतरिक शून्यता से असंतुलन की स्थिति प्रतीत होती है। मैं नहीं जानता कि इसे मैं किन शब्दों में व्यक्त करूँ?

आज सुबह कस्तूरी जीजी ने मुझे एक सिटिंग दी जिसके दौरान मुझे लगा कि मैं एक गुब्बारा हूँ जो दूर कहीं बहुत ऊँचाई पर उड़ रहा है और मकड़ी के जाले की तरह का एक बहुत पतला धागा मुझे इस

दुनिया से जोड़े हुये है। यह कुछ देर तक बना रहा। इसके बाद मुझे लगा कि मेरे अंदर से प्रकाश बाहर जा रहा है। मेरे शरीर में खिड़कियों और दरवाजों की तरह बड़े-बड़े छेद हैं और मेरा अंतर और वाह्य अलग-अलग न होकर एक ही है। जीजी की सिटिंग पूरी होने के बाद मैंने महसूस किया कि जो प्रकाश बहकर मेरे बाहर निकला था, वह जीवित व्यक्ति के रूप में मेरी पुनर्रचना करने के लिये मुझमें वापस आ रहा है।

मैंने जीजी को श्री वीरराघवन के बारे में बताया। ऐसा लगा कि किसी समय वे उनके पास आये थे और जीजी ने बताया कि उनमें काफी स्थूलता है। इस पर वीरराघवन ने जबाब दिया कि उनके अंदर कोई स्थूलता नहीं है इसलिये उन्हें किसी सिटिंग की जरूरत नहीं है और अब वे उनसे सिटिंग लेने नहीं आयेंगे। कस्तूरी जीजी ने मुझसे कहा है कि मैं यह बात आपको लिख दूँ।

जीजी और मेरे पिताजी २५ की रात में कुडप्पा में मनाये जाने वाले शताब्दी समारोह में शामिल होने जायेंगे और २९ की सुबह वहाँ से लौटेंगे। मैं भी २६ को एक दिन के लिये जा सकता हूँ लेकिन यह अभी निश्चित नहीं है। ऑफिस में मेरे पास बहुत अधिक काम है। मेरे परम प्रिय मालिक! मुझे हर क्षेत्र में कुशलतापूर्वक काम करने के लिये मदद के रूप में आपकी कृपा की बहुत जरूरत है। पता नहीं क्यों - मैं अपने अंदर एक अस्पष्ट सी उदासी, कभी-कभी खुद के खो जाने का भाव और खुद की मृत्यु का भाव महसूस करता हूँ।

आज सुबह मेरे पिताजी को बेबी नीतू की अवस्था के बारे में आपका एक टेलिग्राम मिला है। निस्संदेह दाँतों के निकलने की वजह से पतले दस्त, उल्टी आदि छोटी-मोटी पेट की बीमारियाँ उसे हैं लेकिन वह बिल्कुल सामान्य है और उसके लिये परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है। अभी-अभी उमेश से मेरी बात हुई है। नीतू के हाथ पर एक हफ्ते के लिये पट्टी बाँधी गयी थी लेकिन वह भी कुछ दिन पहले खुल गयी है और डाक्टर ने कहा है कि बच्चा हर तरीके से सामान्य है।

बहू सुलोचना को अभी भी कभी-कभी घर में किसी की उपस्थिति महसूस होती है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप इस पर गौर कीजिये।

मालिक! मेरा प्रेम केवल और केवल आपके लिये है। आपके प्रति मेरी निर्भरता इस कदर बढ़ गयी है कि कभी-कभी मैं इससे डर जाता हूँ।

आपको प्रेम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

पुनश्च : शशि ने मुझे लिखा है कि आपकी आत्मकथा का पहला भाग पूरा हो गया है और आप मुझसे जानना चाहते हैं कि क्या उसे मेरे पास भेजा जाना है। कृपया आप इसे मेरे पास भेज दीजिये ताकि मैं इसे देखकर प्रकाशन के लिये तैयार कर सकूँ।

नं. सी. ७२३/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२३ अगस्त १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारा १४ अगस्त का लिखा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। दर्द मुझे अक्सर परेशान करता है। केवल दूध ही इसे रोकने का एकमात्र उपाय है। मैं नियमित रूप से दवा ले रहा हूँ। जिस दवा का प्रयोग मैं कर रहा हूँ, कुछ ही दिनों में यह दवा मुझे राजामुन्दरी के सुब्रमण्यम के द्वारा विजयवाड़ा से प्राप्त होगी।

३ सितम्बर को मुझे मुरादाबाद, रुड़की और दूसरी जगहों के दौरे पर जाना है। दर्द इसमें बाधक है। मैं जानता हूँ कि यह अधिक समय तक नहीं रहेगा फिर भी मैं आवश्यक सावधानी बरत रहा हूँ।

कलकत्ता के श्री रमन लाल मिमानी मेरे पास एक दिन के लिये आये थे। उन्होंने अपने यहाँ आने का निवेदन किया है। मैं वहाँ जाने की कोशिश करूँगा। मेरे पास सत्संगी लोग आ रहे हैं और मेरी डायरी आने वाले लोगों से पूरे अगस्त तक भरी हुई है। आगे कि लिये मैं लिख रहा हूँ कि वे तभी यहाँ आयें जब निश्चित हो लें कि मैं यहाँ पर हूँ। मुझे चि. उमेश के पुत्र चि. नवनीत के बारे में जानने की बहुत उत्सुकता है इसीलिये तुम्हारे पिताजी को टेलिग्राम डाला था। मुझे अभी-अभी तुम्हारे पिताजी का टेलिग्राम मिला है और चि. नवनीत के बारे में मेरी चिन्ता अब दूर हो गयी है।

पश्चिम में तीन महीने तक मेरे साथ रहने से तुम्हारे अंदर बहुत परिवर्तन आया है। मैं नहीं जानता कि आत्मसात होने में इसमें

कितना समय लगेगा। चीजें काम कर रही हैं और यह अच्छा है कि कस्तूरी वहाँ है। मैं उन स्थूल प्रभावों को तुम्हारे अंदर से दूर करना चाहता हूँ जो तुममें तुम्हारे पिताजी से आयी हैं।(यह कहने के लिये मुझे माफ करना) इसे करने का तरीका तो मुझे पता है लेकिन मैं इसे कैसे करूँ - यह अभी मुझे तय करना है। यह काम आगे का भी है। लयावस्था के बाद सूक्ष्म शरीर में इतना परिवर्तन आ जाता है कि इसके खुद के गुण खत्म हो जाते हैं और आदतें बदल जाती हैं और मालिक का स्वभाव आ जाता है। लेकिन यह उसका काम है।

अब मैं तुम्हारे पत्र पर आता हूँ। कस्तूरी का ट्रांसमिशन बहुत कोमल और अनुकूल होता है और यह अक्सर समाधि की अवस्था पैदा कर देता है। बम्बई के सेठजी ने इसकी बहुत अधिक तारीफ की है लेकिन ***मेरा ट्रांसमिशन तो स्वयं ट्रांसमिशन में ही खोया हुआ है। यही वास्तविकता है। अगर लोग इस ट्रांसमिशन को हृदय से और निष्ठापूर्वक स्वीकार करें तो यह उनकी पूरी जिन्दगी को रूपान्तरित कर सकता है। मैंने तुम्हें एयरपोर्ट पर आधे मिनट का जो ट्रांसमिशन दिया था उसका प्रभाव अभी भी तुममें में है।*** मुझे तुम्हारे अंदर एक तरह का आवरण महसूस होता है लेकिन जब मैं इसे हटाता हूँ तो इसका स्थान दूसरा आवरण ले लेता है। हालाँकि तुम मेरी इस बात से सहमत नहीं होगे लेकिन सच पूछो तो यह सुधार का अच्छा लक्षण है। जो चीजें आवरण के रूप में आ रही हैं, वे अंतरतम द्वारा तुम्हारे भले के लिये बाहर फेंकी जा रही हैं। कस्तूरी ने तुम्हें वह बताया है जो उसने तुम्हारे बारे में महसूस किया है। तुमने जिसे अपने पास बैठे देखा, वह मैं या मेरा स्व हो सकता है। ध्यान करते समय तुमने पाया कि तुम्हारा मस्तिष्क और तुम्हारे उच्चतर क्षेत्र प्रकाशित हो गये हैं। तुम्हारा यह अनुभव ठीक है। मैंने पश्चिम में सम्भवतः तुम्हें नये विन्दु पर रखा था और यह चौथा विन्दु हो सकता है। कृपया ध्यानपूर्वक यह बताओ कि यह तीसरा विन्दु था या चौथा। मैं समझता हूँ कि चौथा विन्दु सही है। इसकी यात्रा लगभग पूरी हो चुकी है। ***मृत्यु जैसी अवस्था जो तुमने महसूस की है वह लयावस्था का द्योतक है।*** हृदय में कूदने के बारे में मुझे पूरा यकीन नहीं है कि वह सही है। वहाँ स्पर्श का होना प्रतीत होता है।

मुझे लन्दन से एक पत्र मिला है जिसमें लिखनेवाले या लिखनेवाली ने अपना नाम एना लिखा है। नीचे उसने अपना पता भी

लिखा है। मैं नहीं जानता कि यह कौन है और इसका पूरा नाम क्या है। अगर तुम उसे जानते हो तो कृपया लिखो ताकि मैं उसे जबाब दे सकूँ।

पता : ३०, अर्दली क्रिसेन्ट

लन्दन एस. डब्ल्यू. ५

पश्चिम से लौट कर आने के बाद मेरी मानसिकता में परिवर्तन आना शुरु हो गया है। ईश्वर दुनिया में नयी व्यवस्था चाहता है और मैं अपने स्तर के अनुसार अध्यात्म पर आधारित अपने मिशन के समाज के साथ आगे बढ़ना चाहता हूँ। उम्र बढ़ने के साथ मैं महसूस करता हूँ कि मैं बहुत संवेदनशील होता जा रहा हूँ। मेरा हृदय मुझे अपने मिशन के सारे केन्द्रों पर फैले द्वेष की सूचना दे रहा है। शुरुआत में मैं महसूस करता हूँ कि उत्तर भारत के कुछ केन्द्रों में प्रशिक्षक मालिक बनने की कोशिश कर रहे हैं और मुझे वे एक विनम्र प्रशिक्षक बनाना चाहते हैं। इस उद्येश्य से मुझे उत्तर भारत के सभी बड़े केन्द्रों का दौरा क़रना है। दर्द इसमें बाधा है फिर भी मैं कोशिश करूँगा। अगर कुछ को निकाल कर बाहर फेंकना भी पड़े तो इसमें मुझे कोई चिन्ता नहीं होगी। अगर तुम मेरे दाहिने हृदय न होकर दाहिने हाथ भी हो तो तुम्हें इस विषय पर ध्यान देना चाहिये। मैं ४ सितम्बर को मुरादाबाद जा रहा हूँ। यह दौरा एक हफ्ते का होगा।

आर. मेन्डेल्सन का एक पत्र मैं अपने जबाब के साथ तुम्हारे रिकार्ड के लिये भेज रहा हूँ।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : हमारा शाहजहाँपुर का पिन कोड नं. २४२ ००१ है।

(मि. रान मेन्डेल्सन, १०, फीजॉन्स एव, लन्दन, एन. डब्ल्यू. ३ का ११ अगस्त १९७२ का पूज्य मालिक को लिखे गये पत्र की प्रति)

प्रिय मालिक,

मैं इस बात के लिये शर्मिन्दा हूँ कि आपको इतने लम्बे अंतराल के बाद पत्र लिख रहा हूँ इसलिये और कि मुझे यह खबर भी मिलती रही कि यूरोप दौरे से वापसी के समय से आपकी बीमारी अभी तक ठीक नहीं हुई है। श्रीमती डेविश हमें भारत के नवीन समाचारों से अवगत कराती रहती हैं। मुझे यह सुनकर बहुत अच्छा लगा कि अब आपकी तबियत बिल्कुल ठीक है।

मेरे पत्र में मेरी प्रगति से संबंधित बातों के अलावा कुछ खबर भी है। मैं लन्दन की छतों और सेन्ट जान्सवुड से चिल्लाया था जिसे शायद आपने पहले ही सुन भी लिया होगा। मैंने पॉलिन से विवाह करने का निर्णय किया है। आशा है आपने अपने दौरे में उसे देखा होगा। पिछले सप्ताह के अंत में हमने इस बात का निर्णय किया कि हम इस महीने की २५ तारीख को विवाह करेंगे चूँकि उस समय उसके माता-पिता भी रोडेशिया से लन्दन आ चुके होंगे। हमारे मत में उनका इस समारोह में हमारे साथ होना अच्छा होगा। निस्संदेह आपको भी इस अवसर पर यहाँ पाकर हम बेहद खुश होंगे। मैं आपको और चारी को इस विवाह में शामिल होने का खुला निमंत्रण देता हूँ। हालाँकि मुझे यह असम्भव लग रहा है फिर भी उस दिन के समारोह के लिये मैं आपको निमंत्रित कर रहा हूँ और आपसे किये गये वादे के मुताबिक अगले साल आपसे भारत में मिलने की योजना बना रहा हूँ।

मालिक! मैं खुद को बहुत बेहतर महसूस कर रहा हूँ। आपके साथ लन्दन में एक हफ्ता बिताने के बाद कई चीजों के कठोर अनुभवों से अन्य बातों के अलावा मुझे इस बात की शिक्षा भी मिली कि अध्यात्म के क्षेत्र में चीजों के घटित होने की अपेक्षा नहीं की जाती और ऐतिहासिक मामलों के अलावा लम्बे अंतराल के बिना स्वयं में परिवर्तन की ओर मुझे नहीं देखना चाहिये। श्रीमती डेविश ने मुझे कुछ प्रयोग बताये हैं जिसमें विचार तन्तु को हृदय से मस्तक तक फिर नाभि तक लाया जाता है। मुझे इससे बहुत सहायता मिली है। मुझे यह भी लगता है कि किसी व्यक्ति के लिये दूसरे व्यक्ति में प्रतिबिम्बित होना बहुत कठिन है चाहे उसमें कितनी भी निकटता क्यों न हो, जैसी मुझमें और पॉलिन में है लेकिन इसकी कोशिश करने पर व्यक्ति बहुत कुछ जान पाता है। परीक्षा लेने के लिये मैंने उसे जब कठिनाई में डाला तो वह उसका सामना कर ले गयी। मेरा अनुमान है कि किसी दिन इसी तरह

मुझे भी दूसरे व्यक्ति द्वारा ली जाने वाली परीक्षा का सामना करना पड़ेगा।

मालिक! मैं जिस पत्रिका के लिये काम करता हूँ, उसके लिये लिखे गये एक लेख को संलग्न करने की छूट ले रहा हूँ। मेरी समझ में लेख की शुरु की कुछ पंक्तियों में मैंने कॉपीराइट के कानून की अवहेलना की है। आशा है कि ऐसा करने के लिये आप मुझे कोई बिल नहीं भेजेंगे। मुझे उस कहानी को लिखने में मजा आया चूँकि इससे लेख की शुरुआत बहुत अच्छे ढंग से हो गयी।

मालिक! मैंने अभी-अभी अपका वह पत्र पढ़ा है जो आपने मेरे जनवरी के बहुत सारे प्रश्नों वाले पत्र के जबाब में लिखा है। इसमें अभी भी बहुत सारे रहस्य हैं लेकिन ***"स्वतंत्रता लाने के लिये कुछ बंधन आवश्यक हैं इसीलिये आचरण के नियम होते हैं और वास्तविक स्वतंत्रता तो स्वतंत्रता से स्वतंत्र होने में है।"*** आपके ये शब्द मेरी खास रुचि के हैं विशेषकर आचरण के नियम वाली बात। जब भी आपके पास समय होगा, मुझे इस पर और ज्यादा सुनना अच्छा लगेगा।

अब मैं अपना पत्र इस कामना के साथ बन्द करता हूँ कि आप बीमारी से जल्दी और पूरी तरह से ठीक हो जायें। मालिक! मैं वह सुनाना चाहता हूँ जो आपसे मुझे कहना है और तब तक के लिये आपको नमस्ते।

आपका अभ्यासी
रॉन मेन्डेल्शन

पुनश्च : मैं पॉलिन से कहूँगा कि वह अपना चित्र आपको भेज दे जो उसने अब तक आपको नहीं भेजी है। अगर यह माँगना बहुत अधिक नहीं है तो क्या हमारे विवाह को आपका आशीर्वाद मिल सकता है।

(पर्सपेक्टिव केमिकल एज मैगजीन के ९ जून १९७२ के पृष्ठ संख्या ११ से लिया गया अंश जो रॉन मेन्डेल्शन के ११ अगस्त १९७२ के लन्दन से लिखे गये पत्र के साथ प्राप्त किया गया।)

भारत के उत्तरी राज्य से ७४ वर्ष की उम्र में एक विनम्र व्यक्ति पहली बार पश्चिम के दौरे पर आया और जब सक्रियता और कोलाहल से आज के औद्योगिक और आर्थिक वातावरण को प्रतिबिम्बित करने वाले एक अति आधुनिक शहर में डेनिश रेडियो पर उससे पूछा गया कि वह कौन है तो बहुत ही संयमित भाषा में उसका नपा तुला जबाब था ***"मैं वह हूँ जो मुझे होना चाहिये।"***

एक सामान्य से प्रश्न का हाजिरजबाबी के साथ उसके द्वारा दिया गया यह जबाब अपने आप में तमाम अर्थों को संजोये हुये था। एक कदम पीछे जाकर केवल मूल प्रश्न के प्रकाश में ही नहीं बल्कि सामान्य मानव जाति को दृष्टि में रखकर किसी की परीक्षा ली जाये तो अनुभव बहुत भयावह होगा। खासकर ऐसी स्थिति में जब मानव जनसंख्या, औद्योगीकरण, प्रदूषण, खाद्यान्न उत्पादन, संरक्षण और इसकी कमी की ओर तेजी से दिशा और गति के साथ बढ़ता हुआ दिख रहा है।

वास्तव में मनुष्य के लिये पीछे लौटना बहुत ही दुष्कर प्रतीत होता है और अगर वह आज की रफ्तार से इन्हीं तकनीकों का सहारा लेकर आगे बढ़ता है तो सम्भवतः वह इस अवस्था में जा पहुँचेगा जहाँ जनसंख्या और औद्योगिक क्षमता में अचानक असंतुलन की अवस्था पैदा हो जायेगी।

भविष्य के संबंध में दी गयी यह सूचना नयी नहीं है। १९वीं शताब्दी में ही माल्थस ने इस आधार पर कि खाने के लिये बहुत सारे लोग होंगे और खाना बहुत कम मात्रा में उपलब्ध होगा, मानव जाति के लिये अँधकार का, विनाश का समय होगा इसकी चेतावनी दी थी।

(इसके बाद लेख शुरु होता है।)

नं. सी ७१९/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
२० अगस्त १९७२

मेरे प्रिय रॉन मेन्डेल्सन,

तुम्हारा ११ अगस्त १९७२ का लिखा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मैं इस बात के लिये तुम्हारा बहुत आभारी हूँ कि तुमने अपने विवाह के समारोह में शामिल होने के लिये मुझे निमंत्रित किया। तुम दोनो का जीवन सुखी और समृद्ध हो।

विवाह से हम एकत्व सीखते हैं जो दिव्यता के साथ एकत्व से पहले की चीज है।

दुनिया हमारे लिये एक पाठशाला है और जो अनुभव हमें यहाँ मिलते हैं वे हमें दिव्यता की ओर ले जाने वाले सहायक बल का काम करते हैं। सामान्यतया हम उन्हीं चीजों से सीखते हैं जो हमारे सामने हैं न कि उन चीजों से जो हमसे परे हैं।

मुझे यह देखकर खुशी हुई कि तुमने उन शब्दों का प्रयोग किया है जो गुरु से एक शिष्य के लिये निकले हैं। चूँकि मैं एक सामान्य व्यक्ति हूँ इसलिये मेरी अभिव्यक्ति भी सामान्य है।

अभी भी मैं पेट दर्द से पीड़ित हूँ लेकिन यह ऐसी कोई गम्भीर बात नहीं है।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

- मूल प्रति पर नहीं है।

इसकी प्रति श्री पी. राजगोपालाचारी, जनरल सेक्रेटरी, श्री रामचन्द्र मिशन, मद्रास को सूचनार्थ भेजी जा रही है। इसके साथ श्री मन्डेल्सन की ११ अगस्त १९७२ की चिठ्ठी और उसके साथ का संलग्नक पर्सपिक्टिव केमिकल एज मैगजीन के ९ जून १९७२ का वह अंश भी जो उन्होंने भेजा है, संलग्न है।

मद्रास
२५ अगस्त १९७२

परम आदरणीय मालिक,

इस बेचारी आत्मा के प्रति भरपूर प्रेम और भरोसे के साथ भेजा गया आपका २३ तारीख का पत्र रिकार्ड समय में मिला। मुझे यह

जानकर दु:ख हुआ कि अभी भी आप दर्द से पीड़ित हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि स्वस्थ हो जाने तक आप किसी प्रकार की यात्रा मत कीजिये। आप ही मिशन हैं और आपका स्वास्थ्य ही मिशन का स्वास्थ्य है। इसलिये जब तक आप पूरी तरीके से ठीक नहीं हो जाते और आपका दर्द समाप्त नहीं हो जाता आप किसी प्रकार की यात्रा मत कीजिये। मेरे प्रियतम! मेरा जीवन और मेरा सब कुछ आपको ही समर्पित है। अन्य अधिक संवेदनशील लोगों की तरह मैं आपका दर्द और आपकी तकलीफ महसूस नहीं कर पाता लेकिन फिर भी मुझे अपने दिल में आपके लिये तकलीफ होती है।

चि. नवनीत पूरी तरह से ठीक है। कृपया उसके लिये पंरेशान मत होइये। मैं नहीं जानता कि चि. उमेश या चि. सर्वेश आपको क्या लिखते हैं लेकिन ऐसा लगता है कि वे चीजों को बढ़ा-चढ़ा कर आपको लिखते हैं और बिना सोचे समझे आपको परेशानी में डाल देते हैं। आपकी कृपा उनमें प्रवाहित हो और आवश्यक रूप से उन्हें आपका पुत्र होने के योग्य बनावे। उन्हें अपने जीवन में अभी बहुत कुछ सीखना है। ***उन्हें सीखना चाहिये कि शारीरिक रूप से ही आपका पुत्र होना पर्याप्त नहीं है उन्हें आपका आध्यात्मिक पुत्र बनने की कोशिश भी करनी है ताकि वे आपकी कृपा और आपके प्रेम को पाने के काबिल हो सकें और समाज में भी वे सम्मानित और भरोसेमन्द व्यक्ति के रूप में जाने जायें। मेरी आपसे प्रार्थना है कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड को रूपान्तरित करते समय आप मेरे इन भाइयों की उपेक्षा न करें।***

१३ मार्च को आपने मुझे चौथे विन्दु पर रखा। मैं नहीं समझता कि इसके बाद आपने मुझे खिसकाया है। पिछले ३-४ दिनों से मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं इस भौतिक जगत का नहीं हूँ। मैं महसूस करता हूँ कि मेरी स्थिति उस आदमी की है जो स्टेशन पर वेटिंग रुम में बैठकर किसी ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहा हो। आज जीजी ने मुझे एक सिटिंग दी। सामान्यतया मैं दूर और दूर और दूर उड़ता जाता हूँ लेकिन आज ऐसा महसूस हुआ कि मैं वहीं हूँ जहाँ था लेकिन सब कुछ मुझमें बहा आ रहा है।

मैं बड़ी बहू सौ. सुलोचना पर आपकी कृपा की प्रार्थना करता हूँ। वह बेचारी आपकी दया के योग्य है और मेरी आपसे प्रार्थना है कि आपकी निगाह उस पर पड़े और उसे वह प्रेम मिले जो आप मुझ पर बरसा रहे हैं।

मैंने मेन्डेल्सन और पॉलिन को आपके आशीर्वाद के साथ उनके विवाह पर एक टेलिग्राम भेज दिया है।

एना नामक व्यक्ति श्रीमती अन्नाकैम्पबेल ह्वाईट हैं, जो इंग्लैंड में बसे एक भारतीय की पत्नी हैं। श्रीमती डेविश के घर पर ये आपसे मिलने दो बार आयी थीं। आपने उत्तर भारत के केन्द्रों के बारे में जो कुछ भी लिखा है मैंने उस पर गौर किया है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि जिन्होंने भी आपकी सेवा में मिशन का काम लिया है वे उसे आपके संतोष तक और अपने खुद के आध्यात्मिक लाभ के लिये पूरा करें।

कल श्री वीरराघवन अपने आश्रमभवन की खराब हालत की चर्चा करने आये थे। दीमकों ने छप्पर को लगभग पूरी तरीके से नष्ट कर दिया है। अगर हम लोहे और एस्बेस्टस सीट की पक्की छत बना पायें तो इसमें लगभग १००००/- रुपये खर्च हो जायेंगे। मैं यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि हमें क्या करना चाहिये। वह जमीन मिशन की नहीं है और उनके बच्चों में से किसी ने आपको स्वीकार नहीं किया है। इस पर इतना खर्च करना क्या उचित होगा? कृपया सलाह दीजिये।

मेरे पिताजी और कस्तूरी जीजी आज रात कुडप्पा जा रहे हैं और मंगलवार २९ की सुबह वापस लौटेंगे। आपकी कृपा से घर पर सभी ठीक से हैं।

मेरा आपसे निवेदन है कि आप मेरी पत्नी के उस अनुभव का परीक्षण करें जिसमें उसने घर में किसी को देखा है और इसे पूरी तरह से समाप्त कर दीजिये। हमें चिन्ता है कि इससे चि. कृष्णा भयभीत हो सकता है।

इसके अलावा मेरे पास कहने के लिये कुछ नहीं है कि मैं फिर से आपके साथ होने के लिये लालायित हूँ।

मेरे पूर्ण प्रेम के साथ,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
२५ अगस्त १९७२

परम आदरणीय मालिक,

हमने मद्रास के केनरा बैंकिंग कारपोरेशन लि. के अपने बैंक एकाउन्ट को बन्द करने का निर्णय लिया है, जिसका हम प्रयोग भी नहीं कर रहे थे। इसलिये अब हमारे पास केवल इलाहाबाद बैंक, माउन्ट रोड, मद्रास का ही एकाउन्ट रहेगा। मुझे विश्वास है कि आप हमें इसकी स्वीकृति देंगे।

एकाउन्ट बन्द करने के लिये बैंक आपसे एक पत्र चाहता है। अगर आप इस पत्र के साथ संलग्न सारे प्रतियों को हस्ताक्षर करके तुरंत हमें वापस लौटा दें तो हम आपके आभारी होंगे।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ७१६/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
४ सितम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

तुम्हारे २२ और २५ अगस्त के प्रेमपूर्ण पत्र मिले। इसमें कोई संदेह नहीं कि मद्रास आश्रम के छप्पर के नष्ट हो जाने पर इसे बदल दिया जाना चाहिये। लेकिन जब तक शाहजहाँपुर का आश्रम नहीं बन जाता मैं भारत के उत्तर या दक्षिण के किसी भी केन्द्र पर एक भी ईंट लगाये जाने की बात पसन्द नहीं करूँगा। इस समय मेरी यह राय अंतिम है। अगर हर साल छत पर गैमेक्सीन का प्रयोग किया जाये तो इसमें दीमक नहीं रह जायेंगी।

मुझे नहीं पता कि नये छप्पर में कितना खर्च होगा लेकिन मुझे लगता है कि यह आश्रम लम्बे समय तक तुम्हारे अधिकार में नहीं रहेगा इसलिये तुम्हें कोई ऐसी जमीन खरीदनी चाहिये जिससे तुम उसके ऊपर अभ्यासियों के ध्यान करने के लिये कुछ बना सको।

मेरा अनुमान है कि लड़कों और पिता में वर्तमान आश्रम के बारे में कोई बातचीत हुई होगी।

मेरा दिल स्वाभाविक रूप से एक ऐसा दिल बन गया है जो हमेशा दूसरों की बेहतरी के लिये ही सोचता है। सच कहूँ तो दिन में

करीब ३० बार श्री वीरराघवन को सुधारने के बारे में सोचता हूँ और मैं इसे कर भी रहा हूँ लेकिन मेरी निम्नतर प्रकृति इस बात को पसंद नहीं करती कि मैं इस काम को करूँ। हालाँकि दोनो प्रकृतियों में कोई लड़ाई नहीं है फिर भी यह न्याय की माँग लगती है। मैं जानता हूँ कि मुझे ऐसा करना पड़ सकता है लेकिन मेरे जैसा मूर्ख कभी-कभी ही पैदा होते हैं। ***व्यक्ति शक्ति मिलने से पहले बहुत प्रसन्न होता है लेकिन जब उसे शक्ति दी जाती है तो वह परिश्रम नहीं करना चाहता। कर्तव्य की उपेक्षा करने पर हमेशा दण्ड का भय बना रहता है। मुझे अपने मालिक के शब्द याद हैं कि वे मेरे द्वारा की गयी एक भी गलती को माफ नहीं करेंगे। यही वास्तविक न्याय है।*** अब मैं महसूस करता हूँ कि मैंने दिव्य पदों के लिये व्यक्ति के चुनाव में कई गलतियाँ कीं। **ध्रुव-पद** इस समय उस व्यक्ति की मृत्यु के कारण खाली हो गया है लेकिन अपने अतीत के अनुभवों के कारण अब मैं उसे खुद से नहीं भरना चाहता। मुझे इस मामले में अपने मालिक के आदेशों का इन्तजार है।

नीस के जीन माइकेल तीन दिन पहले यहाँ आये हैं। तुम जानते ही हो कि उन्हें भी प्रशिक्षक बना दिया गया है और वे अच्छा काम कर रहे हैं। वहाँ करीब ४० लोग हर हफ्ते सत्संग में शामिल हो रहे हैं।

मुझे रुड़की और मुरादाबाद के लोगों ने विभिन्न सभाओं में शामिल होने के लिये बुलाया था। मैंने उन्हें लिखा भी था कि अगर मेरे दर्द ने अनुमति दी तो मैं इनमें जरूर शामिल होऊँगा। मालूम हुआ है कि उन्होंने मुरादाबाद, सम्भल, काँठ, धामपुर और रुड़की जैसे कई जगहों पर सभाओं का आयोजन किया हुआ है। इसलिये आज से मैं ६ दिनों के दौरे पर निकल रहा हूँ और साथ में दूध की बोतल भी लिये जा रहा हूँ जो दर्द रोकने में काम देगा। जीन भी हमारे साथ जा रहे हैं। कुल मिलाकर हम ६ दिन साथ बितायेंगे।

दिल्ली के एक इन्कम टैक्स ऑफीसर मेरे पास रुके हुये हैं। संस्था की आयकर रिटर्न दाखिल करने में वे हमारी मदद करेंगे। हमें कुछ कागज दाखिल करने होंगे जिन्हें वे कानून देखकर हमें बतायेंगे। मोटे तौर पर उनका अनुमान है कि इन्कम टैक्स के रूप में हमें एक लाख रुपये देने पड़ेंगे। ऐसी स्थिति में आश्रम भवन को पूरा करने के लिये हमारे पास थोड़ी ही रकम रह जायेगी।

मेरे गुरुदेव के पैंफ्लेट हिन्दी पत्रिका में प्रकाशित हो चुके हैं। इसका अँग्रेजी अनुबाद मि. एस. ए. सारनाड ने किया है। इसे देखा जा चुका है और सुधारों की सलाह भी तुम्हारे देखने के लिये पुस्तक में रखी है। प्रकाशक की ओर से भी इसमें टिप्पणी दी गयी है। तुम इसे चाहो तो बदल सकते हो, नया लिख सकते हो या संशोधित कर सकते हो। मेरे मत में अगर यह शताब्दी तक छप जाय तो अच्छी बात होगी और मैं समझता हूँ कि ऐसा होना सम्भव भी है।

मेरी आत्मकथा का पहला भाग तैयार है लेकिन इसे मैं तुम्हारे अवलोकन और सुधार के लिये कुछ समय बाद भेजूँगा। तुम्हारे पास इस समय काफी काम है इसलिये मैं इसे इस समय तुम्हारे पास नहीं भेज रहा हूँ।

उमेश ने अपने पुत्र के बायें हाथ की परेशानी के बारे में मुझे कुछ नहीं लिखा है। सर्वेश ने अपने एक मित्र को उसकी हालत के बारे में लिखा है। उसके बाद उसका कोई पत्र नहीं मिला इसलिये मैंने टेलिग्राम किया। मेरी इच्छा है कि मेरे सारे बच्चे आध्यात्मिक हो जायें लेकिन मैं नहीं जानता कि मैं उन्हें सामूहिक ध्यान के अलावा क्यों नहीं छूता। अगर उमेश और सर्वेश के केस तुम अपने हाथ में ले लो तो इससे मुझे बहुत खुशी होगी। मुझे खुशी है कि नवनीत बिल्कुल ठीक है।

३ सितम्बर १९७२ को मैंने तुम्हें विन्दु ५ पर रख दिया है। कृपया इसे नोट कर लो। २५ अगस्त के अपने पत्र में तुमने जिस दशा के बारे में लिखा है वह दशा सालोक्यता की है। इस अवस्था का विस्तार ऊँची उड़ान को दर्शाता है। बड़ी बहू की अवस्था के बारे में अभी तक मैं सही निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा हूँ। फिर भी मैं तुम्हें इस बात का यकीन दिलाता हूँ कि बड़ी बहू का या पोते का कोई नुकसान नहीं होगा। मैं अपने काम में इतना डूबा हुआ हूँ कि मेरे दिमाग को थोड़ा भी आराम नहीं मिल पा रहा है जो मुझे सही जानकारी दे सके। वहाँ कस्तूरी है। उससे कहो कि वह इसका अवलोकन करके बिना यह सोचे कि यह सही है या गलत उसे मुझे बताये। क्या कृष्णा भी ऐसा महसूस करता है हालाँकि उससे इस बारे में बार-बार पूछना ठीक नहीं है। उसे यह समझाया जाना चाहिये कि यह उसकी कल्पना है और कुछ नहीं।

मैं तुम्हारे २२ अगस्त के पत्र का बहुत संक्षिप्त उत्तर दे रहा हूँ। तुम जो महसूस कर रहे हो वास्तव में यह आत्म त्याग की दशा है। यह और विकसित होगी।

मैं तुम्हें कुछ महत्वपूर्ण पत्रों की प्रतियाँ भेज रहा हूँ। मिशन के एक प्रशिक्षक मित्र फ्रेड ने मुझसे कई प्रश्न पूछे हैं। तुम्हारे लिये यह जानकारी वार्ताओं और प्रश्नोत्तर के कार्यक्रमों में काम आयेगी। मि. रॉन मेन्डेल्शन ने भी मुझे अपने विवाह का निमंत्रण पत्र भेजा है। मैंने इसका जबाब विशेष तरीके से दिया है। पढ़कर तुम बहुत हँसोगे। (प्रतियाँ संलग्न हैं)

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मि. फ्रेड वीन्स्टाक (यू.एस.ए.) द्वारा १७ जुलाई १९७२ को मालिक को लिखे गये पत्र की प्रति :

प्रिय मालिक़,

आशा है आप एक सफल यात्रा से सुरक्षित और ठीक से वापस आ गये होंगे और आपका स्वास्थ्य भी ठीक होगा। मुझे इस बात से बहुत खुशी हो रही है कि मुझे आपसे संपर्क का एक अवसर मिल रहा है क्योंकि मैं आपके मागदर्शन और आपकी मदद की बहुत जरूरत महसूस करता रहा हूँ। जब मैं भारत की यात्रा पर था अपने अभ्यास और काम के बारे में अपने अंदर अत्यधिक उत्साह, ऊर्जा, निश्चितता और स्पष्टता निरन्तर महसूस कर रहा था लेकिन पश्चिम में लौटने के बाद कुछ ऐसा हुआ है कि मैं अक्सर भ्रम, ऊर्जा का अभाव, अनिश्चितता, आध्यात्मिक मार्ग की अपनी यात्रा के अर्थ पर संदेह महसूस करने लगा हूँ। ध्यान और सफाई के माध्यम से इन बाधाओं में से कुछ को मैं अस्थायी तौर पर हटाने में समर्थ हुआ हूँ लेकिन वे हमेशा और अधिक शक्ति के साथ वापस लौट आती हैं। मुझे आपका वह कथन याद है जिसमें आपने कहा था कि पश्चिम के लोगों को अध्यात्म के मार्ग में कुछ कठिनाई आ सकती है क्योंकि पश्चिमी दिमाग हमेशा बौद्धिक उत्तरों की तलाश करता है। मैंने महसूस किया है कि पश्चिम में वापस आने के बाद मेरे दिमाग में सवाल बढ़ गये हैं जिसके

परिणामस्वरूप भ्रम की स्थिति पैदा हो गयी है। मैं आपसे इन सवालों में से कुछ के बारे में पूछना चाहता हूँ क्योंकि मेरे मत में इनका जबाब मेरी समझ के लिये महत्वपूर्ण है। मैं समझता हूँ कि मेरे अंदर का भ्रम मुझे अपने हिस्से का काम पूरे आत्म विश्वास और उत्साह के साथ नहीं करने दे रहा है।

मैं महसूस करता हूँ कि पिछले १० सालों में जिन पश्चिमी युवाओं ने आध्यात्मिक जीवन शुरु करने की कोशिश की उनमें मैं कुछ विशिष्ट हूँ। केवल इस चीज को प्राप्त करने के लिये हम नवीनतम पाश्चात्य संस्कृति के उच्च भौतिकवादी मूल्यों के विरूद्ध हो गये हैं और अक्सर हमारी संस्कृति आध्यात्मिक खोजों के लिये हमारी आलोचना करती है। इन आध्यात्मिक खोजों से हमने कुछ आध्यात्मिक आदर्श विकसित करने शुरु किये जिनके प्रकाश में हमने वास्तविक अध्यात्म और बनावटी अध्यात्म में अंतर देखने की कोशिश की और अँधकार से निकल कर अध्यात्म के मार्ग तक आने की भी कोशिश की है। इसमें अधिकतर चीजें हमारे लिये नयी हैं। हमारे अधिकतर आध्यात्मिक आदर्श क्राइस्ट, बुद्ध और सारे युगों के संतों की तरह के थे और प्रायः उन्हीं से निकले थे।

अब इन आध्यात्मिक आदर्शों और अनुभवों के प्रकाश में जो इस समय मेरे पास हैं चाहे वे कितने ही सीमित क्यों न हों, मैं अपने आध्यात्मिक अनुभवों को समझने की कोशिश करने में समर्थ हूँ। उदाहरण के तौर पर मेरी एक आधारभूत मान्यता रही है कि जब मेरी मुलाकात किसी सच्चे आध्यात्मिक व्यक्ति से होगी तो उसके वाह्य व्यक्तित्व और व्यवहार में उसकी आंतरिक चमक, उसका दिव्य प्रेम और उसके दिव्य गुण प्रतिबिम्बित होंगे साथ ही मनुष्यों, उनकी जरूरतों और उनकी भावनाओं की सच्ची जानकारी उसे होगी और वह अपना जीवन सरल और सामान्य तरीके से बिता रहा होगा। संक्षेप में वह एक औसत भौतिकता की ओर उन्मुख व्यक्ति से असाधारण रूप से भिन्न होगा। मेरा तात्पर्य यह बिल्कुल नहीं है कि मैं ऐसा जीवन बिता रहा हूँ और इन आदर्शों के साथ रह रहा हूँ। खुद को इस मार्ग का एक प्रारम्भिक व्यक्ति मानकर मैंने इन आदर्शों के आधार पर अपना आध्यात्मिक मित्र, संबंधी और मार्गदर्शक चुनने की कोशिश की है।

आदर्शों के बारे में मेरी इस सोच के कारण इधर सहजमार्ग पद्धति के कई पहलू मुझे बहुत गहराई से परेशान करते रहे हैं। मैंने

बहुत उत्साहपूर्वक इस पद्धति के काम को अपना जीवन समर्पित करने का निर्णय लिया और जिनकी भी रुचि इस ओर है उन्हें समझाया कि यह पद्धति उन्हें मानव अस्तित्व के लिये सम्भव पहुँच के उच्चतम स्तर तक उठायेगी। आपकी भक्ति और अपने अनुभवों से उत्पन्न प्रसन्नता की वजह से मैंने जो कुछ भी पद्धति के बारे में पढ़ा या जो कुछ भी मुझे पद्धति के बारे में बताया गया उसे मैंने बिना कोई सवाल किये स्वीकार कर लिया। मैं समझता हूँ कि सहजमार्ग पद्धति के प्रति मेरे संदेहरहित उत्साह और इसे अपनाने की मेरी खुशी ने इच्छुक लोगों को इसकी परीक्षा लेने के लिये प्रेरित किया।

मैं यह जानता था कि कम से कम चेतना के स्तर पर मुझे यह पता नहीं है कि यह पद्धति लोगों को किस स्तर तक ले जा सकती है क्योंकि एक नये अभ्यासी के रूप में मैंने खुद इन उच्चतर क्षेत्रों का अनुभव नहीं किया था। इसलिये मैंने दूसरे अभ्यासियों और प्रशिक्षकों को इस दृष्टि से देखने का प्रयास किया जिससे जो अभ्यासी कई सालों से इसका अभ्यास कर रहे हैं उनमें कितने आध्यात्मिक गुण प्रकट हुये हैं - यह देखकर मुझे संकेत मिले कि वास्तव में वे उच्च आध्यात्मिक स्तर पर हैं और अपनी कई सालों की भक्ति से उन्होंने वास्तव में ऊँचे स्तर को अर्जित किया है। संक्षेप में मेरी यह मान्यता थी कि ये आध्यामिक गुण उनके वाह्य व्यक्तित्व में परिलक्षित होंगे और वे इस बात के जीते जागते सबूत होंगे जैसा सहजमार्ग में कुछ साल अभ्यास करने के बाद मैं और अन्य दूसरे लोग भी बनने की आशा करते हैं। अपने इस अध्ययन में मैंने विशेष रूप से ऐसे प्रशिक्षकों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया जो सही हों या गलत लेकिन जिन्हें मैंने मिशन में आध्यात्मिक रूप से अधिक विकसित और सम्मानित समझा।

मैंने इस बात को महसूस भी किया कि जिन अभ्यासियों और प्रशिक्षकों से मैं मिला वे बहुत अच्छे, दयालु और परिश्रमी लोग थे लेकिन ऐसे लोगों से जिन्होंने कभी कोई अभ्यास नहीं किया है इन लोगों को मैंने बहुत भिन्न नहीं पाया। फिर भी ये लोग मुझे बहुत अच्छे लगे। मालिक! मैं आपसे बहुत ही विनम्रतापूर्वक क्षमा चाहते हुये यह कहता हूँ कि जब मैंने कई प्रशिक्षकों का अध्ययन किया, जिनमें कुछ मिशन के अधिकारी और प्रतिनिधि भी शामिल हैं और जिन्हें आध्यात्मिक प्राणी समझा जाता है, उनमें मैंने बहुत थोड़ी आध्यात्मिकता देखी या इसे ऐसे कहूँ कि जिसे मैं आध्यात्मिकता समझता हूँ वह इनमें

बहुत थोड़ी मात्रा में विद्यमान थी। इतना ही नहीं मैंने उन्हें बहुत ही सामान्य भौतिकतावादी, आशंकाओं से पूर्ण और प्रतियोगितापूर्ण व्यक्ति के रूप में देखा। मैंने देखा कि उनमें अपने साथी मनुष्यों की भावनाओं के प्रति सम्मान भी बहुत कम है। मुझे उनमें अत्यधिक अहंकार और संवेदनहीनता की मौजूदगी महसूस हुई। इनमें से एक व्यक्ति के बारे में मुझे एक प्रशिक्षक ने मुझे बताया कि उन्होंने अहंकार के ग्यारह वृत्त पार कर लिये हैं और अब वे प्रकाश के वृत्त पार कर रहे हैं। फिर भी अब तक मैं जितने लोगों से मिला था उन सबमें ये मुझे सबसे ज्यादा अहंकारी और संवेदनहीन लगे। उनसे मिलने पर कई पश्चिमी युवाओं ने उनके प्रति अपनी नापसंदगी जाहिर की। वास्तव में मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि एक वास्तविक आध्यात्मिक व्यक्ति से मिलने पर लोगों में इस प्रकार का भाव कैसे पैदा हो सकता है। एक अन्य प्रशिक्षक को मैंने यह कहते हुये सुना कि "भारत में बहुत सारे साधु संत हैं जिन्होंने अपनी संकीर्ण मनोवृति और असहिष्णुता के कारण अध्यात्म के नाम को बहुत बदनाम कर रखा है। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि भारत के लिये सबसे अच्छा यही होगा कि इन सबको लाइन में खड़ा करके मशीनगन से गोली मार दी जाये।" मेरे लिये यह बात आश्चर्यजनक थी कि जिसे हम आध्यात्मिक व्यक्ति समझते हैं वह इस तरह की बात कह सकता है और फिर भी वह मिशन के सर्वाधिक प्रसंशित प्रशिक्षकों में से एक है।

यह सब बताकर मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि मुझे यह बताया गया है कि व्यक्ति को उच्चतम स्तर तक पहुँचाने के लिये सहजमार्ग एकमात्र रास्ता है - यह जानने का मेरे पास कोई व्यक्तिगत आधार नहीं है न ही मैं इसे सर्वोत्तम मार्ग कह पाने में खुद को समर्थ पा रहा हूँ क्योंकि व्यक्तिगत रूप से मैं अभ्यास के बिल्कुल निम्न स्तर पर हूँ और ऊँची पहुँच के बारे में मेरी कुछ भी जानकारी नहीं है क्योंकि जिन्हें मैं उच्चतर आध्यात्मिक गुण समझता हूँ उनका प्राकट्य मैंने मिशन के दूसरे लोगों में नहीं देखा। हालाँकि मैं यह मानता हूँ कि मेरा ऐसा दृष्टिकोण मेरी नासमझी के कारण भी हो सकता है फिर भी मैं यह महसूस करता हूँ कि सहजमार्ग को दूसरे नये लोगों के सामने आत्मविश्वास के साथ उच्चतम पहुँच तक ले जाने वाले एक साधन के रूप में प्रस्तुत करने का मेरा उत्साह काफी ठंढा पड़ गया है। ऐसा केवल इसलिये है कि सहजमार्ग के बारे में मुझे केवल अपने अनुभवों के

बारे में (जिसके लिये मैं आपका आभारी हूँ) जानकारी है और थोड़ा बहुत ही मैं और जानता हूँ।

मैं आपके सम्मुख एक और प्रश्न रख रहा हूँ जो मुझे बहुत परेशान कर रहा है। इसका संक्षिप्त विवरण मेरे पिछले पैराग्राफ में भी है। मैंने मिशन के साहित्य, मिशन के प्रशिक्षकों और मिशन के अभ्यासियों में निरन्तर एक प्रवृति देखी है कि वे बहुत ही सूक्ष्मता से इस बात का दावा करते हैं कि सहजमार्ग सर्वोत्तम पद्धति है और यह एक अकेली पद्धति है, जिसमें लोगों की वास्तविक आध्यात्मिक प्रगति हो सके इसके लिये ट्रांसमिशन का प्रयोग किया जाता है। यहाँ तक दावा किया जाता है कि ऐसे सारे लोग जिन्हें शताब्दियों से संत समझा जा रहा है वास्तव में संत कहलाने की योग्यता नहीं रखते क्योंकि उन्होंने सामान्य आदमी की कभी कोई मदद नहीं की। हालाँकि किसी खास संत या मिशन का नाम लेकर कभी कोई आक्रमण नहीं किया गया है लेकिन यह और भी अधिक गंभीर बात है क्योंकि इस बात से ऐसा आभास होता है वर्तमान के लगभग सभी संत नकली संत हैं और जो आदर उन्हें दिया जा रहा है वे उस आदर के पात्र नहीं हैं। (वास्तव में साहित्य कहीं-कहीं इतना तारतम्यविहीन है जिससे मुझे भ्रम होता है कि इसमें ऐसे भी संकेत हैं कि कई संतो ने पूर्णता का उच्चतम स्तर भी प्राप्त किया।) हो सकता है कि ये सारे दावे सत्य हों। पश्चिम का होने के नाते संतों से संपर्क करने का मुझे कम अवसर प्राप्त हुआ है इसलिये मेरे पास इसे ठीक से जानने का कोई तरीका भी नहीं है। फिर भी मैं अपने अध्ययन से काफी परेशान हूँ चूँकि सहजमार्ग के जिन अभ्यासियों से मैं अब तक मिला हूँ उनमें से अधिकांश ने उन लोगों के प्रति जो योग की दूसरी पद्धतियों में अभ्यास कर रहे हैं, काफी आलोचनात्मक रुख प्रदर्शित किया है जिससे वे वास्तव में ये सोचने पर विवश हो गये हैं कि क्या बिना ट्रांसमिशन के प्रयोग के इन पद्धतियों में इनका कोई विकास हो भी रहा है या नहीं। मैंने योग की दूसरी पद्धतियों में अभ्यास कर रहे काफी अच्छे और गंभीर लोगों का अपमान इन प्रशिक्षकों और अभ्यासियों के वक्तव्यों द्वारा होते देखा है। उनके अनुसार इन सब लोगों के आध्यात्मिक प्रयास काफी बहके हुये और निरर्थक हैं क्योंकि प्रभावी तो केवल ट्रांसमिशन ही है। मैंने पहले जिन युवा अमेरिकी जिज्ञासुओं की चर्चा की है उन सबों में उन सारे संतों, योगियों और योग की किसी भी दूसरी पद्धति में साधना करने वाले सत्य के प्रति

पहुँच के स्तर पर गंभीर लोगों के प्रति सामान्य आदर और सम्मान का भाव पाया है। यह हमारे मिशन के आदर्शों में से भी एक है कि संसार के सारे पुरुषों और स्त्रियों को भाई बहन समझा जाना चाहिये। इसलिये मैं यह समझ पाने में असमर्थ हूँ कि अगर अभ्यासी अपने और संतों के मध्य या योग की दूसरी पद्धतियों में साधना कर रहे साधकों के मध्य किसी प्रकार का कोई अनुबन्ध नहीं समझ पाते तो वे संसार के सारे स्त्री पुरुषों को अपना भाई बहन कैसे समझ पायेंगे। मैं यह बिल्कुल नहीं समझ पाता कि किसी के लिये भी यह दावा करना क्यों जरूरी है कि सहजमार्ग एकमात्र रास्ता है या सर्वोत्तम पद्धति है दूसरे मिशनों से बेहतर है। शुरुआत में मैं भी इसी तरीके से सोचता था कि अन्य मिशन इतने अच्छे नहीं हैं लेकिन इसके बारे में गहराई से सोचने पर मैंने यह अहसास किया कि जब तक मैं इस मामले में पूरी तरीके से दावा करने की स्थिति में नहीं हूँ मुझे यह दावा नहीं करना चाहिये।

मुझे यह प्रश्न उसी समय से परेशान कर रहा है जब से मैं वापस पश्चिम लौटा हूँ। यही चीजें मैंने आपके अमेरिका के दौरे में भी महसूस की थीं। मुझे आशा है कि आप मेरे इन सारे भ्रमों का निवारण करने में समर्थ होंगे। मैं आशा करता हूँ कि इन सारे मामलों में मेरी अभिव्यक्ति आपको अनुचित प्रतीत नहीं होगी चूँकि मैं चाहता हूँ कि मिशन में मेरा विश्वास अटूट हो और मेरे मन में इसके प्रति किसी प्रकार का कोई संदेह न रह जाये।

काम करने के संबंध में मैं आपसे कुछ व्यावहारिक प्रश्न भी पूछना चाह रहा हूँ। इस समय मैं वोस्टन शहर में रोजगार की तलाश में हूँ। इधर मैंने साहित्य का अध्ययन भी शुरु किया है और इसे ठीक से पढ़ने की योजना भी बनायी है। मेरा अभ्यास नियमित रूप से चल रहा है। यहाँ तीन नये लोगों ने ध्यान का अभ्यास शुरु किया है और पिछले दो महीने से वे गंभीरता और समर्पण के साथ अभ्यास कर रहे हैं। इनमें से दो अभ्यासी ऐसे हैं जो हफ्ते में कम से कम दो बार ट्रांसमिशन लेते हैं लेकिन तीनों ने यह असंतोष जाहिर किया है कि वे किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं महसूस करते - न तो अपने अभ्यास में, न प्रशिक्षक के ट्रांसमिशन में और न ही अपने दैनिक जीवन में। मैं नहीं जानता कि उन्हें मुझे क्या बताना चाहिये। मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि ऐसा क्यों है। उनके नाम हैं - श्री एवं श्रीमती जय और

शेलि पट्ट, जिनसे आप अपने अमेरिका दौरे में मिले भी थे और मि. रीज़लेटन।

जब मैं यहाँ से ३०० मील दूर स्थित अपने घर पहुँचा तो वहाँ मेरे माता पिता और तीन अन्य लोगों ने भी ध्यान शुरु किया। मैं इन लोगों को नियमित रूप से सिटिंग देने के लिये या नये लोगों को ध्यान शुरु कराने के लिये मौजूद नहीं रह सकता। क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे आप सीधे उनका ध्यान रख सकें या फिर मुझे बताइये कि मैं क्या करूँ। एक दिन मैंने ऐसा प्रबंध किया कि माता पिता जब घर पर बैठें तो उन्हें ट्रांसमिशन मिले ताकि मैं वोस्टन में रहकर भी लम्बी दूरी की सिटिंग द्वारा उन्हें ट्रांसमिट करूँ और सफाई करूँ। उन्होंने टेलिफोन करके मुझे बताया कि उन्हें ट्रांसमिशन के दौरान ऐसा लगा जैसे मैं उसी कमरे में बैठा होऊँ। वे काफी खुश थे। क्या ऐसा करना उचित है और क्या मुझे ऐसा करना चाहिये।

अगर सहायक हो तो मेरे माता पिता के शहर में रहने वाले अभ्यासियों का पता मैं नीचे दे रहा हूँ :

श्री एवं श्रीमती अल्बर्ट वीन्स्टाक
२७५० गार्डन स्ट्रीट
एलेन्टाउन, पी.ए., १८१०४ यू.एस.ए.
श्रीमती लूज आन्ड्रेकेन
२९८४ एवन रोड
बेथलेहम, पी.ए., १८१०७ यू.एस.ए.
श्रीमती गरट्रयूड हेन्ड्रीक्स
१६४५ टर्नर स्ट्रीट
एलेन्टाउन, पी.ए., यू.एस.ए.
श्रीमती एस. हिलमैन
१९१० फौच एव
एलेन्टाउन, पी.ए.

मुझे इस प्रश्न का भी जबाब चाहिये कि १३ ग्रन्थियों और केन्द्र के चारो ओर के २३ वृत्तों के मध्य क्या संबंध हैं क्योंकि इस प्रश्न का जबाब मुझे साहित्य में ढूँढ़ने पर नहीं मिला। इससे इतना पता चलता है कि सहजमार्ग पद्धति में एक अभ्यासी की प्रगति की माप अपनी यात्रा में केन्द्र की ओर पार किये गये वृत्तों की संख्या और ग्रन्थियों तक पहुँच

दोनो से की जा सकती है। लेकिन दोनो में क्या संबंध है - यह समझ में नहीं आता। उदाहरण के तौर पर अगर एक अभ्यासी हृदय क्षेत्र के ५वें विन्दु तक पहुँच गया है तो क्या इसका मतलब यह है कि उसने माया के पाँचों वृत्तों को पार कर लिया है या अगर अभ्यासी मनस्‌ क्षेत्र में प्रवेश कर गया है तो क्या इसका मतलब यह है कि उसने अहंकार के वृत्तों को भी पार करना शुरु कर दिया है? क्या यह हर व्यक्ति के लिये एक समान है? उदाहरण के तौर पर क्या यह सम्भव है कि जो व्यक्ति अग्नि चक्र तक पहुँचा है उसने अहंकार के सारे वृत्त भी पार कर लिये हों और केन्द्रीय क्षेत्र में पहुँच गया हो?

मेरे पास इस समय बाँटने के लिये और बेचने के लिये मिशन का साहित्य उपलब्ध है। क्या आपके लिये यह सम्भव है कि आप मुझे अपनी पुस्तकों की कई प्रतियाँ और ***सहजमार्ग इन आउटलाइन्स*** की भी कई प्रतियाँ सी-मेल से मुझे भेज दें।

अंत में अगर आप मेरी वर्तमान प्रगति का स्तर विन्दुओं की दृष्टि से बता देंगे तो मैं आपका आभारी रहूँगा। मैंने पाया है कि मेरे ध्यान की अवस्था बदलती रहती है। कभी-कभी तो मैं अपने को विचारों और आशंकाओं से भरा हुआ पाता हूँ और कभी-कभी अपने को शान्त और हल्केपन से भरपूर पाता हूँ। सामान्यतया धीमी प्रगति होने का भाव मेरे मन में है। हालाँकि मैंने गौर किया है कि आज का समय उस समय से बहुत भिन्न है जब मैंने ध्यान का अभ्यास शुरु किया था। मेरे पास अपनी वर्तमान स्थिति को नापने का कोई तरीका नहीं है।

आपसे जल्दी जबाब पाने पर मुझे प्रसन्नता होगी और मैं आपके पत्र की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। मेरा वर्तमान पता अस्थायी है लेकिन निम्नलिखित पते से हमेशा मुझ तक पहुँचा जा सकता है :

फ्रेड वीन्स्टाक
ब्ध्व पी.ए.टी.टी.
२७, हेराल्ड स्ट्रीट
मेडफोर्ड, मैस. ०२१५५ यू.एस.ए.
महान आदर और प्रेम के साथ,

फ्रेड

नं. सी ७८८/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
२८ अगस्त १९७२

मेरे प्रिय फ्रेड,

१७ जुलाई १९७२ का लिखा तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला। मैं बहुत खुश हूँ कि तुमने अपने संतोष के लिये कुछ सवाल पूछे।

अपनी पद्धति के अनुसार हम सभी अपरिवर्तनीय अवस्था तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। जब हमारा लक्ष्य इस प्रकार का है तो इसमें परिवर्तन आना बहुत जरूरी है। परिवर्तन से अंतिम विकास के स्तर तक पहुँचने की शक्ति विकसित होती है इसलिये अवस्था हमेशा एक समान नहीं रहती। यह आवश्यक है कि आप परिवर्तन को महसूस करें। जब आप मेरे साथ थे परिवर्तन तो तब भी थे लेकिन चेतना के स्तर पर नहीं। नशे में धुत व्यक्ति की तरह आपने परिवर्तन को महसूस नहीं किया। हालाँकि अपने पत्र में आपने इसे स्वीकार किया है कि जब तक आप यहाँ थे आपके अंदर विचार, उत्साह और स्पष्टता थी। पश्चिम में आपको इस प्रकार का वातावरण नहीं मिला इसलिये आप विपरीत ढंग से सोचने लगे। अगर आप सुबह जल्दी ध्यान में बैठें जिस समय सब कुछ शान्त रहता है तो खुद में वही चीज महसूस करेंगे और तमाम गड़बड़ियों के बावजूद आप अपनी अवस्था का सही दृश्य देख पायेंगे। जब आप सफाई करते हैं तो चीजें साफ हो जाती हैं चाहे जिस स्तर तक यह हो पाये। इसलिये इस प्रक्रिया को जारी रखिये। अगर आप स्वयं या कोई और सफाई करता है तो सारी चीजें एक समय में साफ नहीं होतीं क्योंकि इनकी जड़ें गहरी होती हैं। इसीलिये शुरु में संदेह का होना स्वाभाविक है। सफाई के समय जो चीज साफ हो जाती है वह ठीक है बाकी चीजों को साफ करने का प्रयास आप बिना संशय के कीजिये।

वह इच्छाशक्ति कोई इच्छाशक्ति नहीं है जो काम नहीं **करती** और ***संदेह इच्छाशक्ति के लिये जहर का काम करता है।*** इसके लिये मैं हमेशा एक वाक्य प्रयोग करता हूँ कि ***"अगर कोई अपनी इच्छाशक्ति को कमजोर करना चाहता है तो उसे संशय पाल लेना चाहिये।"***

आपने लिखा है कि वहाँ पहुँचकर आपका पश्चिमी दिमाग (जो हमेशा बौद्धिक उत्तर चाहता है) फिर से जागृत हो गया है। ऐसी बहुत

सी चीजें हैं जिनकी व्याख्या बौद्धिक और वैज्ञानिक तरीके से की जा सकती है लेकिन जब हम पदार्थ से परे जाते हैं तो विज्ञान इन चीजों का महत्व समझ पाने में असमर्थ हो जाता है। अगर विचार सत्य के साथ जुड़ा हुआ है तो अन्य चीजें बिना किसी प्रभाव के कोहरे की तरह दिखेंगी। इसलिये एक अभ्यासी का लक्ष्य है - सारे सांसारिक कार्यों को करते हुये सत्य के साथ उसका निरन्तर लगाव। हम इन चीजों को सतत स्मरण से हासिल करते हैं जिसका उल्लेख मैंने *सत्य का उदय* में किया है। जब यह स्मरण हमारे अवचेतन मन में पहुँचता है तो हम हर समय यहाँ तक कि अचेतन अवस्था में भी उस दिव्य शक्ति के संपर्क में रहते हैं।

अगर कोई आदमी किसी बुद्धिमान व्यक्ति को मूर्ख कहता है तो यह कहकर वह अपनी मूर्खता ही प्रदर्शित करता है। उसका दावा कि सत्य का अस्तित्व नहीं है, प्रामाणिक नहीं है क्योंकि हर कण शक्ति से भरा हुआ है और इसका अहसास हमारे वैज्ञानिकों ने भी किया है। आध्यात्मिकता के उच्चतर मूल्य उच्च मस्तिष्क के लिये हमेशा खुले रहते हैं जिन्हें योग द्वारा विकसित किया जा सकता है और सहजमार्ग हमें हर कदम पर इसकी याद दिलाता है। लेकिन उच्चतर परिणाम के लिये हमें उच्चतर मस्तिष्क का प्रयोग करना पड़ेगा जो उच्चतर विचारों में गहरे जाकर अपना चरित्र सुदृढ़ करता है। सामान्यतया हम दर्पण में पीछे से देखते हैं जिससे देखने वाले का चेहरा अँधकार में ही रह जाता है। उच्चतर मस्तिष्क के लिये उच्चतर सोच जरूरी है। हमें निम्नतर विचारों में उलझकर परेशान नहीं होना चाहिये बल्कि हमेशा आगे और आगे जाने का प्रयास करना चाहिये। अगर जंगल में रहने वाला आदमी कई सालों तक जानवरों को साथ-साथ देखता है तो एक समय ऐसा आयेगा जब वह आदमी को भी जानवर के रूप में ही देखने लगेगा। इसी प्रकार जब हम चीजों के गलत पहलू को देखना शुरु कर देते हैं तो हमें चमकदार चीजों में भी अँधकार का पहलू दिखाई देने लगता है।

ट्रांसमिशन शब्द बहुतों को परेशान करता है। वस्तुत: अँग्रेजी भाषा का यह शब्द इसके पूरे अर्थ को व्यक्त नहीं कर पाता। मेरे मत में यह मनुष्य के रूपान्तरण के लिये प्रयुक्त की जाने वाली एक दिव्य शक्ति है। यह ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो किसी विशेष दिन या किसी विशेष महीने में कार्य करे। मैं अभ्यासियों को इसलिये शक्ति देता हूँ ताकि वे दूसरों के लिये उपयोगी बन सकें। वास्तव में वे नहीं कार्य

करते बल्कि शक्ति स्वयं कार्य करती है। मैं उन्हें कक्षा में मानीटर की निगाह से देखता हूँ जो विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करके उनमें अपेक्षित सुधार लाता है। अगर मुझे पर्याप्त समय मिले और मैं स्वाभाविक तरीके से लोगों को प्रशिक्षित करूँ तो हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप बनने में उन्हें कई साल लगेंगे। कृपया अपने उस कथन को याद करो जो तुमने काम करने की अनुमति पाने के बाद कहे थे। तुमने खुद कहा था कि तुमने लोगों को ट्रांसमिशन दिया और लोगों ने भी शान्ति महसूस की। यह ट्रांसमिशन का प्रारम्भिक प्रभाव है। अगर ट्रांसमिशन में कोई गलती होती तो तुम्हारे या मेरे लिये अभ्यासियों में ऐसी अवस्था पैदा कर पाना असम्भव हो जाता। तुमने खुद लिखा है कि जब तुमने समय देकर अपने पिताजी और दूसरे लोगों को लम्बी दूरी से ट्रांसमिट किया तो उन्होंने ऐसा महसूस किया कि तुम उसी कमरे में हो। वस्तुत: तुम अपने कथन को अस्वीकार नहीं कर सकते चूँकि इसके पीछे तुम्हारा अनुभव है। क्या तुम मुझे माफ कर दोगे अगर मैं तुमसे यह पूछूँ कि क्या तुममें यह शक्ति भारत आने से पहले थी?

घर में नालियाँ होती हैं और नाबदान भी। उनका प्रयोग किया जाता है लेकिन उन्हें खत्म नहीं किया जाता। हम उन्हें सुधारने और आधुनिक बनाने की कोशिश करते हैं लेकिन उन्हें पूरी तरीके से नष्ट करने की कोशिश नहीं करते। दूसरी ओर अच्छे लोग भी हैं लेकिन कोई जरूरी नहीं है कि वे अध्यात्म की तरफ उन्मुख हों। लेकिन अगर तुम उन पर थोड़ा सा भी ध्यान दो तो उनका उत्थान होगा और तुम जल्दी ही उनमें रूपान्तरण महसूस करोगे। हमें गुणहीन लोगों पर ध्यान देने की कोशिश करके उन्हें सुधारने की कोशिश करनी चाहिये। तभी मैं कह सकता हूँ - शाबाश!

जो बच्चा आज पैदा होता है वह अगले ही दिन आदमी नहीं बन जाता। बच्चे में शक्ति भी होती है और उस पर काम भी होता रहता है फिर भी उसे आदमी बनने में कई साल लग जाते हैं। तुम्हें विश्वास हो या न हो परंतु तुम्हारे ऊपर भी मैंने अपनी विनम्र शक्ति का प्रयोग किया है। अगर इसके लिये तुमने खुद कोशिश की होती तो तुम्हें इसमें करीब ४५ साल लगते। अगर मैंने ज्यादा समय लगाया होता तो तुम्हें पर्याप्त अनुभव हुये होते लेकिन मैं तुम्हें इतनी तेजी से खींच रहा हूँ कि तुम अपने अंदर हो रहे अनुभवों को महसूस करने का समय नहीं पा रहे हो हालाँकि तुममें अनुभवों की कमी नहीं है।

तुमने लोगों को देखा है और तुम्हारी समझ के मुताबिक हो सकता है कि तुम्हारा उनके बारे में ऐसा सोचना ठीक भी हो। अगर वे गंभीरता से आध्यात्मिक सभ्यता में विकसित होने का प्रयत्न करेंगे तो निश्चित रूप से उन्हें विकसित होने में समय लगेगा। मेरे मत में पश्चिम और पूरब की सभ्यता में बहुत थोड़ा सा अंतर है। जहाँ हम आंतरिक दृष्टि के लिये अंतरतम का प्रयोग करते हैं वे इसे पाने के लिये खुद अपने आपका प्रयोग करते हैं।

तुमने लिखा है कि तुम ऐसे लोगों से मिले जिन्होंने ग्यारह वृत्तों के बारे में बात की। लेकिन तुम्हें क्या मालूम कि यह सही है या गलत? कोई व्यक्ति संत हो या सामान्य आदमी, उसमें सदैव मानवीय भ्रांतियाँ होती हैं और कोई भी इस भ्रम में हो सकता है कि वह ऐसी ऊँची अवस्था में है। ***वास्तव में केवल मालिक ही अगर वह मालिक है तो किसी की सही अवस्था के बारे में बता सकता है और केवल उसी का कथन सही होता है।***

अब दूसरे विषय पर आता हूँ। मैं भारत के ऋषियों के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता। अगर तुम उनका मूल्यांकन आज की सभ्यता के अनुसार करने लगोगे तो वे तुम्हें तुम्हारी अपेक्षाओं से बहुत नीचे मिलेंगे। उदाहरण के तौर पर उनमें से एक महाभारत काल के ऋषि दुर्वासा ने बहुतेरे लोगों को श्राप दिया और उन्हें रुलाया और उनसे समाज के किसी व्यक्ति को कभी कोई लाभ नहीं मिला। फिर भी उनकी गणना भारत के महान ऋषियों में होती है। वस्तुतः यह तो हमारा दिल है जिसने उनके कार्य को नहीं बल्कि उनकी आध्यात्मिक शक्ति को विशेष महत्व दिया हालाँकि इस शक्ति का प्रयोग उन्होंने बहुत कुपित होकर किया।

जहाँ तक मुझे याद है मैंने अपनी यूरोप, यू.एस.ए. और इंग्लैंड की वार्ताओं में और अपने लेखों में भी हमेशा संतों की प्रशंसा की है। मैंने कभी किसी सामान्य मनुष्य पर भी आक्रमण नहीं किया तो संतों को मैं क्या कह सकता हूँ।

मेरी किताबें मेरे अनुभवों पर आधारित हैं जिससे लोगों को सही चीजों की जानकारी मिल सके और लोग मुझे अभ्यास के द्वारा परख सकें कि मैं सही हूँ या गलत। भारत में लिखी गयी सारी किताबें किसी न किसी के अनुभव पर आधारित हैं। वस्तुतः इसी से योगविज्ञान का विकास हुआ। हर आदमी को दूसरों के विचारों की आलोचना करने

का अधिकार है चाहे वह किसी का भी विचार हो ताकि उचित निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके और इसी आधार पर मुझे भी दूसरों की आलोचना करने का अधिकार है।

मैं जानता हूँ कि तुम जिम्मेदारी से काम कर रहे हो और मुझे इस बात का भी विश्वास है कि तुम्हारे सारे संदेह दूर हो जायेंगे। ईश्वर करे कि तुम्हें और अधिक अनुभूतियाँ प्राप्त हों तभी तुम इन किताबों को और अधिक महत्व दे पाओगे।

भारत के सन्यासियों पर किसी व्यक्ति के द्वारा की गयी टिप्पणियों को जानकर मुझे वाकई बहुत दु:ख हुआ। लेकिन इन्सानियत के प्रति उसकी नेकनीयती की तुम्हें भी तारीफ करनी चाहिये। आखिर किस वजह से वह कहता है कि उन्हें मशीनगन से शूट कर देना चाहिये। सम्भवत: इसके पीछे उसका उद्येश्य केवल इन्सानियत की भलाई है। अगर कोई व्यक्ति जर्मनी के हिटलर के लिये बुरे शब्दों का प्रयोग करता है तो केवल इसलिये कि हिटलर की क्रूरता से इन्सानियत को बहुत कष्ट झेलने पड़े हैं। भारत के लोग जिन्होंने उसके अत्याचार को नहीं सहा है उसके क्रूरतापूर्ण कार्यों की कल्पना भी नहीं कर सकते। लेकिन वे लोग, जिन्होंने उस युद्ध की भयावहता और हिटलर के अत्याचार को देखा है, उसके रणकौशल की बात तो दूर रही, उसका नाम तक नहीं सुनना चाहेंगे। इसी प्रकार वे लोग, जिन्होंने भारत के सन्यासियों के गलत मार्गदर्शन के परिणामों का अनुभव किया है, वे ऐसा कहे बिना रह नहीं सकते। मेरे प्रिय! तुम भारत की असली हालत को नहीं जानते। मैं इस बात की तारीफ करता हूँ कि तुम्हारा दिल इतना अच्छा है कि वह इस तरह की बातों को नहीं सुन पाता। तुम्हारे इस सोच की मैं प्रशंसा करता हूँ। बेशक! वह कुछ ज्यादा ही कह गया कि उन्हें मशीनगन से शूट कर देना चाहिये। मैं यहाँ यह नहीं बताने जा रहा हूँ कि आगे क्या होने जा रहा है। प्रकृति के आदेश हर किसी को नहीं मालूम होते।

अभी भारत अपने अंदर तक ही सीमित है और अब वह बाहर आ रहा है। इसलिये लोगों की सच्ची अंतरात्मा ने मुड़कर बाहर की ओर दौड़ना शुरु कर दिया है। वस्तुत: लोग ऐसा करने को मजबूर हैं क्योंकि आगे अच्छा समय आ रहा है। लेकिन भाग्य की विडम्बना यह

है कि इन चीजों के पीछे जो चीज है हम उसे नहीं देख पाते। हम अपनी चेतना का आकलन अपने वाह्य अनुभवों से करते हैं।

सत्य का उदय में जिन वृत्तों का उल्लेख है वे उनके भीतर उपस्थित ग्रन्थियों के वृहद भाग हैं। आप इन ग्रन्थियों को केन्द्र और उपकेन्द्र भी कह सकते हैं और वृत्तों को वे दायरे जिनमें ये केन्द्र और उपकेन्द्र अवस्थित हैं।

जब हम एक दूसरे से अलग हुये थे तो मैंने निर्देश दिया था कि चीजों को हमेशा खुले दिमाग से देखना और परखना चाहिये। यह निर्देश आज भी बरकरार है।

आपने सूक्ष्म ब्रह्माण्ड तक हृदय के क्षेत्र को पार कर लिया है। मैंने इसी पत्र में कहीं इस बात का जिक्र भी किया है कि अगर इस काम में किसी की मदद न मिले तो यहाँ तक पहुँचने में व्यक्ति को ४५ साल लगते हैं। आप दूसरे विन्दु पर हैं जिसे आत्मा चक्र कहते हैं। मैं इस विन्दु की आपकी यात्रा जल्दी ही शुरु कराऊँगा लेकिन इसके स्वाद का आनन्द लेने में आपको कठिनाई होगी। क्या आप मुझे यह बताना पसंद करेंगे कि मैं इस मामले में तेजी से आगे बढ़ूँ या स्वाभाविक गति से, जिससे आपको अनुभव हों और आप उसका आनन्द भी ले सकें।

ट्रांसमिशन कहीं से भी किसी भी दूरी के लिये की जा सकती है। इस बात की बिल्कुल परवाह मत कीजिये कि अभ्यासी आपके सामने है या नहीं।

मैं ***'प्रारम्भिक अभ्यासियों द्वारा ध्यान का अभ्यास'*** नामक पर्चा भेज रहा हूँ। अभ्यासियों को, विशेष रूप से वोस्टन के उन अभ्यासियों को, जिन्हें कुछ अनुभव नहीं होता, कुछ ज्यादा समय देना होगा। प्रकाशनों की एक सूची मैं भेज रहा हूँ। कृपया मुझे इस बात से अवगत कराइये कि आपको किस किताब की कितनी प्रतियाँ चाहिये।

शुभकामनाओं के साथ,

आपका स्नेही

संलग्नक : दो **रामचन्द्र**

(श्री रॉन मेन्डेल्शन, १० फिजान्स एवेन्यू, लन्दन, एन. डब्ल्यू. ३ के द्वारा पूज्य मालिक को लिखे गये ११ अगस्त १९७२ के पत्र की प्रतिलिपि)

(संपादक की टिप्पणी : डुप्लिकेट कॉपी पहले बाबूजी के २३ अगस्त १९७२ के पत्र के साथ भेजी गयी थी। देखिये पृष्ठ संख्या - २९६)

(पर्सपेक्टिव केमिकल एज मैगजीन के ९ जून १९७२ के पृष्ठ संख्या ११ से लिया गया अंश। लन्दन के श्री रॉन मेन्डेल्सन के दिनांक ११ अगस्त १९७२ के पत्र के साथ यह अंश मिला।)

(संपादकीय टिप्पणी : डुप्लिकेट कॉपी पहले बाबूजी के २३ अगस्त १९७२ के पत्र के साथ भेजी गयी थी। देखिये पृष्ठ संख्या - २९८)

नं. सी ७१९/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
२० अगस्त १९७२

मेरे प्रिय रॉन मेन्डेल्सन,

(संपादकीय टिप्पणी : डुप्लिकेट कॉपी पहले बाबूजी के २३ अगस्त १९७२ के पत्र के साथ भेजी गयी थी। देखिये पृष्ठ संख्या - २९९)

नं. सी ८९/४२६/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
१२ सितम्बर १९७२

श्री पी. राजगोपालाचारी
जनरल सेक्रेटरी, एस.आर.सी.एम.
मद्रास

मैं अभी-अभी तीन जिलों मुरादाबाद, बिजनौर और सहारनपुर का दौरा करके लौटा हूँ।

काँठ के प्रशिक्षक श्री आर. सी. प्रेमी द्वारा वहाँ के हिसाब में कुछ गंभीर गड़बड़ियाँ की गयी थीं। ऐसा समझा जाता है कि उन्होंने इस केन्द्र पर मिशन के धन का भी दुरुपयोग किया है। उनसे सभी बही खाते ले लिये गये हैं और ठीक-ठीक स्थिति जानने के लिये हेड ऑफिस में उन रजिस्टरों की जाँच की जा रही है।

केन्द्र के प्रशिक्षक के रूप में भी श्री प्रेमी ने कुछ ऐसे काम किये हैं जिनसे मिशन की प्रतिष्ठा को आँच आयी है। इसे इस तरह भी कह सकते हैं कि उनकी गतिविधियाँ मिशन के आध्यात्मिक उद्येश्यों को क्षति पहुँचा रही थीं। जो सूचनायें मुझे प्राप्त हुई हैं, उनकी व्यक्तिगत रूप से जाँच करने पर मैंने उन्हें सही पाया है।

इसलिये मैंने श्री आर. सी. प्रेमी को ८ सितम्बर १९७२ से ६ महीनों के लिये प्रीफेक्टशिप से सस्पेंड कर दिया है और उनका प्रमाणपत्र हेडक्वार्टर पर जमा करने के लिये वापस ले लिया है। अगर इन ६ महीनों में उनमें स्पष्ट सुधार परिलक्षित होता है और वे अपने को योग्य सिद्ध कर देते हैं तो उनका प्रमाणपत्र उन्हें फिर से वापस किया जा सकता है अन्यथा इसे निरस्त कर दिया जायेगा।

मैंने श्री नरेन्द्र सिंह वर्मा, प्रधानाचार्य, डिग्री कॉलेज काँठ, मुरादाबाद को १२ सितम्बर १९७२ से काँठ केन्द्र का प्रशिक्षक नियुक्त कर दिया है। रुड़की में भी मैंने एक केन्द्र की स्थापना की है और १० सितम्बर १९७२ से प्रभावी आदेश के अनुसार श्री चन्द्रिका प्रसाद, प्रोफेसर और अध्यक्ष, गणित विभाग, रुड़की विश्वविद्यालय, ७७, गोविन्द कॉलोनी, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की को प्रशिक्षक नियुक्त कर दिया है।

इसे तुम्हें सूचना और आवश्यक कार्यवाही के लिये भेज रहा हूँ। कृपया ऊपर लिखे प्रशिक्षकों के विवरण मिशन के प्रशिक्षकों की सूची में नोट कर लो।

रामचन्द्र
अध्यक्ष

मद्रास
१४ सितम्बर १९७२

परमप्रिय मालिक,

पिछले १० दिनों से मैं आपके पत्र का बहुत ही बेसब्री से इन्तजार कर रहा था लेकिन आपका ४ तारीख का लिखा पत्र एक रजिस्टर्ड पैकेट में मुझे कल मिला। उसके साथ कुछ और कागजात और पूज्य लालाजी महाराज के लेखों की प्रतियाँ भी थीं।

मैंने मेडिटेशन हॉल के संदर्भ में आपके द्वारा दिये गये निर्देशों को नोट कर लिया है। कुछ बहुत जरूरी मरम्मत के कार्यों को कम से

कम खर्चे में करवाने का प्रयास किया जायेगा। आगे चलकर पक्का निर्माण की दृष्टि से कोई अच्छी जमीन देखेंगे।

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि नीस के जीन माइकेल आपका दर्शन पाने और कुछ दिन आपके साथ बिताने के ख्याल से आये हैं। क्या वे भारत में अन्य जगहों का भी भ्रमण करेंगे? मुझे उम्मीद है कि आपके साथ रुड़की, मुरादाबाद आदि जगहों के भ्रमण में उन्हें खूब मजा आया होगा। मुझे यह भी आशा है कि आपका स्वास्थ्य यात्रा के दौरान ठीक रहा होगा और आपको ज्यादा तकलीफ नहीं हुई होगी। हम सभी प्रार्थना करते हैं कि आपका स्वास्थ्य सामान्य हो जाये और दर्द से आपको छुटकारा मिले।

यह जानकर मुझे आघात लगा है कि मिशन को आयकर देना पड़ेगा। निर्माण से संबंधित सामान अगर हम पहले से इकठ्ठा कर लें और इस मद में खर्च दिखा दें तो शायद हम इससे बच सकते हैं। लेकिन मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं है कि जो महानुभाव इस काम के लिये पधारे थे उन्होंने इसके इस पक्ष पर भी ध्यान दिया होगा।

मैं *'इण्डिया इन द वेस्ट'* को प्रेस को देने के लिये तैयार करने में व्यस्त हूँ। इस महीने तो मैं कार्यालय में बहुत व्यस्त हूँ लेकिन यह अक्टूबर के मध्य तक पूरी तरह तैयार हो जायेगी। २८ तारीख तक हमारी कम्पनी के दो अँग्रेज निदेशक आ रहे हैं। मुझे भी उनके साथ दक्षिण भारत में स्थित सभी कारखानों की यात्रा करनी होगी। ५ अक्टूबर को ये लोग वापस जायेंगे। मेरे बॉस भी इस महीने के अंत में विदेश यात्रा पर जा रहे हैं इसलिये अक्टूबर का महीना मेरे लिये अपेक्षाकृत अधिक खाली होगा। इस काम के समाप्त हो जाने पर मैं लालाजी महाराज के लेखों को सम्पादित करने को काम शुरु करूँगा। मैं उनमें उचित संस्कृत शब्दावली का प्रयोग करना चाहता हूँ जैसे सत की जगह सत्व, रज की जगह रजस्, तम की जगह तमस् आदि। आशा है आप मुझे ऐसा करने की अनुमति प्रदान करेंगे। अभी तक मैंने इसके लगभग ४० पृष्ठ पढ़े हैं और मुझे ऐसा लगता है कि इसमें थोड़े बहुत सुधार की जरूरत पड़ेगी। यह सब करके मैं इसे २५ फरवरी को रिलीज करने की दृष्टि से तैयार कर लूँगा। पूस्तक का आकार छोटा ही होगा - *'कमेन्ट्री ऑन टेन कमान्डमेन्ट्स'* के आकार का।

ध्यान में अब मैं पहले से अच्छा महसूस कर रहा हूँ। बड़ी बहू के संबंध में आपके द्वारा दी गयी हिदायतों को मैंने कस्तूरी जीजी तक पहुँचा दिया था। चि. उमेश और चि. सर्वेश रविवार के सत्संग में आने लगे थे लेकिन इधर मैं फिर उन्हें नहीं देख रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि बिना उनसे किसी प्रकार का सहयोग मिले उनके लिये क्या किया जा सकता है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि कृपया आप उनके मामलों को स्वयं देखें।

मेरे दफ्तर में मेरे सामने आजकल बहुत सारी समस्यायें आ रही हैं। इधर ऐसा लगने लगा है कि अब मेरी नौकरी बहुत अधिक दिनों तक नहीं चल पायेगी। इस साल के अंत में मेरी नौकरी के १८ साल पूरे हो जायेंगे और इतने दिनों में पहली बार मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है। मेरा हाल ठीक नहीं है और मेरा यह समय बहुत सारी चिन्ताओं और बाधाओं से भरा हुआ है। ऐसी स्थिति में मैं आपसे मार्गदर्शन और सहारे की प्रार्थना करता हूँ।

जीजी का स्वास्थ्य अब पहले से काफी अच्छा है। पिताजी, बहू और कृष्णा सभी आपकी कृपा से मजे में हैं लेकिन मेरे सिरदर्द की बारम्बरता आजकल कुछ ज्यादा है।

मेरे प्यारे मालिक! अपने संपूर्ण प्यार के साथ,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ७४७/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१७ सितम्बर १९७२

मेरे प्यारे पार्थसारथी,

९ सितम्बर १९७२ का लिखा तुम्हारा प्यार भरा पत्र मिला जिसने मुझे भी परेशानी में डाल दिया। मेरी खास चिन्ता तुम्हारी नौकरी के बारे में है। मेरी समझ में नहीं आता कि लोग तुम्हारे खिलाफ कैसे हो गये हैं। कम से कम मैं तो यह जानता ही हूँ कि तुम्हारे काम से कम्पनी को बहुत लाभ हुआ है। लेकिन एक पुरानी कहावत है कि ***"बड़े लोगों के कान तो होते हैं, उनके आँखें नहीं होतीं।"*** तुमको इस बारे में अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिये। मुझे महसूस होता है कि तुम कम्पनी की जान हो और अगर कम्पनी तुम्हारे बारे में ऐसा सोचती भी है तो यह उसकी बहुत बड़ी भूल होगी।

मैंने अपने स्वास्थ्य के बारे में कस्तूरी को लिखा है। इस समय रात के साढ़े दस बज रहे हैं और मेरा दर्द असहनीय स्थिति में पहुँच रहा है। दूध अब तक अपना काम कर चुका है और अब उसे दूध की दूसरी खुराक का इन्तजार है लेकिन यह तो खाने का समय है।

मैं अपने चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट किशोर को तार देकर बुला रहा हूँ। इस विषय में तुम परेशान मत होना।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : हमें तुम्हारा १४ सितम्बर १९७२ का लिखा एक पत्र आज मिला है जिसमें अन्य कागजातों के साथ ८८२२/- रुपये का एक डिमान्ड ड्राफ़्ट संख्या ०११०९१/११ दिनांक १४ सितम्बर १९७२ भी लगा हुआ है।

(संपादकीय टिप्पणी : ऊपर के पत्र के अंतिम पृष्ठ पर हाथ से यह लिखा हुआ है) :

कस्तूरी को लिखे अपने पत्र में मैंने यह स्पष्ट कर दिया है कि मैं क्या चाहता हूँ। ध्रुव-पद की जिम्मेदारी जो कभी-कभी ही संतों को दी जाती है अगर तुम लेने के लिये राजी हो तो मैं मालिक से तुम्हारे लिये संस्तुति कर सकता हूँ। लेकिन कृपया इसका जबाब जल्दी देना।

मैं भी आजकल परेशान रहता हूँ जिसकी वजह अब मेरी समझ में आने लगी है। मेरी प्रार्थना है कि ये दूर हो जायें।

तार : २० सितम्बर १९७२

पी. राजगोपालाचारी

पत्र डाल दिया है। कस्तूरी सर्वेश को वापस बुला रही हैं। अपनी स्वीकृति का तार दो।

रामचन्द्र

मद्रास
२० सितम्बर १९७२

परमप्रिय मालिक,

चि. सर्वेश से संबंधित तार मुझे आज मिला। मैंने जबाबी तार भेज दिया है जिसमें मैंने लिखा है कि फिलहाल मैं उन्हें यहीं रोक रहा हूँ। जो कम्पनियाँ सीधे मेरे नियन्त्रण में हैं उनमें तो नौकरी का कोई अवसर नहीं है लेकिन आज सुबह मैंने अपने अधिकारी श्री टी. टी. नरसिंहन से चि. सर्वेश के संबंध में बातचीत की है। उन्होंने वादा किया है कि वे कोशिश करके उसे बड़ी कम्पनियों में से किसी एक में प्रशिक्षु के तौर पर रखवा देंगे। उसे फिलहान १५०/- रुपये मिलेंगे। पैसा तो बहुत कम है लेकिन इस काम में उसे अनुभव मिलेगा। ६ महीने बाद मैं नरसिंहन से बात करके उसे किसी नौकरी पर लगवाने की कोशिश करूँगा। ऐसा न भी हो सका तो कम से कम वह अपने को व्यस्त रख सकेगा और रासायनिक उद्योग का कीमती अनुभव भी प्राप्त करेगा जो निश्चय ही उसके भविष्य के लिये लाभकारी होगा। मैं हर प्रकार से उसकी सहायता करने का यथासम्भव प्रयास करूँगा। मैंने उससे कहा है कि वह हफ्ते में एक बार सिटिंग के लिये भी जरूर आये। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप कृपा करके उसके ऊपर से अपनी नाराजगी और नापसंदगी हटा लें। ***मेरे मालिक! जब मैं यह कहूँ कि आप इस संसार को ईश्वर के मुकुट का एक रत्न बनाने के लिये अवतरित हुये हैं तो आप मुझे गलत मत समझियेगा। आपके लिये यह बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं है कि आप किसी को दण्ड दें। मैं चाहता हूँ और आपसे आशा भी करता हूँ कि कभी भी आपको किसी भी दशा में किसी को किसी काम के लिये दण्डित न करना पड़े। हम तो मनुष्य हैं - अच्छा लगे या बुरा, हम असफल भी होंगे, गिरेंगे भी, रास्ते से भटक जायेंगे लेकिन मालिक! मैं आपको अपने हृदय में और कुछ नहीं बल्कि साक्षात करुणा और प्रेम के रूप में ही देखता हूँ। आपके द्वारा दण्ड शब्द का प्रयोग भी मेरे लिये महान कष्ट का विषय है। आपके जीवन में किसी के लिये किसी कारण से दण्ड का तो कोई स्थान होना ही नहीं चाहिये। यही मेरी आपसे, जिसे मैं सबसे ज्यादा प्रेम करता हूँ, पूजता हूँ, प्रार्थना है।***

मुझे दु:ख है कि आपका दर्द समाप्त नहीं हो रहा है। आग्रहपूर्वक मेरी आपसे विनती है कि आप और अधिक आराम करें और

आगे इलाज के लिये मद्रास आयें। कृपया किराये की चिन्ता न करें। आपकी अनुमति मिलते ही मैं पैसा भेज दूँगा। वहाँ आने वालों से भी प्रार्थना की जा सकती है कि वे बाद में नवम्बर में शाहजहाँपुर आयें। कृपया इस बारे में विचार कीजियेगा।

ध्रुव-पद के बारे में - जो कुछ भी आप मुझे दें, मैं उसे स्वीकार करने के लिये तैयार हूँ। आप मुझे भीतर से बाहर तक जानते हैं। मेरी कमजोरियाँ, मेरी असफलतायें सब आपको पता हैं। यह तो आपको देखना है कि मैं योग्य हूँ या नहीं। जहाँ तक मेरी बात है मैं तो पूरी तरह से आपका हूँ और आपके द्वारा दिये गये किसी कार्य को मैं अधिकतम प्रयास के साथ करूँगा जिससे आपको संतुष्टि मिले और आपको किसी प्रकार की निराशा न हो। लेकिन मैं एक मनुष्य हूँ और जब तक इस शरीर में हूँ, मेरे कुछ और बनने की सम्भावना मुझे नजर नहीं आती। अभी भी मैं थोड़ी बहुत मदिरा का सेवन कर लेता हूँ लेकिन बहुत ही कम अवसरों पर। मुझे सिगरेट पीना अच्छा लगता है - यह सब आप जानते ही हैं। लेकिन मालिक! अगर कोई भी काम आप मुझसे लेना चाहते हैं तो मैं उसे जरूर करूँगा।

घर पर सभी ठीक हैं। जीजी ६ अक्टूबर तक मोदीनगर जाना चाहती हैं लेकिन अगर आप यहाँ आने का निश्चय करें तो मैं उन्हें यहाँ रोक लूँगा। ५ अक्टूबर तक मैं अपनी कम्पनी के मेहमानों के साथ व्यस्त हूँ। इसलिये मैं आपको ६ या ७ अक्टूबर तक आने की सलाह देता हूँ।

दफ्तर में मेरे अपने मामले अब आपकी कृपा से पहले से बेहतर हैं।

प्यार और प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
२१ सितम्बर १९७२

परम पूज्य मालिक,

मैंने देखा कि पत्रिका में श्रीमती आर. एल. मिमानी और उनके पति का नाम कलकत्ता में प्रशिक्षक के रूप में छपा है। श्री मिमानी के

अनुसार न तो उन्हें और न ही उनकी पत्नी को प्रशिक्षक बनाये जाने की कोई जानकारी है। कृपया मुझे इस बारे में स्पष्ट रूप से बतायें।

प्रणाम के साथ,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ७७४/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
२१ सितम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मुझे तुमको बताते हुये खुशी हो रही है कि मद्रास से मेरे वापस आने के बाद अभ्यासियों की आध्यात्मिक स्थिति में अब सुधार होने लगा है। शायद ऐसा कस्तूरी के परिश्रम के कारण हुआ है। मालिक की शताब्दी के लिये किये जा रहे अच्छे कार्यों के कारण मैं तुम्हारे पिताजी और अन्य सदस्यों से बहुत खुश हूँ। उन्हें मेरा धन्यबाद कहना।

आजकल मैं तुम्हारी नौकरी की परेशानियों को लेकर चिन्तित हूँ। क्या वे कुछ कम होने लगी हैं?

मुझे मालूम है कि तुमने अब तक अपने लिये कोई कलाई घड़ी नहीं खरीदी है। अगर ऐसा है तो कृपया खरीदना मत और मुझे सूचित करना। एक फ्राँसीसी द्वारा मुझे उपहार में दी गयी केल्टन घड़ी मैं तुम्हारे लिये भेज रहा हूँ। मेरे पास इतनी कलाई घड़ियाँ हो गयी हैं कि उन्हें रखना मेरे लिये बोझ बन गया है। मुझे इसका दाम मालूम नहीं है लेकिन देखने में यह खूबसूरत है।

मेरे मालिक के पत्रों की फोटो छपाई का जो सुझाव तुमने दिया है - वह बहुत अच्छा है लेकिन यहाँ मेरी गैरहाजिरी में चीजें इधर से उधर हटाने में चिठ्ठियाँ या तो खो गयीं या ऐसी जगह रख दी गयीं जहाँ से उसे खोज पाना मुश्किल हो रहा है। फिर भी उसे ढूँढ़ने की भरसक कोशिश की जा रही है। सचमुच ये बहुत ही बहुमूल्य दस्तावेज थे। केवल ४-५ पत्र ही उनके हाथो लिखे हुये थे।

आजकल मेरी दिनचर्या बहुत व्यस्त है। लोग बड़ी संख्या में आ रहे हैं। हालाँकि मैं मद्रास के डाक्टर द्वारा बतायी गयी दवाओं को ले

रहा हूँ लेकिन मेरे दर्द की हालत लगभग वैसी ही है। केवल दूध ही इसका इलाज है।

मदूरै के थास्मास्वामी २ अभ्यासियों के साथ २५ सितम्बर को यहाँ पहुँच रहे हैं। मुझे नहीं मालूम कि वे उस व्यक्ति के साथ आ रहे हैं या नहीं जिसे वे प्रशिक्षक बनवाना चाह रहे हैं। मुझे यह भी नहीं मालूम कि वह व्यक्ति उनके साथ आ रहा है या नहीं जिसे तुमने प्रशिक्षक बनाने की सलाह दी थी। तुम जानते ही हो कि केवल वही व्यक्ति जो श्री रामचन्द्र मिशन का अनुगामी हो, प्रशिक्षक बनाया जा सकता है। हमलोगों को उसके व्यवहार का भी ध्यान रखना चाहिये।

श्री फ्रेड मेरे जबाबों से संतुष्ट हो गये हैं।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
२२ सितम्बर १९७२

परमपूज्य मालिक,

उत्तर प्रदेश के दौरे से संबंधित आपका १२ सितम्बर का पत्र संख्या सी ८९/७२६ मुझे मिला। जानकर खुशी हुई कि काँठ और रुड़की में दो नये प्रशिक्षक नियुक्त किये गये हैं और यह भी कि रुड़की में एक नया केन्द्र खोला गया है।

मुझे इस बात का दु:ख है कि श्री आर. सी. प्रेमी के खिलाफ दण्डात्मक कार्यवाही करनी पड़ी।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

ध्यान करने में होने वाली कुछ सामान्य गल्तियाँ

(संपादकीय टिप्पणी : पूज्य बाबूजी महाराज ने निम्न लेख बोलकर लिखवाया और इसकी एक प्रति पूज्य चारीजी महाराज को भेजी। दिनांक की जानकारी नहीं है।)

इस पद्धति (सहजमार्ग) के अंतर्गत जिस विधि का प्रयोग किया जाता है - वह है इस विचार के साथ हृदय के ऊपर ध्यान कि ईश्वरीय प्रकाश वहाँ विद्यमान है। यह अत्यन्त सरल प्रक्रिया है लेकिन कभी-कभी किसी व्यक्तिगत मामले में विचारों की पेचीदगी के कारण कुछ जटिलतायें पैदा हो जाती हैं और अभ्यासी इस पद्धति का पूरा लाभ नहीं उठा पाता। इसी उद्येश्य को ध्यान में रखते हुये इस विधि के कुछ तकनीकी पहलुओं को जिनको समझने में अक्सर भूल होती है, यहाँ हम स्पष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं।

हमारी प्रक्रिया ध्यान से शुरु होती है और उसमें तल्लीन हो जाने के बाद हम जिस अवस्था में पहुँचते हैं वह समाधि या एकाग्रता की प्रारम्भिक अवस्था है। यह एकाग्रता ऊपर परिभाषित एकाग्रता से भिन्न है जिसमें इच्छाशक्ति के प्रयोग की आवश्यकता होती है। इस एकाग्रता (समाधि) के लिये अभ्यासी को अपने अंदर विचारों से संघर्ष करने की जरूरत नहीं होती। यह तो ध्यान का स्वाभाविक परिणाम है जहाँ साधक का अस्तित्व किसी एक विचार या अनुभूति में विलीन हो जाता है। इसलिये अभ्यासी को ध्यान का अभ्यास बिल्कुल स्वाभाविक तरीके से बिना एकाग्रता का कोई प्रयास किये करना चाहिये। ध्यान का अर्थ है किसी भी चीज के बारे में लगातार बार-बार सोचना। ध्यान के आरंभिक चरणों में यह रुकावटों के साथ होता है लेकिन कुछ समय बाद अवचेतन मन में अचेतन विचार के साथ यह एक संपर्क बना लेता है। यही ध्यान का वास्तविक रूप है। इसलिये हमें एकाग्रता का जरा भी प्रयास किये बिना ध्यान शुरु करना चाहिये और बिल्कुल सहज तरीके से इसे करते जाना चाहिये। इसमें किसी प्रकार का मानसिक या शारीरिक तनाव अपेक्षित नहीं है।

दूसरी भूल जो कभी-कभी अभ्यासी को परेशानी में डाल देती है - वह है प्रकाश को न देख पाना और हृदय की स्थिति का ठीक-ठीक निर्धारण न कर पाना। अक्सर अभ्यासी इन चीजों की शिकायत भी

करते हैं। यह कतई आवश्यक नहीं है कि ध्यान में वास्तविक प्रकाश दिखाई दे। उसका एक हल्का सा विचार और भी बिल्कुल काल्पनिक रूप में होना चाहिये। प्रकाश देखने के इच्छुक लोग इस प्रकाश को एक भौतिक आवरण दे देते हैं जो निश्चय ही उनकी अपनी कल्पना का परिणाम है। इस तरह अगर कोई चीज दिखाई भी देगी तो वह वास्तविक न होकर काल्पनिक ही होगी। प्रकाश हमारा लक्ष्य नहीं हे। उसे हम केवल इस आधार के लिये लेते हैं ताकि हम अपने विचार को ठहरा सकें और उस वास्तविक प्रकाश या भव्यता के स्वामी की ओर बढ़ सकें। इस प्रकार हमारा उद्येश्य है - गुण से पदार्थ की ओर बढ़ना - आभास से सत्य की ओर बढ़ना इसलिये इस बात का जरा भी महत्व नहीं है कि प्रकाश हमें दिखाई देता है या नहीं। उचित विधि तो यही है कि हम अपना ध्यान धीरे से हृदय की ओर मोड़ें और वहाँ ईश्वरीय प्रकाश के विद्यमान होने की कल्पना करें। हृदय की स्थिति और किसी भी प्रकार का प्रकाश देखने की कोशिश करने से बचें। ***ध्यान के बीच में वातावरण की जानकारी तब तक बनी रहती है जब तक हमारा विचार हमारे भौतिक मस्तिष्क से जुड़ा रहता है लेकिन जब यह विचार हमारी चेतना की गहराइयों में चला जाता है तो भौतिक बोध समाप्त हो जाता है। हालाँकि अवचेतन मन में बिना उसकी चेतना के ध्यान अनवरत चलता रहता है।*** ऐसी स्थिति में हमें केवल एक काम करना है कि अपने को खोया हुआ महसूस करने पर आहिस्ते से हृदय पर वापस आकर हम ध्यान को जारी रखें और बीच में खो गयी स्थिति की तरफ से चिन्तित न हों।

दूसरी गलती जो शायद सबसे गंभीर है - वह है ध्यान के बीच में तमाम असामान्य विचारों का आना। सामान्य तौर पर यह अभ्यासी को बहुत अधिक परेशान करती है। लेकिन अगर उचित तरीके से इसे समझ लिया जाये तो मालूम होगा कि वस्तुत: ऐसा है नहीं। विचारों का न रुकने वाला प्रवाह केवल ध्यान के समय ही होता है - ऐसी बात नहीं है। यह तो हर क्षण जारी रहता है। लेकिन ध्यान के समय इसकी अनुभूति इसलिये तीव्र होती है क्योंकि उस समय हम अपने को विचारों से खाली करने का प्रयास करते हैं। चेतना की गहरी परतों में विचारों का एक विशाल भंडार दबा पड़ा हुआ है। जब ध्यान के प्रभाव से चेतन मन में रिक्तता पैदा होती है तो ये दबे हुये विचार उठकर इस रिक्त हुये स्थान को भरने का प्रयास करते हैं। इस तरह ये विचार हमारी

स्थूल चेतना को प्रभावित करते हैं। हमारा मन नियंत्रित न होने के कारण इधर-उधर भागता है और हर तरह के व्यवधान और परेशानियों को पैदा करता है। असल में इन विचारों का उठना अभ्यासी की परेशानी का उतना बड़ा कारण नहीं होता जितना इन विचारों की ओर आवश्यकता से अधिक ध्यान देना परेशानी का कारण बन जाता है। इससे सीधे संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है। ध्यान देने से ये विचार और अधिक शक्तिशाली होकर हमारे कष्ट को और अधिक बढ़ा देते हैं। ***सत्य तो यह है कि मन पर नियंत्रण करना हमारे उद्येश्य में उतना सहायक नहीं है जितना कि उसको ठीक ढंग से मोड़कर उसकी क्रियाशीलता का नियमन करना। और यह नियमन केवल विचारों की बुराई को आंतरिक सफाई की प्रक्रिया से बाहर निकाल कर ही किया जा सकता है - चाबुक का इस्तेमाल करके नहीं।*** मनुष्य के अस्तित्व के वास्तविक रूपान्तरण का यही एकमात्र प्रभावशाली तरीका है। अपने आध्यात्मिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिये हमें अपने आपको विचारों से मुक्त करना आवश्यक है। लेकिन यह इन्हें दबाकर नहीं बल्कि इस जहर को मस्तिष्क से बाहर फेंक कर ही किया जा सकता है जिससे विचारों का बनना बन्द हो सके। दबे हुये विचारों के उठने पर उनके भण्डार को भोग के माध्यम से समाप्त करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार कुछ समय बाद अभ्यासी इनसे मुक्त होकर एकसंतुलित अवस्था को प्राप्त कर लेता है। फिर उसके मन रूपी झील में लहरें नहीं उठतीं - उसके भीतर पूरी तरीके से नीरवता व्याप्त होना शुरु हो जाती है।

नं. सीबी ७९५/१९७१-७२/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
२२ सितम्बर १९७२

प्रबंधक,
इलाहाबाद बैंक सिटी ऑफिस
शाहजहाँपुर

विषय : बैंक ट्रांसफर द्वारा रकम का भेजा जाना

प्रिय महोदय,

कृपया हमारे सामान्य कोष एस.बी. खाता संख्या ३६१/३ से १९०/- रुपये की धनराशि इलाहाबाद बैंक के मद्रास स्थित शाखा में श्री रामचन्द्र मिशन मद्रास केन्द्र के खाते में स्थानान्तरित कर दें।

भवदीय
अध्यक्ष

- श्री पी. राजगोपालाचारी, जनरल सेक्रेटरी, एस.आर.सी.एम., मद्रास को इस टिप्पणी के साथ सूचनार्थ प्रेषित कि यह राशि इण्डिया इन द वेस्ट के मूल्य से संबंधित है, जो अब तक हेडक्वार्टर पर एकत्रित हो पायी है।

शाहजहाँपुर
२२ सितम्बर १९७२

प्रबंधक,
इलाहाबाद बैंक सिटी ऑफिस
शाहजहाँपुर

विषय : बैंक ट्रांसफर द्वारा रकम का भेजा जाना

प्रिय महोदय,

कृपया हमारे सामान्य कोष एस.बी. खाता संख्या ३६१/३ से २२०/- रुपये की धनराशि इलाहाबाद बैंक मद्रास स्थित शाखा में श्री रामचन्द्र मिशन के मद्रास केन्द्र के खाते में स्थानान्तरित कर दें।

भवदीय
अध्यक्ष

- श्री पी. राजगोपालाचारी, जनरल सेक्रेटरी, एस.आर.सी.एम., मद्रास को उनके १४ सितम्बर १९७२ के पत्र के संदर्भ में पुस्तकों का हिसाब पूरा करने के बाद प्राप्त प्रेषित धनराशि।

नं. सी ७७८/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
२३ सितम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

२० सितम्बर का लिखा तुम्हारा अत्यन्त प्रेम से भरा पत्र मिला। इसका एक-एक शब्द परम भक्ति से ओत-प्रोत है। ऐसे सुन्दर पत्र का जबाब देने के लिये मैं शब्द कहाँ से लाऊँ?

मेरा विश्वास है कि तुम्हारे दफ्तर की कठिनाईयाँ जल्दी ही समाप्त हो जायेंगी और तुम्हारे अधिकारी तुम्हारे काम से और अधिक खुश होंगे। मुझे आशा है कि जिस काम को तुम अपने हाथ में लोगे वह खूब बढ़ेगा।

मैंने आज से **ध्रुव-पद** के लिये तुम्हारे ऊपर काम करना शुरु कर दिया है। मैंने देखा कि नाभि की छाया में एक प्रकार की गति शुरु हो गयी। उसे नियंत्रित करके मैंने उसे एक नियमित क्रम में ला दिया है। काम शुरु हो चुका है और मालिक की कृपा से यह पद अब किसी और को नहीं दिया जा सकता। सच पूछो तो इस तरह का काम तभी किया जा सकता है जब हम और तुम आमने-सामने बैठें। इसी वजह से मैंने इस काम को यहीं रोक दिया है। नाभि की छाया को चमत्कारों के प्रदर्शन के लिये भी इस्तेमाल किया जा सकता है लेकिन मुझे वह तरीका नहीं मालूम है जिससे इसे चमत्कारों के लिये इस्तेमाल किया जा सके। वे विन्दु, जिनसे चमत्कार किये जाते हैं, जागृत किये जाने का इन्तजार कर रहे हैं लेकिन मैं उन्हें अभी छू नहीं रहा हूँ केवल उनकी सफाई कर रहा हूँ। मुझे इस काम को पूरा करने के लिये मद्रास आना पड़ेगा क्योंकि मालिक भी जल्दी में हैं। पैसा हमारे पास है इसलिये तुम्हारे द्वारा भेजे जाने की जरूरत नहीं है।

मेहमान आने शुरु हो गये हैं और अक्टूबर में अच्छी संख्या में लोग इकठ्ठे हो जायेंगे। मैंने लोगों को १० अक्टूबर तक का समय आने के लिये दिया है। इसके बाद १५ नवम्बर १९७२ तक मैं लोगों को आने से मना कर दूँगा। अगर आश्रम के निर्माण के काम के लिये मुझे नहीं रुकना पड़ा जिसे हम शुरु करने जा रहे हैं तो बहुत सम्भव है कि मैं अक्टूबर के मध्य में वहाँ आऊँ। किसी भी तरह से मैं इस कार्यक्रम को बनाने की कोशिश करूँगा। कस्तूरी अगर अक्टूबर के अंत तक वहाँ रुकी रहें तो मुझे बहुत खुशी होगी।

एक अमेरिकी, जो यहाँ ठहरे हैं, २४ की रात में यहाँ से जा रहे हैं।

मुझे बहुत अफसोस है कि बहुत खोजने के बाद भी मुझे पूज्य मालिक के पत्र नहीं मिल पा रहे हैं। वे बहुत ही कीमती दस्तावेज हैं और उनमें कई नये विचार हैं। उनकी खोज अभी भी जारी है।

मुझे खुशी है कि तुमने चि. सर्वेश के लिये कुछ काम ढूँढ़ लिया है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
२६ सितम्बर १९७२

परमप्रिय मालिक,

मुझे आपके द्वारा लिखे २१ और २३ सितम्बर के दो पत्र मिले। मद्रास के अभ्यासियों की आध्यात्मिक स्थिति में सुधार आना प्रारम्भ हो गया है इस बात की जानकारी आपसे पाकर हम सभी बहुत खुश हैं। हमलोग लगभग हर दिन इस सुधार को महसूस कर रहे हैं। यह सब आपकी कृपा और आपके प्यार का नतीजा है।

मेरे दफ्तर का सारा मामला अब शान्त हो गया है। मुझे विश्वास है कि यह जानकर मेरे विषय में आपकी चिन्ता समाप्त हो जायेगी। मैंने अभी तक कोई कलाई घड़ी नहीं खरीदी है।

मदुरै में प्रशिक्षक के लिये मैंने किसी का नाम नहीं भेजा है। श्री वीरराघवन से मुझे मालूम हुआ है कि श्री शेषाद्रि की बदली वापस मदुरै हो गयी है इसलिये मेरी समझ में उस केन्द्र पर अब किसी अतिरिक्त प्रशिक्षक की जरूरत नहीं रह गयी है। यह अफसोस की बात है कि श्री महालिंगम का तबादला सेलम से त्रिची के लिये हो गया है और सेलम केन्द्र एक बार फिर बिना प्रशिक्षक के हो गया है।

मैं नहीं समझ पाया कि यह नाभि छाया क्या चीज है। कृपया मुझे इसके बारे में स्पष्ट कीजिये। कुछ दिन पहले जीजी ने मुझे एक सिटिंग दी। आँख बन्द करते ही मुझे ऐसा लगा कि मेरा आकार बहुत

बढ़ गया है और पूरे संसार को मैंने ढक लिया है। जीजी भी मेरे बाहर नहीं बल्कि मेरे अंदर ही हैं। ऐसा लग रहा था कि प्राणाहुति भी मेरे अंदर से ही आ रही है लेकिन मैं यह ठीक से नहीं कह सकता कि यह जीजी से आ रही थी या किसी और से। यह बहुत ही आनन्ददायी अनुभव था।

मैं कार्यालय के काम से अभी कुछ दिन पूर्व कुड्डालूर गया था। दोपहर का खाना खाने के बाद जब मैं बिस्तर पर आराम करने के लिये गया तो अचानक मुझे लगा कि प्राणाहुति देने के निर्देश मिल रहे हैं लेकिन यह नहीं मालूम कि यह किसे देना था। मैं लगभग डेढ़ घंटे तक गहरे ध्यान में डूबा रहा। कृपा करके इसके बारे में मुझे बताइये।

यह जानकर कि आप अक्टूबर के मध्य में हमारे साथ होंगे हम सभी बहुत खुश हैं। मैंने जीजी को बता दिया है कि आप चाहते हैं कि वे अक्टूबर के अंत तक मद्रास में ही रहें।

मैं अपनी कम्पनी के दो अँग्रेज निदेशकों से मिलने कल दिल्ली जा रहा हूँ। यह मेरे लिये बहुत दुःखद है कि इस अवसर का उपयोग मैं आपका दर्शन करने के लिये नहीं कर पा रहा हूँ क्योंकि पूरा कार्यक्रम ऐसा है कि उसमें से शाहजहाँपुर पहुँच पाने का समय नहीं निकल पा रहा है। चि. कृष्णा की त्रैमासिक परीक्षायें समाप्त हो गयी हैं और उसकी एक हफ्ते ही छुट्टियाँ हो गयी हैं। घर में सभी कुशल हैं।

बच्चों को प्यार,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ८१६/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
३० सितम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

२६ का लिखा तुम्हारा प्यार भरा पत्र मिला। मेरे दर्द की हालत करीब-करीब वैसी ही है। मौसम के बदलने पर दर्द खूब बढ़ जाता है। इस समय मौसम बदल रहा है।

नाभि-छाया हृदय और आत्मा चक्र के बीच में स्थित है। जैसा मैंने *सत्य का उदय* में लिखा है कि ईश्वर जब किसी को *ध्रुव-पद* की

हालत में लाना चाहता है तो इसे छूना पड़ता है। विस्तार इसलिये होता है चूँकि इस काम को करने के लिये बाधायें पहले ही तोड़ी जा चुकी होती हैं। इसलिये इस विस्तार के अंदर कस्तूरी भी है।

अब तुम्हारे कुड्डालूर के अनुभव के बारे में। कभी-कभी किसी व्यक्ति को प्राणाहुति की जरूरत होती है और इसलिये वहाँ माँग भी होती है। इस तरह की अनुभूति विशुद्ध चेतना के माध्यम से ऐसे व्यक्ति को होती है जिसके पास प्राणाहुति की शक्ति होती है। एक बार मैंने मद्रास में तुम्हें अपनी कहानी सुनायी थी कि कभी-कभी अपने हृदय में मैं बिना किसी कारण के भ्रम का अनुभव करता हूँ। एक बार मैंने इस पर सोचा कि यह कहाँ से जुड़ा हुआ है और पाया कि मेरे विचार का सूत्र मेरे हृदय से एक दूसरे हृदय तक जुड़ा हुआ था जिसे मैं जानता भी नहीं था। वह उस समय परेशानी में था और ईश्वर से अपनी मुश्किलों को दूर करने की प्रार्थना कर रहा था। फिर मैंने क्या किया? उस भ्रम को उसके हृदय से दूर कर दिया। इसके बाद मैंने देखा कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ। इसके बारे में जान लेने के बाद अब जब भी ऐसी आवश्यकता होती है, मैं ऐसा कर देता हूँ।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

नं. सी ८४२/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
७ अक्टूबर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

डा. कुप्पूस्वामी के पत्र के जबाब की तुम्हारी कॉपी मुझे मिली। तुम्हारा जबाब बहुत ही अच्छा था और इसके लिये उनको अफसोस होना स्वाभाविक ही था।

मेरे मालिक तुम्हारे काम के लिये मुझे मद्रास भेजने की जल्दी में हैं। जैसा मैंने तुम्हें पहले ही लिखा है कि मालिक की कृपा से मैंने तुम्हारे अंदर ***ध्रुव-पद*** की नींव पहले ही रख दी है जिससे यह किसी दूसरे के पास न चली जाये।

मुझे काम में केवल तीन दिन लगेंगे। हो सकता है कि सफाई के लिये २-३ सिटिंग और देनी पड़े। सबके साथ व्यवहार में शान्त रहने की कोशिश करो। शक्ति विकसित हो रही है।

मैं हवाई जहाज से १३ अक्टूबर १९७२ को मद्रास पहुँच रहा हूँ। मुझे इस उड़ान के वहाँ पहुँचने का ठीक समय नहीं मालूम है लेकिन मैं ऐसी उड़ान पकडूँगा जो दिल्ली से मद्रास के लिये दोपहर से पहले ११:०० बजे के आस पास छूटती हो। मैं मद्रास पहुँचने के समय के बारे में तुम्हें दिल्ली से तार कर दूँगा। दर्द के बारे में मैं उस डाक्टर से दुबारा परामर्श करना चाहता हूँ। कुछ मेहमान अभी मेरे पास रुके हैं। दूसरों को मैंने बता दिया है कि मैं शहर के बाहर जा रहा हूँ।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : पिछले तीन दिन से दर्द कम हो रहा है।

तार : १२ अक्टूबर १९७२

पार्थसारथी

शुक्रवार को सीधी उड़ान से पहुँच रहा हूँ।

रामचन्द्र

नयी दिल्ली
२९ अक्टूबर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

हम यहाँ सुरक्षित पहुँच गये। लूसियाना मुझसे दिल्ली में मिली। वह बम्बई जाने की बजाय सीधे दिल्ली आ गयी क्योंकि उसकी कैरो से बम्बई की उड़ान रद्द हो गयी। श्री सुन्दर उसकी देखभाल कर रहे हैं। वह मेरे साथ सोमवार को शाहजहाँपुर जायेगी।

तुम जो पुस्तक लिख रहे हो उसमें तुमसे शायद कस्तूरी ने आदमी की परिभाषा लिखने को कहा हो। मैं कहता हूँ कि ***"अस्तित्व का विभ्रम ही मनुष्य है"*** मैंने तुम्हारे पिताजी को लिखा है कि मैं उस विश्वविद्यालय में पढ़ा हूँ जहाँ वर्णमाला नहीं है। इस वास्तविकता को ध्यान में रखते हुये तुम भी इस पर विचार करना कि उस किताब में

इस वाक्य को समाविष्ट करना ठीक रहेगा या नहीं। मैं इसे इसलिये शामिल करना चाहता हूँ कि लोग इसपर मनन करें और आलोचना होने पर मैं इसे और स्पष्ट कर सकूँ।

इस स्थिति में भी मैं इस कथन के कई स्पष्टीकरण दे सकता हूँ लेकिन मेरा मानना है कि किसी विचार की व्याख्या कर देने से उसका महत्व जाता रहता है।

एक प्रश्न यह है कि जब संसार में इतने दुःख और कष्ट हैं तब ईश्वर ने इस संसार की रचना ही क्यों की। यह प्रश्न बहुत लोगों ने पूछा है। इसका उत्तर बहुत सरल है - अगर शक्ति करोड़ों सालों तक व्यक्त न हुई होती तो यह समाप्त हो जाती और तब ईश्वर भी नहीं रह जाता। इसलिये ईश्वर ने अपना जीवन बचाने के लिये शक्ति को भेजा जिसका परिणाम यह सृष्टि है। लोग अक्सर मुझसे पूछते हैं कि क्या ईश्वर निर्दयी है जो वह हमें इतना कष्ट उठाते हुये देखता है लेकिन उसे दूर नहीं करता। वस्तुतः शक्ति जब केन्द्र से नीचे उतरी तभी सृष्टि बनी। जब इसने केन्द्र को छोड़ा और उससे बाहर आयी तभी चीजों ने आकार लेना शुरु किया। फिर इस मनस् ने जिसे हम अपने साथ लाये, हमें बुनना शुरु कर दिया और हम अपने इस भौतिक स्वरूप में आ गये। वस्तुतः यह हमारा अपना ही दोष है कि हम अपने मन का सही ढंग से उपयोग नहीं कर पाते और हमें कष्ट झेलने पड़ते हैं। इसलिये सभी दुःखों और कठिनाईयों के लिये हम स्वयं जिम्मेदार हैं। संत का गुण है - क्षमताओं का समुचित उपयोग। ***हमारे मन में अच्छा या बुरा काम करने का विचार आया ही क्यों? क्योंकि हमारे भीतर जो शक्ति है वह बिना कार्य किये रह ही नहीं सकती - कार्य चाहे अच्छा हो या बुरा।***

चूँकि बौछार केन्द्र से बाहर आयी और कुछ दूर तक चली, वातावरण बदला और मन में थोड़ी सी अशुद्धि पैदा हो गयी। अभी भी हमें केन्द्रीय शक्ति से सहायता मिलती रहती है। शरीर में कहीं भी जहर होता है तो बुखार आ जाता है। ऐसा केवल इसलिये होता है कि हमारे अंदर की वास्तविक शक्ति हमेशा कार्य करती रहती है और जो कुछ भी अवांछित है उसे बाहर फेंकती रहती है।

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

मद्रास
२ नवम्बर १९७२

परम पूज्य मालिक,

दिल्ली से लिखा हुआ आपका पत्र मुझे मिला। जानकर खुशी हुई कि आप स्वस्थ हैं। जहाँ तक किताब में शामिल करने वाली सामग्री का प्रश्न है, उचित स्थानों पर इसे शामिल कर लिया गया है। मुझे विबोर्ग से हान्स जार्गन ह्विड का आपके लिये लिखा पत्र मिला है। उसे इस पत्र के साथ संलग्न कर रहा हूँ। वे बर्थे के साथ किसी समय जनवरी में भारत आयेंगे और सीधे शाहजहाँपुर जाना चाहेंगे। उनका पता है :

हान्स जार्गन ह्विड
स्कवाय. मैथियाज्गेड ५०
८८००, विबोर्ग, डी.के. डेन्मार्क

महाराजा के ६१वें जन्मदिन समारोह में सम्मिलित होने के लिये मेरे पिताजी त्रिवेन्द्रम गये हैं। वहाँ से वे विरुधनगर, मदुरै, त्रिचि केन्द्रों पर होते हुये ९ तारीख को मद्रास वापस आयेंगे। आपकी कृपा से घर में सभी कुशल हैं।

प्रणाम,

संलग्नक : उपरिलिखित

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ९०५/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
३ नवम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मैं यहाँ सुरक्षित पहुँच गया। इस समय मेरा पेट दर्द करीब-करीब बिल्कुल ठीक है। लेकिन कभी-कभी यह पेट की ओर थोड़ा देखता है और पेट इसकी ओर। एक दूसरे की ओर देखने का यह सिलसिला जारी है।

शरद का दाहिना पैर सूज आया है और १०२° बुखार है। उसने मुझे बताया कि स्कूल में उसे चोट आ गयी थी। उसके छोटे भाई संजय को भी इस प्रकार की तकलीफ हुई थी। यह सोचा गया कि यह किसी संक्रमण की वजह से है। संजय अब पहले से ९०% बेहतर है और उसे अब बुखार भी नहीं है। शरद की हालत पहले जैसी ही है

और उसके कूल्हे के ऊपरी भाग में फोड़ा निकल आया है। इससे मवाद भी आ रहा है। लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं है।

मैंने अपनी ***आत्मकथा*** का एक हिस्सा तुम्हारे पिताजी को उसे पढ़ने और उसमें आवश्यक सुधार करने के लिये दिया है। इसमें यह ध्यान रखना है कि मेरे विचार न बदल जायें और प्रवाह में रुकावट न आये। केवल भाषा की गल्तियाँ और उसके प्रयोग को ही ठीक किया जाना है। ***"कष्ट वास्तव में वही है जो हम नहीं भोगते"*** यह वाक्य ठीक है और इसमें किसी प्रकार के परिवर्तन की जरूरत नहीं है। पृष्ठ संख्या १०८ पर पैरा १ और २ जिस तरह हैं उन्हें उसी तरह रखना है क्योंकि दोनो एक दूसरे से संबद्ध हैं। किसी तथ्य को बदलने की आवश्यकता महसूस करने पर वे मुझसे परामर्श कर सकते हैं।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

"जीवन अस्तित्व की एक दशा है।"

बाबूजी

नं. सी ९०८/एस.आर.सी.एम.

शाहजहाँपुर
५ नवम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

पिछले पत्र में मैंने तुम्हें लिखा था कि शरद के दाहिने पैर के निचले भाग में चोट आ गयी थी और वह सूज आया था। आज अस्पताल में उसका ऑपरेशन हुआ। काफी मात्रा में मवाद बाहर आया। डाक्टर ने बताया कि थोड़ा प्रभाव हड्डी पर भी आया है। उसने इसके इलाज के लिये कई इंजेक्शन लिखे हैं। हमने ऑपरेशन कराने में देर कर दी। ईश्वर को धन्यबाद दो कि हड्डी पर असर ज्यादा नहीं है अन्यथा ठीक होने में ६ महीने लग जाते।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : श्रीमती लूसियाना अभी यहीं हैं। डेन्मार्क के एक और भाई लीफ वेंग लारसन भी यहाँ रुके हुये हैं।

मद्रास
१३ नवम्बर १९७२

मेरे परमप्रिय मालिक,

३ और ५ नवम्बर के आपके स्नेह भरे पत्रों के लिये आपको धन्यबाद। आशा है कि चि. शरद अब ठीक होंगे। उनके पैर का घाव सूख गया होगा और अब उन्होंने पहले की तरह चलना-फिरना भी शुरु कर दिया होगा। आत्मकथा के संबंध में आपके द्वारा दिये गये निर्देशों को मैंने पिताजी को बता दिया है। मुझे इस बात का दुःख है कि अभी भी आपके पेट में थोड़ा दर्द है। हम सब आपके पूर्ण स्वास्थ्य की प्रार्थना करते हैं।

आपके यहाँ से जाने के बाद घर में एक के बाद दूसरा कोई न कोई बीमार है। चि. कृष्णा को फ्लू हो गया था और वह एक हफ्ते तक स्कूल नहीं गया। अब वह पूरी तरह ठीक है। आपकी बहू सुलोचना पिछले १० दिनों से बीमार है। मेरी तबियत भी बीच-बीच में खराब हो जाती है। वैसे घर में सारे काम सामान्य ढंग से हो रहे हैं। पिताजी विरुधनगर, मदुरै और त्रिचि का दौरा करके ९ नवम्बर को वापस आ गये। वे स्वस्थ हैं। आपकी कृपा से हम सभी अपना काम ठीक से कर रहे हैं।

जो काम आपने मुझे सौंपा है कृपया उसके संबंध में समय समय पर मुझे बताते रहिये कि यह ठीक से हो रहा है या नहीं। मुझे इस काम में आपके मार्गदर्शन की आवश्यकता है। मैं नियमित रूप से सुबह २० मिनट और दोपहर बाद एक घंटा इस काम को दे रहा हूँ।

मेरे अधिकारी श्री टी. टी. नरसिंहन ने आपको एक व्यक्तिगत पत्र लिखने के लिये मुझसे आपका पता लिया है। वे १८ को इंग्लैंड जा रहे हैं और ३ दिसम्बर को वापस यहाँ आयेंगे।

"इण्डिया इन द वेस्ट" की टाइपिंग लगभग पूरी हो चुकी है। आशा है कि एक हफ्ते के अंदर उसे प्रेस में दे दूँगा। उसके बाद परम पूज्य लालाजी साहब के लेखों को प्रेस में देने के लिये उन्हें तैयार करूँगा।

लूसी और लीफ को हमारा बहुत बहुत प्यार,
आपके लिये दिल की गहराईयों से निकले हुये प्रेम के साथ,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

पुनश्च : चि. उमेश और चि. सर्वेश नियमित रूप से सिटिंग के लिये आ रहे हैं।

मद्रास
१३ नवम्बर १९७२

परम पूज्य मालिक,

संदर्भ : डेन्मार्क के केन्द्रों के काम का विवरण

मुझे वीबे से लगभग १५ पृष्ठों का एक लम्बा पत्र प्राप्त हुआ है जिससे इस बात की सूचना मिलती है कि लक्ष्मीनरसिंहन जिनकी सहायता बेंट रूस कर रहें हैं, मिशन के कार्यों में फिर से कुछ विवाद खड़े कर रहे हैं। मुख्य समस्यायें इस प्रकार हैं :

- लक्ष्मीनरसिंहन इस बात का विरोध करते हैं कि सभी प्रशिक्षकों को एक दूसरे से कम से कम महीने में एक बार व्यक्तिगत पूजा लेनी चाहिये। लगता है कि यह उन्हें आवश्यक नहीं प्रतीत होता। प्रशिक्षकों की सभा में उन्होंने इससे संबंधित कुछ सवाल खड़े किये हैं :
- पश्चिम में बहुत से शिष्य यह पूछते हैं कि विभिन्न प्रशिक्षकों में क्या अंतर है। क्या एक अनुभवी प्रशिक्षक नये प्रशिक्षक से बेहतर है? दोनो में से किसे चुना जाये? कुछ शिष्यों का कहना है कि कुछ प्रशिक्षक उन्हें पसंद नहीं हैं। मुझे ऐसा लगता है कि प्रारम्भिक अवस्थाओं में प्रशिक्षकों के चयन का कोई महत्व नहीं है क्योंकि तब सिटिंग मुख्य रूप से हृदय क्षेत्र की सफाई के लिये होती है। कठिनाई तो बाद में आती है जब अभ्यासी की यात्रा आरम्भ हो जाती है। यात्रा आरम्भ हो जाने के बाद क्या करना है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर बर्थे को अपनी भारत यात्रा के दौरान गुरुदेव से पूछना चाहिये।
- बेंट रुस को यह नहीं मालूम है कि आप उनको प्राणाहुति दे रहे हैं या वे आपको? ये वे अभ्यासियों से कहते रहते हैं। इस मामले में वे श्रीमती बर्थे हॉगार्ड की सलाह नहीं स्वीकार करते। सच तो यह है कि वीबे ने लिखा है कि वे बर्थे को बहुत अधिक परेशान कर रहे हैं।
- वीबे ने लिखा है कि बर्थे ने बेंट रुस को उनकी भारत यात्रा के लिये मिशन के कोष से ऋण देने का वादा कर दिया है। मेरे मत

में यह गंभीर मामला है और आप बर्थे को तुरंत लिखें और उसे अपरोक्ष रूप से यह बतायें कि मिशन का पैसा इस तरह से उपयोग में नहीं लाया जा सकता।

- श्री लक्ष्मीनरसिंहन को आध्यात्मिक कार्यों में अगर किसी प्रकार का संदेह हो तो उन्हें सीधे आपको पत्र लिखना चाहिये लेकिन वे वहाँ परेशानियाँ खड़ी करते हैं तथा वीबे और बर्थे से कहते हैं कि वे आपको लिखकर सीधे आपसे उत्तर प्राप्त करें। इसका मतलब यह हुआ कि वे चाहते हैं कि इन मामलों में वे मेरी या किसी और की सलाह न मानें। मुझे ऐसा लगता है कि उन्होंने अपने मन में मुझे लेकर कोई ग्रन्थि बना ली है जो मेरे मत में डेन्मार्क केन्द्र की व्यवस्था के संबंध में अच्छी बात नहीं है। मैं इस स्थिति में उनसे पत्र-व्यवहार नहीं करना चाहता क्योंकि इससे उनके प्रतिरोध में और वृद्धि होगी। मेरा आपसे निवेदन है कि इस संबंध में जो भी आप उचित समझें उन्हें लिखें।
- मेरी राय में बर्थे को लिखे जाने वाले पत्र में मिशन के कोष से खर्च के संबंध में आप उन्हें स्पष्ट निर्देश दें और यह भी कि हॉल के किराये आदि जैसे नियमित खर्चों के अतिरिक्त किसी भी अन्य बड़े खर्च के संबंध में पहले आपकी अनुमति लेनी आवश्यक है।

मैं वीबे के पत्र से श्री लक्ष्मीनरसिंहन द्वारा की गयी कुछ टिप्पणियों को शब्दश: वैसे ही लिख रहा हूँ :

- वीबे के घर में हुई प्रशिक्षकों की पिछली बैठक मेरी राय में बहुत खराब रही। लक्ष्मीनरसिंहन ने हम सबको एक डुप्लिकेट कॉपी दी और पूरी बैठक में बहुत ही अशोभनीय ढंग से छाये रहे। उन्होंने थामस से पूछा : **"जब गुरुदेव यहाँ ग्रीवस्ट्रैन्ड में थे, हम सबने एक पर्चा तैयार किया था और सबने उसपर हस्ताक्षर किये थे। क्या उसमें नहीं लिखा था कि पश्चिम के प्रभारी श्री सी. ए. राजगोपालाचारी हैं न कि मि. चारी?"**
- मुझे लगता है कि लक्ष्मीनरसिंहन उस डाँट के बाद जो आपने उन्हें हम सबके सामने पिलाई थी, अपने आपको किसी प्रकार स्थापित करना चाहते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि मालिक की अगली यात्रा में आप उनके साथ नहीं होंगे क्योंकि वे किसी अन्य व्यक्ति को तैयार कर रहे हैं।

- यह भी जान पड़ता है कि लक्ष्मीनरसिंहन पहली सिटिंग २-३ लोगों को एक साथ देते हैं और व्यक्तिगत सिटिंग कई लोगों को एक समूह में बैठाकर एक साथ दे देते हैं।

मैं नहीं जानता कि लोगों में इस प्रकार की गुत्थियाँ कैसे विकसित हो जाती हैं लेकिन मेरे विचार से लक्ष्मीनरसिंहन को निश्चित रूप से यह सलाह दी जानी चाहिये कि अगर वे केन्द्रों को मजबूत नहीं बना सकते तो कम से कम ऐसा कुछ न करें जिससे अभ्यासियों और प्रशिक्षकों के दिमाग में संदेह और विवाद उत्पन्न हो जिससे उनका इस पद्धति में विश्वास कमजोर हो।

उनकी टिप्पणियाँ बहुत नुकसानदेह मालूम होती हैं और इस तरह की गैर-जिम्मेदार बातचीत खासकर विदेशियों के सामने करना मूर्खता है। अगर आपको ऐसा लगता है कि इन बैठकों से हमारे विदेशी केन्द्रों को लाभ नहीं पहुँच रहा है तो शायद प्रशिक्षकों की इन बैठकों को बन्द कर देना ही ठीक होगा।

लक्ष्मीनरसिंहन के मेरे प्रति वैमनस्य को देखते हुये (जिसका कारण मुझे ज्ञात नहीं है) अच्छा यही होगा कि मैं उनसे सीधे पत्र-व्यवहार न करूँ।

प्रणाम के साथ,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
१३ नवम्बर १९७२

परम पूज्य मालिक,

वीबे ने मुझे सूचित किया है कि डेन्मार्क के अभ्यासियों के चार दल भारत आ रहे हैं जिनकी सूची संलग्न है। पहला दल ११ दिसम्बर को दिल्ली पहुँचेगा और वहाँ से सीधे शाहजहाँपुर आपके पास जायेगा। अनुमान है कि ये लोग बसंतपंचमी तक वहाँ रुकेंगे और आपके साथ ही मद्रास आयेंगे। मैंने वीबे को सूचित कर दिया है कि इसमें उन्हें कोई कठिनाई नहीं होगी।

दूसरा दल २८ जनवरी को बम्बई पहुँचेगा। इसमें सात व्यक्ति हैं। ये लोग भी सीधे शाहजहाँपुर जाना चाहते हैं और शायद ३० तारीख को वहाँ पहुँचें और बाद में आपके साथ ही मद्रास आयें। मैंने आपकी

तरफ से उनके सीधे शाहजहाँपुर पहुँचने की अनुमति उनको दे दी है। इस प्रकार ३० जनवरी से १० फरवरी के बीच १५ विदेशी अभ्यासी आपके पास वहाँ होंगे। मैं समझता हूँ कि सभी डेन्मार्क के हैं इसलिये सभी को अतिथि गृह के चार कमरों में ठहराने में कोई कठिनाई नहीं होगी। अगर पहले से ही कमरों से पलंग हटा दिये जायें तो अच्छा होगा क्योंकि मैंने उन्हें स्लीपिंग बैग लेकर आने को कहा है। वीबे ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि वे सभी अपने साथ अपना स्लीपिंग बैग ला रहे हैं।

तीसरा दल भी ऐसी आशा है कि ८ जनवरी तक दिल्ली पहुँच जायेगा लेकिन वे क्या करना चाहते हैं इसकी कोई योजना उन्होंने अभी तक नहीं बनायी है। आखिरी टुकड़ी जिसमें करीब १४ या १५ लोग होंगे, २० फरवरी तक सीधे मद्रास पहुँचेगी।

अगर आप वीबे को पत्र लिखें कि ये सारे कार्यक्रम ठीक हैं तो शायद उसे यहाँ से केवल मेरी स्वीकृति पाने से ज्यादा प्रसन्नता होगी।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ९४४/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१७ नवम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

मुझे कॉपियों के साथ तुम्हारा पत्र मिला और डेन्मार्क के मामलों की सारी जानकारी प्राप्त हुई। आज मैं लखीमपुर खीरी जा रहा हूँ और १९ को दोपहर बाद लौटूँगा। मुझे वहाँ श्री श्याम मुरारी गुप्ता के गृहप्रवेश के कार्यक्रम में भाग लेना है। उस परिवार से मेरा बहुत गहरा संबंध है इसलिये मैंने उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। मैं वहाँ अपने तीन विदेशी साथियों के साथ जा रहा हूँ जो इस समय मेरे साथ ही ठहरे हुये हैं।

चूँकि डेन्मार्क के मामले पर विचार करने के लिये इस समय मेरे पास समय कम है इसलिये उसका जबाब वहाँ से लौटकर दूँगा और उसकी कॉपी तुमको भेज दूँगा। अभी तो मैंने लक्ष्मीनरसिंहन और बर्थे हॉगार्ड को एक-एक पत्र लिख दिया है जिसकी कॉपियाँ इस पत्र के साथ

संलग्न हैं। मैं श्रीमती बर्थे हॉगार्ड को एक तार भी भेज रहा हूँ जिसमें मैंने बेंट रुस को एक पाई भी देने की मनाही की है। अगर वे भारत आना चाहते हैं तो उन्हें अपने पैसे से आना चाहिये। आगे के लिये भी मिशन के कोष से बिना मेरी मंजूरी के किसी को पैसा देने की बात उन्हें सोचना भी नहीं चाहिये। केवल छोटे-मोटे दैनिक खर्चे ही वे अपनी मर्जी से कर सकती हैं।

शरद के घाव अब लगभग पूरी तरह सूख गये हैं और एक्स-रे की रिपोर्ट से पता चला है कि हड्डी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

गोपनीय

नं. सी ९४३/एस.आर.सी.एम. **१७ नवम्बर १९७२**

प्रिय लक्ष्मीनरसिंहन,

मुझे यह जानकर बहुत दु:ख हुआ कि आप जो चाहते हैं वही करते हैं और जो मैं कहता हूँ उसे नहीं करना चाहते। आपको याद होगा कि आपके नाम की संस्तुति श्री चारी ने उच्चतर पहुँच के लिये की थी और मैंने वहीं कार्य आरम्भ भी कर दिया था लेकिन भारत लौटने पर मैं अक्सर उसे भूला ही रहता हूँ। इसका मतलब है कि आप पहुँच तो निश्चित रूप से चाहते हैं लेकिन अपने चारो ओर ऐसा वातावरण नहीं तैयार करते जो मुझे ऐसा करने के लिये आकर्षित करे।

आप जानते हैं और इसे मैं स्वीकार भी करता हूँ कि श्री चारी मेरे सर्वाधिक अनुरागी सहयोगियों में से एक हैं। वे शक्ति के इस स्तर तक विकसित हुये क्योंकि उनके प्रेम ने मुझे ऐसा करने के लिये मुझे बाध्य कर दिया और आपने वहाँ कहा है कि श्री चारी मेरे अगले दौरे में मेरे साथ वहाँ नहीं आयेंगे। ऐसा लगता है कि आप उन्हें केवल चारी समझते हैं आचार्य नहीं। मैं उनके पिताजी का भी बहुत सम्मान करता हूँ हालाँकि वे मुझसे उम्र में छोटे हैं। मैंने उन्हें मिशन के कार्य के लिये विदेशी केन्द्रों का प्रभारी प्रशिक्षक बनाया है क्योंकि अवकाश प्राप्त कर लेने की वजह से उनके पास काफी समय है परन्तु व्यवस्था की

दृष्टि से मिशन के संपूर्ण कार्य का उत्तरदायित्व जनरल सेक्रेटरी पर है। सौभाग्य की बात है कि वे मिशन के सर्वोत्तम प्रशिक्षकों में से एक हैं इसलिये मैं उनसे यह काम भी लेता हूँ।

सच कहा जाये तो आपने मुझे बहुत अधिक निराश किया है। मैं डेन्मार्क में आपका मान बनाये रखना चाहता था लेकिन आप स्वयं उसे खो देना चाहते हैं। आपको मेरे काम में दखल देने की कोई जरूरत नहीं है। केवल उतना ही कीजिये जितना मैं कहता हूँ।

वहाँ एक बैठक में आपने कहा : "मालिक जब यहाँ ग्रीवस्ट्रैन्ड में थे हमलोगों ने एक पर्चा तैयार किया और हम सभी ने उसपर हस्ताक्षर किये। क्या उसमें यह नहीं लिखा था कि पश्चिम के प्रभारी श्री सी. ए. राजगोपालाचारी हैं, चारी नहीं?'' इस बात को मैंने ऊपर स्पष्ट कर दिया है और मैं समझता हूँ कि वास्तविकता को समझने के लिये इतना काफी है। मैं आपको विश्वास दिला दूँ कि पश्चिम की यात्रा पर मेरे साथ जाने वाले चारी ही होंगे। अपना हृदय उनकी तरह बनाइये तभी आप आगे के काम के लिये मुझसे कह सकते हैं।

मैं इस आशा के साथ भारत लौटा था कि आप डेन्मार्क में अपने आपको मिशन के एक निधि के रूप में स्थापित करेंगे लेकिन मुझे दु:ख है कि आप मेरी आशाओं के विपरीत कार्य कर रहे हैं। आपका कर्तव्य है कि आप इस तरह काम करें कि केन्द्र मजबूत बने न कि वहाँ विवाद और अलगाव उत्पन्न हो। एक होकर ही हम मजबूती से खड़े रह सकते हैं अलग होकर रहने पर पतन निश्चित है। मिशन सारे संसार में फैलेगा यह भविष्यवाणी मैं दो दशक पहले ही कर चुका हूँ लेकिन मैं चाहता हूँ कि इस पवित्र कार्य में आपकी भी सहभागिता हो और इसी में आपकी बुद्धिमानी है।

मैं आपको और सभी लोगों को जोर देकर यह बता देना चाहता हूँ कि श्रीमती बर्थे हॉगार्ड ही उस केन्द्र की प्रभारी हैं और उनकी पहुँच डेन्मार्क में मौजूद आप सभी लोगों में सबसे ऊँची है।

मैं अपने पश्चिम के साथियों को भारतीयों से कम प्यार नहीं करता। आप डेन्मार्क में इतने दिनों से हैं लेकिन आप किसी अभ्यासी को आकर्षित नहीं कर सके और अब जब मैदान तैयार कर दिया गया है तो आप अपने बारे में सोचने लगे।

मैं बेन्ट रुस को जानता हूँ। मैंने उन्हें काम करने की इजाजत दी है और उन्होंने मुझे वचन दिया है कि वे श्रीमती बर्थे हॉगार्ड को केन्द्र प्रभारी की हैसियत से सहयोग देंगे। जो काम आजकल आप कर रहे हैं वह मिशन के काम के लिये हानिकारक है आपके कार्य आपके प्रति मेरी आशाओं के विपरीत हैं।

मैं यह सब आपको आपकी भलाई के लिये लिख रहा हूँ और इसलिये भी कि ये सब भविष्य में दुबारा न हों।

शुभकामनाओं के साथ,

आपका स्नेही
रामचन्द्र

गोपनीय

नं. सी ९४२/एस.आर.सी.एम. **१७ नवम्बर १९७२**

मेरी प्रिय बहन,

मुझे डेन्मार्क में मिशन के मामलों के बारे में सब कुछ मालूम हुआ। मैं उन्हें ठीक कर दूँगा। आज मैं अपने कुछ यूरोपियन साथियों के साथ लखीमपुर खीरी जा रहा हूँ और १९ की शाम को लौटूँगा। वहाँ से वापस आने के बाद मैं पूरे विषय को विस्तार से समझूँगा।

आपको मिशन के कोष में से बेन्ट रुस या अन्य किसी को भी किसी प्रकार का कोई भुगतान नहीं करना चाहिये। केवल छोटे-मोटे रोजमर्रा के खर्च ही आप मिशन के कोष से कर सकती हैं। मैंने इसी आशय का एक केबिलग्राम भी आपको आज भेजा है।

आप फिलहाल प्रशिक्षकों की बैठकें बुलाना बन्द कर दीजिये। अगर किसी समस्या पर कोई निर्णय लेना हो तो आपको जनरल सेक्रेटरी श्री पी. राजगोपालाचारी के पास मद्रास लिखकर उनकी राय लेनी चाहिये। अगर आपके सामने कोई ऐसी परेशानी हो जिससे मिशन के काम की हानि हो रही हो और आप उसे हल नहीं कर पा रही हों तो आप तुरंत मुझे इस बात की सूचना दीजिये। जब तक आप यहाँ नहीं आती हैं केवल सत्संग को पहले की तरह चलने दीजिये।

अगर कोई प्रशिक्षक ऐसा काम करता है जिससे मिशन के काम की हानि हो रही हो तो यह बात उसे मालूम होनी चाहिये कि अगर मैं किसी को एक हाथ से शक्ति दे सकता हूँ तो दूसरे हाथ से इसे वापस भी ले सकता हूँ। मैं सभी सत्संगियों को फिर से यह बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि केन्द्र की प्रभारी आप हैं। जनरल सेक्रेटरी ने डेन्मार्क में जो समिति बनायी है वह आपकी सहायता के लिये है न कि आपको नियंत्रण में रखने के लिये।

मैंने श्री लक्ष्मीनरसिंहन को भी इस आशा के साथ एक पत्र लिखा है कि वे वापस सही रास्ते पर आ जायेंगे।

बच्चों को प्यार। शुभकामनाओं के साथ,

आपका स्नेही
रामचन्द्र

(१७ नवम्बर १९७२ को भेजे गये केबिलग्राम की प्रतिलिपि)

बर्थे हागॉर्ड
बेन्ट रुस को या अन्य किसी को मिशन के कोष से पैसा मत दीजिये। पत्र की प्रतीक्षा कीजिये।

रामचन्द्र

मद्रास
२३ नवम्बर १९७२

मेरे परमप्रिय मालिक,

आज मुझे आपका ७ तारीख का स्नेहपूर्ण पत्र मिला जिसके साथ बर्थे और श्री लक्ष्मीनरसिंहन को लिखे गये पत्रों की कॉपियाँ भी थीं। आज मुझे बर्थे का १७ तारीख का लिखा एक पत्र मिला है जिसमें उसने आपका तार प्राप्त करने की बात लिखी है और इस बात की पुष्टि की है कि बिना आपकी अनुमति के किसी को भी भुगतान नहीं किया जायेगा।

डा. लक्ष्मीनरसिंहन एक अच्छे व्यक्ति हैं। परेशानी केवल इतनी है कि उन्होंने स्वयं और डेन्मार्क के अभ्यासियों के संबंध में कुछ जटिलतायें विकसित कर ली हैं। वे समझते हैं कि भारतीय होने के कारण वे यूरोपियन लोगों से श्रेष्ठ हैं। उनके मन में विदेशियों की

वेश-भूषा, व्यवहार, नीति आदि को लेकर कुछ भ्रान्तियाँ हैं जिससे उनका व्यवहार प्रभावित होता है। आपकी प्रेमपूर्ण कृपा से बर्थे की बहुत तेज होने वाली प्रगति के कारण शायद वे उससे ईर्ष्या का भाव भी रखते हैं और यह उसके साथ उनके व्यक्तिगत संबंधों में उनकी झगड़ालू प्रवृत्ति में भी दिखाई देती है। मेरी समझ में इससे अधिक और कोई बात नहीं है। आपका उनके लिये लिखा गया पत्र बिल्कुल सीधा और स्पष्ट है। मुझे विश्वास है कि वे स्थिति की गंभीरता को समझेंगे और अपने व्यवहार को आवश्यकतानुसार बदलेंगे। मेरे हृदय में उनके लिये बहुत प्रेम है और मुझे इस बात का दु:ख है कि आपसे उन्हें कड़ी डाँट दिलवाने में मेरी भूमिका प्रमुख रही है। लेकिन अगर इसकी आवश्यकता हो तो ऐसा करना ही पड़ता है और इसे करने का सबसे अच्छा समय वही है जब यह आवश्यक हो। डेन्मार्क के अभ्यासियों से उन्हें ढेर सारा प्यार और काफी भौतिक सहायता भी मिली है। मुझे आशा है कि वे इसे समझेंगे और उसी के अनुरुप प्रेम और भ्रातृत्व की भावना से उनके लिये काम करेंगे।

हम सभी को यह जानकर बहुत खुशी है कि चि. शरद अब बेहतर हैं और उनके पैर की हड्डी पर कोई असर नहीं पड़ा है। अभी कुछ समय के लिये उन्हें बहुत सावधानी बरतनी चाहिये।

'इण्डिया इन द वेस्ट' कल प्रेस में चली गयी। टाईप की हुई एक संपूर्ण प्रति अलग रजिस्टर्ड पार्सल से कवरिंग लेटर के साथ मैंने आपको भेजी है। कृपया अपनी टिप्पणियाँ मेरे पास ६ दिसम्बर तक अवश्य भेज दीजिये। उस समय तक प्रूफ के मिल जाने की सम्भावना है। आपकी स्वीकृति मिल जाने पर यह जैसा है उसे मैं वैसा ही छपवाना चाहता हूँ। सभी विदेशी प्रशिक्षकों के चित्रों के अतिरिक्त इसमें २५ पूरे पृष्ठ के और ७ आधे पृष्ठ के चित्र होंगे। मैंने डा. आर. पी. सिंह को उनके और डा. ऐनीशियारिको के चित्रों के लिये कई बार लिखा है पर अभी तक उनका कोई उत्तर नहीं मिला। अमेरिका से इन्हीं दोनो के चित्रों की प्रतीक्षा है। श्रीमती वेरा डेविश और उनके पति के चित्रों की भी हमें आवश्यकता है। मैंने कल उन्हें दुबारा एक पत्र लिखकर उनसे निवेदन किया है कि वे इस विषय पर फिर से विचार करें और हमें चित्र तुरंत भेज दें। आशा है कि वे मान जायेंगी।

अब मैं लालाजी साहब की कृति **ट्रुथ इटरनल** को पढ़ रहा हूँ। ऐसा लगता है कि भाषा में काफी सुधार की आवश्यकता होगी। इस

काम को पूरा करने के बाद टाईप की हुई एक कॉपी अंतिम स्वीकृति के लिये आपके पास भेजूँगा। स्वीकृति मिलने के बाद ही यह प्रेस में छपने के लिये जायेगी। यह एक छोटी पुस्तक होगी और इसका आकार *'कमेन्ट्री ऑन टेन कमान्डेन्ट्स'* जैसा होगा। इसमें अधिक समय नहीं लगेगा।

शताब्दी समारोह का काम प्रगति पर है। अब तक दक्षिण के सभी केन्द्रों का अच्छा सहयोग मिला है। अच्छी संख्या में विज्ञापन बुक हुये हैं। कुछ केन्द्रों ने अनुदान भी भेजे हैं। लेकिन अभी तक उत्तर भारत के केन्द्रों से किसी प्रकार का कोई सहयोग नहीं मिला है। लगता है वे लोग सारा अनुदान एक जगह इकठ्ठा करके एक साथ भेजेंगे। हमने मिशन के एम्बलेम का धातु का बैज बनाने का प्रस्ताव किया है जिसे पहचान के लिये स्थायी रूप से प्रयोग में लाया जाये। अभ्यासियों से निवेदन किया जायेगा कि वे इस बैज को सभी औपचारिक सभाओं में - चाहे वे कहीं भी आयोजित की जायें, लगाया करें। एक बैज की कीमत ५/- रुपये होगी। मद्रास जैसे बड़े शहरों के लिये इसका होना बहुत आवश्यक है। यहाँ विवाह के बड़े समारोहों में फालतू लोगों का वधू पक्ष का होने का स्वाँग करते हुये घुस जाना आम बात है। वर पक्ष के लोग, सम्माननीय अतिथियों की भावनायें आहत न हों, इस संकोच के कारण ऐसे लोगों की पहचान के बारे में कोई प्रश्न खड़ा नहीं करते। इससे चोरों का काम बहुत आसान हो जाता है और बहुमूल्य सामानों की चोरी हो जाती है। इस तरह के खतरों से बचने के लिये तुरंत पहचान का कोई तरीका रखना नितान्त आवश्यक है - ऐसा हम सब लोगों का विचार है। जैसे-जैसे सदस्यता बढ़ती जा रही है, किसी एक व्यक्ति के लिये सारे सदस्यों को व्यक्तिगत स्तर पर पहचान पाना कठिन होता जा रहा है। इस बैज के कारण अभ्यासी अपने आप को अधिक जुड़ा हुआ महसूस करेगा और इससे एकत्रित लोगों की एक सामूहिक पहचान भी बनेगी। मेरा विश्वास है कि आप इसकी स्वीकृति अवश्य देंगे।

आपकी कृपा से यहाँ सब कुशल है। कभी-कभी जब मैं सामान्य रूप से आँखें खोलकर बैठा रहता हूँ तो ऐसा लगता है कि कमरे की दीवारें घूम रही हैं और एक दूसरे में विलीन हो रही हैं। अब तक दीवारों का संपूर्ण विलीन होना नहीं दिखा है। आपके स्पष्टीकरण का मैं आभारी होऊँगा।

मुझे आशा है कि कार्यालय के काम से ५ दिसम्बर के आस पास मेरा दिल्ली जाना होगा तभी मैं दो दिनों के लिये शाहजहाँपुर आऊँगा। कुडप्पा के श्री वेंकटसुब्बा रेड्डी भी आयेंगे। मेरे प्रियतम! मैं आपका दर्शन पाने के लिये बहुत लालायित हूँ। चाहे कुछ घंटों के लिये ही सही लेकिन मैं आपका दर्शन पाने के लिये व्यग्र हूँ।

मेरे समस्त प्रेम के साथ,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
२३ नवम्बर १९७२

परम आदरणीय मालिक,

संदर्भ : इण्डिया इन द वेस्ट

आपको जानकर खुशी होगी कि उपरोक्त पुस्तक की टाईप प्रतिलिपि कल प्रेस में दे दी गयी। अनुमान है कि उसका प्रूफ दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक मिल जायेगा। कुछ उपाख्यानों में मैंने आपके मानवीय गुणों को भी प्रकाशित किया है क्योंकि मुझे विश्वास है कि अभ्यासियों और मिशन के सदस्यों के लिये यह रुचिकर होगा। अगर आप कृपापूर्वक इस टाईप प्रतिलिपि को पढ़कर मुझे बता दें कि इसमें से क्या हटाना है तो मैं आपका आभारी होऊँगा। वस्तुओं के प्रति आपकी अरुचि से संबंधित विषय को भी मैंने काफी विचार विमर्श के बाद शामिल कर लिया है। विशेष रूप से इसका जिक्र मैंने पृष्ठ संख्या २७ पर किया है। मेरी इच्छा है कि आप इसे पूरा पढ़ लें। इसे पुस्तक में शामिल करके मैं लोगों को यह बताना चाहता हूँ कि आप अस्तित्व की एक उच्चतर स्थिति में किस तरह डूबे हुये हैं।

दूसरा विषय जो आपके अनुमोदन का इन्तजार कर रहा है - वह है पृष्ठ संख्या ७५ की पंक्ति संख्या ७, ८ और ९, जिसमें आपके कथन हैं। इसके अलावा जो कुछ भी है उसमें आपकी स्वीकृति मिल ही जायेगी। इन बातों को आपकी स्वीकृति के लिये भेजने के पीछे मेरा संदेह नहीं है। बस, इसे छापने के लिये आपकी सलाह लेना चाहता हूँ।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

मद्रास
२९ नवम्बर १९७२

परम आदरणीय मालिक,

ट्रुथ इटरनल का संशोधन और इसके सभी लेखों की दुबारा टाइपिंग हो गयी है। मैं इस पत्र के साथ इसकी एक प्रति रजिस्टर्ड पार्सल से भेज रहा हूँ। पत्र के साथ एक कागज संलग्न है जिसपर आपसे कुछ स्पष्टीकरण करने की प्रार्थना की गयी है। पुस्तक को दुबारा लिखने में इस बात का ध्यान रखा है कि जो टाईप प्रति मुझे मिली थी उसकी भाषा में कम से कम हस्तक्षेप हो और अर्थ तो कहीं भी किसी भी तरह से न बदले। प्राक्कथन भी दुबारा टाईप किया गया। अगर आप इसे देखकर १५ दिसम्बर तक मुझे वापस भेज दें तो मैं आपका बहुत आभारी होऊँगा ताकि इसे छपवाकर लालाजी महाराज की जन्म शताब्दी पर २५ फरवरी १९७३ को रिलीज के लिये तैयार कर लिया जाये।

प्रणाम,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ७६५/एस.आर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
४ दिसम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

२३ नवम्बर का तुम्हारा पत्र पुस्तक की टाईप प्रति के साथ २ दिसम्बर १९७२ को मिला। पृष्ठ संख्या २७ पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है। यह जैसा है वैसा ही रहना चाहिये।

अब पत्र के दूसरे पैरा के बारे में। तुम पृष्ठ संख्या ७५ पर पंक्ति संख्या ७, ८ और ९ में जो वक्तव्य है इसकी स्वीकृति चाहते थे। यह वक्तव्य इस प्रकार है : ***मालिक ने कहा "इधर देखो! ईश्वर महान हो सकता है लेकिन शक्ति मेरी है। मैंने ईश्वर से भी कभी शक्ति नही माँगा। जब मैंने कोई शक्ति लेनी चाही, ले ली।"***

रेखांकित शब्द ***भी*** को हटा देना चाहिये और पैराग्राफ एक अतिरिक्त वाक्य के साथ इस तरह समाप्त होना चाहिये। मालिक ने कहा : ***"इधर देखो! ईश्वर महान हो सकता है लेकिन शक्ति मेरी है। मैंने ईश्वर से कभी शक्ति नहीं माँगी। जब मैंने कोई शक्ति***

लेनी चाही, ले ली। ऐसा तब होता है जब आत्मा अपने मूल स्वरूप को प्राप्त कर लेती है।"

अब मैं यह तुम्हारी जानकारी के लिये लिख रहा हूँ कि इस विषय में मैंने मालिक से परामर्श किया। उन्होंने केवल इतना कहा *"सत्य तो सत्य ही है।" योगी का उद्येश्य प्रकृति पर अधिसत्ता प्राप्त करना है। अगर वह ऐसा नहीं कर पाता तो सच्चे अर्थों में वह योगी नहीं हो सकता।*

मुझे कोपेनहेगेन से लक्ष्मी का एक पत्र मिला है। मैंने उसे बहुत सी बातों को समझाते हुये शान्त कर दिया है। मैंने पत्र के प्रारम्भ में ही लिख दिया है कि अगर मैं तुम्हें फटकारता हूँ तो गले भी तो लगाता हूँ।

श्रीमती वेरा डेविश ऑपरेशन के लिये वियेना (ऑस्ट्रिया) गयी हैं क्योंकि स्विटजरलैंड में डाक्टरों ने उनमें ट्यूमर की सम्भावना व्यक्त की थी। जैसा तुमने मुझे लिखा था मैं तुम्हारे ५ या ६ दिसम्बर को यहाँ पहुँचने का इन्तजार कर रहा हूँ।

शरद की हालत पहले से अच्छी है और ऑपरेशन का घाव सूख रहा है। शशि के विवाह में भाग लेने के लिये कस्तूरी यहाँ ७ को पहुँच रही है।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : शरद का अभी-अभी जो एक्स-रे आया है उसकी रिपोर्ट के अनुसार उसकी हड्डी पर असर है और ऑपरेशन दुबारा करना होगा।

मद्रास
६ दिसम्बर १९७२

मेरे परमप्रिय मालिक,

आपका ४ तारीख का लिखा पत्र मुझे अभी-अभी मिला। हम सभी इस बात से दु:खी हैं कि शरद के पैर की हड्डी प्रभावित हुई है और उसका एक और ऑपरेशन होगा। हम सब आशा करते हैं कि उसे दर्द नहीं सहना पड़ रहा है और कम से कम वह घर में तो चल ले रहा है। हम मालिक से उसके पूर्ण और शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करते हैं।

इण्डिया इन द वेस्ट के मेरे द्वारा उठाये गये विषयों पर आपकी स्वीकृति पाकर मैं बहुत खुश हूँ। चित्रों के ब्लॉक अब तक तैयार न हो पाने के कारण प्रूफ बनने में कुछ देर हो गयी। कुल मिलाकर ४० ब्लॉक हैं और प्रिन्टर का कहना है कि अगर बिना ब्लॉकों के कम्पोजिंग का काम करते हैं तो ब्लॉक आ जाने पर काम को दुबारा करना पड़ेगा। इसलिये हमलोग अब ब्लॉक का इन्तजार कर रहे हैं। इसके अगले दो दिन में तैयार हो जाने की उम्मीद है। इसके बाद प्रेस काम करना शुरु करेगा और मैं आशा करता हूँ कि प्रूफ का काम १० दिन में हो जायेगा।

पूज्य लालाजी साहब की पुस्तक ***ट्रुथ इटरनल*** की दुबारा टाईप की हुई प्रति मैंने अपने २९ नवम्बर के पत्र के साथ आपको भेजी है। विश्वास है कि अब तक यह आपके पास सुरक्षित पहुँच गयी होगी। शीघ्र ही आपके कृपापूर्ण परामर्श पाने की आशा करता हूँ। यह एक छोटी पुस्तक होगी - ***टेन कमान्डमेन्ट्स*** के आकार की। मेरा अनुमान है कि इसमें अधिक से अधिक ८० पृष्ठ होंगे। मेरा प्रस्ताव है कि दो अलग-अलग संस्करणों में हम इसकी कुल ३००० प्रतियाँ छापें। पेपरबैक सस्ता संस्करण ३/- रुपये का और हार्ड बाउन्ड अच्छा संस्करण ८/- रुपये का। सस्ते संस्करण की २००० प्रतियाँ और महँगे संस्करण की १००० प्रतियाँ छापी जायें। सस्ती वाली ३००० प्रति और महँगी २००० प्रति छापने के बारे में भी सोचा जा सकता है। मेरे अनुमान से कम मूल्य वाला २००० प्रतियों का संस्करण तो हम अगले साल तक ही बिक्री कर लेंगे क्योंकि यह पहला अवसर है जब हम लालाजी साहब की कोई कृति छाप रहे हैं। इसमें लाभ यह है कि ५००० प्रतियों को छापने में भी कम्पोजिंग आदि का खर्च वही रहेगा केवल कागज का खर्च ही अतिरिक्त होगा। इससे किताब का मूल्य कम रख पाने में मदद मिलेगी। कृपया मुझे अपने विचार और परामर्श भेजिये। कम से कम ३००० प्रतियाँ तो निकालनी ही हैं - २००० कम मूल्य वाला संस्करण और १००० महँगा संस्करण।

इफिकेसी ऑफ राजयोग की लगभग १६० प्रतियाँ ही हमारे पास शेष हैं। मुख्यालय में एक भी प्रति शेष नहीं है और अन्य केन्द्रों के विक्रय पत्रों से अनुमान लगता है कि यह पुस्तक अब समाप्तप्राय है। मेरा प्रस्ताव है कि शताब्दी समारोह के समाप्त हो जाने के बाद हम इसके अगले संस्करण की १००० प्रतियाँ छापें। इस पुस्तक की औसत

माँग करीब ३०० प्रति वार्षिक है। इसलिये अनुमान है कि १००० प्रतियों का नया संस्करण १९७५ तक चलेगा। यह विदेशी केन्द्रों की माँगों को पूरा करने के लिये भी पर्याप्त होगा। अगर हम ज्यादा प्रतियों का संस्करण छापते हैं तो बिक्री होने तक सुरक्षित भंडारण की समस्या होगी।

अगला काम है आपकी आत्मकथा का - इसको कब निकालें? मैं सोचता हूँ कि इस काम को भी हम शताब्दी समारोह की समाप्ति के बाद शुरु कर सकते हैं। इस समय अगर स्मारिका का काम भी मिला लें तो हमारे पास काफी काम है और काम का दबाव बढ़ता जा रहा है। कृपया इस काम को १९७३ के मध्य में शुरु करने की अनुमति दीजिये।

मुझे इस बात का बहुत दु:ख है कि शाहजहाँपुर आने का अपना कार्यक्रम मुझे निरस्त करना पड़ा। यहाँ बहुत सारे कामों को देखना आवश्यक है इसीलिये ऐसा करना पड़ा। मुझे इस बात का भी दु:ख है कि मैं सौ. शशि के विवाह में नहीं पहुँच पाऊँगा। इसमें शामिल होने की मैं बहुत उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था। वह भी बहुत दु:खी होगी और सम्भवत: नाराज भी। मैंने तार से इस कार्यक्रम के निरस्त होने की सूचना आपको भेज दी है और आपसे यह भी निवेदन किया है कि आप मेरी तरफ से १०१/- रुपये की भेंट उसे शादी में दे दीजियेगा। यह तकलीफ देने का मुझे दु:ख है। इस साल के अंत में या जनवरी में तो मैं निश्चित ही शाहजहाँपुर आऊँगा तभी पैसा दे दूँगा। मुझे अपने सिरदर्द के लिये एक न्यूरॉलाजिस्ट से परामर्श लेना पड़ा। उसका कहना है कि कोई विशेष बात नहीं है और इसका कारण तनाव है। यह सब आपकी कृपा है। चि. कृष्णा की मैट्रिक की प्रवेश परीक्षा चल रही है - गुरुवार १४ तारीख को समाप्त हो जायेगी। अमेरिका की श्रीमती नैश का यह हफ्ता प्रसन्नता में बीता। आज दोपहर बाद वे बंगलोर चली गयीं। वे बहुत प्रभावित हैं और क्लीवलैंड में काम को फैलायेंगी। मुझे ऐसा लगता है कि ये ग्रेस किम्बाल की भी बहुत सहायता करेंगी।

मैंने श्रीमती ग्रेस को मिशन के पंजीकरण के संबंध में लिखे पत्र की प्रति आपको भेजी थी। आशा है यह आपको मिल गयी होगी और आपने उन्हें उचित परामर्श दे दिया होगा। वे मिशन के काम के प्रति अपने पति के रवैये से बहुत चिन्तित हैं। वे उनके इस कार्य में भाग लेने के बिल्कुल विरूद्ध हैं। मैंने २३ नवम्बर को आपको दो पत्र

लिखे थे जिनमें से एक में मैंने दीवारों के पिघलने का जिक्र किया था। ऐसा तब होता है जब मैं शान्त होकर बिना कुछ काम के चुपचाप बैठा हुआ होता हूँ। यह एक या दो बार हो चुका है। मैंने इसके बारे में आपसे स्पष्टीकरण का अनुरोध किया था और अभी भी इसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

बड़ी बहू और कृष्णा आपको प्रणाम कह रहे हैं।

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

नं. सी ११४/८३२/एस.आर.सी.एम. शाहजहाँपुर
१५ दिसम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

६ दिसम्बर का तुम्हारा प्रेमपूर्ण पत्र मिला।

मैंने शरद को एक बोन स्पेशलिस्ट के पास इलाज के लिये भेजा था, जो मेरी बहन का दामाद है। ऑपरेशन का घाव लगभग भर गया है लेकिन प्रभावित हड्डी की जाँच अभी होनी है। हड्डी में कुछ छेद पाये गये हैं। डाक्टर ने प्लास्टर ऑफ पेरिस लगाकर कुछ दवाइयाँ बता दी हैं और कहा है कि अगर वह इस इलाज से ठीक नहीं हुआ तो ऑपरेशन दुबारा करना पड़ेगा।

मि. राकोटोन्ड्रेनाइव यहाँ आये थे और दो दिन रुके भी। वीबे और थामस सहित ६ डेन्स अभी यहाँ रुके हुये हैं।

तुम्हारे तार के अनुसार मैंने शशि को १०१/- रुपये दे दिये हैं। इसके लिये तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

मुझे अभी तक ***ट्रुथ इटरनल*** की टाईप प्रति प्राप्त नहीं हुई है। यह मेरे मालिक की लिखी हुई किताब है इसलिये इसकी कीमत सोने सरीखी होनी चाहिये। इस बात की चिन्ता मत करो कि लोग इसे बहुत महत्व नहीं देंगे। मेरी राय में सस्ते संस्करण के विचार को बिल्कुल छोड़ देना चाहिये। मैं इस बात को पूरी तरह से तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ कि ३००० की जगह चाहो तो २००० प्रतियाँ ही छाप सकते हो।

मैं ***इफिकेसी ऑफ राजयोग*** के दूसरे संस्करण के बारे में तुम्हारे विचारों से पूरी तरह सहमत हूँ।

मेरी आत्मकथा के बारे में मुझे कोई जल्दी नहीं है। तुमसे बहुत सारी चीजों के बारे में अभी चर्चा भी करनी है। इसलिये हम शताब्दी समारोह के बाद ही उचित निर्णय लेने में सक्षम होंगे।

तुमने मिशन के पंजीकरण के बारे में जो पत्र श्रीमती ग्रेस को लिखा है उसकी प्रति पढ़कर मैं पूरी तरह से तुम्हारे विचारों से सहमत हूँ और मैंने उन्हें यह लिखकर बता भी दिया है। इस समय जब हमारे पास वहाँ जमा कराने के लिये $१००/- भी नहीं है तो ऐसी हालत में यू.एस.ए. में मिशन का पंजीकरण उचित प्रतीत नहीं होता। देखें! वे इसके बारे में क्या कहती हैं।

दीवारों के पिघलने के बारे में मेरी राय में यह तुम्हारी संरचना के एक्स-रे होने जैसा है।

तुम मि. सी. सी. किम्बाल के लिये प्रार्थना करो कि उन्हें सही विवेक की प्राप्ति हो।

बैंक द्वारा मैं तुम्हें ७५४/- रुपये स्थानान्तरित कर रहा हूँ। (इलाहाबाद बैंक को लिखी गयी प्रति तुम्हारे रिकॉर्ड के लिये पत्र के साथ संलग्न है।) शताब्दी समारोह के लिये इन लोगों से धनराशि प्राप्त हुई है :

श्री दौलत सिंह - बाँकेगंज, लखीमपुर खीरी - ५००/- रुपये
कु. कस्तूरी - मोदीनगर - १३८/- रुपये
श्री जी.रामशास्त्री-गोपावरम, समश्रीगुडेम, प. गोदावरी ११६/- रुपये

इन राशियों को यहाँ हेडक्वार्टर पर रसीद संख्या २९१९, २९२३ और २९२४ पर प्राप्त कर लिया गया है।

मैं तुम्हारे सिरदर्द के बारे में फिर से सोच रहा हूँ और इसमें मैं तुम्हारी मदद करूँगा लेकिन अब यह **उन पर** निर्भर करता है।

मैं तुम्हारे पिताजी से बहुत खुश हूँ कि वे इस उम्र में भी इतनी मेहनत कर रहे हैं। उन्हें पुरस्कार मिले! हाँ, तुम भी बधाई के पात्र हो लेकिन कागज पर नहीं।

बहन कस्तूरी तुम्हें और सुलोचना को आशीर्वाद और तुम्हारे पिताजी को नमस्कार कह रही हैं।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : इस पत्र के पूरा हो जाने के बाद आज १५ तारीख को ***ट्रुथ इटरनल*** की टाईप प्रति तुम्हारे पत्र के साथ रजिस्टर्ड पार्सल में मिली। मैं इसे देखकर एक या दो दिन में तुम्हें लिखूँगा।

रामचन्द्र

(के. सी. नारायणा द्वारा पूज्य मालिक को लिखे गये २८ अक्टूबर १९७२ के पत्र का सारांश।)

मैं समझता हूँ कि मेरा पिछला पत्र आपको मिल गया होगा। मैं पिछले ६ महीनों से तिरुपति नहीं जा पाया। मुझे एक पत्र मिला था कि दरवाजे पर दीमक का असर है। आशा है कि आप इसका ध्यान रखते हुये किताबों के बारे में निर्णय लेकर मुझे सूचित करेंगे।

(के. सी. नारायणा द्वारा पूज्य मालिक को लिखे गये २९ नवम्बर १९७२ के पत्र का सारांश।)

मुझे लगता है कि लाइब्रेरी के संबंध में मेरे पिछले पत्रों का गलत अर्थ निकाला गया है। मैं तिरुपति गया था और मुझे डर है कि अगर किताबों के लिये जल्दी ही कुछ नहीं किया गया तो दीमक उन्हें खा जायेंगी। अगर इसके बारे में एस.अर.सी.एम. तुरंत कुछ निर्णय नहीं ले सकता तो कम से कम एक लाइब्रेरियन की व्यवस्था के बारे में तो सोच ही सकता है। मैं तिरुपति में एस.आर.सी.एम. लाइब्रेरी के लिये अपने मकान का निचला हिस्सा दे सकता हूँ और लाइब्रेरियन किताबों का सुरक्षित रख सकता है। मैंने लाइब्रेरियन की नियुक्ति खुद ही कर दी होती लेकिन धनाभाव के कारण मेरे लिये यह सम्भव नहीं था। मेरी तनख्वाह के अलावा मेरे पास कोई अन्य आय किराया या खेती आदि की नहीं है। यहाँ तक कि मेरा घर जो तिरुपति में है वह तब तक के लिये एस.आर.सी.एम. को दिया हुआ है जब तक वह इसे रखना चाहे।

मुझे उम्मीद है कि इस संबंध में मुझे कुछ जबाब जरूर मिलेगा। मेरी जानकारी के अनुसार मिशन का तिरुपति सेन्टर लाइब्रेरी चलाने का खर्च नहीं उठा सकता। अगर मुझे इस संबंध में कोई जबाब नहीं मिलता तो मेरी प्रार्थना है कि मुझे इन किताबों को एस. बी. आर्ट्स कॉलेज, तिरुपति को देने की अनुमति दी जाये। मैं एक बार

फिर प्रार्थना करता हूँ कि मुझे गलत न समझा जाये। यह मेरा दुर्भाग्य है कि मेरी स्पष्टवादिता को हमेशा गलत समझा गया।

हो सकता है कि आप अन्य चीजों में व्यस्त हों इसलिये मेरे पत्र पर ध्यान न दें। लेकिन हमारे लिये किताबें बहुत कीमती हैं और अगर हम उन्हें बेच दें तो कम से कम ३००००/- रुपये हमें मिलेंगे। हो सकता है कि एस.आर.सी.एम. इतना व्यस्त हो कि उसके पास इस प्रस्ताव को स्वीकार करने के लिये समय न हो। मैं जानता हूँ कि इसके लिये मुझे अपने भाइयों से कितनी बहस करनी पड़ी फिर भी हमारे परिवार के लिये उचित शिष्टाचार का अभाव दिख रहा है।

आशा है कि आपका यह पुत्र जबाब पाने के योग्य है। उसके शब्दों को गलत अर्थ में न लिया जाये।

प्रति सूचनार्थ एवं उपयुक्त कार्यवाही हेतु श्री पी. राजगोपालाचारी, जनरल सेक्रेटरी, मद्रास को अग्रसारित। साथ में पूज्य मालिक के जबाब नं. सी ८३८/एस.आर.सी.एम. दिनांक १५ दिसम्बर १९७२ की प्रति

आदेश से
आपका मालिक की सेवा में
के. एम. सक्सेना

नं. सी ८३८/एस.आर.सी.एम. **१५ दिसम्बर १९७२**

मेरे प्रिय नारायणा,

तुम्हारे २८ अक्टूबर और २९ नवम्बर के प्रेमपूर्ण पत्र मिले। इन दिनों मैं आँख की चुभन और पेटदर्द से पीड़ित था। कभी-कभी मैं ठीक हो जाता हूँ और कभी-कभी मुझे फिर से दर्द होने लगता है। यह ऐसे ही चल रहा है।

मुझे आशा है कि अब तक पॉली की संतुष्टि हो गयी होगी। मैंने करीब दो हफ्ते पहले श्रीमती ग्रेस को ***मेथड ऑफ ट्रेनिंग*** का पहला भाग भेजा है।

लाइब्रेरी के बारे में मेरा यह सोचना है कि यह ऐसी जगह पर हो जहाँ उन्हें बहुत से लोग जानते हों। खुद उन्होंने एक बार कहा था

कि तिरुपति की तुलना में मद्रास में ज्यादा लोग उन्हें जानते और प्यार करते हैं। मद्रास एक केन्द्रीय स्थान है और वहाँ लाइब्रेरी का होना ज्यादा उपयुक्त होगा। मन में इस विचार के साथ मैं इसके लिये कोष एकत्र करने का प्रयास कर रहा हूँ।

किताबों को ठीक से सुरक्षित रखना चाहिये। क्या यह सम्भव नहीं है कि कुछ साथी खुद के ऊपर इस काम को ले लें जिससे किताबें सुरक्षित रह सकें? मेरे विचार में अगर अभी लाइब्रेरी के लिये एक कमरा बनाना सम्भव न हो तो किताबें आश्रम में ही रखी जायें और डा. कुप्पूस्वामी के अधीन कुछ साथियों को आंशिक भुगतान पर किताबों की सुरक्षा का दायित्व सौंप दिया जाये। कुछ समय पहले तुम्हारी भी यही सलाह थी कि किताबों को आश्रम में रख दिया जाये।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पंजीकृत

नं. पी. ११४/९४४/एस.अर.सी.एम. **शाहजहाँपुर**
१७ दिसम्बर १९७२

मेरे प्रिय पार्थसारथी,

१५ दिसम्बर १९७२ को तुम्हारा २९ नवम्बर १९७२ का लिखा हुआ पत्र ***ट्रुथ इटरनल*** की टाईप प्रति के साथ मिला।

तुम्हारे द्वारा बनाये गये संदर्भों पर मेरी टिप्पणी इस प्रकार है:

टाईप प्रति

पृष्ठ सं.	पंक्ति सं.	टिप्पणी
३	२७	'पार्टिकल' सही है।
४	५	सभी जगहों पर 'ज्ञान' होना चाहिये।
११	९	'परमीटेशन' की जगह 'परमुटेशन' होना चाहिये।
१५	६	'नॉलेज' की स्पेलिंग ठीक की जानी है।
२८	२७	'इग्नोरेन्ट' (अन्जान) शब्द बिल्कुल उपयुक्त है। *

२९	८	'ऑन ऑब्जेक्ट' की 'ऐन ऑब्जेक्ट' होना चाहिये।
३०	२०,२३	'सिली' सही है। 'फिकल' और 'इग्नोरेन्ट' शब्दों का प्रयोग भी अच्छी तरह हुआ है।
३१	६,२०	जैसा है वैसा ही ठीक है।
३०,३१		पैराग्राफ की पुनर्रचना उचित है।
३८	१९	'लेग्स' (पैर) ठीक है 'हेड' (सिर) नहीं।
४०	८	'एम्लोजाइज्ड' की जगह 'इउलोजाइज्ड' ठीक है।
४३	२४	सूफी आदि (नीचे टिप्पणी देखो)
४८	१६-१९	'द करेक्ट' से लेकर 'रुट' तक के वाक्य की जरूरत नहीं है।
५९	१५	'रिडक्सियो एडएब्सरडम' ठीक नहीं है। यहाँ 'रिडक्सियो एडइनफिनिटम' होना चाहिये।
७२		पृष्ठ के अंत में श्लोक नहीं है। *
८८	डायग्राम	'परब्रह्माण्ड मण्डल' और 'ब्रह्माण्ड मण्डल' ठीक हैं।
९७	डायग्राम	विन्दुदार जार के चित्र की आवश्यकता नहीं है।
१०३ और इसके बाद		श्लोकों की क्रम संख्या लिखना आवश्यक नहीं है।
४३	१६	'स्मॉल' होना चाहिये 'स्मल' नहीं।
४३	२६	'खुदाई आजाद' की जगह 'खुदाई आजम' होना चाहिये।

* दार्शनिक रूप से अन्जान शब्द बुरा है लेकिन सूफी साहित्य में इसका बहुत महत्व है। डा. वरदाचारी ने इस शब्द को न लिखने के लिये मुझपर जोर डाला था और कहा था कि अन्जान की जगह ज्ञानविहीनता लिखें लेकिन मेरे मत में अन्जान पूरी तरह से एक अवस्था का बोध कराता है और मालिक ने सत्य के बारे में बात करते हुये इसका प्रयोग किया है। मैं इस पर इतना दृढ़ हूँ कि मैंने ***अनन्त की ओर*** में इस पर एक परिशिष्ट भी जोड़ा।

यह केवल तुम्हारी जानकारी के लिये है।

(नोट - #) जहाँ तक इतिहास जानता है, सूफीमत इरान से शुरु हुआ। इरानी मूलतः जरथुष्ट्र के अनुगामी थे जिनकी धार्मिक पुस्तक जिन्देवस्ता है। यह हमारे वेदों से मिलती जुलती है। इस्लाम के

विस्तार के बाद इरानी दो धर्मों में बँट गये - मुस्लिम और पारसी। यह कहना गलत नहीं है कि सूफी जरथुष्ट्र के अनुगामी थे। हालाँकि संशोधित संस्करण में यह वाक्य नहीं है (पृष्ठ संख्या ४३) और यह बेहतर है कि सूफीमत की उत्पत्ति का संदर्भ न लिया जाये।

(नोट - ✱ कथन) :

ख्वाबो बेदरियम सुदह याकसान
अज इनायत सोहबते पीरान
(संतों की सोहबत की कृपा से मेरी जाग्रत और गहरी निद्रा की अवस्था एक समान हो गयी है।)

मैंने ***ट्रुथ इटरनल*** की तुम्हारी टाईप प्रति यहाँ रख ली है। अगर तुम्हें जरूरत हो तो तुम इसे टेलिग्राम द्वारा माँग सकते हो। मैं तुरंत भेज दूँगा। इस पत्र के साथ संदर्भ हेतु प्राप्त संलग्न कागज वापस भेज रहा हूँ।

मैंने कल ही तुम्हें एक पत्र भेजा है। उम्मीद है कि अब तक तुम्हें मिल गया होगा।

बच्चों को प्यार,

तुम्हारा स्नेही
रामचन्द्र

पुनश्च : पश्चिम जर्मनी से प्राप्त 'इसोटेरियम रिपोर्ट' भी यहाँ तुम्हारी जानकारी और रिकॉर्ड के लिये संलग्न है। इसमें एस.आर.सी.एम. के भी कुछ संदर्भ हैं।

आदेश से
के. एम. सक्सेना
१७ दिसम्बर १९७२

पुनश्च : श्रीमती ग्रेस किम्बाल के पति चाहते हैं कि श्रीमती किम्बाल मिशन छोड़ दें। इस बारे में उसने अपने २५ नवम्बर १९७२ के पत्र में निम्न वाक्य लिखा है :

"कोई भी उस दिव्य कृपा को जानकर जो आप खुद ही हैं, आध्यात्मिक पथ को कैसे छोड़ सकता है। आप मेरे और स्पेन्सर के इतने निकट हैं जैसे हम शाहजहाँपुर में आपके चरणों में बैठे हुये हैं।"

रामचन्द्र

शायद सारे भारत में अभाव होने की वजह से यह कानून है कि विवाह और उत्सवों में १०० से अधिक लोगों को न बुलाया जाये। मैं समझता हूँ कि तुम इसे जानते होगे। अगर वहाँ ऐसा है तो तुम्हें वहाँ के जिलाधिकारी से अनुमति लेनी होगी।

रामचन्द्र

मद्रास
१९ दिसम्बर १९७२

मेरे परमप्रिय मालिक,

पिछले १० दिनों से मैं आपके पत्र का बेसब्री से इन्तजार कर रहा हूँ लेकिन हर दिन पत्र न आने पर निराश हो जाता हूँ। आखिर आज आपका १५ तारीख का लिखा पत्र मिला और पत्र पाकर मुझे चैन मिला।

हम सभी दूसरों से यह सुनकर चिन्तित हैं कि आपके पेट में फिर से दर्द हो रहा है। मैं नहीं जानता कि क्या गड़बड़ी है। लेकिन आशा है कि आप नियमित रूप से दवा ले रहे होंगे और समय समय पर दूध भी ले रहे होंगे। मुझे लीफ लारसन से पता चला है कि आपकी आँख अब बेहतर है लेकिन मुझे नहीं मालूम कि आपकी आँखों में तकलीफ क्या थी। कृपया मुझे स्पष्ट रूप से बताइये कि आप कैसे हैं और आपको अब कौन-कौन सी तकलीफें हैं ताकि हम यहाँ डा. मेहता की राय ले सकें। हो सकता है कि वे और दवाइयाँ लिखें। कृपया जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी हमें विवरण दीजिये।

हम इस बात को लेकर भी चिन्तित हैं कि चि. शरद अभी भी पूरी तरह से स्वस्थ नहीं हैं। मेरी प्रार्थना है कि इस पत्र के पहुँचने तक वे पूरी तरह से ठीक हो जायें। हमारी प्रार्थना है कि अब उन्हें दूसरे ऑपरेशन की जरूरत न पड़े।

यहाँ चि. उमेश, बहू और चि. नीतू ठीक हैं। चि. उमेश, चि. सर्वेश और बहू यहाँ नियमित रूप से सिटिंग लेने आते हैं। छोटा बच्चा अब ठीक है। केवल नये दाँत के निकलने के समय पतले दस्त होते हैं।

घर पर काफी परेशानी है। बड़ी बहू पिछले १० दिनों से बीमार थी और अभी-अभी ठीक हुई है। चि. कृष्णा की तबियत भी

पिछले हफ्ते काफी खराब थी और एक समय तो हमें यह संदेह भी हुआ कि वह मैट्रिकुलेशन की प्रवेश परीक्षा नहीं दे पायेगा। सौभाग्य से वह ठीक हो गया और उसने इम्तहान भी ठीक से दिये। मैं भी करीब एक हफ्ते बीमार रहा जिसकी वजह से शाहजहाँपुर नहीं आ सका। अभी भी मुझे जल्दी-जल्दी सिरदर्द होता है। मुझे इसलिये चिन्ता हो रही है चूँकि चि. कृष्णा को भी मेरे जैसा सिरदर्द होना शुरु हो गया है।

हमने एक महिला को खाना बनाने के लिये नियुक्त किया था जो आज सुबह तक थी। अचानक उसके पिता की मृत्यु हो गयी और उसे जाना पड़ा। कल से मेरे पिताजी भी बिस्तर पर पड़े हैं। उन्हें कुछ मितली जैसी महसूस हुई तो हमने डाक्टर को बुलाया। डाक्टर का कहना है कि उनका ब्लडप्रेशर बहुत कम है। उसने उन्हें एक हफ्ते के आराम की सलाह देते हुये कुछ दवाइयाँ लिख दी हैं। शताब्दी समारोह में शामिल होने के लिये वे सेलम जाने वाले थे लेकिन आज हमने उनका टिकट रद्द करा दिया है। मुझे उनकी बहुत चिन्ता है। वे पर्याप्त आराम नहीं करते और दिन में १० घंटे काम करते हैं। वे खुद पर अनावश्यक बोझ डालते हैं और हमारी बात नहीं सुनते हैं। कल मेरा भाई और उसका परिवार तीन हफ्ते के लिये बम्बई से यहाँ आ रहा है। इस समय हमारी नौकरानी नहीं आ रही है और हमारे यहाँ रहने वाला श्रीधर कल अपने घर केरल जा रहा है। इसलिये हम आजकल काफी मुश्किल में हैं। यह सब मेरे मालिक की इच्छा है और मुझे यह सब नाटक जैसा महसूस हो रहा है जिसे मैं देख रहा हूँ। मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि मैं हँसूँ या रोऊँ। हर दिन ऑफिस में और घर में जिन्दगी और कठिन होती जा रही है। कभी-कभी मैं बहुत निराशा महसूस करता हूँ, कभी-कभी महसूस होता है कि मैं दिन-प्रतिदिन और अनभिज्ञ होता जा रहा हूँ। अब मुझे ऐसा नहीं लगता कि मुझे जिन्दगी की परेशानियों का सामना करना आता है। वास्तव में कभी-कभी मुझे नये पैदा हुये बच्चे सी अनुभूति होती है जिसे हर चीज में विस्मय होता है जिसे वह देखता, सुनता या करता है। मैं जीवन या उसकी समस्याओं का सामना करने में अपने को पूरी तरह से अक्षम महसूस करता हूँ। मैं अपने को समय से पीछे जाता हुआ और बच्चे के स्तर पर महसूस करता हूँ। मैं नहीं जानता कि इसका क्या अर्थ है लेकिन मेरे प्रिय मालिक! इससे मैं अपने को अत्यधिक चिन्तित और असहाय महसूस करता हूँ। मुझे भागकर शाहजहाँपुर पहुँचने और

आपकी गोद में लेटकर रोने की इच्छा होती है। इस तनाव के मौके पर मैं आपकी जरूरत महसूस करता हूँ लेकिन परिस्थितियाँ मुझे तुरंत वहाँ जाने से रोक रही हैं। मुझे लगता है कि आपके पास मेरे लिये जो कुछ भी है उससे होकर मुझे गुजरना है लेकिन मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे इन परिस्थितियों और कठिनाइयों को सहने की सामर्थ्य प्रदान करें। मेरे पिताजी की तबियत मुझे सबसे ज्यादा परेशान करती हैं इसलिये मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप उन्हें कई साल की जिन्दगी और दें तथा अच्छा स्वास्थ्य भी दें। यह सब आपके दिव्य हाथों में है। प्रिय मालिक! कृपया मुझे सान्त्वना देने और मेरी चिन्ताओं से मुझे मुक्त करने के लिये आप तुरंत जबाब दीजिये। आप अकेले मेरे ईश्वर हैं और अकेले आपसे ही मुझे उम्मीद है कि प्यार, स्नेह, सहानुभूति, मार्गदर्शन और वह सब कुछ मुझे मिलेगा जिसकी जरूरत मुझे इस जीवन और आगे के जीवनों, इस दुनिया और अन्य दुनियाओं में है। मुझे आपके पत्र का बेसब्री से इन्तजार है।

इण्डिया इन द वेस्ट के एक तिहाई भाग का पहला प्रूफ आया है और सुधारा जा रहा है। मैं समझता हूँ कि किताब जनवरी के पहले हफ्ते में पूरी हो जायेगी। मैंने पूज्य लालाजी साहब के ***ट्रुथ इटरनल*** के संबंध में आपकी बातों पर गौर किया है। हम इसके प्रथम संस्करण की ३००० प्रतियाँ छापेंगे और मूल्य ५/- रुपये रखेंगे। आपके द्वारा देखी और स्वीकृत की गयी टाईप प्रति की मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ। हम इसे २७ तक प्रेस को जरूर दे देना चाहते हैं जिससे यह २५ फरवरी तक विमोचन के लिये तैयार जरूर हो जाये।

मेरे संपूर्ण प्रेम के साथ,

आपका अनुरागी
पार्थसारथी

गुरुदेव से पत्र-व्यवहार

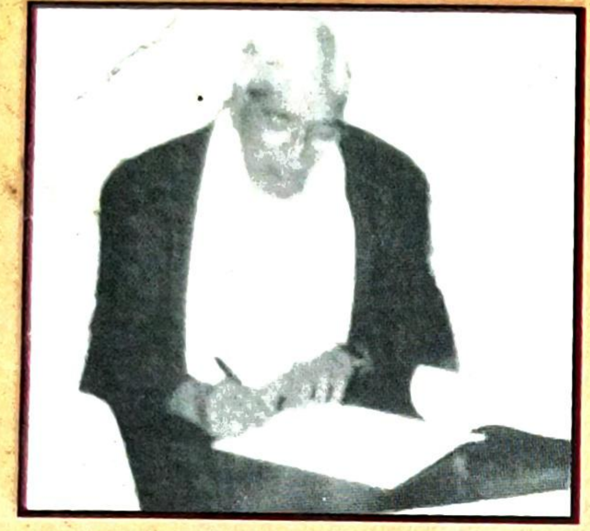

आप के द्वारा ' वॉयस रीयल ' में लिखे गये इस वाक्य ने मेरे हृदय के अन्तरतम को स्पर्श किया - " मैंने यह कभी नहीं सोचा कि वह सब जो मेरे मालिक का है वह मेरा नहीं है। "

चारीजी

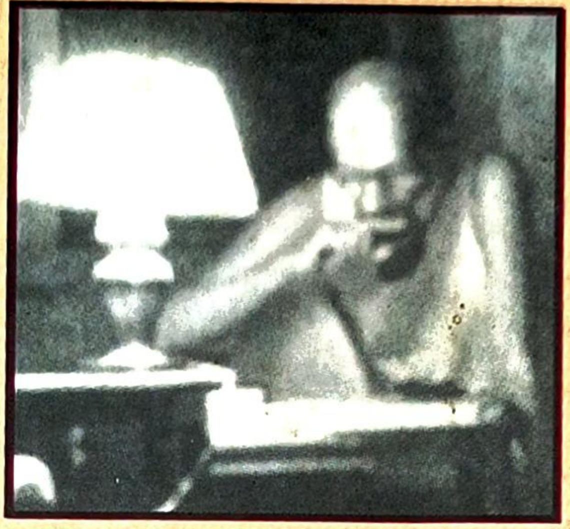

" तुमने इस वाक्य को बहुत पसंद किया। इस वाक्य में व्यक्त किया गया दृष्टिकोण अब भी मेरे मन में है इसलिये मैं कभी किसी आध्यात्मिक कार्य में असफल नहीं होता। "

बाबूजी

श्री रामचन्द्र जी महाराज (बाबूजी महाराज) के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी पूज्य गुरुदेव श्री पार्थसारथी राजगोपालाचारी जी ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के प्रारम्भिक वर्षो १९६६ से १९७२ तक की साधना के दौरान विभिन्न आध्यात्मिक विषयों पर अपने पूज्य गुरुदेव श्री बाबूजी महाराज से पत्र-व्यवहार किया। इन पत्रों में एक जिज्ञासु शिष्य के रूप में जो प्रश्न एवं समस्यायें प्रस्तुत की गयीं तथा अन्य विशिष्ट विषयों का उल्लेख किया गया और पूज्य श्री बाबूजी महाराज ने अपने पत्रों में जिस प्रकार उनका समाधान एवं मार्गदर्शन दिया उनसे आध्यात्मिक साधना के विभिन्न आयामों पर पर्याप्त प्रकाश पड़ने के साथ-साथ यह भी ज्ञात होता है कि एक शिष्य के अंतर्मन की गहराइयों में ज्ञान की पिपासा के साथ-साथ अपने गुरुदेव के लिये अतिशय प्रेम, पूर्ण समर्पण एवं निर्भरता किस प्रकार की विकसित हो। आध्यात्मिक साधना के इस मार्ग के पथिक के लिये यह पत्र विशेष रूप से उपयोगी एवं सहायक सिद्ध होंगे।

श्री पार्थसारथी राजगोपालाचारी जी श्री रामचन्द्र मिशन के अध्यक्ष हैं। आपका जन्म २४ जुलाई १९२७ को हुआ। आपका शैशव उच्च पौर्वात्य सांस्कृतिक विरासत में बीता तथा आपकी शिक्षा आधुनिक पाश्चात्य वातावरण में संपन्न हुई। आध्यात्मिक खोज में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं का मार्गदर्शन करते हुये आपने विश्व के कोने-कोने में भ्रमण किया है तथा वर्तमान में भी भ्रमण की निरन्तरता बनाये रखकर मानवता के पुनरुद्धार में संलग्न हैं।

उत्तरी अमेरिका में
श्री रामचन्द्र मिशन
रूट-१, बॉक्स १२२५
हाइ वे-१०९
मोलेना, जी.ए. ३०२५६ (यू.एस.ए.)

यूरोप में
श्री रामचन्द्र मिशन
चटीव डी ऑगरेन्स
३९३८० ऑगरेन्स
(फ्राँस)

एशिया में
श्री रामचन्द्र मिशन
" गायत्री "
१९, नार्थ स्ट्रीट, श्री रामनगर
मद्रास - ६०० ०१८ (भारत)

ISBN - 81 - 86553 - 14 - 2

Rs. 100/-